दो व्यक्तियों का दुष्टात्माओं से छुटकारा

झील के उस पार जब पहुँचा यीशू,
मिले उसे कब्र से निकले दो व्यक्ति,
दुष्ट आत्माएं सवार थी उन पर,
बहुत भयानक दिख रहे थे वे व्यक्ति।

वे चिल्लाये, हे परमेश्वर के पुत्र,
तूँ हमसे क्या चाहता है,
क्या तूँ यहाँ निश्चित समय से पहले,
दंड हमें देना चाहता है।

वहीं सुअरों का एक रेवड़ चर रहा था,
सो उन दुष्टात्माओं ने यीशू से करी विनती,
कहा, यदि तुझे हमें निकालना ही है तो,
इस रेवड़ में दे इजाजत जाने की।

जैसे ही यीशू ने उन्हें दी अनुमति,
वे आत्माएं निकल जा घूसी सुअरों में,
समूचा रेवड़ ढलान से लुढ़कते-पुढ़कते,
दौड़ता हुआ जाकर गिरा झील में।

लकवे के रोगी को अच्छा करना

फिर यीशू लौट आया अपने नगर,
लोग एक लकवे के रोगी को वहाँ लाए।
जब यीशू ने उनके विश्वास को देखा,
कहा, हे बालक, तेरे पाप क्षमा पाए।

कहने लगे कुछ यहूदी धर्मशास्त्री,
यीशू परमेश्वर का अपमान कर रहा,
जानता था यीशू वे क्या सोच रहे थे,
कहा, क्यों तुम्हें बुरा विचार आ रहा।

पूछा उसने, क्या यह सहज नहीं,
यह कहने से कि खड़ा हो जा,
ताकि जान सको, मनुष्य का पुत्र,
कर सकता पृथ्वी पर पाप क्षमा।

यीशू ने लकवे के मारे से कहा,
खड़ा हो, बिस्तर उठा कर घर चला जा,
जब वह रोगी चल दिया घर को,
लोगों के विस्मय का ठिकाना न रहा।

यीशू का मत्ती को चुनना

चुंगी की चौकी पर एक व्यक्ति को,
जिसका नाम था मत्ती, यीशू ने देखा,
कहा उससे, "मेरे पीछे चला आ",
वह उठा, यीशू के पीछे हो लिया।

चुंगी वसुलने वाले और पापियों के साथ,
यीशू मत्ती के घर भोजन कर रहा था,
उस वक्त उसे वहाँ फरीसियों ने देखा,
पूछने लगे, यीशू वहाँ क्यों खाना खा रहा।

यह सुनकर यीशू ने पूछा उनसे,
किसको चिकित्सक की होती आवश्यकता,
वह जो स्वस्थ है, उसको नहीं चाहिए,
पर रोगी को चाहिये उसकी सहायता।

इसलिये तुम जाओ और समझो कि,
क्या अर्थ है शास्त्र के इस वचन का,
मैं बलिदान नहीं बल्कि दया चाहता हूँ,
धार्मियों की नही पापियों को बुलाने आया।

यीशू दूसरे यहूदी धर्म-नेताओं से भिन्न है

फिर बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के शिष्य,
यीशू के पास गये और पूछा उससे,
हम और फरीसी क्यों करते उपवास,
और तेरे अनुयायी उपवास क्यों नहीं करते।

कहा यीशू ने, दुल्हे के साथी,
जब तक दूल्हा हो शोक न करेंगे,
किन्तु जब छीन लिया जायेगा दूल्हा,
तब वे दुखी होंगे उपवास करेंगे।

बिना सिकुड़े नये कपड़े का पैबंद,
पुरानी पोशाक पर कोई नहीं लगाता,
फाड़ देगा वह और अधिक पोशाक को,
कपड़े की खोंच को और बढ़ा देगा।

फट जाती हैं पुरानी मशकें,
नया दाखरस उनमें भरने से,
इसलिये नया दाखरस भरते हैं,
लोग केवल नयी मशकों में।

मृत लड़की को जीवन दान और रोगी स्त्री को चंगा करना

तभी सभा भवन का एक मुखिया आया,
यीशू से कहा मर गयी है मेरी बेटी,
तूँ चल कर उस पर रख दे हाथ,
तो फिर से जी उठेगी मेरी बेटी।

वहीं एक रोगी स्त्री खड़ी थी,
छू लिया जिसने वस्त्र यीशू का,
मन में था विश्वास ठीक हो जाएगी,
यीशू ने कहा, तेरा विश्वास फल उठा।

जब पहुँचा यीशू मुखिया के घर,
कहा, मरी नहीं सो रही है लड़की,
जाकर यीशू ने पकड़ा जो हाथ,
उठ कर खड़ी हो गयी वह लड़की।

यीशू द्वारा बहुतों का उपचार

यीशू जब वहाँ से जाने लगा,
तो दो अन्धे उसके पीछे हो लिये,
यीशू ने जो छूई उनकी आँखे,
फिर से वे दोनों देखने लगे।

कुछ लोग लाये एक गूँगे व्यक्ति को,
जिसमें समाई थी एक दुष्ट आत्मा,
निकाल दिया जब उस दुष्टात्मा को,
तो वह गूँगा बोलने लग गया।

तब भीड़ ने ये अचरज से कहा,
देखी नहीं कभी ऐसी बातें इस्राएल में,
किन्तु फरीसी लोग कह रहे थे,
वह पाता है सहायता शैतान से।

यीशू को लोगों पर खेद

यहूदी धर्म-सभाओं में उपदेश देता,
परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार देता,
यीशू घूमता था नगर-नगर,
लोगों के संतापों को दूर करता।

भर जाता करुणा से लोगों के प्रति,
सताये हुये, असहायों को देखकर,
कहा यीशू ने, प्रभु से करो प्रार्थना,
वह करे सहायता सहायकों को भेजकर।

सुसमाचार के प्रचार के लिये शिष्यों को भेजना

यीशू ने बारह शिष्यों को बुलाया,
और उन्हें उसने शक्ति प्रदान की,
जिससे कर सकें वे लोगों की सेवा,
फिर बाहर जाने की उन्हें आज्ञा दी।

उन बारह शिष्यों के नाम हैं,
शमौन (पतरस) और अंद्रियास भाई उसका,
फिलिप्पुस, बरतुल्लै, थोमा और मत्ती,
जब्दी के बेटे याकूब और यूहन्ना।

हलफै का बेटा याकूब और तद्दै,
शमौन जिलौती* और यहूदा इस्करियोती,
ये थे यीशू के वे बारह शिष्य,
जिन्हें यीशू से शक्तियां मिलीं थीं।

कहा यीशू ने वे लोग न जायें,
गैर यहूदी क्षेत्र या सामरी नगर में,
जाएं बस इस्राएल के परिवार के पास,
और खोई हुई भेड़ों को उपदेश दें।

* जिलौती– एक कट्टर पंथी राजनीतिक दल का नाम था, जिसका वह सदस्य हुआ करता था।

ठीक करें बीमारों को वो,
मरे हुओं को जीवन दें,
करें कोढ़ियो को वो चंगा,
और दुष्टात्माओं को दूर करें।

बाटों मुक्त भाव से आशीष प्रभु की,
कुछ बदले में उसके ना चाहो,
साथ न रखो सोना, चाँदी या सिक्का,
मजदूर का हक बस खाने पर जानों।

ठहरो किसी विश्वासपात्र के घर,
कहो उनसे, तुम्हें शांति मिले,
सुपात्रों के साथ तुम्हारा आशीर्वाद रहेगा,
वरना लौट आएगा वापस तुम्हें।

यदि कोई तुम्हारी करे अनदेखी,
छोड़ दो तुम वह घर या नगर,
मैं सत्य कहता हूँ न्याय के दिन,
सदोम और अमोरा* से वह होगा बदतर।

अपने प्रेरितों को यीशू की चेतावनी

जैसे भेड़ों को भेड़ियों के बीच,
ऐसे ही मैं भेज रहा हूँ तुम्हें,
सो सांपो से चतुर, कबूतर से भोले,
बनकर रहना है उनके बीच तुम्हें।

सावधान रहना लोगों से तुम,
वे बंदी बना सौंप देगें तुम्हें,
अपने धर्म-सभा भवनों में ले जाकर,
कोड़ों से पिटवायेगें वे लोग तुम्हें।

शासको और राजाओं के सामने तुम्हें,
कहा जाएगा दो मेरे बारे में गवाही,

पर तुम चिन्ता मत करना क्योंकि,
परमपिता की आत्मा बोलेगी तुम्हारी जुबानी।

भाई भाई को पकड़वा कर मरवा डालेंगे,
माता-पिता और बच्चे विरुद्ध हो जायेंगे,
घृणा करेंगे लोग तुमसे मेरे कारण,
उद्धार होगा उन्हीं का जो टिके रहेंगे।

भाग जाना एक नगर से दूसरे को,
जब तुम्हें उनके द्वारा सताया जाएगा,
इससे पहले कि तुम पूरा इस्राएल घूमों,
मनुष्य का पुत्र दुबारा आ लेगा।

शिष्य गुरु से, दास स्वामी से,
बड़ा न होता, बराबर हो सकता,
जब वे गृहस्वामी को ही बैल्ज़ाबुल** कहते,
औरों से व्यवहार करेंगे, और भी बुरा।

प्रभु से डरो, लोगों से नहीं

इसलिये डरना मत उनसे तुम क्योंकि,
जो कुछ छिपा है, सब उजागर होगा,
मैं अंधेरे में जो तुमसे कहता हूँ,
उसे तुम्हें उजाले में कहना होगा।

डरो मत उनसे, जो कष्ट दे सकते,
तुम्हारी आत्मा को नहीं मार सकते वो,
लेकिन डरो बस उस परमेश्वर से,
तुम्हारे र्स्वस्व पर अधिकार रखता है जो।

जब एक मामूली सी चिड़िया भी,
गिर नहीं सकती उसकी इच्छा के बिना,
तुम तो उससे कहीं अधिक हो,
तुम्हारे सिर का है एक-एक बाल गिना।

---

* सदोम और अमोरा– वहां के निवासियों को दण्ड देने के लिये प्रभु ने उन्हें नष्ट कर दिया था।

** बैल्ज़ाबुल– दुष्टात्माओं के राजा शैतान का नाम।

यीशू में विश्वास

जो अपनायेगा मुझे सब के सामने,
मैं उसे अपनाऊँगा परमपिता के सामने,
किन्तु जो नकारेगा औरों के सामने मुझे,
मैं भी उसे नकारूँगा परमपिता के सामने।

मत सोचो मैं शांति लाने आया हूँ,
बल्कि आया हूँ तलवार का आवाहन करने,
बेटे को पिता के विरोध में और,
पुत्री को माँ के विरोध में करने।

जो करता औरों से ज्यादा प्रेम,
वह मेरा होने के योग्य नहीं,
या अपनी यातनाओं को क्रूस उठा,
जो हो लेता मेरे पीछे नहीं।

जो जान बचाने की करता चेष्टा,
वह अपने प्राणों को खो देगा,
किन्तु जो देगा मेरे लिये जान,
वह एक नया जीवन पायेगा।

जो व्यक्ति अपनाता है तुम्हें,
वह व्यक्ति वास्तव में मुझे अपनाता,
और जो अपनाता है मुझको,
मुझे भेजने वाले परमेश्वर को अपनाता।

अपनाता नबी को जो नबी जानकर,
नबी को मिलने वाला प्रतिफल पायेगा,
मेरे अनुयायी की थोड़ी सी भी सेवा,
जो भी करेगा उसका प्रतिफल पायेगा।

यीशू और बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना

यूहन्ना ने सुने जब यीशू के करतब,
भेजकर पूछवाया शिष्यों को अपने,
क्या तूँ वही है, ''जो आने वाला था'',
या हम किसी और की बाट जोहें।

जो देख सुन रहे हो जाकर बतलाओ,
यूहन्ना के शिष्यों से कहा यीशू ने,

फिर यूहन्ना के बारे में लोगों को कहा,
किसी नबी से ज्यादा है जिसे देखा तुमने।

यह वही है जिसके बारे में,
लिखा गया है यह शास्त्रों में,
जो मेरे लिये राह बनायेगा,
भेज रहा हूँ उसे तुमसे पहले।

मैं सत्य कहता हूँ कि यूहन्ना से,
पैदा नहीं हुआ कोई मनुष्य बड़ा,
फिर भी स्वर्ग के राज्य में है,
छोटे से छोटा भी यूहन्ना से बड़ा।

यूहन्ना के आने तक की भविष्यवाणियां,
कहा गया था यह उनमें,
यह यूहन्ना वही एलिय्याह है,
जो सुन सकता है इसे सुने।

जब आया बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना,
जो औरों जैसे खाता-पिता न था,
उसमें दुष्टात्मा समाई है कोई,
उसके लिये लोगों ने कहा था।

फिर मनुष्य का पुत्र आया,
लोगों ने कहा उसे मित्र पापियों का,
उसके कामों से ही सिद्ध होती है,
उसकी बुद्धि की उत्तमता।

अविश्वासियों को यीशू की चेतावनी

धिक्कारा यीशू ने उन नगरों को,
जहाँ उसने चमत्कार किये थे,
पाप करना नहीं छोड़ा था उन्होंने,
ना ही उनके मन फिरे थे।

यीशू को अपनाने वालों को सुख चैन का वचन

तब यीशू बोला, हे परम पिता,
तूँ है स्वामी स्वर्ग और धरती का,
तेरी वन्दना करता हूँ मैं क्योंकि तूँने,
इन बातों को ज्ञानियों से छिपा रखा।

और भोले भाले हैं जो लोग,
उन पर तूँने इनको प्रकट किया,
क्योंकि तूँने इसे ही जाना ठीक,
हे परम पिता, यह इसलिये हुआ।

सौंपा सब मुझे परम पिता ने,
परम पिता ही जानता पुत्र को,
ऐसे ही पुत्र जानता परमपिता को,
या जिस पर वह प्रकट करे उसको।

ओ थके-माँदे बोझ से दबे लोगों,
मेरे पास आओ, तुम्हें सुख चैन दूँगा,
मुझ से सीखो क्योंकि मैं सरल हूँ,
तुम्हें भी अपने लिये सुख चैन मिलेगा।

यहूदियों द्वारा यीशू और उसके शिष्यों की आलोचना

लगभग उसी समय सब्त के दिन यीशू,
जा रहा था अनाज के खेतों से होकर,
भूख लगी जो यीशू के शिष्यों को,
खाने लगे गेहूँ की कुछ बालें तोड़ कर।

देखा फरीसियों ने जब ऐसा होते,
कहा, तेरे शिष्य गलत कर रहे,
इस पर यीशू ने उनसे पूछा,
दाऊद इत्यादि थे क्या कर रहे।

जब लगी उन लोगों को भूख,
परमेश्वर की पवित्र रोटियां खायी उन्होंने,
यदि जानते तुम सही अर्थ शास्त्रों का,
जो निर्दोष हैं, दोषी ठहराते न उन्हें।

कहता हूँ मैं तुमसे, यहाँ कोई है,
जो है बड़ा मन्दिर से भी,
हाँ, मनुष्य का पुत्र है,
स्वामी, सब्त के दिन का भी।

यीशू द्वारा सूखे हाथ का अच्छा किया जाना

तब यीशू पहुँचा एक यूहदी सभागार में,
वहाँ एक व्यक्ति का हाथ था सूखा,
सब्त के दिन किसी को चंगा करना,
क्या यह उचित है, लोगों ने पूछा।

चाहते थे वे यीशू पर दोष लगाना,
किन्तु यीशू ने यह पूछा उनसे,
सब्त के दिन अपनी इकलौती भेड़ को,
गढ्ढे में गिरने पर क्या निकालोगे ना उसे।

फिर आदमी तो अधिक महत्वपूर्ण है,
उसकी भलाई पर नहीं कोई पाबन्दी,
यीशू ने किया उस व्यक्ति को चंगा,
और कोई दूसरी तरकीब ढूँढने लगे फरीसी।

यीशू वही करता है जिसके लिये परमेश्वर ने उसे चुना

चल पड़ा यीशू यह जान कर,
बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली,
लोगों को उसके बारे में न बतायें,
दी उन लोगों को उसने चेतावनी।

यीशू में परमेश्वर की शक्ति

फिर लाये लोग यीशू के पास,
एक अन्धे को जो गूँगा भी था,
दुष्ट आत्मा थी उस पर सवार,
पर यीशू ने उसे कर दिया चँगा।

कहा फरीसियों ने बैल्ज़ाबुल के सहारे,
यीशू निकालता है दुष्ट आत्माओं को,
इस पर कहा यीशू ने यह उनसे,
क्यों निकालेगा बाहर शैतान, शैतान को।

फिर कोई किसी बलवान के घर से,
कैसे उसका माल चुरा सकता,
बाँधना होगा पहले बलवान को उसे,
तभी वह उसको लूट सकता।

जो व्यक्ति मेरे साथ नहीं है,
वह व्यक्ति फिर विरोधी है मेरा,
भेड़ें समेटने में मदद नहीं करता,
वह व्यक्ति भेड़ों को रहा बिखरा।

कर दिये जायेंगे सब पाप क्षमा,
सिवाय एक आत्मा की निन्दा के,
कभी क्षमा नहीं किया जायेगा वह,
बोलता विरोध में जो पवित्र आत्मा के।

व्यक्ति अपने कर्मों से जाना जाता है

अच्छा फल मिलता अच्छे पेड़ से,
जिसका जैसा मन, वह व्यक्ति वैसा,
देना होगा हिसाब हर व्यक्ति को,
तेरी बातों पर होगा तेरा फैसला।

यीशू से आश्चर्य चिन्ह की माँग

फिर कुछ धर्मशास्त्रियों और फरीसियों ने कहा,
हम तुम्हें आश्चर्य चिन्ह प्रकट करते देखना चाहते,
यीशू ने कहा इस दुराचारी पीढ़ी के लोग,
मुझे आश्चर्य चिन्ह प्रकट करते देखना चाहते।

पर योना के आश्चर्य चिन्ह को छोड़,
और कोई चिन्ह उन्हें नहीं दिया जायेगा,
जैसे योना रहा मछली के पेट में,
मनुष्य का पुत्र धरती के भीतर रहेगा।

न्याय के दिन निनेवा के निवासी,
दोष देंगे इस पीढ़ी के लोगों को,
योना के उपदेशों से मन फिराया,
और योना से बड़ा कोई मौजूद है यहाँ तो।

इसी तरह खड़ी होगी दक्षिण की रानी,
और ठहरायेगी अपराधी इन लोगों को,
वह आयी थी सुनने सुलैमान का उपदेश,
और उससे भी बड़ा मौजूद है कोई यहाँ तो।

लोगों में शैतान

सुख की खोज में जब कोई दुष्टात्मा,
छोड़ कर जाती है किसी व्यक्ति को,
आराम की जगह उसे नहीं मिल पाती,
अन्य दुष्टात्माओं को वापस लाती साथ में वो।

फिर वे सब वहाँ आकर रहने लगती,
कर देती बुरी दशा उस व्यक्ति की,
आज की इस बुरी पीढ़ी के लोग,
उनकी दशा भी होगी ऐसी ही।

यीशू के अनुयायी ही उसका परिवार

यीशू भीड़ से बातें कर रहा था,
तभी उसकी माता और बन्धु वहाँ आये,
किसी ने जो यीशू को यह बताया,
कहा यीशू ने कौन हैं अपने या पराये।

फिर अपने अनुयायियों को इंगित कर कहा,
ये हैं मेरे भाई-बंधु और माँ,
जो मेरे पिता की इच्छा अनुसार चलता,
वही है मेरा भाई, बहन और माँ।

किसान और बीज का दृष्टान्त

बतलायी बहुत सी बातें यीशू ने,
दृष्टान्त देकर भीड़ को समझाया,
एक किसान का उदाहरण लेकर,
यीशू ने यह दृष्टान्त सुनाया।

एक किसान बीज लेने को निकला,
इधर-उधर गिर पड़े कुछ बीज,
कुछ बीज गिरे जो राह किनारें,
चिड़िया चुग गई आकर वो बीज।

कुछ बीज गिरे चट्टानी धरती पर,
तुरन्त उगे, झुलस गये दिन में,
कुछ बीज कटींली झाड़ियों में गिरे,
वे पौधे दबोच लिये झाड़ियों ने।

जो थोड़े बीज अच्छी धरती पर गिरे,
अच्छी फसल बन वो बीज उगे,
फसल उगी कई गुना ज्यादा,
जो सुन सकता है वह सुन ले।

दृष्टान्त कथाओं का प्रयोजन

यीशू के शिष्यों ने पूछा यीशू से,
क्यों प्रयोग तूँ दृष्टान्तों का करता,
कहा यीशू ने स्वर्ग के राज्य के भेद,
अधिकार दिया गया बस तुम्हें जानने का।

क्योंकि जिसके पास है थोड़ा बहुत,
उसे और भी अधिक दिया जायेगा,
किन्तु जिसके पास कुछ भी नहीं है,
उससे जो भी है, वो लिया जायेगा।

इसलिये बात करता हूँ मैं उनसे,
दृष्टान्त कथाओं का प्रयोग करते हुए,
वास्तव में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता,
यद्यपि वे दिखते है कुछ देखते हुए।

किन्तु तुम भाग्यवान हो क्योंकि तुम,
देख-सुन सकते, बहुत सी बातों को,
भविष्यवक्ता और धर्मात्मा सुन ना सके,
सुन रहे हो तुम उन बातों को।

बीज बोने का दृष्टान्त–कथा का अर्थ

सुनो उस बीज वाले दृष्टान्त का अर्थ,
वह बीज जो राह किनारे गिरा था,
समझते नहीं जो स्वर्ग के राज्य का सुसंदेश,
वह बीज ऐसे ही लोगों को दर्शाता।

ऐसे लोगों के मन में,
जो कुछ भी अच्छी बातें आती,
बदी आकर उन लोगों के मन से,
जो कुछ भी उगा था, उखाड़ ले जाती।

चट्टानी धरती पर गिरने वाले बीज,
क्षणिक आनन्द पाने वाले को दर्शाते,
जमने नहीं पाती उनके भीतर जड़ें,
जल्दी ही वे लोग डगमगा जाते।

काँटों में गिरे बीज का तात्पर्य उनसे,
जो संसार की चिंताओं में डूबे रहते,
दबा देता धन का लोभ सुसंदेश को,
और वे व्यक्ति सफलता नहीं पा पाते।

अच्छी धरती पर गिरा बीज,
प्रतीक है वह उन लोगों का,
सुसंदेश को सुन, समझता उसको,
कई गुना ज्यादा सफलता पाता।

गेहूँ और खरपतवार का दृष्टान्त

एक ओर दृष्टान्त रखा यीशू ने,
उस व्यक्ति का जिसने अच्छा बीज बोया,
पर जब सब लोग सो रहे थे,
शत्रु ने गेहूँ के बीच खरपतवार बोया।

जब खेत में खरपतवार लगी दिखने,
दासों ने जाकर मालिक को बताया,
कहीं साथ में गेहूँ उखड़ न जाये,
खरपतवार उखाड़ने को मना करवाया।

कहा उसने, जब तक फसल पके,
दोनों को साथ-साथ दो बढ़ने,
फिर खरपतवार की पुलियां बना जला दो,
बटोर कर रखो गेहूँ खत्ती में।

अन्य दृष्टान्त-कथाएं

यीशू ने कहा, स्वर्ग का राज्य,
होता छोटे से राई के बीज समान,
प्रस्फुटित हो एक बड़ा पेड़ बन जाता,
बनता पक्षियों का वह शरण स्थान।

स्वर्ग का राज्य है खमीर की तरह,
मिलाया गया जिसे तीन भाग आटे में,
तब तक उसे रख छोड़ा गया,
बदल गया जब तक सब खमीर में।

यीशू ने कहा सब कुछ दृष्टान्तों द्वारा,
ताकि भविष्यवक्ताओं द्वारा कहा हो पूरा,
"मैं दृष्टान्त कथाओं द्वारा मुँह खोलूँगा,
ताकि उजागर हो जो आदिकाल से छिपा।"*

गेहूँ और खरपतवार के दृष्टान्त की व्याख्या

फिर यीशू से उसके शिष्यों ने पूछा,
अर्थ गेहूँ और खरपतवार के दृष्टान्त का,
कहा यीशू ने मनुष्य का पुत्र है,
जिसने वह उत्तम बीज बोया था।

और वह खेत यह संसार है,
अच्छे बीज, स्वर्ग के राज्य के लोग,
और जो हैं संतान शैतान की,
खरपतवार की तरह हैं वो लोग।

शैतान है जिसने वे खरपतवार बीजे थे,
जगत का अंत है कटाई का समय,
कटाई करने वाले है स्वर्गदूत जो,
झोकेंगे भाड़ में दुष्टों को उस समय।

धन का भण्डार और मोती का दृष्टान्त

स्वर्ग का राज्य, खेत में गड़े धन सा,
जिसे किसी ने पाया, वहीं गाड़ दिया,
प्रसन्न हो, बेच दिया उसने अपना सब,
और फिर वह खेत मोल ले लिया।

स्वर्ग का राज्य, उस व्यापारी के समान,
जिसे खोजने पर मिला हो अनमोल मोती,
उसने बेच डाला अपना सब ले जाकर,
और उससे खरीद लिया उसने वह मोती।

मछली पकड़ने का जाल

मछली पकड़ने को फेंके गए,
जाल जैसा भी है स्वर्ग का राज्य,
मछलियां पकड़ अपनी टोकरी में रख लीं,
बेकार मछलियां फेंक दी छाँट-छाँट।

* भजन संहिता–78:2

ऐसा ही होगा सृष्टि के अन्त में,
जब स्वर्गदूत पापियों को अलग कर देंगे,
जहाँ बस रोना और दाँत पीसना होगा,
उन्हें धधकते भाड़ में झोंक देंगे।

देखो, इसलिये हर वह धर्मशास्त्री जो,
परमेश्वर के राज्य को है जानता,
ऐसे गृहस्वामी जैसा है जो कोठार से,
नई-पुरानी वस्तुओं को बाहर निकालता।

यीशू का अपने देश लौटना

फिर यीशू चल दिया अपने देश को,
धर्म-सभाओं में उपदेश वो देने लगा,
आश्चर्य होता था उन्हें उसकी बातों पर,
कहाँ से उसे यह ज्ञान मिला।

जाना उसे बस मरियम का बेटा,
सो उन्होंने उसे स्वीकार न किया,
कहा यीशू ने कभी किसी नबी को,
अपने ही लोगों ने आदर न दिया।

हेरोदेस का यीशू के बारे में सुनना

गलील के शासक हेरोदेस ने जब,
यीशू के बारे में सुना, तो कहा,
यह बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना है,
जो मरे हुओं में से फिर जी उठा।

यूहन्ना की हत्या

यह वही हेरोदेस था यूहन्ना को जिसने,
जंजीरों में बाँध डाला था जेल में,
हिरोदियास जो पहले उसकी भाभी थी,
किया था यह उसके कहने से उसने।

यूहन्ना अक्सर उससे कहा करता था,
उसके साथ नहीं रहना चाहिये तुझे,
सो हेरोदेस उसको मार डालना चाहता था,
पर डरता था वह लोगों से।

पर जब हेरोदेस का जन्मदिन आया,
तो हेरोदेस और मेहमानों के सामने,
हिरोदियास की बेटी ने ऐसा नृत्य किया,
जो चाहे माँग लो कहा हेरोदेस ने।

अपनी माँ के सिखाने में आकर,
उसने यूहन्ना का सिर माँग लिया,
यद्यपि राजा बहुत दुखी था लेकिन,
उसने वैसा करने का आदेश दे दिया।

काट लाया गया यूहन्ना का सिर,
जिसे बेटी ने माँ को पेश किया,
दफनाया धड़ को यूहन्ना के अनुयायियों ने,
फिर यीशू को यह सन्देश दिया।

यीशू का पाँच हजार से अधिक को खाना खिलाना

चल दिया यीशू अकेला एक ओर,
पर भीड़ ने उसको आ घेरा,
दया आयी यीशू को उन पर तो उसने,
उनके बीमारों को अच्छा किया।

शाम हुई तो आकर शिष्यों ने कहा,
तूँ अब भीड़ को विदा कर दे,
पर यीशू ने अपने शिष्यों से कहा,
दो इन्हें तुम कुछ खाने के लिये।

बस पाँच रोटी और दो मछलियां,
कहा शिष्यों ने है हमारे पास,
यीशू ने कहा, चिन्ता न करो,
जो कुछ है ले आओ मेरे पास।

फिर स्वर्ग की ओर देख यीशू ने,
भोजन के लिये किया परमेश्वर का शुक्रिया,
फिर रोटियों के टुकड़े तोड़ कर।
उन्हें भीड़ में बितरित कर दिया।

सभी लोगों ने छक कर खाया,
जो बचा, बारह टोकरियां भरी उससे,
स्त्रियाँ और बच्चों को छोड़ कर,
वहाँ खाने वाले कोई पाँच हजार थे।

झील पर यीशू का चलना

उसके तुरंत बाद यीशू ने शिष्यों को,
नाँव पर चढ़ा, पार जाने को कहा,
और स्वयं भीड़ को विदा कर के वह,
एक पहाड़ पर प्रार्थना करने चल पड़ा।

साँझ तक वह नाँव किनारे से,
कई मील दूर जा चुकी थी,
चल रही थी सामने की हवा,
थपेड़े खा नाँव डगमगा रही थी।

भोर से पहले शिष्यों ने देखा,
झील में पानी पर चलता एक साया,
घबराये वे तो यीशू ने कहा,
यह मैं हूँ जो तुम्हारे पास आया।

कहा पतरस ने, प्रभु यदि यह तूँ है,
तो कह मुझे पानी पर चल कर आने को,
कहा यीशू ने, चला आ, ओ पतरस,
तो पानी पर चलकर आने लगा वो।

तेज हवा देखी तो घबराया पतरस,
डूबने लगा और चिल्लाया प्रभु रक्षा कर,
ओ अल्प विश्वासी, तूँने क्यों संदेह किया,
कहा यीशू ने उसे सँभाल कर।

चढ़ आये वे दोनों नाँव पर,
और वह तेज हवा भी थम गयी,
तूँ सचमुच परमेश्वर का पुत्र है,
यह कह लोगों ने उसकी उपासना की।

गन्नेसरत के तट पर उतरे वो,
हो गये सब आसपास के लोग इकट्ठा,
छू लियो जिन्होंने यीशू का वस्त्र,
हो गये वो सब रोगी चँगा।

मनुष्य के बनाये नियमों से परमेश्वर का विधान बड़ा है।

फिर कुछ फरीसी और यहूदी धर्मशास्त्री,
यरूशलेम से आये यीशू के पास,
पूछा यीशू से क्यों तेरे अनुयायी,
नहीं धोते खाना खाने से पहले हाथ।

हमारे पुरखों के रीति-रिवाजों का,
क्यों नहीं करते हैं पालन वो,
यीशू ने कहा, रीति-रिवाजों के कारण,
तुम परमेश्वर के विधि को तोड़ते हो क्यों।

क्योंकि परमेश्वर ने तो कहा था,
आदर कर तूँ अपने माता-पिता का,
मार दिया जाना चाहिये उसे अवश्य,
जो अनादर करता हो माता-पिता का।

किन्तु तुम कहते हो जो कोई,
ऐसा कहे अपने माता-पिता से,
मैं परमेश्वर को सब अर्पित कर चुका,
सहायता नहीं कर सकता तुम्हारी इसलिये।

अपने माता-पिता का आदर करने की,
आवश्यकता नहीं ऐसे व्यक्ति को,
इस प्रकार अपने रीति-रिवाजों के कारण,
परमेश्वर का आदेश तुम नकारते हो।

बोला यीशू, ओ ढोंगियो, तुम्हारे बारे में,
ठीक ही भविष्यवाणी की थी यशायाह ने,
ये मेरा केवल ओठों से आदर करते,
पर दूर रहते हैं सदा मन उनके।

फिर भीड़ को यीशू ने पास बुलाया,
कहा, मनुष्य के मुख में जो जाता,
अपवित्र नहीं करता वह उसको,
पर शब्दों द्वारा वह अपवित्र हो जाता।

कहा यीशू के शिष्यों ने यीशू से,
फरीसियों ने माना है बहुत बुरा,
यीशू बोला, उखाड़ फेंका जायेगा हर पौधा,
जो परमेश्वर की ओर से नहीं लगा।

कहा यीशू ने छोड़ो उन्हें,
अन्धों के नेता वो खुद हैं अन्धें,
अन्धे को यदि अन्धा राह दिखाता,
दोनों ही जाकर गढ्डे में गिरते।

जो मुँह में जाता, पहुँचता पेट में,
फिर विष्ठा बन बाहर निकल जाता,
पर मुँह की बात निकलती मन से,
यही है जो उसको अपवित्र बनाता।

क्योंकि सभी बुरे विचार, हत्या, दुराचार,
झूठ, निन्दा आदि बुराइयां आती सब मन से,
इन्हीं बुराइयों से कोई बनता अपवित्र,
अपवित्र न होता, हाथ नहीं धोने से।

गैर यहूदी स्त्री की सहायता

सूर और सैदा की ओर चला यीशू,
एक कनानी स्त्री करने लगी विनती,
उसकी पुत्री पर सवार थी दुष्टात्मा,
पर यीशू ने न कहा कुछ भी।

आग्रह किया जब यीशू के शिष्यों ने,
तो यीशू ने अपने शिष्यों को समझाया,
इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के अलावा,
मुझे किसी और के लिये नहीं भेजा गया।

पर उस स्त्री ने पीछा न छोड़ा,
तब यीशू ने उत्तर में कहा,
बच्चों का खाना लेकर खाने को,
कुत्तों के आगे डालना नहीं अच्छा।

वह बोली, यह ठीक है प्रभु लेकिन,
स्वामी की मेज से गिरे चूरे से,
थोड़ा बहुत जो नीचे गिर जाता है,
घर के कुत्तें भी खा ही लेते उससे।

उस स्त्री का विश्वास देख कर,
कहा यीशू ने तेरा विश्वास है बड़ा,
तत्काल उसकी बेटी अच्छी हो गयी,
जब यीशू ने कहा, ऐसा हो जा।

यीशू का बहुतों को अच्छा करना

फिर यीशू झील गलील के किनारे पहुँचा,
और पहाड़ पर चढ़ देने लगा उपदेश,
बड़ी-बड़ी भीड़ अपंग लोगों को लेकर,
यीशू के चरणों में करने लगी पेश।

कर दिया चँगा उन्हें यीशू ने,
गूँगे बोलने और लँगड़े लोग चलने लगे,
अचरज से भर कर तब वे लोग,
इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

चार हजार से अधिक को भोजन

आया तरस यीशू को भीड़ पर,
तीन दिन से वो साथ थे उसके,
भूखा नहीं भेजना चाहता था यीशू,
रास्ते में भूख से वो गिर ना पड़ें।

सात रोटियाँ और कुछ छोटी मछलियाँ,
बस इतना ही था शिष्यों के पास,
यीशू ने भीड़ को बैठने को कहा,
और परमेश्वर को दिया धन्यवाद।

फिर उन रोटियों के टुकड़े कर,
शिष्यों को भीड़ में बाँटने को दिये,
लोग वे रोटियां खाते रहे तब तक,
जब तक खाते खाते थक न गए।

बचे हुए टुकड़ों से शिष्यों ने,
सात टोकरियाँ भर कर रख लीं,
स्त्रियां और बच्चों को छोड़ कर,
चार हजार थी पुरुषों की गिनती।

यहूदी नेताओं की चाल

फिर फरीसी और यहूदी लोगों ने,
कहा यीशू को चमत्कार करने को,
पर यीशू ने भगा दिया उन्हें,
क्योंकि वे परखना चाहते थे यीशू को।

यीशू की चेतावनी

झील के पार आये शिष्य यीशू के,
पर वे रोटी लाना भूल गये,
कहा यीशू ने फरीसियों और सदूकियों के,
खमीर से तुम लोग रहो बचे।

शिष्यों ने सोचा, हम रोटी न लाये,
शायद यीशू ने यह इसलिये कहा,
वे क्या सोचते हैं, जानता था यीशू,
याद दिलाई उन्हें वह रोटियाँ वाली घटना।

कहा, क्या तुम लोग भुल गये हो,
बस कुछ ही रोटियाँ थी तुम्हारे पास,
उन्हीं रोटियों से सब लोगों ने खाया,
फिर भी रोटियाँ बच रहीं उसके बाद।

कहा न तुम्हें रोटियों के लिये,
कहा तुम्हें उनके खमीर से बचने को,
तब समझे वो कि यीशू ने कहा,
उन्हें उनकी शिक्षाओं से बचने को।

यीशू मसीह है

जब यीशू कैसरिया फिलिप्पी में आया,
तो पूछा उसने अपने शिष्यों से,
मैं मनुष्य का पुत्र कौन हूँ,
क्या कहते हैं लोग यह तुमसे।

वे बोले, कुछ कहते हैं कि,
तूँ है बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना,
और कुछ कहते हैं तूँ एलिय्याह है,
या यिमर्याह जैसे कोई भविष्यवक्ता।

तब यीशू ने पूछा शिष्यों से,
तुम क्या कहते हो मैं कौन हूँ,
उत्तर दिया तब शमौन पतरस ने,
साक्षात परमेश्वर का पुत्र मसीह है तूँ।

कहा यीशू ने पतरस तूँ धन्य है,
क्योंकि तुझे यह परमपिता ने सुझाया,
जो कुछ तूँ करेगा, स्वीकारेगा परमेश्वर,
स्वर्ग के राज्य की तुझे दे रहा कुंजियाँ।

फिर यीशू ने कहा शिष्यों से,
यह बात वे किसी को न बतायें,
यीशू मसीह है जानते हैं वो,
यह राज सबसे वो रखें छिपाये।

यीशू द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

बताने लगा फिर शिष्यों को यीशू,
कि उसे यरूशलेम जाना चाहिये,
यहूदी धर्मशास्त्री, याजकों इत्यादि द्वारा,
पहुँचायी जायेगी जहाँ यातनाएं उसे।

उन लोगों द्वारा यातनाएं पहुँचाने के बाद,
मरवा दिया जाएगा उनके द्वारा यीशू,
फिर तीसरे दिन मरे हुओं में से,
फिर से जी उठ खड़ा होगा यीशू।

तब पतरस उसे एक ओर ले गया,
कहा, हे प्रभु, परमेश्वर दया करे,
तेरे साथ कभी ऐसा न हो,
तूँ हम लोगों के साथ बना रहे।

पर यीशू उससे मुड़ कर बोला,
पतरस, तूँ मेरे रास्ते से हट जा,
तूँ मेरे लिये अड़चन है, क्योंकि तूँ,
परमेश्वर सा नहीं, लोगों की तरह सोचता।

फिर यीशू ने अपने शिष्यों से कहा,
यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे,
तो वह अपने आप को भुलाकर,
अपना क्रूस स्वयं अपने हाथ उठाये।

बचाना चाहता है जो अपना जीवन,
उसे वह जीवन खोकर पाना होगा,
लेकिन जो मेरे लिये खोयेगा जीवन,
वो ही अपना जीवन बचा पाएगा।

दूतों सहित आयेगा मनुष्य का पुत्र,
अपने परमपिता की महिमा के साथ,
देगा हर किसी को वैसा ही फल,
जैसा होगा उसके कर्मों का हिसाब।

सत्य कहता हूँ, कुछ ऐसे हैं यहाँ,
जो तब तक नहीं मरेंगे,
जब तक वे मनुष्य के पुत्र को,
उसके राज्य में आते न देख लें।

तीन शिष्यों को मूसा और एलिय्याह के साथ यीशू का दर्शन

छः दिन बाद गया यीशू,
एकान्त में एक ऊँचे पहाड़ पर,
याकूब और उसका भाई यूहन्ना,
और यीशू के साथ था पतरस।

बदल गया वहाँ यीशू का रूप,
सूरज सा उसका मुख दमक रहा,
वस्त्र उसके प्रकाश से लगे चमचमाने,
फिर प्रकट हुए एलिय्याह और मूसा।

अभिभूत हो पतरस बोला यीशू से,
तूँ कहे तो मंडप बना दूं तीनों का,
तभी एक बादल ने ढक लिया उनको,
और बादल से एक आकाशवाणी को सुना।

यह मेरा प्रिय पुत्र है,
बहुत प्रसन्न हूँ मैं इससे,
और यह भी की ''इसकी सुनो'',
सुनायी दी यह वाणी बादल से।

सहम गये सब शिष्य यह सुनकर,
धरती पर औंधे मुँह गिर पड़े,
यीशू ने जाकर जब छुआ उनको,
देखा पास में यीशू को खड़े।

कहा यीशू ने जो तुमने देखा,
बतलाना ना यह तब तक किसी को,
जब तक फिर जिला न दिया जाय,
मरे हुओं में से मनुष्य के पुत्र को।

पूछा उन्होंने क्यों धर्मशास्त्री यह कहते,
निश्चित है एलिय्याह का पहले आना,
कहा यीशू ने एलिय्याह आ चुका है,
पर लोगों ने उसे नहीं पहचाना।

किया उसके साथ जैसा चाहा,
वैसे ही सतायेंगे वे मनुष्य के पुत्र को,
तब समझे शिष्य, यीशू के शब्द,
इंगित कर रहे थे यूहन्ना को।

रोगी लड़के का अच्छा किया जाना

एक व्यक्ति दंडवत कर यीशू से बोला,
हे प्रभु, दया कर मेरे बेटे पर,
ले गया उसे तेरे शिष्यों के पास,
चँगा न कर सके वे उसको मगर।

उत्तर में तब यीशू ने कहा,
अरे भटके हुए अविश्वासी लोगों,
मैं कितने समय तुम्हारे साथ और रहूँगा,
लाओ मेरे पास उस लड़के को।

फिर यीशू ने आदेश दिया,
अरी ओ दुष्टात्मा बाहर निकल जा,
तुरंत वह आत्मा बाहर निकल गयी,
और वह लड़का हो गया चंगा।

फिर उसके शिष्यों ने अकेले में पूछा,
हम क्यों दुष्टात्मा बाहर निकाल नहीं पाये,
कहा यीशू ने तुममें विश्वास की कमी है,
इसलिये लड़के को चंगा न कर पाये।

यदि तुममें हो राइ भर भी विश्वास,
तो पहाड़ भी कहने से चलने लगेगा,
होगा वही जो तुम विश्वास से कहोगे,
तुम्हारे लिये असम्भव कुछ भी न रहेगा।

यीशू का अपनी मृत्यु के बारे में बताना

जब यीशू से शिष्य गलील में मिले,
कहा यीशू ने मनुष्य के पुत्र को,
मार डाला जाएगा मनुष्यों के ही द्वारा,
पर तीसरे दिन फिर जी उठेगा वो।

कर का भुगतान

जब यीशू और शिष्य कफरनहूम में आये,
मंदिर के कर वसूलने वालों ने पूछा,

पूछा पतरस से उन्होंने क्या तेरा गुरु,
दो करम का मंदिर का कर नहीं देता।

कहा पतरस ने, वह देता है कर,
और अपने घर वापस वह लौटा,
कहा उसके बोलने से पहले यीशू ने,
क्या कोई अपने बच्चों से कर लेता।

फिर कहा पतरस से झील पर जा,
और जो मछली आये तेरी पकड़ में,
उसका मुँह खोलना, चार दरम मिलेंगे,
दे देना उन्हें तूँ कर के रूप में।

सबसे बड़ा कौन

तब शिष्यों ने यीशू से पूछा,
कौन सबसे बड़ा स्वर्ग के राज्य में,
कहा यीशू ने बच्चे के समान नम्र,
जो हो, वही सबसे बड़ा है उनमें।

स्वीकारता जो उस बालक समान व्यक्ति को,
वह वास्तव में मुझे ही स्वीकारता,
बेहतर है उसे त्याग दिया जाये,
जो उसके रास्ते की बनता बाधा।

खोई भेड़ की दृष्टान्त कथा

सो मेरे इन मासूम अनूयायियों में से,
तुच्छ नहीं समझना किसी को भी,
बताता हूँ तुम्हें, उनके रक्षक देवदूतों की,
पहुँच लगातार परमपिता तक रहती।

यदि सौ भेंड़े हो किसी के पास,
और भटक जाये कोई एक उनमें,
तो क्या निन्यानवें को वहीं छोड़कर,
जाएगा नहीं वह खोई भेड़ ढूढंने।

और जब वह उसे मिल जाएगी,
होगा वह अधिक प्रसन्न उसे पाकर,
बजाय उनके जो खोई नहीं थी,
ले आएगा उसे कंधों पर चढ़ाकर।

इसी तरह स्वर्ग में स्थित,
क्या तुम्हारा पिता यह नहीं चाहता,
कि मेरे इन अबोध अनुनायियों में से,
कोई भी एक न रहे भटका।

जब कोई तेरा बुरा करे

यदि तेरा बन्धु तेरे साथ,
व्यवहार कोई बुरा करता,
तो अकेले में जाकर आपस में ही,
उसे तूँ उसका दोष बता।

यदि वह तेरी सुन ले तो,
तूँने अपने बंधु को फिर जीत लिया,
पर यदि वह तेरी न सुने तो,
दो एक गवाह को साथ ले जा।

यदि वह उनकी भी न सुने,
तो तूँ बता दे कलीसिया को,
यदि वो उसकी भी न सुने तो,
तो मान उसे जैसे विधर्मी हो वो।

जो कुछ तुम धरती पर बाँधोगे,
स्वर्ग में प्रभु द्वारा बाँधा जायेगा,
और जिस किसी को धरती पर छोड़ोगे,
स्वर्ग में परमेश्वर द्वारा छोड़ा जायेगा।

तुम में से कुछ सहमत हो कर,
यदि माँगोगे कुछ मेरे परमपिता से,
तो तुम्हारे लिये उसे वह पूरा करेगा,
और अपने साथ ही पाओगे तुम मुझे।

क्षमा न करने वाले दास की दृष्टान्त कथा

पूछा पतरस ने, क्या सात बार मुझे,
करना चाहिये क्षमा अपने भाई का अपराध,
कहा यीशू ने सात बार ही नहीं,
बल्कि सत्तर बार कर तूँ क्षमा उसके अपराध।

सो स्वर्ग के राज्य की तुलना,
की जा सकती है उस राज्य से,
हिसाब चुकता करने की सोची थी,
जिस राजा ने अपने दासों से।

पास लाया गया उसके एक ऐसा व्यक्ति,
जिस पर दसियों लाख कर्ज निकलता था,
पर पास नहीं थी उसके फूटी कौड़ी,
चुका नहीं सकता था राजा का कर्जा।

पाँव पकड़ विनती की उसने राजा से,
तो माफ कर दिया राजा ने कर्ज को,
लेकिन जब वह दास जा रहा था,
मिला राह में अपना एक कर्जदार उसको।

गिरहबान पकड़, गला घोटते हुए बोला वो,
जो तुझे मेरा देना है, मुझे लौटा दे,
करी विनती बहुतेरी उस व्यक्ति ने पर,
माना वह दास उसे जेल भिजवा के।

बहुत दुखी हुए दूसरे दास उसे देखकर,
जाकर बतलाया उन्होंने अपने स्वामी को,
कहा राजा ने वैसा किया ना तूँने,
जैसा चाहता था तूँ तेरे साथ हो।

सो बहुत बिगड़ा स्वामी उसका,
और फिर बहाल कर दिया दण्ड उसका,
ऐसे ही यदि तुम क्षमा कर दोगे,
परम पिता भी कर देगा तुम्हें क्षमा।

तलाक

यीशू को परखने के जतन में,
कुछ फरीसियों ने यीशू से पूछा,
क्या यह उचित है अपनी पत्नी को,
कोई किसी कारण से त्याग सकता।

बोला यीशू, सृष्टि रचने वाले ने,
एक स्त्री-पुरुष रूप में रचा था उन्हें,
इसी कारण अपने माता-पिता को छोड़,
दो होकर भी एक हो रहते हैं वे।

सो वे दोनों दो नहीं रहते,
बल्कि वे एक रूप हो जाते,
इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा उसे,
किसी को अलग नहीं करना चाहिये।

वे बोले, फिर क्यों मूसा ने,
निर्धारित किया तलाक का नियम,
यीशू ने कहा, मूसा ने यह विधान,
दिया था तुम्हारी जड़ता के कारण।

व्यभिचार के अलावा अन्य कारण से,
त्यागता है जो अपनी पत्नी को,
होता है वह व्यभिचार का दोषी,
किसी दूसरी स्त्री को ब्याहता है जो।

इस पर उसके शिष्यों ने उससे कहा,
ऐसा हो तो क्या आवश्यकता ब्याह की,
यीशू बोला, यह उपदेश ग्रहण करने की,
सबको क्षमता नहीं प्रदान की गयी।

कुछ ऐसे हैं जो पैदा हुए नपुंसक,
और कुछ लोगों द्वारा बना दिए गए,
कुछ अविवाहित रहे स्वर्ग के राज्य हेतु,
जो यह उपदेश ले सकता है ले।

यीशू की आशीष : बच्चों को

फिर कुछ लोग बालकों को लाये,
कि यीशू का आशीर्वाद मिले उनको,
भगाना चाहते थे शिष्य उन्हें लेकिन,
यीशू ने दिया आशीर्वाद बच्चों को।

एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न

तब एक युवक ने यीशू से पूछा,
क्या करूँ अनन्त जीवन पाने के लिये,
कहा यीशू ने आदेशों का पालन कर,
अनन्त जीवन में प्रवेश पाने के लिये।

पूछा उसने तो यीशू ने कहा,
चोरी, झूठी गवाही, हत्या, व्यभिचार मत कर,
अनादर मत कर अपने माता-पिता का,
पड़ोसी को अपने जैसे ही प्यार कर।

बोला युवक, यह सब किया है मैंने,
अब किस बात की कमी है मुझमें,
कहा यीशू ने संपूर्ण बनने के लिये,
अपना धन बाँट मेरे पीछे हो ले।

अत्यंत कठिन है किसी धनी व्यक्ति का,
स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाना,
इसकी अपेक्षा बहुत आसान है,
ऊँट का सूई के नकुए से निकल जाना।

मजदूरों की दृष्टान्त कथा

स्वर्ग का राज्य है एक जमींदार सा,
जिसने मजदूर रखे सुबह, दोपहर और शाम को,
पर जब दी उनको दिन की मजदूरी,
पूरे दिन की मजदूरी दी उन सबको।

शिकायत की जो किसी एक ने,
मेहनत की सबने अलग-अलग वक्त तक,
लेकिन तूँने मजदूरी देने में,
किया न हममें और उनमें फर्क।

उत्तर में उससे जमींदार ने कहा,
कोई अन्याय किया न तुमसे मैंने,
जो मजदूरी तुम्हारी तय की थी,
उतनी मजदूरी तुम्हें दे दी मैंने।

क्या मैं अपने धन का जो चाहूँ,
वैसा करने का हक नहीं रखता,
गर औरों को मैं कुछ देता हूँ,
तो तूँ उस कारण क्यों जलता।

इस प्रकार से हो जायेंगे,
जो अंतिम थे, वे पहले,
और जो पहले से पहले थे,
अंतिम हो जायेंगे, वे पहले।

यीशू द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

जब यीशू अपने बारह शिष्यों के साथ,
जा रहा था यरूशलेम नगर को,
कहा उसने, मनुष्य के पुत्र को वहाँ,
सौंप दिया जायेगा दण्ड देने को।

प्रमुख याजक और यहूदी धर्मशास्त्री,
उसे मृत्युदण्ड देने के योग्य ठहरायेंगे,
फिर उपहास और कोड़े लगवाने को,
गैर यहूदियों के हाथों उसे सौंपेंगे।

फिर मनुष्य के पुत्र को,
चढ़ा दिया जायेगा क्रूस पर,
किन्तु तीसरे दिन वह फिर से,
उठ खड़ा होगा जीवित हो कर।

एक माँ का अपने बच्चों के लिये आग्रह

फिर जब्दी की बेटों की माँ,
बेटो सहित पहुँची यीशू के पास,
फिर प्रार्थना कर उससे यह माँगा,
उसके बेटे बैठें यीशू के साथ।

कहा, तेरे राज्य में मेरे बेटे,
एक तेरे दाहिनी, दूसरा बाईं ओर बैठे,
कहा यीशू ने तुम नहीं जानते,
क्या मुझसे तुम लोग माँग बैठे।

क्या तुम पी सकते हो यातनाओं का प्याला,
पीने वाला हूँ मैं जिस प्याले को,
उत्तर दिया जो हाँ में उन्होंने,
कहा, निश्चय ही पीओगे तुम उस प्याले को।

किन्तु मेरे दायीं और बाईं ओर,
बैठने का अधिकार मैं नहीं देने वाला,
उनका है अधिकार यहाँ बैठने का,
जिनको उसे परम पिता ने दे डाला।

बिगड़े बाकी शिष्य उन दोनों पर,
तब यीशू ने उन्हें पास बुलाकर कहा,
सेवक बने वो जो बड़ा बनना चाहे,
और दास बने, जो बनना चाहे पहला।

होना चाहिये तुम्हें मनुष्य के पुत्र जैसा,
जो सेवा करने आया, सेवा कराने नहीं,
और जो बहुतेरों के छुटकारे के लिये,
देने आया है अपने प्राणों की फिरौती।

अंधो को आँखें

जब वे यरीहो नगर से जा रहे थे,
दो अंधों ने प्रार्थना करी यीशू से,
दया कर यीशू ने आँखों को छुआ,
तुरंत ही देखने लगे वे अंधें फिर से।

यीशू का यरूशलेम में भव्य प्रवेश

जब पहुँचे वे लोग यरूशलेम के पास,
कहा दो शिष्यों को एक गाँव में जाओ,
एक गर्धबी और उसका बछेरा बँधा मिलेगा,
उन्हें बाँध कर मेरे पास ले आओ।

यह इसलिये हुआ कि भविष्यवक्ता का,
कहा हुआ यह वचन पूरा हो,
गर्धव के बछेरे पर सवार, विनयपूर्ण राजा,
देख सिय्योन तेरे पास आ रहा है वो।*

किया शिष्यों ने जैसा यीशू ने कहा,
ले आये वे गर्धवी और बछेरे को,
हलचल मच गयी समूचे यरूशलेम में,
पूछने लगे लोग, कौन है वो।

यीशू मन्दिर में

फिर यीशू मन्दिर के अहाते में आया,
खदेड़ा खरीद-बेच करने वालों को उसने,
मंदिर में कुछ अंधे, लँगड़े लूले थे,
कर दिया चंगा जिन्हें यीशू ने।

कहने लगे बच्चे ऊँचे स्वर में,
''होशन्ना! धन्य है दाऊद का वह पुत्र,''
क्रोधित हुए याजक और धर्मशास्त्री,
देख यीशू के वे अदभुत कृत्य।

* जकर्याह 9:9

विश्वास की शक्ति

अगले दिन जब भूख लगी यीशू को,
राह किनारे एक अंजीर के पेड़ को देखा,
कुछ ना मिला उसे पत्तों को छोड़,
तो तुझ पर कभी फल ना लगें कहा।

तुरंत सूख गया वह अंजीर का पेड़,
तो पूछा शिष्यों ने अचरज के साथ,
कहा यीशू ने गर संदेह नहीं करते,
तो तुम्हारा विश्वास चला सकता है पहाड़,

गर विश्वास भरी हो तुम्हारी प्रार्थना,
तो अवश्य सुनेगा वह प्रार्थना तुम्हारी,
माँगोंगे जो कुछ भी तुम उससे,
करेगा पूरी वह अवश्य ही माँग तुम्हारी।

यहूदी नेताओं का यीशू के अधिकार पर संदेह

यीशू जब मंदिर में उपदेश दे रहा था,
याजकों और बुजुर्गों ने जाकर पूछा,
किस अधिकार से करता तूँ ऐसी बातें,
और यह अधिकार तुझे किसने दिया पूछा।

उत्तर में यीशू ने पूछा एक प्रश्न,
बताओ यूहन्ना को बपतिस्मा कहाँ से मिला,
परमेश्वर से मिला या मनुष्य से,
तुम बता दोगे तो मैं भी दूंगा बता।

करने लगे वे विचार आपस में,
यदि हम कहते हैं परमेश्वर से,
तो यह हमसे पूछने लगेगा,
फिर उस पर विश्वास क्यों नहीं करते।

और यदि हम कहते मनुष्य से,
तो हम लोग लोगों से डरते,
हम डरते हैं क्योंकि लोग,
यूहन्ना को एक नबी मानते।

सो उत्तर में उन्होंने कहा यीशू से,
हमें तेरे प्रश्न का उत्तर पता नहीं,
उस पर यीशू बोला, मैं भी तुम्हें,
तुम्हारे प्रश्न का उत्तर बताता नहीं।

यहूदियों के लिये एक दृष्टान्त कथा

फिर यीशू ने पूछा कि बताओ,
क्या सोचते हो तुम इस बारे में,
एक व्यक्ति के थे दो पुत्र,
दोनों से कहा बारी-बारी से उसने।

पहले बड़े के पास जाकर वह बोला,
पुत्र, अंगूर के बगीचे में जाकर काम कर,
उसने कहा मेरी इच्छा नहीं है,
पर चला गया बाद में मन बदल कर।

फिर वह दूसरे के पास गया,
कहा उससे भी बगीचे में जाये वो,
उत्तर में बेटे ने कहा, जी हाँ,
लेकिन बगीचे में गया नहीं वो।

पूछा यीशू ने उन दोनों में से,
किसने किया पिता का चाहा,
उत्तर दिया लोगों ने बड़े ने,
तब यीशू ने उनसे यह कहा।

यूहन्ना तुम्हें सही रास्ता दिखाने आया,
पर तुमने उसमें विश्वास नहीं किया,
किया विश्वास कर वसुलकों और वेश्याओं ने,
फिर भी तुमने अपना मन नहीं फिराया।

परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजना

यीशू ने दिया एक और दृष्टान्त,
एक जमींदार ने लगाया अंगूर का बगीचा,
सब इंतजाम करने के बाद वह,
खेत बटाई पर दे यात्रा पर निकला।

जब अंगूर उतारने का आया समय,
अपना हिस्सा लेने दासों को भेजा,
किन्तु किसानों ने मारा-पीटा उन्हें,
तो जमींदार ने अपने बेटे को भेजा।

सोचा बेटे का मान रखेंगे वे,
पर किसानों ने उसको भी डाला मार,
तुम क्या सोचते हो, जब मालिक आयेगा,
तो कैसा करेगा किसानों से वह व्यवहार।

उत्तर दिया, क्योंकि वे निदर्य थे,
मालिक बेरहमी से मार डालेगा उन्हें,
दे देगा खेत किन्हीं औरों को,
जो फसल का हिस्सा देंगे उसे।

कहा यीशू ने इसलिये कहता हूँ,
परमेश्वर का राज्य छीन लिया जायेगा तुमसे,
और वह उन्हें दे दिया जायेगा,
जो बर्त्ताव करेंगे, राज्य के अनुसार उसके।

जब प्रमुख याजकों और फरीसियों ने,
सुनी ये कथायें वे ताड़ गये,
उन्हीं को और ईशारा था यीशू का,
सोचने लगे कैसे वे पकड़ें उसे।

विवाह भोज पर लोगों को राजा के बुलावे की दृष्टान्त कथा

फिर यीशू ने एक कथा सुनायी,
स्वर्ग का राज्य है उस राजा जैसा,
दावत दी उसने अपने बेटे के ब्याह पर,
सब लोगों को बुलाने दासों को भेजा।

लेकिन आये न लोग दावत पर,
तो राजा ने दासों को फिर भेजा,
पर लोगों ने दिया नहीं ध्यान,
उल्टे उन दासों को मारा-पीटा।

क्रोधित हो सैनिक भेजे राजा ने,
मारा उन्होंने, नगर में आग लगा दी,
फिर राजा की आज्ञानुसार वे सैनिक,
बुला लाये मिला उन्हें जो भी।

भर गया मेहमानों से शादी का महल,
पर जब राजा उन्हें देखने आया,
उसने वहाँ एक ऐसा व्यक्ति देखा,
जिसे विवाह के वस्त्र पहनें न पाया।

देख उसे वैसे जब पूछा राजा ने,
कोई उत्तर वह दे नहीं पाया,
उस पर राजा ने सेवकों से कह,
हाथ-पाँव बँधवा उसे अंधेरे में फिकवाया।

"क्योंकि बुलाये तो बहुत गये हैं,
पर चुने हुए थोड़े से हैं।"

यहूदी नेताओं की चाल

फिर फरीसियों ने सभा में विचार कर,
हिरोदियों के साथ अपने चेलों को भेजा,
कहा उन्होंने तूँ सच्चा है, हम जानते,
और देता है तूँ परमेश्वर की शिक्षा।

चिंता नहीं करता तूँ कोई क्या सोचता है,
ना किसी की तूँ हैसियत पर जाता,
क्या उचित है सम्राट कैसर को कर चुकाना,
क्या तेरा विचार है, सो तूँ हमें बता।

ताड़ गया यीशू, उनके बुरे इरादे,
कहा, क्या मुझे परखना चाहते हो,
ले आओ मेरे पास एक दीनारी,
जिससे तुम सम्राट का कर चुकाते हो।

जब उसके पास वे दीनारी ले आये,
पूछा उसने, उस पर मूरत है किसकी,
किसके उस पर लेख खुदे हैं,
मुद्रा इस पर अंकित है किसकी।

उत्तर दिया उन्होंने, महाराजा कैसर के,
यीशू बोला, जो जिसका है उसे दे दो,
महाराजा कैसर को दो, जो महाराजा का,
और जो परमेश्वर का, उसे दो परमेश्वर को।

सुनकर यह अद्‌भुत उत्तर यीशू का,
अचरज से वे लोग भर गये,
सोचा कुछ वे कर न सकेंगे,
और उसे छोड़ कर वो चले गये।

सदूकियो की चाल

उसी दिन पुनर्जीवन को नहीं मानने वाले,
कुछ सदूकी लोग यीशू के पास आये,
पूछा उन्होंने मूसा के उपदेश के अनुसार,
निस्सतांन विधवा को मृतक का भाई अपनाये।

अब मानो हम सात भाई हैं,
क्रम से निस्संतान जो मरते गये,
उन सबके बाद स्त्री भी मर गयी,
उस बारे में हम तुझसे पूछने आये।

अगले जन्म में इन सातों में से,
वह स्त्री होगी पत्नी किसकी,
क्योंकि पूर्व जन्म में वह स्त्री,
पत्नी बनी थी उन सातों की।

कहा यीशू ने तुम नहीं जानते,
शक्ति शास्त्रों की या परमेश्वर की,
देवदूतों के समान होंगे पुनर्जीवन में,
होगी न उस जीवन में कोई शादी।

कहा था उसने, मैं परमेश्वर हूँ,
इब्राहीम, इसहाक और याकूब का,
मरे हुओं का नहीं है वो,
वह परमेश्वर है जीवित लोगों का।

सबसे बड़ा आदेश

जब सुना फरीसियों ने कि यीशू ने,
अपने उत्तर से चुप कर दिया उनको,
उसे फँसाने को एक धर्मशास्त्री ने पूछा,
मानता सबसे बड़ा आदेश तूँ किसको।

कहा उस धर्मशास्त्री से यीशू ने,
सबसे पहला और आदेश बड़ा सबसे,
कर तूँ अपने परमेश्वर से प्रेम,
सम्पूर्ण आत्मा, मन और बुद्धि से।

फिर दूसरा है कि अपने पड़ोसी से,
कर तूँ प्रेम स्वयं को करता जैसे,
सम्पूर्ण व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के ग्रन्थ,
हैं इन्हीं दो आदेशों पर टिके।

यीशू का फरीसियों से एक प्रश्न

फिर यीशू ने फरीसियों से पूछा,
क्या सोचते, मसीह है किसका बेटा,
दाऊद का बेटा, कहा जो उन्होंने,
तब यीशू ने उनसे यह पूछा।

फिर क्यों आत्मा से प्रेरित दाऊद ने,
कहा, "प्रभु ने कहा प्रभु से मेरे,
मेरे दाहिने बैठ शासन कर जब तक,
तेरे अधीन न कर दूँ शत्रु तेरे।"*

फिर जब दाऊद ने उसे प्रभु कहा,
तो कैसे बैटा हो सकता वह उसका,
निरुतर हो गये उस पर वे लोग,
कुछ पूछने का साहस न हुआ उनका।

यीशू द्वारा धर्म-नेताओं की आलोचना

कहा यीशू ने, फरीसी और धर्मशास्त्री,
कर सकते मूसा के विधान की व्याख्या,
इसलिये उस पर चलना, जो वे कहें,
पर जो वे करें, वह मत करना।

लाद दिया उन्होंने लोगों पर बोझ,
जिसे उठा वे चल नहीं सकते,
देते हैं उपदेश ये लोगों को,
कहते हैं पर खुद नहीं करते।

जो भी करते बस दिखावे के लिये,
ताकि लोग करें मान-सम्मान इनका,
पहनते हैं ताबीज और ऐसी पोशाकें,
जिनसे समझे लोग इन्हें धर्मात्मा।

* भजन संहिता 110:1

लेकिन तुम ऐसा कभी मत करना,
कहलवाना न रब्बी खुद अपने को,
सच्चा गुरु और पिता बस वो है,
कहलवाना न गुरु या पिता स्वयं को।

अरे कपटी धर्मशास्त्रीयों और फरीसियों,
लोगों के मार्ग की बाधा हो तुम,
ना स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने देते,
ना स्वयं उसमें प्रवेश करते हो तुम।

*हड़प जाते हो विधवाओं की सम्पत्ति,
दिखाने के लिये प्रार्थना करते हो तुम,
करते हो जो कपटपूर्ण व्यवहार,
उसके लिये कड़ा दण्ड पाओंगे तुम।

किसी को अपने पंथ में लाने हेतु,
धरती और समुद्र पार कर जाते हो,
जब वह तुम्हारे पंथ में आ जाता,
नरक का पात्र उसे बना देते हो।

धिक्कार है तुम्हें, ओ अंधे रहनुमाओं,
मंदिर और वेदी तुम्हारे लिये कुछ नहीं,
सोने और चढ़ावे को महत्व देते हो तुम,
मंदिर या वेदी की शपथ कुछ नहीं।

अरे अंधों समझते नहीं हो तुम,
चढ़ावे का महत्व है वेदी के कारण,
और जो लेता है स्वर्ग की शपथ,
उसमें शामिल होता परमेश्वर का सिंहासन।

दसवाँ भाग देते हो तुम परमेश्वर को,
पर तिरस्कार करते हो महत्वपूर्ण बातों का,
मच्छर तो छानते हो अपने पानी से,
पर पता चलने नहीं देते ऊँट का।

बाहर से दिखाई देते हो धर्मात्मा तुम,
पर भीतर तुम्हारे छल-कपट है भरा,
बातें बनाते हो तुम लोग बड़ी-बड़ी,
पर काम कुछ करते नहीं धेले का।

अरे साँपो और नागों की संतानों,
कैसे सोचते नरक से तुम बच जाओगे,
नबियों, बुद्धिमानों और गुरुओं में से,
बहुतों को मारोगे, क्रूस पर चढ़ाओगे।

हर निरपराध व्यक्ति की हत्या का,
दण्ड तुम लोगों पर होगा,
इस सब के लिये इस पीढ़ी के,
लोगों को दण्ड भोगना होगा।

यरूशलेम के लोगों पर यीशू को खेद

ओ यरूशलेम, तूँ वह है जो,
रही सताती नबियों और दूतों को,
कितनी बार चाहा है यह मैंने,
इकट्ठा कर लूँ तेरे बच्चों को।

किन्तु चाहा नहीं तुम लोगों ने,
अब तेरा मंदिर पूर्णतया उजड़ जायेगा,
तुम मुझे तब तक फिर नहीं देखोगे,
जब तक मुझे फिर पुकारा न जायेगा।

यीशू द्वारा मन्दिर के विनाश की भविष्यवाणी

मंदिर छोड़ जा रहा था जब यीशू,
शिष्यों ने उसे मंदिर के भवन दिखाये,
बोला यीशू तुम जिन्हें देख रहे हो,
ये भवन सब दिये जायेंगे गिराये।

यीशू जब जैतूँन पर्वत पर बैठा था,
एकांत में उसके शिष्य उसके पास आये,
पूछा, हमें बता तूँ कब वापस आयेगा,
कैसे संकेत होंगे जब अंत होने को आये।

उत्तर में यीशू ने कहा उनसे,
सावधान, तुम्हें कोई छलने न पाये,
बहुत से आयेंगे, जो कहेंगे मसीह हूँ,
तुममें कोई उनकी बातों में न आये।

* यह पद कुछ यूनानी प्रतियों में जोड़ा गया है।

सुनोगे तुम युद्ध की अफवाहें,
पर देखो तुम मत घबराना,
अकाल पड़ेंगे और भूचाल आयेंगे,
पर इसे तो बस शुरुआत समझना।

पकड़वायेंगे वे तुम्हें, दण्ड देने के लिये,
मरवा डालेंगे, मेरा शिष्य होने के कारण,
घृणा करेंगे तुमसे सब जातियों के लोग,
मोह टूट जायेगा, होगा विश्वास का हनन।

ठगेंगे लोगों को झूठे नबी आकर,
लोगों का प्रेम पड़ जायेगा ठंडा,
किन्तु जो टिका रहेगा अंत तक,
निश्चित ही उसका उद्धार होगा।

स्वर्ग के राज्य का यह सुसमाचार,
समस्त विश्व में सभी जातियों को,
सुनाया जाएगा साक्षी के रूप में,
तभी जानना तुम निकट अंत को।

उस भयानक विनाशकारी वस्तु को,
जिसका उल्लेख दानिय्येल ने किया था,
मन्दिर में जब तुम लोग देखो,
जान लेना वक्त भयानक विपत्ति का।

भाग जाएं यहूदी तब पहाड़ी पर,
जो हो छत पर, नीचे न उतरे,
दूध पिलाती और गर्भवती स्त्रियों को,
वे दिन होंगे बहुत कष्ट भरे।

जब से परमेश्वर ने सृष्टि रची,
ऐसी विपत्ति को देखा न होगा,
किन्तु अपने चुने हुओं के कारण,
वह उन दिनों को कम करेगा।

उन दिनों यदि कोई तुम से कहे,
यहाँ है मसीह, विश्वास मत करना,
दिखलाएंगे तुम्हें, बहुत से ऐसे कारनामें,
चुने हुओं को भी जो दे दें चकमा।

मनुष्य के पुत्र का आने का संकेत,
उस समय आकाश में प्रकट होगा,
शक्ति और महिमा के साथ वह,
स्वर्ग के बादलों में प्रकट होगा।

ऊँचे स्वर की तुरही के साथ,
भेजेगा वह अपने दूतों को,
फिर वे स्वर्ग में सब कहीं से,
इकट्ठा करेगा अपने चुने हुए लोगों को।

जब तुम यह घटित होते हुए देखो,
समझ लेना वह समय आ पहुँचा,
घटेगा यह इस पीढ़ी के जीते जी,
मेरा यह वचन कभी नहीं मिटेगा।

केवल परमेश्वर जानता है कि वह समय कब होगा

कोई नहीं जानता उस समय के बावत,
न स्वर्ग में दूत और न स्वयं पुत्र,
जानता उसके बारे में बस परम पिता,
नूह के वक्त सा आयेगा मनुष्य का पुत्र।

जैसे लोग जल प्रलय आने से पहले,
थे बेखबर और नाँव पर ना चढ़े,
वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना होगा,
कब आयेगा तुम्हारा स्वामी, तुम नहीं जानते।

यदि कोई जानता कब चोर आएगा,
तो उस समय वह सजग रहेगा,
इसलिये तुम भी तैयार रहो, क्योंकि,
ना जाने वह कब आ जाएगा।

अपनी अनुपस्थिति में आज्ञा पालन करते,
देख सेवक को, स्वामी खुश होता,
और जो करता स्वामी की अवज्ञा,
निश्चित ही स्वामी से वह दण्ड पाता।

दूल्हे की प्रतीक्षा करती दस कन्याओं की दृष्टांत कथा

उस दिन होगा स्वर्ग का राज्य,
उन दस कन्याओं के समान,
जो हाथों में मशाले ले चली,
दूल्हे से मिलने का लिये अरमान।

उनमें से पाँच थीं लापरवाह,
और पाँच थीं चौकस उनमें,
पाँच ने साथ में तेल न लिया,
पाँच ने लिया तेल कुप्पियों में।

क्योंकि दूल्हे के आने में देर थी,
वे सब कन्याएं पड़ कर सो गयी,
पर आधी रात में दूल्हा आने का,
शोर सुन वे सभी जग गयीं।

चौकस कन्याओं ने मशालें तैयार की,
लापरवाहों के पास तेल न था,
जब वे तेल लेने जा रही थीं,
उसी समय दूल्हा वहाँ आ गया।

सो वे कन्याएं जो तैयार थीं,
उसके साथ विवाहोत्सव में चली गयीं,
जब वे दूसरी कन्याएं वापस आयीं,
दूल्हे से विनती वे करने लगीं।

किन्तु दूल्हे ने उत्तर में कहा,
मैं सच में तुम्हें नहीं जानता,
सो सावधान रहो, तुम नहीं जानते,
किस घड़ी मनुष्य का पुत्र लौटेगा।

तीन दासों की दृष्टांत कथा

स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति सा होगा,
जो जब यात्रा पर जाने लगा,
बुलाया उसने अपने तीन दासों को,
और उनकी योग्यतानुसार धन दे दिया।

एक को पाँच, दूसरे को दो,
तीसरे को एक थैली दी उसने,
चाँदी के सिक्कों से भरी थैलियां,
उस व्यक्ति ने दासों को दी अपने।

पहले ने पैसों को काम में लगाया,
और पाँच थैलियां और कमा ली,
उसी तरह दूसरे दास ने भी,
दो थैलियों की कमाई कर ली।

पर तीसरे ने उस धन को,
ले जाकर गाड़ दिया जमीन में,
बहुत समय बाद जब वह व्यक्ति लौटा,
तीनों से लेखा-जोखा लिया उसने।

जब जाना उसने उन्होंने जो किया,
वह व्यक्ति पहले दोनों से खुश हुआ,
विश्वास योग्य जान उन दोनों को,
उसने दोनों को और अधिकार दे दिया।

तीसरे ने जाकर स्वामी से कहा,
मैं जानता हूँ बुहत कठोर है तूँ,
तूँ वहाँ काटता है, जहाँ बोया नहीं,
बिना बीज के फसल बटोरता है तूँ।

इसलिये तुझसे डर कर मैंने,
तेरा धन जमीं में गाड़ दिया था,
यह तेरा धन है वापस तुझको,
मैंने उस धन का कुछ नहीं किया।

उत्तर में उससे स्वामी ने कहा,
एक बुरा और आलसी दास है तूँ,
और कुछ नहीं तो सूद के लिये,
जमा कर देता साहूकार के पास उसे तूँ।

फिर कहा स्वामी ने उस दास से,
चाँदी की वह थैली वापस ले लो,
और जिसके पास पाँच थैलियां है,
यह थैली भी उसी को दे दो।

क्योंकि और दिया जायेगा उसे,
जिसने चीजों का सदुपयोग किया,
और छीन लिया जायेगा उससे,
जिसने उनका सदुपयोग न किया।

मनुष्य का पुत्र सबका न्याय करेगा

मनुष्य का पुत्र जब दिव्य महिमा में,
दूतों सहित अपने सिंहासन पर बैठेगा,
पेश करी जायेंगी सभी जातियां उसके समक्ष,
वह भेड़-बकरी सा सबको अलग करेगा।

वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर रखेगा,
और बकरियों को रखेगा बायीं ओर,
कहेगा, "मेरे पिता से आशीष पाये लोगों,
उन्हें जो खड़े होंगे उसकी दाहिनी ओर।

जगत की रचना से पहले, तुम्हारे लिये,
तैयार किया गया है जो राज्य,
आओ और उसका अधिकार ले लो,
तुम्हारे ही लिये है यह राज्य।

क्योंकि जब मैं भूखा-प्यासा था,
तुमने मुझे खाने-पीने को दिया,
जब मैं अनजाना और विवस्त्र था,
तुमने मुझे आश्रय और वस्त्र दिया।

फिर उत्तर में वे धर्मी पूछेंगे उससे,
प्रभु, हमने कब ऐसा तेरे साथ किया,
कहेगा राजा, मेरे भोले-भाले भाइयों संग,
जो तुमने किया, मेरे लिये ही किया।

फिर राजा बायीं ओर वालों से कहेगा,
अरे अभागो, मुझसे तुम दूर चले जाओ,
तैयार की गयी जो शैतान के लिये,
जाकर उस आग में गिर जाओ।

यही तुम्हारा दण्ड है, क्योंकि जब,
मैं भूखा था, तुमने खाना न दिया,
मैं अनजाना, बीमार और नंगा था,
जब ध्यान तुमने मुझ पर न दिया।

फिर जब वे पूछेंगे राजा से,
प्रभु, कब हमने तेरी सेवा ना की,
राजा कहेगा मेरे दीन अनुनायियों के प्रति,
जो लापरवाही बरती, वह मेरे ही प्रति थी।

फिर ये ऐसा करने वाले,
बुरे लोग अंनत दण्ड पाएंगे,
और भला करने वाले धर्मी लोग,
अनंत जीवन में चले जाएंगे।

यहूदी नेताओं द्वारा यीशू की हत्या का षड़यंत्र

फिर यीशू अपने शिष्यों से बोला,
दो दिन बाद फसह पर्व आएगा,
तब मनुष्य का पुत्र शत्रुओं के हाथों,
क्रूस पर चढ़वाने हेतु पकड़वाया जाएगा।

तब याजकों और यहूदी नेताओं ने,
बनायी यीशू को पकड़ मारने की योजना,
पर कह रहे थे पर्व के दिन,
दंगे फसाद ना करवा दे यह योजना।

यीशू पर इत्र का छिड़काव

यीशू जब शमौन कोढ़ी के घर था,
एक स्त्री ने बहुमूल्य इत्र लाकर,
पटरे पर झुककर बैठे यीशू के,
उड़ेल दिया सारा वह सिर पर।

क्रोधित हो शिष्य कहने लगे उससे,
क्यों तूँने यह इत्र बर्बाद किया,
अच्छे दाम मिल सकते थे इसके,
किया जा सकता था दीनों का भला।

पर यीशू ने उन लोगों से कहा,
इसने मेरे लिये एक सुन्दर काम किया,
दीन दुःखी तो सदा तुम्हारे पास रहेंगे,
पर नहीं रहूँगा मैं तुम्हारे पास सदा।

इसने मुझ पर यह सुंगध छिड़क कर,
तैयारी की है मेरे गाड़े जाने की,
जहाँ कहीं सुसमाचार का प्रसार किया जायेगा,
जो इसने किया, उसकी भी चर्चा होगी।

यहूदा यीशू से शत्रुता ठानता है

यीशू के बारह शिष्यों में से एक,
यहूदा इस्करियोती विरोधियों में जो मिला,
क्या दोगे, जो यीशू को पकड़वा दूँ,
प्रधान याजकों से उसने पूछा।

चाँदी के तीस सिक्के देने की,
उन लोगों ने इच्छा जाहिर की,
उसी समय से यहूदा यीशू को,
रहने लगा ताक में पकड़वाने की।

यीशू का अपने शिष्यों के साथ फसह भोज

शिष्यों ने पूछा फसह से पहले,
कहाँ करें तैयारी तेरे खाने की,
उसने कहा, उस व्यक्ति के पास जाओ,
कहना निकट है मेरी निश्चित घड़ी।

अपने बारह शिष्योंके साथ पटरे पर,
दिन ढले यीशू झुका बैठा था,
तभी उनके भोजन करते वह बोला,
तुममें से एक मुझे देगा धोखा।

दुःखी हो वे पूछने लगे यीशू से,
प्रभु, वह मैं तो नहीं तूँ बता,
मेरे साथ एक ही थाली में खाता,
वहीं मुझे पकड़वायेगा यीशू ने कहा।

जैसा उसके बारे में लिखा शास्त्र में,
मनुष्य का पुत्र तो जायेगा ही,
पर धिक्कार है उसे पकड़वाने वाले को,
अच्छा होता, उसका जन्म होता ही नहीं।

तब धोखा देने वाला यहूदा बोल उठा,
क्या मैं हूँ? हे रब्बी, वह मैं नहीं,
तब यीशू ने यहूदा से कहा,
हाँ जैसा तूँने कहा, है वैसा ही।

प्रभु का भोज

जब वे खाना खा ही रहे थे,
आशीष दे यीशू ने रोटी को तोड़ा,
लो, इसे खाओ, यह मेरी देह है,
उसे शिष्यों को देते हुए वह बोला।

फिर प्याला उठा उन्हें दिया यीशू ने,
कहा पिओ इसे सब थोड़ा-थोड़ा,
क्योंकि यह मेरा लहू है जो,
एक नये वाचा की स्थापना करता।

बहाया जा रहा यह बहुतों के लिये,
ताकि सम्भव हो उनके पापों का क्षमादान,
अब बस परम पिता के राज्य में ही,
करूँगा तुम्हारे साथ मैं दाखरस का पान।

यीशू का कथन : सब शिष्य उसे छोड़ देंगे

फिर यीशू ने कहा आज रात में,
तुम सब का विश्वास मुझमें से डिग जायेगा,
क्योंकि लिखा है, मैं गड़ेरिये को मारूँगा*,
और पूरा रेवड़ तितर-बितर हो जायेगा।

पतरस बोला चाहे सब खो दें विश्वास,
किन्तु मैं तुझमें विश्वास खोऊँगा न कभी,
यीशू ने कहा मुर्गे की बाँग से पहले,
तीन बार नकार चुकेगा मुझे तूँ आज ही।

तब पतरस ने उससे कहा,
चाहे मुझे पड़े मरना ही,
फिर भी तुझे नहीं नकारूँगा,
औरों ने भी कहा यही।

यीशू की एकान्त प्रार्थना

फिर यीशू गतसमने को गया,
और उसने अपने शिष्यों से कहा,
जब तक मैं वहाँ जा प्रार्थना करूँ,
तुम लोग यहीं पर बैठे रहना।

पतरस और जब्दी के दो बेटों को,
ले गया यीशू साथ में अपने,
दुःख और व्याकुलता अनुभव करने लगा वह,
सावधान रह, यहीं ठहरो कहा यीशू ने उन्हें।

* जकर्याह–12:7

फिर आगे बढ़ धरती पर झुक,
करने लगा यीशू परमेश्वर से प्रार्थना,
यदि हो सके तो टल जाये मुझसे,
हे परम पिता मेरी यह यातना।

लेकिन फिर भी हे परम पिता,
तेरी इच्छा ही पूरन हो,
जैसा मैं चाहता वैसा नहीं,
पर जैसा तूँ चाहता वैसा ही हो।

लौटा जब यीशू प्रार्थना कर वापस,
सोते हुए पाया उसने उनको,
कहा उन्हें जागते रहो, करो प्रार्थना,
ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो।

फिर जाकर प्रार्थना करी यीशू ने,
कहा, हे पिता, तेरी इच्छा पूरी हो,
यदि पिये बिना टल नहीं सकता,
यातना का यह प्याला पीने दे मुझको।

तब यीशू फिर वापस आया,
पर उनको सोते ही पाया,
पहले की तरह उन्हीं शब्दों में,
फिर से यीशू ने प्रार्थना को दोहराया।

फिर शिष्यों के पास गया यीशू,
कहा, क्या तुम अब भी सो रहे हो,
समय आ गया मनुष्य के पुत्र को,
सौंपा जायेगा जब पापियों के हाथों।

यीशू को बंदी करना

तभी यहूदा अपने साथ ले आया,
हथियारों से लैस एक भीड़ को,
प्रमुख याजकों और यहूदी नेताओं ने,
भेजा था उन्हें पकड़ने यीशू को।

यीशू को पहचान लें वे लोग,
इसका संकेत उन्हें यहूदा ने बताया,
फिर यीशू के पास गया वह,
चूम उसे, हे नबी कह बुलाया।

तब यीशू ने यहूदा से कहा,
कर, जिस काम के लिये तूँ आया,
फिर भीड़ ने पास जा कर,
यीशू को दबोच, उसे बंदी बनाया।

तभी यीशू के पक्षधर एक व्यक्ति ने,
काट डाला महायाजक के दास का कान,
कहा यीशू ने, तलवार म्यान में रखो,
उससे ही मरेंगे जो लेते तलवार से काम।

क्या तुम नहीं सोचते कि मैं,
बुला सकता हूँ अपने परम पिता को,
और भेज देगा वह तुरंत मेरे पास,
स्वर्गदूतों की बारह से भी अधिक सेनाओं को।

फिर यीशू ने उस भीड़ से कहा,
क्यों आये हो तुम हथियार ले मुझे पकड़ने,
तब तुमने मुझे नहीं पकड़ा जब मैं,
हर दिन बैठा उपदेश देता था मंदिर में।

किन्तु यह सब कुछ घटा ताकि,
भविष्यवक्ताओं की लिखी पूरी हो,
फिर यीशू के सभी बारह शिष्य,
भाग खड़े हुए, उसे छोड़ वो।

यहूदी नेताओं के सामने यीशू की पेशी

यीशू ले जाया गया कैफा के सामने,
यहूदी धर्मशास्त्री और नेता एकत्र थे वहाँ,
पतरस उसके पीछे-पीछे, दूर-दूर रहते,
पहरेदारों के पास रूक गया वहाँ।

कर रहे थे वे सब लोग यत्न,
मृत्यु दण्ड के लिये कोई अभियोग ढूँढ लें,
पर ढूँढ नहीं पाये उसके विरुद्ध कुछ,
यद्यपि बहुतों ने आगे बढ़ झूठ बोले।

अंत में दो व्यक्ति आगे आ बोले,
उसने कहा था मैं ऐसा कर सकता हूँ,
कर सकता हूँ परमेश्वर के मंदिर को नष्ट,
फिर तीन दिन में उसे बना सकता हूँ।

पूछा महायाजक ने क्या कहना है तुझे,
तो चुप ही रहा, कुछ नहीं बोला यीशू,
क्या तूँ परमेश्वर का पुत्र मसीह है,
महायाजक के पूछने पर हाँ बोला यीशू।

फिर बोला यीशू मनुष्य के पुत्र को,
स्वर्ग के बादलों पर आते शीघ्र देखोगे,
उस परम शक्तिशाली की दाहिनी ओर बैठे,
मनुष्य के पुत्र को तुम देखोगे।

इतना क्रोधित हुआ महायाजक यह सुनकर,
कि अपने कपड़े फाड़ते हुए बोला,
उसने जो कहा परमेश्वर की निंदा है,
तुम सबने सुना जो इसने बोला।

उत्तर में वे सब यह बोले,
यह अपराधी है, मर जाना चाहिये इसे,
फिर उन्होंने उसके मुँह पर थूँका,
और कइयों ने उसे मारे घूसे।

पतरस का यीशू को नकारना

पतरस अभी आँगन में बाहर बैठा था,
कि एक दासी ने आकर उससे पूछा,
क्या तूँ वह नहीं है जो,
उसी गलीली यीशू के साथ था।

किन्तु मुकर गया पतरस,
और सबके सामने उसने कहा,
नहीं जानता क्या पूछ रही तूँ,
कुछ भी नहीं है मुझको पता।

फिर वह ड्योढ़ी तक गया ही था,
कि एक दूसरी स्त्री ने उसे देखा,
और जो लोग वहाँ थे, उनसे बोली,
यह व्यक्ति यीशू नासरी के साथ था।

एक बार फिर से इन्कार किया उसने,
कसम खा कहा, मैं उसे नहीं जानता,
फिर कुछ बोले तूँ उनमें से एक है,
यह तेरी बोली से चलता है पता।

स्वयं को धिक्कारने कसमें खाने लगा पतरस,
बोला, मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता,
तभी मुर्गे ने दी बाँग, तो उसको,
स्मरण हो आया जो यीशू ने कहा था।

यीशू ने कहा था, तीन बार नकारेगा,
तूँ मुझे मुर्गे की बाँग से पहले,
फूट फूट कर रो पड़ा पतरस,
और चला गया वह बाहर वहाँ से।

यीशू पिलातुस के आगे पेश

अलख सुबह उन सबने मिलकर,
यीशू को मरवाने का षड़यंत्र रचा,
ले गये वे उसे बाँध कर,
और उसे राज्यपाल पिलातुस को सौंपा।

यहूदा की आत्महत्या

यीशू को पकड़वाने वाले यहूदा ने,
जब देखा यीशू दोषी ठहराया गया,
तो बहुत आत्म ग्लानि हुई उसको,
एक निरपराध को उसने धोखा दिया।

फेंक दिये मंदिर में चाँदी के सिक्के,
फिर बाहर जा फाँसी लगा ली उसने,
याजकों ने वे सिक्के उठा कर कहा,
उचित नहीं रखना इन्हें मन्दिर के कोष में।

बाहरी लोगों के मर जाने पर,
उन्हें दफन करने के लिये,
कुम्हार का एक खेत याजकों ने,
खरीद लिया उस पैसे से।

इसलिये उस जगह का नाम आज तक,
जाना जाता है ''लहू का खेत'',
इस प्रकार पूरा हुआ परमेश्वर का,
यर्मियाह द्वारा कहा यह लेख।

लिये उन्होंने वे चाँदी के तीस सिक्के,
जो उसके लिये इस्राएलियों ने तय किया,
प्रभु द्वारा मुझे दिये गये आदेशानुसार,
उस धन से कुम्हार का खेत लिया।

पिलातुस का प्रश्न यीशू से

क्या तूँ यहूदियों का राजा है,
पूछा पिलातुस ने यीशू से,
हाँ, कह यीशू मौन हो गया,
कुछ न बोला फिर वह उससे।

यीशू को छोड़ने में पिलातुस असफल

फसह पर्व के अवसर पर,
छोड़ देता था राज्यपाल एक कैदी,
उस दिन उसके पास हाजिर था,
बरअब्बा नामक एक खूंखार कैदी।

जब न्याय तख्त पर बैठा था वह,
उसकी पत्नी ने एक संदेश भेजा,
कुछ न करना उस सीधे सच्चे के साथ,
उसके बारे में मैंने एक सपना देखा।

बरअब्बा और यीशू दोनों में से,
किसे छोड़े वह पिलातुस ने पूछा,
किन्तु याजकों और यहूदी नेताओं ने,
उस भीड़ को बहकाया और फुसलाया।

सो कहा भीड़ ने छोड़ दो बरअब्बा,
और यीशू को चढ़ा दो क्रूस पर,
निरूपाय हो, पिलातुस ने उनसे कहा,
इसके खून का जिम्मा केवल तुम पर।

सरोकार नहीं कोई मेरा इस से,
यह तुम्हारा मामला है, तुम जानो,
कहा भीड़ ने इसके खून का जिम्मा,
हम और हमारे बच्चों पर मानो।

मजबूर हो तब पिलातुस ने,
छोड़ दिया कैदी बरअब्बा को,
यीशू को सौंप दिया कोड़े लगवा,
क्रूस पर उसे चढ़ाने को।

यीशू का उपहास

फिर ले चले सिपाही यीशू को,
तरह-तरह से उसका उपहास किया,
यहूदियों का राजा अमर रहे कह,
काँटों का ताज सिर पर रख दिया।

यीशू का क्रूस पर चढ़ाया जाना

जब वे बाहर जा ही रहे थे,
उन्हें कुरैन का निवासी शिमौन मिला,
दबाव डाला उन्होंने उस पर कि वह,
यीशू का क्रूस उठा कर चले चला।

फिर जब वे गुलगुता नामक स्थान पर पहुँचे,
पित्त मिली दाखरस उसे दी पीने को,
मना कर दिया जो यीशू ने पीने से,
सो चढ़ा दिया उन्होंने क्रूस पर उसको।

बाँट लिये यीशू के वस्त्र आपस में,
और वहीं बैठ वे पहरा देने लगे,
फिर लिख कर उसका अभियोग पत्र,
टाँग दिया उन्होंने सिर पर उसके।

इसी समय यीशू के साथ-साथ,
चढ़ाये जा रहे थे दो डाकू क्रूस पर,
एक डाकू उसकी दाहिनी ओर था,
और दूसरा डाकू था बायीं ओर पर।

पास जाते लोग अपना सिर मटकाते,
कर रहे थे अपमान उसका,
मन्दिर को गिरा फिर बनाने वाले,
पहले अपने को बचा के तो दिखा।

यदि तूँ है परमेश्वर का पुत्र,
तो क्रूस से तूँ नीचे उतर आ,
यदि यह क्रूस से उतर आये तो,
मान लें इसे हम इस्राएल का राजा।

यीशू की मृत्यु

फिर छाया रहा समूची धरती पर,
दोपहर से तीन बजे तक अंधियारा,
तब, ''एली, एली, लमा शबकतनी''*,
ऊँचे स्वर में यीशू ने पुकारा।

यह सुनकर कुछ कहने लगे,
यह पुकार रहा है नबी एलिय्याह को,
और दूसरे कुछ कहने लगे कि देखें
क्या आता है एलिय्याह इसे बचाने को।

फिर एक बार ऊँचे स्वर में पुकार,
अपने प्राण त्याग दिये यीशू ने,
तभी फट पड़ मन्दिर का परदा,
धरती काँपी और फट पड़ी चट्टानें।

परमेश्वर के मरे हुए बंदों के,
बहुत से शरीर फिर जी उठे,
यीशू के जी उठने के बाद वे,
पवित्र नगर में बहुतों को दिखाई पड़े।

रोमी सेना नायक और पहरा देने वाले,
डर गये जब इन घटनाओं को देखा,
और कहने लगे वे यह आपस में,
यीशू वास्तव में ही परमेश्वर का पुत्र था।

बहुत सी स्त्रियां गलील से ही,
आ रही थीं यीशू की देखभाल करने,
मरियम मगदलीनी, याकूब और मोसेस की माता मरियम,
और जब्दी के बेटों की मां थी उनमें।

यीशू का दफन

साँझ के समय अरिमतियाह नगर से,
यूसुफ नाम का एक धनी अनुयायी आया,
पिलातुस से आज्ञा ली शव लेने की,
फिर शव को नयी चादर में लिपटाया।

चट्टान काट बनवायी थी उसने एक कब्र,
शव को उसने उस कब्र में रखवाया,
फिर उस चट्टान के दरवाजे पर,
एक बड़ा पत्थर लुढ़का कर बन्द करवाया।

यीशू की कब्र पर पहरा

अगले दिन जब बीत गया शुक्रवार,
प्रमुख याजक और फरीसी पिलातुस से मिले,
कहा उससे कहीं ऐसा न हो कि,
यीशू के शिष्य उसका शव चुरा लें।

कहा था उसने तीसरे दिन जी उठूँगा,
सो, आज्ञा दें चौकसी रखने की,
फिर उस पत्थर पर मोहर लगा कर,
पहरेदार बैठ कर करने लगे चौकसी।

यीशू का फिर से जी उठना

सब्त के बाद, रविवार को जब,
सुबह के समय पौ फट रही थी,
मरियम मगद्लीनी और दूसरी मरियम,
वे दोनों वहाँ पर पहुँच चुकी थीं।

क्योंकि प्रभु का एक दूत वहाँ उतरा था,
इसलिये उस समय एक बड़ा भूचाल आया,
लुढ़का दिया स्वर्गदूत ने वह पत्थर,
और उस पत्थर पर उसने आसन जमाया।

बिजली सा चमचमा रहा था वह दूत,
उसके वस्त्र थे बर्फ के जैसे उजले,
वे सिपाही जो दे रहे थे पहरा,
मरणासन्न हो डर से लगे काँपने।

तब बोला वह दूत उन दो स्त्रियों से,
डरो मत, तुम यीशू को खोज रही हो,
जैसा कहा उसने, फिर जिला दिया गया है,
जहाँ लेटा था देख आओ उस जगह को।

* अर्थात् मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों बिसरा दिया?

फिर तुरंत जाओ और उसके शिष्यों से कहो,
जिला दिया गया उसे मरों हुओं में से,
अब उसे गलील में देखोगे तुम,
जहाँ जा रहा है वो पहले तुमसे।

तुरंत छोड़ दिया उन्होंने कब्र को,
और भर उठीं वे आनन्द से,
जब जा रहीं थीं वे वापस,
अचानक यीशू आ मिला उनसे।

कहा यीशू ने उन्हें, ''अरे तुम'',
पास आ चरण पकड़ लिये उन्होंने,
कहा यीशू ने, मेरे बंधुओं से कहो,
गलील जाऐं, वहीं पर मिलूँगा मैं उन्हें।

पहरेदारों द्वारा यहूदी नेताओं को घटना की सूचना

पहरेदारों ने जाकर बताया याजकों को,
तो उन्होंने मिलकर एक योजना बनायी,
धन देकर सिपाहियों का मुँह बन्द कर दिया,
शिष्यों द्वारा शव चुराने की बात फैलायी।

यीशू की अपने शिष्यों से बातचीत

ग्यारहों शिष्य जा पहुँचे गलील में,
जहाँ पहुँचने को यीशू ने कहा था,
यीशू को देख संदेह था कुछ को,
पर करी उन्होंने यीशू की वन्दना।

फिर पास जाकर उनसे यीशू ने कहा,
सौंपे गये दोनों जहाँ के अधिकार मुझको,
सो जाओ और मेरे अनुयायी बनाओ,
तुम सारे देशों के लोगों को।

परम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा,
उनके नाम में यह काम करना है,
बपतिस्मा दे कर उन लोगों को,
यह काम तुम्हें पूरा करना है।

वे सभी आदेश जो तुम्हें दिये हैं,
उन पर चलना सिखलाओ उन्हें,
मैं सृष्टि रहने तक साथ रहूँगा,
याद रखो यह मन में अपने।

मरकुस, लूका

इन दोनों अध्यायों और मत्ती अध्याय में, बहुत अधिक समानता होने के कारण इन, अध्यायों का केवल वो ही भाग यहाँ, पर प्रस्तुत किया जा रहा है, जो कि मत्ती से थोड़ा भिन्न है।

मरकुस

शिष्यों से यीशू की बातचीत

शिष्यों के सामने प्रकट हो यीशू ने कहा,
जाओ और दुनिया को सुसमाचार का उपदेश दो,
उद्धार होगा विश्वासी बपतिस्मा लेने वाले का,
जो अविश्वासी है दोषी ठहराया जाएगा वो।

फिर जब यीशू उनसे बात कर चुका,
उसे स्वर्ग पर उठा लिया गया,
और फिर जैसा कहा था यीशू ने,
परमेश्वर के दाहिनी ओर वह बैठ गया।

प्रभु काम कर रहा था उनके साथ,
जब बाहर जा शिष्यों ने आदेश दिया,
आश्चर्य कर्म की शक्ति से युक्त करके,
प्रभु ने वचन को सिद्ध किया।

लूका

प्रयत्न किया बहुतों ने लिखने का,
जो बातें घटी उनका ब्यौरा,
वो ही बातें हमें उन प्रचारकों ने बताई,
जिन्होंने शुरू से उन्हें घटते हुए देखा।

हे थियुफिलुस, अध्ययन किया है मैंने,
शुरू से ही सब कुछ का बड़ी सावधानी से,
सो उचित जान पड़ा कि विवरण लिखूँ तुम्हें,
ताकि उनकी निश्चितता जान लो, सीखा है जिसे।

जकरयाह और इलीशिबा

जब यहूदिया पर हेरोदेस का राज था,
जकरयाह एक याजक हुआ करता था,
उपासकों के अबिय्याह समुदाय से था वह,
हारून परिवार से थी उसकी पत्नी इलीशिबा।

करते थे प्रभु के आदेशों का पालन,
दोनों बूढ़े थे, कोई संतान ना थी,
पर्ची डालकर निर्णय करने पर,
आयी जकरयाह की धूप जलाने की बारी।

मंदिर में धूप की वेदी के दाहिने,
एक देवदूत उसे नजर आया,
उसे घबराया देख कहा देवदूत ने,
सुन ली गयी है तेरी प्रार्थना।

जन्म देगी तेरी पत्नी एक पुत्र को,
यूहन्ना रखेगा तूँ उसका नाम,
प्रसन्नता देगा वह तुम्हें और औरों को,
प्रभु की दृष्टि में वह होगा महान।

अपने जन्म के समय से ही,
वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा,
एलिय्याह की शक्ति और आत्मा में स्थित हो,
यूहन्ना प्रभु के आगे आगे चलेगा।

मोड़ेगा पिताओं का हृदय संतानों की ओर,
आज्ञा मानने को लोगों को प्रेरित करेगा,
यह सब कार्य वह लोगों को,
प्रभु के लिये तैयार करने को करेगा।

तब जकरयाह ने दूत से कहा,
कैसे जानूँ मैं कि यह है सच,
कहा दूत ने मैं जिब्राईल हूँ,
जो कर रहा हूँ वह है सच।

पर तूँने क्योंकि विश्वास नहीं किया,
इसलिये तूँ हो जायेगा गूँगा,
और तब तक नहीं बोल पायेगा,
जब तक यह न हो ले पूरा।

उधर लोगों को आश्चर्य हो रहा था,
क्यों इतना समय लिया जकरयाह ने,
लगा उन्हें उसे कोई दर्शन मिला है,
पर उन्हें एक भी शब्द कहा ना उसने।

थोड़े दिनों बाद गर्भवती हुई इलीशिबा,
पाँच महीनों तक अलग-अलग रही,
कहा उसने अब अन्त में जाकर,
प्रभु ने मेरी भी सुधि ली।

कुंवारी मरियम

इलीशिबा को जब छठा महीना था,
गलील के एक नगर नसारत में,
परमेश्वर द्वारा देवदूत जिब्राईल को,
भेजा गया कुंवारी मरियम से मिलने।

सगाई हो चुकी थी यूसुफ से उसकी,
यूसुफ दाऊद का एक वंशज था,

मरियम के पास आ कहा जिब्राईल ने,
मुझको तेरे पास परमेश्वर ने भेजा।

कहा, परमेश्वर प्रसन्न है तुझसे,
तूँ गर्भवती हो एक पुत्र को जन्मेगी,
वह महान होगा, कहलायेगा परमेश्वर का पुत्र,
और तूँ उसका नाम यीशू रखेगी।

और प्रभु परमेश्वर उसे उसके,
पिता दाऊद का सिंहासन प्रदान करेगा,
राज करेगा वह याकूब के घराने पर,
उसके राज्य का अंत कभी नहीं होगा।

बोली मरियम यह सच होगा कैसे,
क्योंकि मैं तो हूँ अभी कुंवारी,
कहा, पवित्र आत्मा की शक्ति आकर,
छाया में ले लेगी हस्ती तुम्हारी।

इस तरह वह पवित्र बालक,
कहलायेगा परमेश्वर का पुत्र,
तुम्हारे ही वंश की इलीशिबा भी,
जन्मेगी बुढ़ापे में एक पुत्र।

कहते थे लोग उसे बाँझ पर,
पर कुछ भी असम्भव नहीं परमेश्वर के लिये,
मरियम बोली, मैं दासी हूँ प्रभु की,
वैसा ही हो, जैसा तूँने कहा, मेरे लिये।

जकरयाह और इलीशिबा के पास मरियम का जाना

उन्हीं दिनों मरियम जकरयाह के यहाँ पहुँची,
और जब इलीशिबा ने उसका अभिवादन सुना,
तो अभिभूत हो उठी वह पवित्र आत्मा से,
और उसके पेट का बच्चा उछल पड़ा।

कहा मरियम से तूँ भाग्यशाली है,
प्रभु ने जो कहा तूँने विश्वास किया,
वह धन्य है जिसे तूँ जन्म देगी,
होकर रहेगा जो प्रभु ने कहा।

मरियम द्वारा परमेश्वर की स्तुति

स्तुति करी तब मरियम ने प्रभु की,
कहा, उसने अपने सेवक की सुध ली,
अहंकारियों का दमन, दीनों पर दया,
इब्राहीम के वंशजों पर सदा दया की।

यूहन्ना का जन्म

वक्त आने पर इलीशिबा ने पुत्र जन्मा,
लोगों ने नाम रखना चाहा जकरयाह,
पर इलीशिबा ने कहा लोगों से,
इसका नाम यूहन्ना रखा जाय।

जब लोगों ने पूछा जकरयाह से,
तो उसने भी यूहन्ना लिख दिया,
अचरज में पड़ गये सभी लोग जब,
इसके साथ ही जकरयाह बोलने लग गया।

जकरयाह की स्तुति

अभिभूत हो उठा वह पवित्र आत्मा से,
और उसने यह भविष्यवाणी की,
परम प्रधान परमेश्वर का,
हे बालक, तूँ कहलायेगा नबी।

क्योंकि तूँ प्रभु के आगे-आगे चल कर,
उसके लिये राह तैयार करेगा,
और उसके लोगों से कहेगा कि उनका उद्धार,
उनके पापों की क्षमा द्वारा हो रहेगा।

हमारे परमेश्वर के कोमल अनुग्रह से,
एक नया प्रभात उतरेगा ऊपर से,
ताकि जी रहे जो गहन मृत्यु की छाया में,
उन्हें शांति की दिशा मिल सके।

इस प्रकार बढ़ने लगा वह बालक,
दृढ़ से दृढ़तर होने लगी उसकी आत्मा,
वह जनता मैं प्रकट होने से पहले,
निर्जन स्थानों में निवास रहा करता।

यीशू का जन्म

उन्हीं दिनों औगुस्तुस कैसर ने,
आज्ञा दी जन-गणना करने की,
क्योंकि यूसुफ दाऊद का वंशज था,
बैतलहम की उसने यात्रा की।

वहाँ अपनी मंगेतर मरियम के साथ,
जो उस समय गर्भवती थी,
लिखवाने गया था वह अपना नाम,
जैसी कि राजा की आज्ञा थी।

तभी प्रसव का समय आ गया,
मरियम ने प्रथम पुत्र को जन्म दिया,
क्योंकि सराय में कोई जगह न थी,
उसने बच्चे को चरनी में रख दिया।

यीशू के जन्म की सूचना

तभी वहाँ कुछ गड़रियों के सामने,
प्रभु का एक दूत हुआ प्रकट,
सहम गए वे प्रभु का तेज देख,
तब उनसे दूत ने कहा ''डरो मत''।

एक अच्छा समाचार तुम्हारे लिये लाया हूँ,
जन्म हुआ है तुम्हारे उद्धारकर्ता मसीह का,
तुम उसे इस बात से पहचानोगे कि,
पाओगे उसे तुम एक चरनी में लेटा।

जब गड़रियों ने वहाँ जाकर देखा,
पाया उस बालक को चरनी में लेटा,
तब उन्होंने बालक के बारे में सन्देश,
जाकर सब लोगों को दिया बता।

जब आया खतने का आठवाँ दिन,
तो बालक का नाम रखा गया यीशू,
उसके गर्भ में आने से पहले ही,
स्वर्गदूत ने दिया था उसे नाम यीशू।

यीशू मन्दिर में अर्पित

जब सूतक के दिन पूरे हुए,
तो वे यीशू को यरूशलेम ले गए,
व्यवस्था नियमों के अनुसार साथ में वे,
बलि चढ़ाने के लिये एक कपोत ले गए।

शमौन को यीशू का दर्शन

यरूशलेम में शमौन नामक एक व्यक्ति,
बहुत भला और प्रभु का भक्त था,
करता था कामना इस्राएल के सुख चैन की,
पवित्र आत्मा का वह कृपा पात्र था।

पवित्र आत्मा ने प्रकट किया उस पर,
जब तक मसीह को देख न लेगा,
जीवित रहेगा वह उस समय तक,
उसके बाद ही वह प्राण तजेगा।

प्रेरणा पाकर वह आया मंदिर में,
जब लाया गया था वहाँ बालक को,
तब बालक को गोदी में उठाकर,
परमेश्वर की स्तुति करने लगा वो।

प्रभु अब तूँ अपने वचन अनुसार,
शांति के साथ मुक्त कर मुझको,
क्योंकि अब मैं अपनी आँखों से,
देख चुका हूँ तेरे मसीह को।

गैर यहूदियों के लिये तेरे मार्ग को,
उजागर करने का स्रोत है यह बालक,
और तेरे अपने इस्राएलियों के वास्ते,
तेरी ही अपनी महिमा है यह बालक।

अचरज में पड़े बालक के माता-पिता,
दिया आशीर्वाद शमौन ने उन्हें,
बहुतों के पतन या उत्थान का कारण,
बनेगा यह बालक कहा उन्हें।

हन्नाह द्वारा यीशू का दर्शन

वहीं थी हन्नाह नामक एक महिला नबी,
वर्षों से जो मंदिर में रहती थी,
उपवास और प्रार्थना करते हुए वह,
दिन-रात उपासना करती रहती थी।

आकर बच्चे और माता-पिता के पास,
धन्यवाद दिया उसने परमेश्वर को,
चाह रहे थे जो यरूशलेम की मुक्ति,
बालक के बारे में बताया उनको।

यूसुफ और मरियम का घर लौटना

प्रभु की व्यवस्था के अनुसार,
अपेक्षित विधि-विधान को पूरा कर,
लौट आये यूसुफ और मरियम,
उस बालक को ले अपने घर।

बालक यीशू

फसह पर्व पर हर वर्ष वे,
ले जाते थे यरूशलेम यीशू को,
जब यीशू हुआ बारह वर्ष का,
ले जाया गया यरूशलेम वो।

जब हुआ समाप्त फसह पर्व तो,
माता-पिता वापस चल दिये,
पर उनके साथ यीशू न था,
ढूँढते ही वो उसे रह गए।

ढूँढते-ढूँढते वे यरूशलेम लौट आये,
तीन दिन बाद उन्हें मिला यीशू,
उपदेशकों के बीच प्रश्न पूछता,
मंदिर में बैठा उन्हें मिला यीशू।

उसकी समझ बूझ और प्रश्नोत्तर से,
आश्चर्यचकित थे वे जिन्होंने सुना,
जब उन लोगों ने देखा उसे,
तब माँ ने यह यीशू से पूछा।

क्यों किया तूँने ऐसा हमारे साथ,
तुझे ढूँढते हुए हम व्याकुल थे,
तब उत्तर में यीशू ने कहा,
तुम मुझे क्यों ढूँढ रहे थे।

क्या तुम नहीं जानते कि मुझे,
मेरे पिता के घर में ही होना चाहिये,
किन्तु यीशू ने जो उत्तर दिया था,
उसके माता-पिता उसे नहीं समझ सके।

यूहन्ना का संदेश

तिबिरियुस कैसर के राज्यकाल में,
जब हेरोदेस था गलील का राजा,
पिलातुस था यहूदिया का राज्यपाल,
और महायाजक थे कैफा और यूहन्ना।

तभी जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास,
जंगल में परमेश्वर का वचन पहुँचा,
सो यर्दन के आसपास घूम-घूम कर,
बपतिस्मा का प्रचार वह करने लगा।

जैसा यशायाह की पुस्तक में लिखा*,
किसी का पुकारता हुआ शब्द जंगल में,
''प्रभु के लिये मार्ग तैयार करो,
और उसके लिये करो सीधी राहें।''

भर दी जायेगी हर घाटी और,
हर पहाड़-पहाड़ी सपाट हो जायेंगे,
समतल कर दी जायेगी उबड़-खाबड़ राहें,
सब परमेश्वर के उद्धार का दर्शन पायेंगे।

यूहन्ना के कार्य की समाप्ति
यूहन्ना द्वारा यीशू को बपतिस्मा
यूसुफ की वंश परम्परा

यीशू ने जब सेवा कार्य आरम्भ किया,
तो वह लगभग तीस वर्ष का था,

ऐसा सोचा गया कि यीशू,
एली के बेटे यूसुफ का पुत्र था।

एली मत्तात का मत्तात लेवी का,
यन्ना लेवी के पिता मलकी का पिता था,
यन्ना यूसुफ का, यूसुफ मत्तित्याह का,
और मत्तित्याह था पुत्र आमोस का।

आमोस नहूम का, नहूम असल्याह का,
असल्याह नोगह का, नोगह मात का पुत्र था,
मात मत्तित्याह का, मत्तित्याह शिमी का,
और शिमी था पुत्र योसेख का।

योसेख योदाह का, योदाह योनान का,
योनान रेसा का, रेसा जरूब्बाबिल का,
जरूब्बाबिल शालतियेल का शालतियेल नेरी का,
और नेरी था पुत्र मलकी का।

मलकी अद्दी का, अद्दी कोसाम को,
कोसाम इलमोदाम का, इलमोदाम ऐर का,
ऐर यहोशुआ का, यहोशुआ इलाजार का,
और इलाजार था पुत्र योरीम का।

योरीम मत्तात का, मत्तात लेवी का,
लेवी शमौन का, शमौन यहूदा का,
यहूदा यूसुफ का, यूसुफ योनान का,
और योनान था पुत्र इलियाकीम का।

इलियाकीम मेलिया का, मेलिया मिन्ना का,
मिन्ना मत्तात का, मत्तात नातान का,
नातान दाऊद का, दाऊद यिशै का,
और यिशै था पुत्र ओबेद का।

ओबेद बोअज का, बोअज सलमोन का,
सलमोन नहशोन का, नहशोन अम्मीनादाब का,
अम्मीनादाब आदमीन का, आदमीन अरनी का,
और अरनी था पुत्र हिस्रोन का।

* यशायाह – 40:3-5

हिस्रोन फिरिस का, फिरिस यहूदाह का,
यहूदाह याकूब का, याकूब इसहाक का,
इसहाक इब्राहीम का, इब्राहीम तिरह का,
और तिरह था पुत्र नाहोर का।

नाहोर सरूग का, सरूग रऊ का,
रऊ फिलिग का, फिलिग एबिर का,
एबिर शिलह का, शिलह केनान का,
और केनान था पुत्र अरफक्षद का।

अरफक्षद शेम का, शेम नूह का,
नूह लिमिक का, लिमिक मथूशिलह का,
मथूशिलह हनोक का, हनोक यिरिद का,
और यिरिद था पुत्र महललेल का।

महललेल केनान का, केनान एनोश का,
और एनोश था पुत्र शेत का,
शेत था आदम का पुत्र,
और आदम था पुत्र परमेश्वर का।

यीशू की परमपिता से प्रार्थना

पवित्र आत्मा में स्थित होकर यीशू ने,
आनन्दित हो करी प्रभु से प्रार्थना,
तूँने अपने को चतुरों से छिपाया,
पर अबोध जनों पर करी तूँने करुणा।

दिया है सब कुछ मुझे मेरे पिता ने,
पुत्र कौन है पिता ही जानता,
पुत्र जानता है पिता कौन है,
या जिस पर पुत्र प्रकट करना चाहता।

फिर शिष्यों को धीरे से कहा,
जो तुम लोग देख-सुन रहे हो,
तरसते हैं राजा लोग और नबी,
उसे देखने के लिये और सुनने को।

अच्छे सामरी की कथा

यीशू की परीक्षा लेने के लिये,
एक न्यायाधीश ने उससे पूछा,
गुरु अनन्त जीवन पाने के लिये,
क्या कुछ मुझे चाहिये करना।

यीशू ने कहा, व्यवस्था की विधि में,
क्या लिखा है, क्या तूँ उसमें पढ़ता,
उसने कहा, तूँ अपनी सारी शक्ति से,
प्रभु से प्रेम कर उसमें है लिखा।

और लिखा है, अपने पड़ौसी से,
प्रेम कर वैसे जैसे खुद से करता,
तब यीशू ने कहा, ठीक कहा तूँने,
उसी से जीयेगा तूँ, कर तूँ ऐसा।

उस पर न्यायशास्त्री ने पूछा,
लेकिन कौन है पड़ोसी मेरा,
उस पर उसे उत्तर देते हुए,
यीशू ने सुनायी उसे यह कथा।

यरूशलेम से यरीहो जाते एक व्यक्ति को,
घेर लिया डाकुओं ने राह में,
सब कुछ छीन, उसे विवस्त्र कर,
छोड़ दिया अधमरा कर उसे उन्होंने।

संयोग से गुजरा उधर से एक याजक,
पर मुँह मोड़ कर वह चला गया,
उसी रास्ते फिर एक लेवी आया,
किन्तु उसने भी कुछ न किया।

फिर एक सामरी वहाँ पर आया,
उसके मन में करुणा उपजी,
पशु पर लाद, ले गया सराय में,
उसके घावों की करी मरहम-पट्टी।

बता डाकुओं के सताये उस व्यक्ति का,
तेरे विचार से कौन हुआ पड़ौसी,
उत्तर में उस न्यायशास्त्री ने कहा,
वही जिसने उस पर दया की।

न्यायशास्त्री का यह उत्तर सुनकर,
यीशू ने न्यायशास्त्री से कहा,
जा और तूँ भी वैसा ही कर,
जैसा उस सामरी ने किया।

मरियम और मार्था

यीशू अपने शिष्यों के साथ,
पहुँचा एक स्त्री मार्था के घर,
ध्यान से सुना उसकी बहन मरियम ने,
जो कहा यीशू ने, चरणों में बैठकर।

व्याकुल हो, तैयारियों में लगी मार्था ने,
कहा, मरियम से कह, करे मेरी सहायता,
यीशू ने कहा, उत्तम अंश चुना उसने,
सो वह उससे नहीं छीना जायेगा।

प्रार्थना

पूछा एक शिष्य ने कैसे करें प्रार्थना,
यीशू ने कहा, प्रार्थना करो तो कहो,
हे पिता, पवित्र हो तेरा नाम,
और सर्वत्र ही तेरा ही राज्य हो।

दे दिन-प्रतिदिन आहार हमें,
और हमारे अपराध क्षमा कर,
क्षमा किए हमने भी अपने अपराधी,
कठिन परीक्षा से रख हमें बचाकर।

माँगते रहो

फिर यीशू ने उनसे कहा,
मानों तुम अपने मित्र के पास जाते हो,
आधी रात है, तुम्हारा मित्र सो रहा है,
और तुम उसका द्वार खटखटाते हो।

तुम्हारे घर आए किसी मित्र के लिए,
सोचो माँगते हो तुम रोटियाँ उससे,
तंग न करो द्वार बंद हो चुका है,
कल्पना करो वह कहता है तुमसे।

मैं कहता हूँ यदि तुम माँगते रहोगे,
तो तुम्हारा मित्र होने के कारण,
सुननी ही पड़ेगी उसे दस्तक तुम्हारी,
और देगा तुम्हें वह रोटी और सालन।

इसलिये मैं कहता हूँ तुमसे,
निस्संकोच माँगो, दिया जाएगा तुम्हें,
यदि खोजोगे तो पा जाओगे तुम,
खटखटाओ, भीतर आने देगा वो तुम्हें।

तुम में से कौन ऐसा पिता होगा जो,
पुत्र को मछली की जगह साँप दे दे,
और यदि वह अण्डा माँगे तो उसे,
अण्डे की जगह पर बिच्छु दे दे।

सो बुरे होते हुए भी यदि तुम,
अपने बच्चों के साथ करते हो ऐसा,
तो जो परमपिता से माँगते हैं उनको,
सोचो पवित्र आत्मा उन्हें कितना अधिक देगा।

स्वार्थ के विरुद्ध चेतावनी

कहा यीशू ने, सावधानी के साथ,
लोभ से खुद को दूर रखो,
क्योंकि जरूरत से अधिक होने पर भी,
जीवन का आधार उसका संग्रह नहीं समझो।

फिर यीशू ने एक दृष्टान्त सुनाया,
किसी धनी व्यक्ति के बड़ी फसल उपजी,
सोचने लगा वह, मैं क्या करूँ इसका,
मेरे पास रखने को इतनी जगह नहीं।

फिर उसने सोचा, छोटे कोठों को गिरा,
उनकी जगह बड़े कोठे बनवाऊँगा,
रख कर उनमें सारा अनाज और सामान,
मौज उड़ा, मैं अपनी आत्मा से कहूँगा।

किन्तु परमेश्वर उससे बोला,
इसी रात तेरी आत्मा ले ली जायेगी,
जो कुछ तूँने तैयार किया है,
क्या खबर वह किस को जायेगी।

देखो! कुछ ऐसा ही हुआ है,
उस व्यक्ति के साथ भी,
अपने लिये भंडार भरता वो,
किन्तु परमेश्वर की दृष्टि में नहीं वो धनी।

अपने को महत्व मत दो

क्योंकि यीशू ने कुछ अतिथियों को,
कोई सम्मानपूर्ण स्थान खोजते हुए देखा,
तो लोगों को समझाने के लिये,
यीशू ने सुनायी यह दृष्टान्त कथा।

जब तुम्हें कोई विवाह भोज पर बुलाये,
किसी आदरपूर्ण स्थान पर जाकर न बैठो,
क्योंकि हो सकता है कोई अधिक बड़ा,
व्यक्ति उसके द्वारा बुलाया गया हो।

फिर तुम दोनों को बुलाने वाला,
तुम्हारे पास आकर तुमसे कहेगा,
अपना स्थान उसे देकर तुम्हें,
सबसे नीचा स्थान ग्रहण करना पड़ेगा।

सो जब तुम्हें बुलाया जाता है तो,
जाकर सबसे नीचे का स्थान ग्रहण करो,
तुम्हारा सम्मान बढ़ेगा जब मेजबान कहे,
ऐ मित्र उठो और आकर ऊपर बैठो।

क्योंकि जो कोई उठायेगा अपने को,
उसे एक दिन नवा दिया जायेगा,
और जो नवायेगा अपने को,
उसे एक दिन ऊँचा किया जायेगा।

प्रतिफल

कहा यीशू ने, जब तूँ भोज दे,
अपने मित्रों, बन्धुओं धनिकों को ना बुला,
क्योंकि बदले में वो बुलायेंगे तुझे,
और तेरी दावत का बोझ करेंगे हल्का।

यदि बुलायेगा तूँ दीन-दुखियों को,
तो बदले में तुझे कुछ दे न सकेंगे,
आशीर्वाद बन जायेगा यह तेरे लिये,
इसका प्रतिफल होगा प्रभु के जिम्में।

अपना प्रभाव मत खोओ

नमक उत्तम है, पर स्वाद खोने पर,
नहीं किया जा सकता उसका उपयोग,
न मिट्टी, न खाद की कूड़ी लायक,
बस यूँ ही फेंक देंगे उसको लोग।

भटके पुत्र को पाने की दृष्टान्त-कथा

दो पुत्र थे एक व्यक्ति के,
छोटे ने बँटवारे की करी माँग,
सो पिता ने दोनों को बुलाकर,
अपनी सम्पत्ति दी उनमें बाँट।

दूर देश चल दिया छोटा बेटा,
बड़ा रह गया पिता के पास,
छोटे बेटे ने अपनी सारी सम्पत्ति,
यूँ ही ऐशो-आराम में की बर्बाद।

खाने के भी लाले पड़ गये,
किसी ने उसको कुछ न दिया,
फिर जब उसके होश ठिकाने आये,
वह समझा उसने था पाप किया।

सोचा, लौट जाऊँगा पिता के पास,
कहूँगा अपने पास मजदूर ही रख ले,
नहीं हूँ तेरा बेटा कहलाने के योग्य,
अब तेरी मर्जी, जैसा चाहे तूँ कर ले।

अभी वह कुछ दूरी पर ही था,
कि देख लिया उसके पिता ने उसको,
बहुत दया आयी पिता को उस पर,
दौड़कर बाहों में ले चूमा उसको।

बहुत शर्मिन्दा था बेटा लेकिन,
पिता ने उसका सत्कार किया,
नहलाया, धुलाया, मोटा बछड़ा पकवाया,
आनन्द मनाने का आदेश दिया।

कहा पिता ने, यह मेरा बेटा,
मर गया था, फिर जीवित हो आया,
चला गया था दूर यह मुझसे,
खो गया था, अब वापस आया।

उसका बड़ा बेटा जो खेत में था,
वापस लौटा तो सब जाना उसने,
आग बबूला हो उठा बड़ा भाई,
घर के भीतर जाना ना चाहा उसने।

बाहर आ उसे पिता ने समझाया,
पर उत्तर में कहा बड़े बेटे ने,
बरसों करी मैंने तेरी सेवा लेकिन,
एक बकरी तक ना दी तूँने।

पर जब तेरा यह बेटा आया,
जिसने अपना सब धन यूँ ही उड़ाया,
अपना प्यार लुटाया तूँने उस पर,
उसके लिये मोटा बछड़ा मरवाया।

तब पिता ने यह कहा उससे,
मेरे पास है बेटे, तूँ तो सदा से,
और जो कुछ भी मेरे पास है,
वह सब तो है तेरा, सदा से।

पर प्रसन्न हो, हमें मनाना चाहिये उत्सव,
क्योंकि तेरा यह भाई जो मर गया था,
अब जीवित हो यह वापस आया है,
हमें अब मिल गया जो खो गया था।

धनी पुरुष और लाज़र

एक व्यक्ति था जो बहुत धनी था,
आनन्द लेता था विलासिता के जीवन का,
वहीं लाज़र नाम का एक दीन दुःखी,
उसके द्वार पर पड़ा रहता था।

गुजारता था जीवन भूख पर वह,
पेट भरने को तरसता रहता था,
फिर एक दिन मर गया जब लाज़र,
इब्राहीम की गोद में उसे दिया बैठा।

फिर मर गया वह धनी पुरुष भी,
पर उसे नरक ही नसीब हुआ,
तड़पते हुए जब उसने आखें खोली,
तो इब्राहीम उसे बहुत दूर दिखा।

लाज़र को देख इब्राहीम की गोद में,
पुकार कर कहा, दया कर मुझ पर,
तड़प रहा हूँ यहाँ आग में मैं,
हे पिता इब्राहीम, रहम कर मुझ पर।

किन्तु इब्राहीम ने कहा, हे मेरे पुत्र,
तूँने जीवन में सब अच्छा पा लिया,
लाज़र को मिली केवल बुरी वस्तुएं,
इसलिये उसे यहाँ आनन्द दिया गया।

इसके अतिरिक्त हमारे और तुम्हारे मध्य,
एक बड़ी खाई दी गयी है डाल,
ताकि यहाँ से वहाँ, और वहाँ से यहाँ,
कोई आने जाने का करे ना ख्याल।

तब धनी ने कहा, हे मेरे पिता,
तूँ लाज़र को मेरे घर भेज दे,
वह चेतावनी देगा मेरे पाँच भाइयों को,
ताकि उनको यहाँ पर न आना पड़े।

किन्तु इब्राहीम ने सेठ से कहा,
उनके पास मूसा और नबी हैं,
वे उन लोगों की सुन सकते हैं,
उनके पास किस चीज की कमी है।

सेठ ने कहा यदि कोई मृतक,
उनके पास जाये तो वे मन फिराएंगे,
इब्राहीम ने कहा, नबियों की नहीं सुनते,
वे मृतकों की बात को क्या मानेंगे।

उत्तम सेवक बनो

यदि किसी के पास कोई दास हो,
और जब वह दास काम से लौटे,
तुरन्त आ और खाने पे बैठ जा,
क्या उसका स्वामी यह कहेगा उससे।

इसके बजाय वह उससे यह कहेगा,
पहले तूँ मेरा भोजन तैयार कर,
जब मैं खाना-पीना पूरा कर लूँ,
तब तूँ खा-पी और विश्राम कर।

अपनी आज्ञा पूरी करने पर क्या,
वह उस सेवक का करता धन्यवाद,
उसी तरह तुम्हारे साथ भी है,
किसी बड़ाई की न रखो आस।

जो तुमसे करने को कहा गया है,
उसे कर चुकने पर चाहिए तुम्हें कहना,
हम दास हैं, किसी बड़ाई के हकदार नहीं,
हमने तो बस कर्त्तव्य निभाया अपना।

आभारी रहो

यीशू जब यरूशलेम जा रहा था,
तभी दस कोढ़ी उसे मिले,
दया कर हम पर पुकारा उन्होंने,
याजकों को दिखाओ, कहा यीशू ने।

वे अभी जा ही रहे थे,
कि हो गये वे मुक्त कोढ़ से,
उनमें से एक ने जब यह देखा,
आ गिरा वह यीशू के चरणों में।

यीशू ने पूछा, क्या वो बाकी नौ,
मुक्त नहीं हो गये हैं कोढ़ से,
फिर वे कहाँ है, जो इसे छोड़,
लौटे नहीं स्तुति परमेश्वर की करने।

फिर यीशू ने उससे कहा,
खड़ा हो और चला जा,
तेरे विश्वास के ही कारण,
हो गया है तूँ अच्छा,

जक्कई

जब यीशू जा रहा था यरीहो से,
मौजूद था वहाँ जक्कई नाम का आदमी,

वह कर वसूलने वालों का मुखिया था,
इसलिये था वह बहुत धनी।

भीड़ और छोटे कद के कारण,
जा चढ़ा पेड़ पर यीशू को देखने,
वहाँ पहुँच यीशू ने उससे कहा,
आ रहा हूँ मैं तेरे घर ठहरने।

बहुत प्रसन्न हुआ जक्कई यह सुनकर,
पर अन्य लोग लगे बड़बड़ाने,
देखो, पापी के यहाँ अतिथि बनकर,
यीशू उसके घर जा रहा है ठहरने।

किन्तु जक्कई खड़ा हो प्रभु से बोला,
मैं अपनी आधी सम्पत्ति दान दे दूँगा,
और जो कुछ मैंने लिया छल से,
तो उसको चौगुना कर मैं लौटा दूँगा।

यह सुनकर उससे यीशू ने कहा,
इस घर पर आज उद्धार आया है,
क्योंकि जो खो गया है उसे ढूढ़ने,
और रक्षा करने मनुष्य का पुत्र आया है।

यीशू का क्रूस पर चढ़ाया जाना

यीशू के साथ और दो अपराधी,
ले जाये गये मृत्यु दण्ड के लिये,
यीशू के साथ उन्हें दायें और बायें,
चढ़ा दिया गया क्रूस पर मृत्यु के लिये।

चढ़ा हुआ था जब क्रूस पर यीशू,
कहा उसने, हे परम पिता,
ये नहीं जानते, ये क्या कर रहे हैं,
किन्तु कर देना तूँ उन्हें क्षमा।

उपहास कर रहे थे लोग यीशू का,
क्यों नहीं तूँ खुद को बचाता,
कर दी गई थी उस पर सूचना अंकित,
देखो, यह है यहूदियों का राजा।

क्रूस पर चढ़ाये एक अपराधी ने भी,
अपमान किया तब यीशू का,
क्या तूँ मसीह नहीं है कि तूँ,
हमको और खुद को ले बचा।

किन्तु दूसरे अपराधी ने फटकारा उसे,
क्या तूँ परमेश्वर से नहीं डरता,
हमारा दण्ड तो न्यायपूर्ण है लेकिन,
इस व्यक्ति ने की है न कोई खता।

फिर वह अपराधी बोला यीशू से,
याद रखना मुझे तूँ अपने राज्य में,
यीशू ने कहा, मैं सत्य कहता हूँ,
आज ही तूँ होगा मेरे साथ स्वर्ग में।

यीशू का देहान्त,
अरमतियाह का यूसुफ, यीशू का फिर से जी उठना
इम्माऊस के मार्ग पर

यीशू तीसरे दिन जब जी उठा,
उसके दो शिष्य इम्माऊस जा रहे थे,
जो घटनाएं घटी थीं उन पर वे,
आपस में बाचचीत करते जा रहे थे।

तभी वहाँ यीशू स्वयं आ उपस्थित हुआ,
और उनके साथ-साथ चलने लगा,
फिर उसने पूछा उन लोगों से तुम,
किन बातों की कर रहे हो चर्चा।

कहा उन्होंने, नासरी यीशू के बारे में,
जिसने दिखा दिया वह महान नबी था,
किन्तु हमारे प्रमुख याजकों और शासकों ने,
उसे मृत्यु दण्ड देने के लिये सौंप दिया।

हम आशा रखते थे कि यही था वह,
जो मुक्त कराता इस्राएल को,
आज उसे क्रूस पर चढ़े तीसरा दिन है,
पर अचम्भा हो रहा है हमको।

आज तड़के कुछ स्त्रियां कब्र पर गयीं,
किन्तु उन्हें उसका शव नहीं मिला,
स्वर्गदूत का दर्शन पाया उन्होंने,
वह जीवित है, उसने उनसे कहा।

तब यीशू ने उन लोगों से कहा,
क्यों तुम नबियों पर विश्वास नहीं करते,
क्या मसीह के लिये जरूरी नहीं था,
यातनाओं को भोग, अपनी महिमा में प्रवेश करे।

और इस तरह मूसा से प्रारम्भ कर,
यीशू ने करी उस सबकी व्याख्या,
नबियों और शास्त्रों में जो कहा गया था,
उसने उन सबको वह समझाया।

जब वे गन्तव्य के पास आये,
उसने दर्शाया जेसे आगे जा रहा हो,
पर उनके आग्रह करने पर,
उनके ही साथ ठहर गया वो।

खाने की मेज पर उसने रोटी उठाई,
और धन्यवाद कर जब दे रहा था टुकड़े,
तभी उनकी आँखे खोल दी गईं,
और यीशू को पहचान लिया उन्होंने।

किन्तु वह हो गया अदृश्य,
फिर वे लोग आपस में बोले,
जब वह हमसे बातें कर रहा था,
क्या हमारे हृदय में भड़के नहीं शोले।

तुरंत ही वे यरूशलेम को चल दिये,
जहाँ ग्यारहों प्रेरित और अन्य लोग मिले,
वे कह रहे थे, वह जी उठा है,
शमौन को उसने दर्शन हैं दिये।

फिर उन दोनों ने जो घटा था,
बतलाया वह सब उन लोगों को,
और कैसे रोटी के टुकड़े देते वक्त,
पहचान लिया था उन्होंने यीशू को।

यूहन्ना

यीशू का आना

आदि में बस केवल शब्द* था,
और शब्द था परमेश्वर के साथ,
सारी सृष्टि शब्द से उपजी,
उसी में था जीवन, दुनिया का प्रकाश।

फिर आया परमेश्वर का भेजा एक मनुष्य,
उस व्यक्ति का नाम यूहन्ना था,
बता सके प्रकाश के बारे में,
इसलिये साक्षी बन वह आया था।

वह प्रकाश इस जगत में ही था,
जगत उसके द्वारा ही अस्तित्व में आया,
पर जगत ने उसे पहचाना नहीं,
ना उसे घर आने पर अपनाया।

पर उसे जिन्होंने अपनाया उन्हें उसने,
परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया,

वह स्वयं नहीं था देह जनित,
बल्कि उसे जन्म परमेश्वर ने दिया।

उस आदि शब्द ने देह धारण कर,
हम सबके बीच निवास किया,
परमपिता के एकमात्र पुत्र रूप में,
दर्शन हमने उसकी महिमा का किया।

करुणा और सत्य से पूर्ण था वह,
उसकी साक्षी यूहन्ना ने दी,
पुकार कर कहा जिसके बारे में,
मुझसे महान, मुझसे पहले है यही।

उसकी करुणा और सत्य की पूर्णता से,
हम सबने अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किये,
हमें व्यवस्था विधान देने वाला मूसा था,
करुणा और सत्य हमें यीशू से मिले।

* शब्द– मूल में यूनानी भाषा का शब्द है लोगोस जिसका अर्थ है संदेश।

देखा नहीं किसी ने परमेश्वर को,
किन्तु परमेश्वर के एकमात्र पुत्र ने,
जो सदा परम पिता के साथ है,
प्रकट किया हम पर उसे।

यूहन्ना की यीशू के विषय में साक्षी

जब भेजा यरूशलेम के यहूदियों ने,
लेवियों और याजकों को उसके पास,
मैं मसीह नहीं हूँ, न ही एलिय्याह,
न भविष्यवक्ता, यूहन्ना ने दिया जवाब।

जब पूछा उन्होंने तो तुम कौन हो,
यूहन्ना ने कहा, मैं हूँ उसकी आवाज,
जो पुकार रहा है जंगल में,
प्रभु के लिये बनाओ सीधी राह।

पूछा उन्होंने फिर क्यों देते हो बपतिस्मा,
वह बोला, मैं बपतिस्मा देता जल से,
पर मेरे बाद आने वाला है एक,
नहीं जानते हो तुम अभी जिसे।

अगले दिन यूहन्ना ने यीशू को,
अपनी तरफ आते देखा और कहा,
परमेश्वर के मेमने को देखो,
जो जगत के पाप हर लेता।

यह वही है जिसके लिये मैंने कहा था,
जो मुझसे महान और विद्यमान था मुझसे पहले,
मैं इसलिये बपतिस्मा देता आ रहा हूँ,
ताकि इस्राएल के लोग उसे जान लें।

फिर कहा कबूतर के रूप में मैंने,
स्वर्ग से आत्मा नीचे उतरती देखी,
और स्वर्ग से नीचे उतरकर,
वह आत्मा उस पर आ टिकी।

मुझे जिसने बपतिस्मा देने हेतु भेजा था,
उसने कहा था तुम देखोगे उस पुरुष को,
पवित्र आत्मा से बपतिस्मा जो देता है,
'परमेश्वर का पुत्र' प्रमाणित करता हूँ मैं उसको।

यीशू के प्रथम अनुयायी

अगले दिन अपने दो चेलों के साथ,
यूहन्ना वहाँ पर फिर उपस्थित था,
जब उसने यीशू को गुजरते देखा,
उसने कहा, "देखो परमेश्वर का मेमना"।

यूहन्ना की बात सुन वे दोनों चेले,
चल पड़े यीशू के पीछे-पीछे,
पूछा जो यीशू ने वे बोले "रब्बी"
और यीशू के साथ हो लिये।

उन दोनों में से एक व्यक्ति,
शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था,
ले गया वह शमौन को यीशू के पास,
यीशू ने उसका नाम पतरस रखा।

फिर यीशू को फिलिप्पुस मिला,
आने को कहा उसे अपने पीछे,
फिलिप्पुस को जब नतनएल मिला,
यीशू के बारे में बताया उसने उसे।

यीशू ने जब नतनएल को देखा,
कहा उसे यह है एक इस्राएली सच्चा,
पूछा जो उसने कैसे जानता है यीशू,
कहा, अंजीर के पेड़ तले तुझे देखा।

अभिभूत हो नतनएल ने कहा,
हे रब्बी, तूँ है पुत्र परमेश्वर का,
यीशू ने कहा, अभी बहुत कुछ देखोगे,
विश्वास करो तुम मेरी बातों का।

काना में विवाह

गलील के काना में तीसरे दिन,
किसी के यहाँ विवाहोत्सव था,
शादी में यीशू को शिष्यों के साथ,
शामिल होने को बुलाया गया था।

वहाँ जब दाखरस खत्म हो गया,
यीशू की माँ ने यीशू से कहा,
मेरा समय अभी नहीं आया है,
क्यों मुझसे कह रही हो, यीशू ने कहा।

तब उसकी माता ने सेवकों से कहा,
जो तुमसे यह कहता है, वही करो,
वहाँ पानी के छह मटके रखे थे,
यीशू ने कहा उन्हें पानी से भरो।

फिर यीशू ने सेवकों से कहा,
अब थोड़ा सा बाहर निकालो मटके से,
और दावत का इन्तजाम कर रहे,
प्रधान के पास ले जाओ उसे।

जब उसने उस पानी को चखा,
तो पाया वह दाखरस बन गया था,
यह पहला चमत्कार कर यीशू ने,
अपनी महिमा को प्रकट किया था।

मन्दिर में यीशू

फिर कफरनहूम में कुछ दिन ठहरकर,
चला गया यीशू यरूशलेम को,
वहाँ मन्दिर से भगा दिया यीशू ने,
खरीद-फरोख्त करने वाले लोगों को।

पूछा यहूदियों ने, खुद को साबित करने हेतु,
तूँ क्या चमत्कार हमें दिखा सकता,
यीशू ने कहा, इस मन्दिर को गिरा दो,
मैं तीन दिन में इसे फिर बना सकता।

किन्तु यीशू की बात का लक्ष्य,
मन्दिर के रूप में अपना शरीर था,
लेकिन अपने अज्ञान के वश हो,
लोगों ने इसे तब समझा न था।

यीशू और नीकुदेमुस

नीकुदेमुस नाम के एक फरीसी ने,
यीशू के पास आकर यह कहा,

हे गुरु, हम जानते हैं कि तूँ,
आया है यहाँ परमेश्वर का भेजा।

परमेश्वर की सहायता के बिना कोई,
तुझ जैसे चमत्कार कर नहीं सकता,
जवाब में यीशू ने उससे कहा,
सत्य-सत्य मैं तुझ से यह कहता।

जब तक कोई भी व्यक्ति,
नये सिरे से जन्म न ले,
तो परमेश्वर के राज्य को,
संभव नहीं वह उसे देख ले।

कहा नीकुदेमुस ने, बूढ़ा होने पर,
कैसे फिर कोई जन्म ले सकता,
कहा यीशू ने, बतलाता हूँ तुम्हें,
मांस से मांस बस होता है पैदा।

और जो आत्मा से हो उत्पन्न,
वही वास्तव में होता है आत्मा,
जो जन्मा न जल और आत्मा से,
परमेश्वर का राज्य वह पा नहीं सकता।

मैंने जो कहा है तुमसे,
कोई आश्चर्य तुम उस पर न करो,
फिर से एक नये सिरे से,
जन्म लेना होगा ही तुमको।

जिधर चाहती, बहती है हवा,
नहीं जान सकते कहाँ से आ रही,
आत्मा से जन्मा हुआ हर व्यक्ति,
वो भी है बस ऐसा ही।

फिर संदेह किया जब नीकुदेमुस ने,
तो यीशू ने उसको बतलाया,
हम जो जानते हैं वहीं बोलते हैं,
और वहीं बताते हैं जो हमने देखा।

मैंने बतायी तुम्हें धरती की बातें,
और तुमने उन पर न किया विश्वास,
इसलिये अगर बतलाँऊ स्वर्ग की बातें,
तो कैसे करोगे उस पर विश्वास।

स्वर्ग में ऊपर गया न कोई,
सिवाय मानव-पुत्र के जो आया उतर कर,
जैसे मूसा ने उठा लिया था साँप,
मानव पुत्र भी उठा लिया जायेगा ऊपर।

इतना प्रेम था परमेश्वर को जगत से,
कि दे दिया अपना एक मात्र पुत्र उसे,
ताकि हर व्यक्ति जो उसमें विश्वास रखता है,
नष्ट न हो, अनन्त जीवन मिल जाये उसे।

इसलिये भेजा न परमेश्वर ने पुत्र को,
कि अपराधी वह दुनिया को ठहराये,
बल्कि इसलिये कि उसके द्वारा,
इस दुनिया का उद्धार किया जाये।

जो उसमें विश्वास रखता है,
ठहराया न जाये उसे दोषी,
पर जो उसमें विश्वास नहीं रखता,
ठहराया जा चुका है वह दोषी।

इस निर्णय का यह है आधार,
कि आ चुकी है दुनिया में ज्योति,
पर क्योंकि लोगों के कर्म बुरे हैं,
उन्हें अच्छी नहीं लगती ज्योति।

यूहन्ना द्वारा यीशू का बपतिस्मा

फिर यीशू अपने अनुनायियों के साथ,
चला गया यहूदिया के इलाके में,
वहाँ उनके साथ ठहर कर वह,
लोगों को बपतिस्मा लगा देने।

वहीं सालेम के पास ऐनोन में,
दिया करता था यूहन्ना भी बपतिस्मा,
आकर उसके शिष्यों ने बताया,
यीशू दे रहा है लोगों को बपतिस्मा।

उनके उत्तर में यूहन्ना ने कहा,
किसी को नहीं कुछ जब तक मिलता,

जब तक कि वह उस व्यक्ति को,
स्वर्ग से न हो दिया गया।

कहा था मैंने, मैं मसीह नहीं हूँ,
बल्कि उससे पहले गया हूँ भेजा,
जैसे दूल्हे का मित्र दूल्हे के लिये,
उसकी अगुवाई में रहता है खड़ा।

वह जो स्वर्ग से उतरा

जो आता ऊपर से, महान है सबसे,
जो देखा-सुना, उसकी साक्षी वह देता,
मानता है जो उसकी साक्षी को,
परमेश्वर सच्चा है वह प्रमाणित करता।

क्योंकि वह जिसे परमेश्वर ने भेजा,
बोलता है परमेश्वर की ही बातें,
क्योंकि आत्मा का अनन्त दान,
दिया है उसे परमेश्वर ने।

करता है पिता अपने पुत्र को प्यार,
सौंप दिया सब उसके हाथों में,
इसलिये अनन्त जीवन वह पाता,
जो करता है विश्वास पुत्र में।

यीशू और सामरी स्त्री

जब यीशू को पता चला कि,
फरीसियों ने सुना है कि यीशू,
दे रहा यूहन्ना से ज्यादा बपतिस्मा,
तो यहूदिया छोड़ चला गया यीशू।

यद्यपि यीशू नही दे रहा था,
स्वयं बपतिस्मा लोगों को,
यह उसके शिष्य थे जो,
दे रहे थे बपतिस्मा लोगों को।

गया गलील वह सामरिया होकर,
उसके एक नगर सूखार होता हुआ,
उस नगर के पास ही था,
उसके पूर्वज याकूब का कुआं।

थककर वह बैठा कुंए के पास,
एक सामरी स्त्री आई जल भरने,
यीशू ने उससे जल पीने को माँगा,
तो, ''मैं सामरी हूँ'', कहा उसने।

यीशू बोला यदि तूँ बस इतना जानती,
कि यह कौन तुझसे जल माँगता,
तो तूँ उससे माँगती और वह तुझे,
स्वच्छ जीवल-जल प्रदान करता।

उस स्त्री ने कहा, तेरे पास में,
न कोई बर्तन और कुआं गहरा,
फिर तेरे पास स्वच्छ जीवन-जल,
किस प्रकार से हो सकता।

यीशू ने कहा, उस कुंए का पानी,
पीने पर फिर लगती है प्यास,
किन्तु जीवन-जल पीने वाले को,
फिर कभी ना लगेगी प्यास।

बल्कि मेरा दिया हुआ जल,
उसके अन्तर में झरने सा बहेगा,
उमड़-घुमड़ कर वह जल उसको,
अनन्त जीवन प्रदान करता रहेगा।

तब उस स्त्री ने उससे कहा,
कृपा कर मुझे वह जल प्रदान कर,
ताकि मैं कभी प्यासी ना रहूँ,
ना खींचना पड़े जल, यहाँ आकर।

इस पर यीशू ने उससे कहा,
जाओ और अपने पति को बुला लाओ,
स्त्री ने कहा, मेरा पति नहीं है,
तो यीशू ने कहा तुम ठीक कहती हो।

पाँच पति थे तुम्हारे लेकिन,
अब तुम जिसके साथ रहती हो,
वह पुरुष तुम्हारा पति नहीं है,
इसलिये तुम सच ही कहती हो।

इस पर उस स्त्री ने यीशू से कहा,
लगता है मुझे तूँ है कोई अर्न्तयामी,
पूर्वजों ने की इस पर्वत पर अराधना,
पर तूँ कहता यरूशलेम को जगह अराधना की।

यीशू ने कहा, मेरा विश्वास कर,
निकट ही वह समय आ रहा,
इस पर्वत पर या यरूशलेम में,
करोगे न तुम परमपिता की आराधना।

तुम सामरी लोग उसे नहीं जानते,
जिसकी तुम करते हो आराधना,
पर हम यहूदी उसे जानते हैं,
जिसकी हम करते हैं आराधना।

अब सच्चे उपासक पिता की आराधना,
करेंगे आत्मा और सच्चाई में,
परमेश्वर आत्मा है इसलिये उसकी आराधना,
करनी होगी आत्मा और सच्चाई में।

तब स्त्री ने कहा, मैं जानती हूँ,
मसीह यानी ख्रीष्ट है आने वाला,
जब वह आयेगा तो हम लोगों को,
होगा सब कुछ बतलाने वाला।

सुनकर यह बात उस स्त्री से,
यीशू ने कहा, कहता हूँ मैं,
मैं जो तुझसे बातें कर रहा हूँ,
जो तूँ कह रही, वही हूँ मैं।

जाकर नगर में बोली वह स्त्री,
देखो, उसने मुझे सब बता दिया,
क्या तुम ऐसा नहीं सोचते कि,
मसीह है वह यहाँ आया हुआ।

पहुँच गये वे लोग यीशू के पास,
कह रहे थे शिष्य खाने को यीशू से,
बोला यीशू, ऐसा भोजन है मेरे पास,
जिसके बारे में तुम कुछ नहीं जानते।

यीशू ने कहा, जिसने भेजा है मुझे,
उसकी इच्छा पूरी करना, भोजन है मेरा,
और जो काम मुझे सौंपा गया है,
उसे पूरा करना फर्ज है मेरा।

मान उस स्त्री के शब्दों को साक्षी,
बहुत से सामरियों ने किया विश्वास,
लेकिन जब उन्होंने सुना यीशू को,
उसके वचनों से पक्का हो गया विश्वास।

राजकर्मचारी के बेटे को जीवन-दान

जब गलील में पहुँचा यीशू,
किया गलीलियों ने स्वागत उसका,
वहाँ एक राजाधिकारी का बेटा बीमार था,
यीशू ने किया उसको चंगा।

तालाब पर ला-इलाज रोगी का ठीक होना

फिर गया यीशू यरूशलेम को,
जहाँ एक देवदूत जलाशय में जल हिलाता था,
और फिर उसमें उतरने वाला पहला व्यक्ति,
सभी रोगों से छुटकारा पा जाता था।

एक व्यक्ति जो अड़तीस वर्ष से बीमार था,
यीशू ने उसे वहाँ लेटे देखा,
कहा यीशू ने खड़ा हो और चल पड़,
तो वह चल पड़ा अपना बिस्तर उठा।

वह दिन था सब्त का दिन,
सो यहूदियों ने उसे सताना शुरू कर दिया,
ना केवल वो तोड़ रहा था सब्त को,
बल्कि परमेश्वर को कहता था अपना पिता।

यीशू की साक्षी

कहा यीशू ने, तुम्हें सच्चाई बतलाता,
पुत्र स्वयं कुछ कर नहीं सकता,
वह केवल वही करता है जो,
अपने पिता को वह करते देखता।

पिता पुत्र को प्रेम करता है,
इसलिये दिखता उसे जो वह करता,
करें लोग उसके पुत्र का आदर,
इसलिये न्याय का अधिकार दे दिया।

जो करता नहीं आदर पुत्र का,
वह पिता का ही करता अनादर,
जो मेरे वचन का करता विश्वास,
धन्य होता अनन्त जीवन पाकर।

जैसे पिता जीवन का स्रोत है,
वैसे ही उसने पुत्र को बनाया,
वे पुनरूत्थान पर जीवन पाएंगे,
जिन्होंने अच्छे कामों को अपनाया।

यीशू का यहूदियों से कथन

मैं अपने आप से कुछ कर नहीं सकता,
जो परमेश्वर से सुनता, वैसा ही करता,
मेरा न्याय उचित है क्योंकि मैं,
जैसा वो चाहता, वैसा ही करता।

यदि मैं अपनी तरफ से दूँ साक्षी,
तो मेरी साक्षी नहीं है सत्य,
मेरी ओर से साक्षी जो देता,
मैं जानता हूँ कि वह है सत्य।

यूहन्ना के पास भेजा लोगों को तुमने,
और सत्य की दी साक्षी उसने,
मैं मनुष्य की साक्षी पर निर्भर नहीं करता,
यह इसलिये जिससे तुम्हारा उद्धार हो सके।

परमपिता ने जो सौंपे मुझे काम,
उन्हीं कामों को मैं पूर्ण कर रहा,
और वे काम ही हैं मेरी साक्षी,
कि भेजा गया हूँ उसके ही द्वारा।

सुना न उसका वचन कभी तुमने,
रूप न उसका तुमने कभी देखा,
क्योंकि तुम उसमें विश्वास नहीं रखते,
जिसे तुम्हारे पास परमपिता ने भेजा।

तुम करते हो शास्त्रों का अध्ययन,
उससे तुम्हें अनन्त जीवन मिलेगा सोचते,
ये सब शास्त्र देते हैं मेरी ही साक्षी,
फिर भी तुम मेरे पास नहीं आना चाहते।

मनुष्यों द्वारा की गयी प्रशंसा पर,
निर्भर नहीं करता हूँ मैं,
तुम्हारे भीतर परमेश्वर का प्रेम नहीं है,
किन्तु यह जानता हूँ मैं।

आया हूँ मैं अपने पिता के नाम से,
फिर भी तुम मुझे स्वीकार नहीं करते,
करते हो आपस में एक दूसरे की प्रशंसा,
कैसे तुम मुझमें विश्वास कर सकते।

उस प्रशंसा की तरफ देखते तक नहीं,
जो एकमात्र परमेश्वर से आती,
मत सोचो तुम्हें दोषी ठहराऊँगा मैं,
तुम्हें तो ठहरायेगा मूसा दोषी।

यदि विश्वास करते तुम मूसा में,
तो तुम मुझमें भी विश्वास कर लेते,
कैसे करोगे मेरे वचन में विश्वास,
जब मूसा का लिखा तुम नहीं मानते।

पाँच हजार से अधिक को भोजन
यीशू का पानी पर चलना
यीशू की ढूँढ

यीशू को ढूँढते हुए लोग,
कफरनहूम की ओर चल पड़े,
मिला यीशू उन्हें झील के पार,
तूँ यहाँ कब आया, पूछने लगे।

कहा यीशू ने जानता हूँ मैं,
तुम मुझे ढूँढ रहे रोटी के लिये,
मत ढूँढो वह अन्न जो सड़ जाता,
जतन करो मगर अनन्त जीवन के लिये।

पूछा उन्होंने, जो चाहता है परमेश्वर,
क्या करें करने के लिये उन्हें,
बोला यीशू, विश्वास करो उस पर,
भेजा है जिसे परमेश्वर ने।

पूछा लोगों ने, क्या चमत्कार करेगा,
जिसे देख तुझ पर हम विश्वास करें,
खाया था पूर्वजों ने रेगिस्तान में मन्ना,
स्वर्ग से रोटी दी, उसने उन्हें।

कहा यीशू ने, वह मूसा नहीं था,
जिसने तुम्हें दी स्वर्ग से रोटी,
बल्कि यह तो मेरा पिता है,
जो देता तुम्हें जीवन की सच्ची रोटी।

कहा लोगों ने उससे हे प्रभु,
दे सदा और देता रह वह रोटी,
उत्तर में यीशू ने उनसे कहा,
मैं ही हूँ वह जीवनदायी रोटी।

आता है जो कोई मेरे पास,
वो कभी भूखा ना रहेगा,
और जो करता मुझमें विश्वास,
वो कभी प्यासा न रहेगा।

वो जिसे परमपिता ने मुझे सौंपा,
मेरे पास आयेगा, मैं ना लौटाऊँगा उसे,
आया ना मैं अपनी इच्छी पूरी करने,
उसकी इच्छा पूरी करने भेजा है मुझे।

और मुझे भेजने वाले की इच्छा है,
कि मैं जिन्हें परमेश्वर ने मुझे सौंपा,
खोऊँ न उनमें से किसी को भी,
और अन्तिम दिन उन सबको दूँ जिला।

सुनकर यीशू की ये बातें,
यहूदी लोग उस पर बहुत बिगड़े,
क्या यह यूसुफ का बेटा यीशू नहीं,
क्या इसको हम नहीं जानते।

कहा यीशू ने मेरे पास,
तब तक कोई आ नहीं सकता,
जब तक मुझे भेजने वाला पिता,
उस व्यक्ति को प्रेरित नहीं करता।

कहता हूँ तुमसे मैं यह सत्य,
जो विश्वासी है वह अनन्त जीवन पाता,
और मैं वह रोटी हूँ जिसे,
जो खाता वह अनन्त जीवन पाता।

तुम्हारे पुरखों ने रेगिस्तान में,
खाया मन्ना तो भी मर गये,
जबकि स्वर्ग से आयी उस रोटी को,
यदि कोई खाये तो नहीं मरे।

मैं ही वह जीवित रोटी हूँ,
जो उतरी है स्वर्ग से,
अमर हो जायेगा खाने वाला,
जीवित रहेगा संसार इसी से।

बहस करने लगे यहूदी आपस में,
कैसे अपना शरीर यह खाने दे सकता,
बोला यीशू मेरा शरीर और लहू,
जो खाता-पीता, मुझमें ही रहता।

बिल्कुल वैसे ही जैसे कि मैं,
जीवित हूँ परम पिता के कारण,
इसी तरह जो मुझे खाता रहता,
जीवित रहेगा वह मेरे ही कारण।

अनन्त जीवन की शिक्षा

आत्मा ही है जो जीवन देता,
देह का कोई उपयोग नहीं है,
वे वचन, जो मैंने तुमसे कहे,
जीवन इन वचनों से ही है।

यीशू और उसके भाई

फिर चला यीशू गलील की ओर,
जाना चाहता था वह यहूदिया,

मार डालना चाहते थे उसे यहूदी,
कहा भाइयों ने चले जाओ यहूदिया।

कहा उन्होंने कोई भी व्यक्ति,
जो होना चाहता प्रसिद्ध लोगों में,
छिपा कर नहीं रखता अपने कार्य,
प्रकट करो स्वयं को जगत में।

यीशू ने कहा, मेरे लिये,
अभी ठीक समय नहीं आया,
यह जगत घृणा नहीं कर सकता तुमसे,
पर मुझसे यह घृणा करता आया।

खेमों के पर्व में उसके भाई,
चले गये उसमें शामिल होने,
यीशू भी उनके जाने के बाद,
चला गया छिप कर मेले में।

खोज रहे थे उसे यहूदी नेता,
तरह-तरह की लोग कर रहे बातें,
कोई भला कोई बुरा कह रहा,
यहूदी नेताओं से डरते हुए।

यरूशलेम में यीशू का उपदेश

जब लगभग आधा पर्व बीत गया,
यीशू ने मन्दिर में उपदेश दिया,
सुनकर उसे चकित थे सब लोग,
कहाँ से उसे यह ज्ञान मिला।

उत्तर में यीशू ने उनसे कहा,
यह ज्ञान मुझे भेजने वाले से आता,
जो भेजने वाले को देता यश,
वही व्यक्ति वास्तव में सच्चा होता।

क्या तुम लोगों को मूसा ने,
दिया नहीं व्यवस्था का विधान,
तुम उसका पालन नहीं करते,
क्यों मुझे मारने का रखते अरमान।

लोगों ने कहा, तुझ पर सवार भूत,
तुझे मारने का यत्न कर रहा,
उत्तर में यीशू ने उनसे कहा,
मेरा एक चमत्कार तुम्हें चकित कर गया।

इसी कारण से मूसा ने तुम्हें,
खतना करने का नियम दिया था,
और तुम लोग सब्त के दिन,
करते हो अपने लड़कों का खतना।

मूसा का विधान न टूटे कहीं,
इसलिये सब्त को करते हो खतना,
फिर क्यों क्रोध करते हो यदि,
सब्त को मैंने किया एक व्यक्ति को चंगा।

बातें जैसी तुमको दिखती हैं,
उसी आधार पर न्याय मत करो,
बल्कि जो वास्तव में उचित है,
उसी के आधार पर न्याय करो।

क्या यीशू ही मसीह है

फिर कुछ यरुशेलम वालों ने कहा,
क्या यही नहीं है वो जिसे मारना चाहते,
मगर वह बोल रहा सब के बीच,
फिर क्यों नहीं वो कुछ कर पा रहे।

क्या यह नहीं हो सकता कि,
जान गये वो यह है मसीह,
हम जानते हैं वो कहाँ से आया,
पर न जानेंगे कहाँ से आया मसीह।

तभी यीशू ने ऊँचे स्वर में कहा,
तुम जानते मुझे, और कहाँ से आया,
लेकिन मुझे यहाँ भेजा गया है,
अपनी ओर से मैं नहीं आया।

जिसने मुझे भेजा वह सत्य है,
लेकिन तुम उसे नहीं जानते,
पर मैं उसे जानता हूँ,
क्योंकि मैं आया हूँ उसी से।

फिर वे उसे बंदी बनाने का,
करने लगे यत्न, पर सफल न हुए,
समय न आया था अभी उसका,
लोग विश्वासी हो यह कहने लगे।

जितने चमत्कार उसने कर दिखलाये,
क्या कोई ऐसा कर पायेगा,
जब मसीह आएगा तो वह,
क्या इससे अधिक कुछ कर पायेगा।

यहूदियों का यीशू को बंदी बनाने का यत्न

प्रमुख धर्माधिकारियों और फरीसियों ने,
उसे बंदी बनाने सिपाहियों को भेजा,
बोला यीशू कुछ समय तुम्हारे पास रह,
उसके पास चला जाऊँगा, मुझे जिसने भेजा।

ढूँढोगे तुम लोग मुझे पर,
तुम मुझे नहीं ढूँढ पाओगे,
क्योंकि मैं जिस जगह होऊँगा,
तुम वहाँ जा नहीं पाओगे।

यीशू ने जो बातें कहीं,
समझ न पाये उसे यहूदी नेता,
कहने लगे आपस में वो,
शायद यह यूनान जा रहा।

यीशू द्वारा पवित्र आत्मा का उपदेश

पर्व के अन्तिम दिन यीशू ने कहा,
मेरे पास आये और पिये जो हो प्यासा,
जो मुझमें विश्वासी है, उसके अंतर में,
स्वच्छ जीवन जल की फूट पड़ेगी धारा।

कहा यीशू ने आत्मा के बारे में,
जिसे वे पायेंगे जिनका विश्वास दृढ़ होगा,
वह आत्मा अभी तक दी नहीं गयी,
क्योंकि यीशू अभी तक महिमावान नहीं हुआ।

यीशू के बारे में लोगों की बातचीत

भीड़ में कुछ ने जब यह सुना,
वे बोले, निश्चय ही नबी है यह वही,
कुछ कहने लगे, यह आया गलील से,
शास्त्रों में बैतलहम लिखा, गलील नहीं।

इस तरह से वहाँ लोगों में,
फैल गयी एक तरह से भ्रान्ति,
पर किसी ने हाथ डाला नहीं,
हालांकि बनाना चाहते थे वो उसे बंदी।

यहूदी नेताओं का यीशू में विश्वास

लौट आये तब मन्दिर के सिपाही,
उसके उपदेशों से हो अत्यंत प्रभावित,
इस पर फरीसियों ने उनसे कहा,
क्या तुम भी हो नहीं गये भ्रमित।

नीकुदेमुस ने कहा, हमारा व्यवस्था विधान,
किसी को तब तक दोषी नहीं ठहराता,
पता न लगा ले क्या किया है उसने,
और जब तक उसकी सुन नहीं लेता।

उत्तर में उन्होंने उससे कहा,
क्या तूँ भी नही है गलील का,
शास्त्रों को पढ़ तो तुझे पता चलेगा,
कि गलील से कोई नहीं आयेगा।

दुराचारी स्त्री को क्षमा

फिर चला गया यीशू जैतूँन पर्वत पर,
अलख सबेरे वह मन्दिर में गया,
सभी लोग उसके पास आ गये,
यीशू बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।

तभी यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी लोग,
एक स्त्री को पकड़ यीशू के पास लाये,
व्यभिचार का अभियोग लगा उस पर,
पूछा, क्यों न इसे संगसार किया जाये।

मूसा का विधान इसकी आज्ञा देता है,
पर तूँ बता इसका क्या किया जाये,
उसे जाँचने हेतु वे पूछ रहे थे,
ताकि उसके खिलाफ कोई बहाना मिल जाये।

किन्तु यीशू नीचे झुक कर,
अपनी उंगली से धरती पर लिखने लगा,
पर क्योंकि वे पूछते ही जा रहे थे,
इसलिये यीशू तन कर हो गया खड़ा।

फिर यीशू ने उन लोगों से कहा,
मार सकते हो तुम पत्थर इसको,
पर तुममें से जो पापी नहीं है,
वहीं सबसे पहले पत्थर मारे इसको।

सुनकर यीशू के मुख से यह बात,
एक-एक कर लोग चल दिये,
रह गया बस यीशू ही अकेला,
कहा उसे फिर वह पाप न करे।

जगत का प्रकाश यीशू

फिर लोगों से यीशू ने कहा,
मैं हूँ इस जगत का प्रकाश,
मेरा अनुयायी अंधेरे में न रहेगा,
उसे मिलेगा जीवन देने वाला प्रकाश।

उस पर फरीसी बोले उससे,
तूँ स्वयं दे रहा अपनी साक्षी,
ऐसा करना उचित नहीं है,
कैसे मान ली जाये तेरी साक्षी।

कहा यीशू ने, मेरा अपने लिये,
उचित है स्वयं साक्षी देना,
क्योंकि मैं जानता हूँ कहाँ से आया,
और क्या है गन्तव्य मेरा।

किन्तु तुम लोग नहीं जानते,
मैं कहाँ से आया, कहाँ जा रहा,
तुम इंसानी सिद्धांतों पर करते न्याय,
मैं न्याय नहीं करता किसी का।

किन्तु यदि मैं न्याय करूँ भी तो,
मेरा न्याय उचित ही होगा,
क्योंकि मुझे भेजने वाला परम पिता,
न्याय करने में साथ मेरे होगा।

लिखा है तुम्हारे विधान में कि,
न्याय संगत है दो व्यक्तियों की साक्षी,
मैं अपनी साक्षी स्वयं देता हूँ,
और मेरा पिता भी देता मेरी साक्षी।

उस पर लोगों ने उससे कहा,
कहाँ ढूँढे हम तेरे पिता को,
बोला यीशू तुम जानते नहीं हो,
ना ही मुझे, ना मेरे पिता को

यहूदियों का यीशू के विषय में अज्ञान

यीशू ने फिर एक बार उनसे कहा,
मैं चला जाऊँगा और तुम मुझे ढूँढोगे,
मर जाओगे तुम अपने ही पापों में,
जहाँ जा रहा हूँ, तुम नहीं आ सकोगे।

सोचने लगे तब वे यहूदी प्रमुख,
क्या यह आत्महत्या करने जा रहा,
क्योंकि यह कह रहा तुम नहीं आ सकते,
जिस जगह पर मैं जा रहा।

उस पर यीशू ने उनसे कहा,
तुम नीचे के हो, मैं ऊपर से आया,
इस संसार के हो तुम लोग,
पर मैं इस जगत से नहीं आया।

पूछा उन्होंने, "तूँ कौन है", यीशू से,
उत्तर में यीशू ने उनसे कहा,
मैं वहीं हूँ, जैसा कि प्रारम्भ से,
तुमसे कहता मैं चला आ रहा।

तुमसे कहने और न्याय करने को,
है बहुत कुछ पास मेरे,

पर सत्य वही है जिसने मुझे भेजा,
वही कहता हूँ जो सुना उससे।

जब ऊँचा उठा लोगे मनुष्य के पुत्र को,
तब तुम जानोगे कि मैं हूँ वह,
मैं अपनी ओर से कुछ नहीं कहता,
जो सिखाया उसने, कहता हूँ वह।

और वह जिसने भेजा है मुझे,
साथ में रहता है मेरे सदा,
क्योंकि जो भाता है उसे,
वही करता हूँ मैं सदा।

पाप से छुटकारे का उपदेश

मानोगे यदि तुम मेरे उपदेशों को,
तो तुम मेरे अनुयायी बन जाओगे,
जान जाओगे तब तुम सत्य को,
और सत्य जानकर मुक्त हो जाओगे।

कहा उन्होंने हम इब्राहीम के वंशज,
कभी स्वीकारी ना किसी की दासता,
फिर तुम किस तरह कहते हो हमें,
कि पा जाएंगे हम मुक्त होने की पात्रता।

यीशू ने कहा, हर वह व्यक्ति,
जो पाप करता, उसका दास हो जाता,
रह नहीं सकता दास परिवार में,
बस पुत्र ही साथ सदा रह सकता।

यदि तुम्हें पुत्र मुक्त करता है,
तभी मुक्त होंगे तुम वास्तव में,
पर तुम मुझे मारने का यत्न करते,
मेरे उपदेश टिकते नहीं तुम्हारे मन में।

मैं वही कहता हूँ जो,
मेरे पिता ने मुझे दिखाया,
और तुम वह करते हो जो,
तुम्हारे पिता ने तुम्हें बताया।

यदि तुम होते परमेश्वर की संतान,
तो करते तुम प्यार मुझ से,
मैं अपने आप से नहीं आया हूँ,
परमेश्वर ने ही भेजा है मुझे।

पर क्योंकि मैं सत्य कह रहा हूँ,
तुम मुझमें विश्वास नहीं करते,
वे व्यक्ति जो परमेश्वर के हैं,
परमेश्वर के वचनों को वे सुनते।

अपने और इब्राहीम के विषय में यीशू का कथन

बोले यहूदी, क्या हम झूठ कहते थे,
जब तुझे हम कहते थे सामरी,
और क्या यह सही नहीं है,
तुझ पर दुष्टात्मा कर रही सवारी।

यीशू ने कहा, नहीं कोई दुष्टात्मा नही,
बल्कि परमपिता का मैं आदर करता,
मैं चाहता नहीं हूँ अपनी महिमा,
पर एक है जो मेरी महिमा चाहता।

और मैं तुमसे सत्य कहता हूँ,
जो मेरे उपदेशों को धारण करेगा,
उनको सुनने, उन पर चलने वाला,
ऐसा व्यक्ति कभी भी नहीं मरेगा।

बोले वे लोग, नबी भी मर गये,
तूँ कैसे मृत्यु न होगी कहता,
बड़ा नहीं है तूँ इब्राहीम से,
तूँ क्या स्वयं के बारे में सोचता।

बोला यीशू यदि मैं अपनी महिमा करूँ,
तो वह महिमा मेरी कुछ भी नहीं,
महिमा देने वाला है वह परम पिता,
जिसे तुम कुछ भी जानते नहीं।

यदि मैं यह कहूँ मैं उसे नहीं जानता,
तो तुम्हारी ही तरह मैं ठहरूँगा झूठा,

पर मैं जानता हूँ उसे अच्छी तरह,
जो वह कहता मैं उसका पालन करता।

तुम्हारा पूर्वज यह जानकर कि,
वह दिन देखेगा जब होगा मेरा आगमन,
भर गया था आनन्द से वह,
उसने इसे देखा और हुआ प्रसन्न।

फिर यहूदी नेताओं ने उससे कहा,
तूँ अभी पचास का भी न हुआ,
फिर कैसे यह संभव है कि,
तूँने इब्राहीम को देख लिया।

यीशू ने कहा, मैं सत्य कहता हूँ,
कि मैं हूँ, इब्राहीम से पहले भी,
उठा लिये उन्होंने पत्थर यीशू को मारने,
पर चला गया यीशू वहाँ से ही।

जन्म से अन्धे को दृष्टि-दान

जाते हुए यीशू ने एक जन्मान्ध देखा,
तो उसके अनुयायियों ने उससे पूछा,
यह व्यक्ति पापों के कारण अंधा है,
या दोष है इसके माता-पिता का।

न इसके पाप न माता-पिता के,
बल्कि यह इसलिये जन्मा है अन्धा,
बोला यीशू ताकि उसको अच्छा कर,
परमेश्वर की शक्ति की हो चर्चा।

उसके कामों को जिसने मुझे भेजा है,
हमें कर लेना चाहिये दिन में,
रात में कोई काम कर न सकेगा,
मैं जगत की ज्योति हूँ, जगत में।

इतना कह यीशू ने धरती पर थूँका,
और उससे सान ली कुछ मिट्टी,
फिर उसे अंधे की आँखों पर मलकर कहा,
जा शिलोह के तालाब में धो आ मिट्टी।

और फिर उस अंधे ने जाकर,
धो डाली तालाब में अपनी आँखे,
जब वह वापस लौट कर आया,
देख पा रहीं थी उसकी आँखे।

दृष्टि-दान पर फरीसियों का विवाद

जिस दिन उस अंधे को दृष्टि मिली,
वह दिन सब्त का दिन था,
पूछने लगे फरीसी उस व्यक्ति से,
किस ने उसे किया है चंगा।

कहने लगे यीशू के लिये फरीसी,
यह व्यक्ति नहीं परमेश्वर की ओर से,
करता नहीं यह सब्त का पालन,
पर कोई पापी कर सकता चमत्कार कैसे।

इस तरह से उनमें आपस में,
बनी न सहमति, होने लगा विवाद,
फिर से पूछा उन्होंने उस अंधे से,
वह नबी है, दिया अंधे ने जवाब।

यकीन न आया जो फरीसियों को,
उसके माता-पिता को बुलाकर पूछा,
कहा इन्होंने यह हमारा पुत्र है,
जो था जन्म से ही अंधा।

पर हम नहीं जानते कि कैसे,
अब उसे दिखाई देने लग गया,
इसी से पूछो, यह ही बतायेगा,
काफी बड़ा अब यह हो गया।

इसलिये उन्होंने यह बात कही,
क्योंकि डरते थे वे यहूदी नेताओं से,
जानते थे यीशू को मसीह मानने वाले,
निकाल दिये जायेंगे सायनागोग से।

फिर से उस अंधे से पूछा उन्होंने,
पूछा किस तरह मिली दृष्टि उसे,

उसने कहा मैं तुम्हें बता चुका हूँ,
पर तुम समझना ही नहीं चाहते उसे।

इस पर उसका अपमान किया उन्होंने,
और कहा तूँ है उसका अनुयायी,
वह कहाँ से आया हम नहीं जानते,
हम तो हैं मूसा के अनुयायी।

इस पर उस व्यक्ति ने कहा,
परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता,
पर जो होते परमेश्वर को समर्पित,
वह तो बस उनकी ही सुनता।

कभी सुना नहीं कि किसी ने,
दृष्टि दी जन्म से अंधे व्यक्ति को,
यदि वह न होता परमेश्वर की ओर से,
तो कैसे कर पाता इस चमत्कार को।

उत्तर में उन्होंने उससे कहा,
तूँ रहा है पापी सदा से,
अब तूँ हमें पढ़ाने चला है,
और धकेल दिया बाहर उसे।

आत्मिक अंधापन

उससे मिलकर पूछा यीशू ने,
क्या मनुष्य के पुत्र में करता विश्वास,
बोला कौन है वह, हे प्रभु बताइये,
ताकि मैं करूँ उसमें विश्वास।

बोला यीशू, तूँ उससे बातें कर रहा,
फिर कहा, मैं आया हूँ करने न्याय,
ताकि जो नहीं देखते, वे देखने लगे,
और जो देखता है, नेत्रहीन हो जाय।

कुछ फरीसी जो यीशू के साथ थे,
बोले हम निश्चयी नहीं हैं अन्धे,
यीशू बोला तब तुम पापी नहीं होते,
तुम देख सकते हो, सो हो पापी बंदे।

चरवाहा और उसकी भेड़ें

बोला यीशू, जो भेड़ों के बाड़े में,
छिप कर घुसता, होता चोर लुटेरा,
किन्तु घुसता है जो दरवाजे से,
वही भेड़ों का चरवाहा होता।

भेड़ें पहचानती हैं उसकी आवाज,
वह उन्हें पुकार, बाहर ले आता,
चलती हैं भेड़ें उसके पीछे,
वह भेड़ों के आगे-आगे चलता।

नहीं करती वे अनजान का अनुसरण,
वे तो उससे बस दूर भागती,
ऐसा करती हैं वो इसलिये क्योंकि,
वे उस अनजान की आवाज नहीं पहचानतीं।

भेड़ों और चरवाहे का यह दृष्टान्त,
जो यीशू ने उन्हें दिया था,
नहीं समझ पाये वे यह कि,
यीशू उन्हें क्या बता रहा था।

अच्छा चरवाहा यीशू

यीशू ने कहा, सत्य कहता हूँ,
द्वार हूँ मैं, भेड़ों के लिये,
वे जो आने थे मुझसे पहले,
वे थे चोर और लुटेरे।

जो करता प्रवेश मुझमें से होकर,
रक्षा होगी, भीतर-बाहर जा-आ सकेगा,
चोर आते हैं चोरी और विनाश हेतु,
मुझसे लोगों को भरपूर जीवन मिलेगा।

अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये,
दे देता है अपनी जान,
पर किराये का मजदूर भाग जाता,
उसे प्यारी होती है अपनी जान।

मैं अच्छा चरवाहा, जानता अपनी भेड़ों को,
और मेरी भेड़ें जानती हैं मुझे,

जैसे मैं अपने परम पिता को जानता,
और परम पिता जानता है मुझे।

मेरी और भेड़ें भी हैं,
जो नही हैं इस बाड़े की,
मुझे उन्हें भी लाना होगा,
यहाँ आकर वो एक हो रहेंगी।

करता है परम पिता मुझसे प्रेम,
क्योंकि मैं अपना जीवन देता हूँ,
इसे मुझसे कोई लेता नहीं है,
बल्कि अपनी इच्छा से उसे देता हूँ।

इससे फूट पड़ गयी यहूदी नेताओं में,
करने लगे वो तरह-तरह की बातें,
कोई कहता था दुष्टात्मा है उस पर,
कोई कर रहा आश्चर्य, उसने दी आखें।

यहूदी यीशू के विरोध में

फिर सर्दियों में यहूदी नेताओं ने,
घेर लिया मन्दिर में यीशू को,
कहा, तूँ कब तक तंग करता रहेगा,
यदि तूँ मसीह है, तो बता हमको।

कहा यीशू ने, तुम विश्वास नहीं करते,
मेरे काम हैं स्वयं मेरी साक्षी,
पर तुम नहीं हो, मेरी भेड़ों में,
मेरी भेड़ें मेरी आवाज पहचानतीं।

देता हूँ उन्हें मैं अनन्त जीवन,
उनका कभी नाश नहीं होगा,
और ना कोई उन भेड़ों को,
कभी भी मुझसे छीन सकेगा।

उन भेड़ों को मुझे सौंपने वाला,
मेरा परम पिता है महान सबसे,
मैं और मेरा पिता एक हैं,
छीन नहीं सकता उन्हें कोई उससे।

फिर यहूदी नेताओं ने यीशू पर,
मारने के लिये उठा लिये पत्थर,
बोले, तूँ करता परमेश्वर का अपमान,
घोषित करता है स्वयं को परमेश्वर।

बोला यीशू, क्या विधान में नहीं लिखा,
"मैंने कहा तुम सभी ईश्वर हो"*,
क्या यह उनके लिये नहीं कहा,
जिन्हें परमेश्वर का संदेश मिल चुका हो।

और तुम यह कह रहे हो उसके लिये,
जिसे उसने समर्पित कर जगत को भेजा,
और वह भी केवल इसलिये कि,
"मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ", मैंने कहा।

यदि नहीं कर रहा मैं परमेश्वर का कार्य,
तो तुम मेरा विश्वास मत करो,
और यदि कर रहा उसके ही कार्य,
तो उन कार्यों में ही विश्वास करो।

एक बार फिर से यहूदियों ने,
प्रयास किया उसे बंदी बनाने का,
पर बच निकल उनके हाथ से यीशू,
यर्दन नदी के पार चल दिया।

बहुत से लोग आ कहने लगे,
जो कहा यूहन्ना ने इसके बारे में,
वह सब वास्तव में सच निकला,
और वे उसके विश्वासी हो गये।

लाज़र की मृत्यु

मरियम और मारथा, दो बहनों का भाई,
लाज़र रहता था बैतनिय्याह नगर में,
यह मरियम ही थी अपने बालों से,
यीशू के चरण पोंछे थे जिसने।

इन बहनों ने समाचार भेजा यीशू को,
कि लाज़र उनका भाई है बीमार विकट,

यीशू ने कहा लाज़र की बीमारी है,
प्रभु की महिमा करने को प्रकट।

फिर यीशू अपने अनुयायियों के साथ,
लौट चला यहूदिया नगर को,
कहा, हमारा मित्र लाज़र सो गया है,
मैं जा रहा हूँ जगाने उसको।

बैतनिय्याह में यीशू

वहाँ जाकर यह पाया यीशू ने,
दफना दिया था उसे चार दिन पहले,
बहुत से यहूदी नेता आए हुए थे,
मरियम और मारथा को सांत्वना देने।

जब सुना मारथा ने कि यीशू आया है,
तो जाकर मारथा ने कहा यीशू से,
हे प्रभु, यदि तूँ यहाँ होता तो,
मरता नहीं मेरा भाई इस तरह से।

पर मैं जानती हूँ कि अब भी तूँ,
परमेश्वर से जो माँगेगा वह देगा,
इस पर यीशू ने उससे कहा,
तेरा भाई फिर से जी उठेगा।

बोली मारथा मैं जानती हूँ कि,
पुनरुत्थान के दिन वह जी उठेगा,
बोला यीशू, मैं ही हूँ पुनरुत्थान और जीवन,
जो मुझमें विश्वास करता है, जियेगा।

यीशू रो दिया

मारथा ने जा मरियम से कहा,
गुरू यहीं है, बुला रहा है तुझे,
चल दी मरियम उससे मिलने तुरन्त,
पीछे-पीछे उसके और लोग हो लिये।

* भजन 82:6 मैंने (परमेश्वर) कहा, "तुम लोग ईश्वर हो, तुम परमेश्वर के पुत्र हो।"

गिर पड़ी मरियम यीशू के चरणों में,
और यीशू से वह कहने लगी,
हे प्रभु यदि तूँ यहाँ होता,
तो कदापि मेरा भाई मरता नहीं।

देखा जब यीशू ने उन्हें बिलखते,
तो तड़प उठी उसकी आत्मा,
व्याकुल हो उसने पूछा उनसे,
तुमने उसे रखा है कहाँ।

यीशू का लाज़र को फिर जीवित करना

व्याकुल हो यीशू गया कब्र की ओर,
जो एक गुफा थी चट्टान से ढकी,
कहा यीशू ने इस चट्टान को हटाओ,
मैं देखना चाहता हूँ देह इसकी।

तब मृतक की बहन मारथा ने कहा,
उसे दफनाए चार दिन हो चुके,
आ रही होगी अब वहाँ दुर्गन्ध,
अब क्या हो सकेगा उसके लिये।

उत्तर में यीशू ने उससे कहा,
क्या तुझसे मैंने यह नहीं कहा,
यदि तूँ विश्वास करेगी तो,
देख पायेगी तूँ परमेश्वर की महिमा।

तब हटा दी वह चट्टान उन्होंने,
यीशू ने धन्यवाद देते हुए कहा,
हे प्रभु, तूँने मेरी सुन ली है,
मैं जानता हूँ तूँ मेरी सुनता है सदा।

किन्तु कहा है यह मैंने,
इस इकट्ठी हुई भीड़ के लिये,
जिससे वे यह मान सकें,
कि तूँने ही भेजा है मुझे।

फिर यीशू ने ऊँचे स्वर में पुकार,
कहा लाज़र को "बाहर आ",
और वह व्यक्ति जो मर चुका था,
तुरन्त उठ कर बाहर आ गया।

उसके हाथ और पैर अभी भी,
बंधे हुए थे उसके कफन से,
उसे खोल दो, और जाने दो,
कहा यीशू ने उन लोगों से।

यहूदी नेताओं द्वारा यीशू की हत्या का षड़यंत्र

जब पहुँची खबर फरीसियों के पास,
महायाजकों से मिल सर्वोच्च परिषद बुलवायी,
कहा, यह व्यक्ति दिखा रहा अनेक चमत्कार,
इससे मन्दिर व देश पर बन आयी।

किन्तु महायाजक कैफा ने कहा,
इसी बात में है लाभ तुम्हारा,
बजाय इसके कि सारी जाति नष्ट हो,
सबके लिये एक व्यक्ति जाये मारा।

अपनी तरफ से यह कहा न उसने,
पर की थी उसने यह भविष्यवाणी,
कि लोगों के लिये मरने जा रहा यीशू,
सबके लिये दे रहा वह यह कुर्बानी।

इस तरह उसी दिन से वे,
रचने लगे कुचक्र उसे मारने का,
पर यीशू यरूशलेम नगर छोड़कर,
इफ्राईम नगर जा रहने लगा।

यीशू बैतनिय्याह में अपने मित्रों के साथ

फसह पर्व से छह दिन पहले,
यीशू बैतनिय्याह को रवाना हो गया,
वही लाज़र रहता था जिसे यीशू ने,
मृतकों में से जीवित किया था।

जटामांसी का बहुमूल्य इत्र मरियम ने,
लाकर लगाया यीशू के पैरों पर,
फिर पौछां पैरों को अपने केशों से,
खुशबु से महक उठा सारा घर।

यहूदा इस्करियोती जो यीशू का शिष्य था,
और जो था उसे धोखा देने वाला,
बोला यह इत्र सिक्कों में बेच कर,
क्यों नहीं गरीबों के लिये खर्च कर डाला।

कहा न यह उसने इसलिये कि,
थी उसे गरीबों की बहुत चिन्ता,
बल्कि वह तो चोर था खुद ही,
जो थैली से रुपये चुरा लेता था।

कहा यीशू ने, रहने दो उसे,
किया है उसने मेरे गाड़े जाने को,
गरीब लोग सदा तुम्हारे पास रहेंगे,
पर मैं ना रहूँगा तुम्हारे साथ सदा को।

लाज़र के विरुद्ध षड़यंत्र

फसह पर्व पर लोगों की भीड़,
आयी देखने के लिये लाज़र को,
क्योंकि उसकी मृत्यु के बाद,
जीवित कर दिया था यीशू ने उसको।

इसलिये महायाजकों ने लाज़र को भी,
बना डाली मारने की योजना,
क्योंकि उसी के कारण बहुत से यहूदी,
लेने लगे थे यीशू से प्रेरणा।

यीशू का यरूशलेम में प्रवेश

जब सुना लोगों ने यीशू आ रहा है,
खजूर की टहनियों ले मिलने चल पड़े,
होशन्ना धन्य है इस्राएल का राजा,
पुकार-पुकार कर वे कह रहे थे।

तब सवार हो गया एक गधे पर यीशू,
जैसा कि लिखा है धर्मशास्त्र में,
डर मत सिय्योन की पुत्री तेरा राजा,
आ रहा गधे के बछेरे पर बैठे।

समझे नहीं उसके अनुयायी इसे पर,
जब यीशू की प्रकट हुई महिमा,

तो उन्हें याद आया कि शास्त्रों में,
उसके बारे में लिखा हुआ था ऐसा।

यीशू के विषय में लोगों का कथन

फसह पर्व पर कुछ यूनानी आये थे,
उन्होंने गलील में फिलिप्पुस से कहा,
हम यीशू के दर्शन करना चाहते है,
तब उसने जाकर यीशू से कहा।

कहा यीशू ने, मानव-पुत्र के,
महिमावान होने का समय आ गया,
दाना जब तक न मिलता मिट्टी में,
तब तक उससे कुछ न उपजता।

जिसे प्रिय है अपना जीवन,
खो देगा उसे बिना मोल के,
पर जो करता अपना जीवन कुर्बान,
रखेगा उसे अनन्त जीवन के लिये।

यदि कोई मेरी सेवा करता है तो,
वह निश्चय ही मेरा अनुसरण करे,
जहाँ मैं, वहाँ मेरा सेवक भी रहेगा,
मिलेगा परम पिता से आदर उसे।

यीशू द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

क्या कहूँ, अब मेरा जी घबरा रहा है,
हे पिता, मुझे इस दुख की घड़ी से बचा,
किन्तु इस घड़ी के लिये ही तो मै आया,
प्रदान कर, हे पिता, अपने नाम को महिमा।

हुई आकाशवाणी, "मैंने उसकी महिमा की है",
और मैं इसकी महिमा फिर करूँगा,
कहने लगी भीड़ यह कोई स्वर्गदूत बोला,
कुछ कहने लगे कोई बादल है गरजा।

कहा यीशू ने यह आकाशवाणी,
मुझे नहीं पर सुनाई गयी है तुमको,
आ गया जगत के लिये निर्णायक समय,
निकाल दिया जाएगा जगत के शासक को।

और यदि धरती के ऊपर,
उठा लिया जाता है मुझको,
अपनी ओर आकर्षित करूँगा,
तब मैं तुम सब लोगों को।

कहा भीड़ ने सुना है हमने,
कि मसीह सदा हमारे बीच रहेगा,
कैसे कहते हो कि मनुष्य का पुत्र,
निश्चय ही ऊपर उठा लिया जायेगा।

कहा, यीशू ने तुम्हारे बीच अभी,
ज्योति कुछ समय और रहेगी,
जब तक ज्योति है चलते रहो,
अंधियारे में राह नहीं सूझेगी।

यहूदियों का यीशू में अविश्वास

यद्यपि यीशू ने किये अनेक चिह्न प्रकट,
फिर भी उन्होंने उसका विश्वास न किया,
और जो कुछ ने किया उसका विश्वास,
उसे खुले तौर पर प्रकट न किया।

क्योंकि ऐसा करने पर उन्हें,
भय था निष्काषित किये जाने का,
उन्हें मनुष्यों द्वारा दिया गया सम्मान,
परमेश्वर द्वारा सम्मान से अधिक प्रिय था।

यीशू के उपदेशों पर ही मनुष्य का न्याय होगा

कहा पुकार कर यीशू ने,
वह जो करता है मुझमें विश्वास,
मुझमें नहीं, बल्कि जिसने मुझे भेजा,
उसमें प्रकट करता है अपना विश्वास,

और जो देखता है मुझे,
वह मुझे भेजने वाले को देखता,
मैं आया जगत में प्रकाश रूप में,
ताकि अंधकार दूर हो, विश्वास वालों का।

मेरे उपदेश सुनकर भी पालन नहीं करता,
तो भी उसे मैं दोषी नहीं मानता,
मैं आया नहीं जगत को दोषी ठहराने,
बल्कि आया हूँ करने उद्धार जगत का।

जो मुझे नकारता है उसके लिये,
मेरा उपदेश अन्तिम दिन न्याय करेगा,
क्योंकि अपनी ओर से मैं कहता नहीं,
मैं कहता हूँ उसकी जिसने मुझे भेजा।

यीशू का अपने शिष्यों के पैर धोना

फसह पर्व से पहले यीशू ने,
यह देख कि उसका वक्त आ पहुँचा,
शाम का खाना खाते वक्त उसने,
शिष्यों के चरणों को धोकर पोंछा।

जब पहुँचा वह पतरस के पास,
कहा उसने मेरे पाँव न धो तू,
यीशू ने कहा यदि न धोऊँ पाँव तो,
पा न सकेगा मेरे पास स्थान तू।

तब पतरस ने कहा मेरे पैर ही नहीं,
बल्कि मेरे हाथ और सिर भी धो दें,
यीशू ने कहा जो नहा चुका है,
पैरों के सिवा कुछ न धोना होता उसे।

होता है वह पूरी तरह शुद्ध,
पर तुम सबके सब शुद्ध नहीं,
यीशू जानता था उनमें से एक,
धोखा दे पकड़वा देगा उसे।

जब पाँव धो लिये तो पूछा उसने,
जानते हो, मैंने ऐसा क्यों किया,
तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो,
मैंने तुम्हारे समक्ष एक उदाहरण रखा।

ताकि तुम कर सको दूसरों के साथ,
वहीं जो मैंने तुम्हारे साथ किया,
एक दास स्वामी से बड़ा नहीं है,
ना संदेशवाहक उससे, जिसने उसे भेजा।

नहीं कह रहा मैं तुम सबके लिये,
मैं उन्हें जानता हूँ, जिन्हें मैंने चुना,
तुममें से एक मुझसे विश्वासघात करेगा,
किन्तु मैंने उसे फिर भी चुना।

यह किया है मैंने ताकि शास्त्रों में,
लिखा हुआ यह वचन सत्य हो,
वही जिसने मेरी रोटी खायी,
मेरे विरोध में खड़ा हो गया वो।

अब यह घटित होने से पहले,
मैं तुम्हें इसलिये बता रहा हूँ,
ताकि जब यह सब घटित हो,
तुम विश्वास कर सको वह, "मैं हूँ"।

जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता,
सत्य कहता हूँ, वह मुझे ग्रहण करता,
और जो करता है मुझको ग्रहण,
मुझे भेजने वाले को ग्रहण करता।

यीशू का कथन : मरवाने के लिये उसे कौन पकड़वायेगा

तब व्याकुल हो यीशू ने दी साक्षी,
तुम में से एक मुझे देगा धोखा,
शिष्यों के पूछने पर कि कौन है वह,
कहा, जिसे मैं दूँगा रोटी का टुकड़ा।

फिर यीशू ने कटोरे में डुबाकर,
दिया यहूदा इस्करियोती को वह टुकड़ा,
जैसे ही उसने वह टुकड़ा लिया,
शैतान आकर उसमें बस गया।

फिर कहा यीशू ने, 'कर तुरन्त',
जो तूँ करने को जा रहा,
किन्तु यह क्यों कहा यीशू ने,
वहाँ बैठा हुआ कोई न समझा।

अपनी मृत्यु के विषय में यीशू का वचन

यहूदा इस्करियोती के जाने पर यीशू ने,
"मनुष्य का पुत्र अब महिमावान हुआ", कहा,
यदि उससे परमेश्वर की महिमा हुई तो,
परमेश्वर शीघ्र ही उसे देगा महिमा।

हे मेरे प्यारे बच्चों, थोड़ी ही देर,
बस और हूँ अब मैं तुम्हारे साथ,
और जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ,
आ नहीं सकते हो तुम मेरे साथ।

फिर कहा तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि,
करो प्रेम तुम एक-दूसरे से,
जानेंगे लोग तुम्हें मेरा अनुयायी जब,
आपस में प्रेम रखोगे, मेरे जैसे।

यीशू का वचन-पतरस उसे पहचानने से इन्कार करेगा

कहाँ जा रहा तूँ, पूछा पतरस ने,
कहा यीशू ने तूँ अभी नहीं आ सकता,
बोला पतरस क्यों नहीं आ सकता मैं,
मैं तो तेरे लिये प्राण तक दे सकता।

यीशू ने कहा, सत्य कहता हूँ,
तूँ मुझे तीन बार इन्कार करेगा,
जब तक तूँ ऐसा कर नहीं लेगा,
तब तक मुर्गा बाँग नहीं देगा।

यीशू का शिष्यों को समझाना

कहा यीशू ने तुम्हारे हृदय,
नहीं होने चाहिये दुःखी,
रखो विश्वास तुम परमेश्वर में,
बनाये रखो विश्वास मुझमें भी।

हैं परम पिता के घर में बहुत कमरे,
मैं जा रहा हूँ तुम्हारे लिये स्थान बनाने,
स्थान तैयार कर मैं फिर आऊँगा यहाँ,
और वहाँ ले चलूँगा अपने साथ तुम्हें।

बोला थोमा हम नहीं जानते, हे प्रभु,
तूँ कहाँ जा रहा, क्या है रास्ता,
यीशू ने कहा, मैं ही सत्य हूँ,
मैं ही जीवन और मैं ही रास्ता।

परम पिता के पास कोई भी,
आता नहीं सिवाय मेरे द्वारा,
यदि तूँने मुझे जान लिया होता,
तो तूँ परमपिता को भी जानता।

कहा फिलिप्पुस ने, हे प्रभु हमें,
परम पिता के दर्शन करा दे,
कहा यीशू ने, जिसने मुझे देखा,
कर लिये उसने दर्शन परम पिता के।

क्या तुझे यह विश्वास नहीं है,
मैं परम पिता में, परम पिता मुझमें,
ये वचन जो मैं तुमसे कहता हूँ,
कहता नहीं हूँ मैं अपनी ओर से।

जो मुझमें निवास करता है,
वह परम पिता करता है काम अपने,
मेरे कहने का विश्वास करो तुम,
या उनका विश्वास जो काम किये मैंने।

जो मुझमें विश्वास करता है,
वह भी मुझ जैसे कार्य कर सकेगा,
वास्तव में वह उन कामों से भी,
बड़े कामों को अंजाम दे सकेगा।

क्योंकि जा रहा हूँ मैं परम पिता के पास,
मेरे नाम से जो मांगोगें वह करूँगा,
महिमावान होगा परम पिता पुत्र के द्वारा,
मुझसे मेरे नाम जो मागोंगें करूँगा।

पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा

यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो,
तो तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे,

मैं परम पिता से विनती करूँगा,
और दूसरा सहायक तुम उससे पाओगे।

वह सहायक होगा, सत्य का आत्मा,
ग्रहण नहीं कर सकता जगत जिसे,
न देखता उसे, न वह जानता,
लेकिन अपने में तुम पाओगे उसे।

पर छोडूगा न मैं तुम्हें अनाथ,
तुम मुझे अपने पास ही पाओगे,
जगत नहीं पर देखोगे मुझे तुम,
मैं जीवित हूँ तुम भी जीवित रहोगे।

उस दिन यह जानोगे तुम,
कि मैं हूँ अपने परम पिता में,
और जान लोगें यह भी तुम,
कि तुम मुझमें हो, मैं तुममें।

जो करता है मेरे आदेश स्वीकार,
प्रेम करता है वह मुझसे,
प्रकट करूँगा मैं स्वयं को उस पर,
मेरा परम पिता प्रेम करेगा उससे।

फिर कहा यीशू ने पवित्र आत्मा,
जिसे भेजेगा परम पिता मेरे नाम से,
सब कुछ तुम्हें बतलायेगा वह,
जो मैंने कहा याद दिलायेगा उसे।

दे रहा हूँ तुम्हें स्वयं अपनी शांति,
तुम्हारा मन व्याकुल नहीं होना चाहिए,
मैं जा रहा हूँ परम पिता के पास,
यह जानकर तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए।

बता दिया तुम्हें यह पहले से,
ताकि घटित होने पर तुम्हें विश्वास हो,
अब और तुम्हारे साथ बात नहीं करूँगा,
आ रहा है जगत का शासक है जो।

मुझ पर उसका कोई बस नहीं चलता,
किन्तु ये बातें घट रही हैं इसलिये,
परमपिता से मेरा प्रेम हो जग जाहिर,
और उसकी जैसी आज्ञा, मैं करता हूँ वैसे।

यीशू-सच्ची दाखलता

यीशू ने कहा, सच्ची दाखलता मैं हूँ,
और मेरा परम पिता है माली,
मेरी हर शाखा की देखभाल करता,
बनाता उन्हें अधिक फल देने वाली।

जैसे कोई शाखा दाख लता से हट,
अपने आप में फल नहीं सकती,
वैसे ही जब तक मुझमें नहीं रहते,
सफल नहीं हो सकते तब तक तुम भी।

मैं दाखलता और तुम उसकी शाखाएं हो,
जो मुझमें, मैं जिसमें रहता, वह फलता,
रहता नहीं मुझमें, वह टूटी शाखा सा,
सूख जाता, आग में झोंक दिया जाता।

जैसे परम पिता ने प्रेम किया मुझे,
वैसे ही प्रेम किया मैंने तुमसे,
मेरे आदेशों का पालन चाहता है प्रेम,
परम पिता के आदेश मानता हूँ मैं जैसे।

कहता हूँ तुमसे, प्रेम करो आपस में,
मित्र के लिये प्राण न्यौछावर कर देना,
मेरे आदेशों पर गैर चलते रहे तो,
बने रहोगे तुम मेरे मित्र, समझ लेना।

अब से तुम मेरे दास नहीं हो,
जानता नहीं दास क्या कर रहा स्वामी,
अब तुम मित्र हो, बता दी मैंने,
हर बात तुम्हें जो पिता से जानी।

चुना नहीं है तुमने मुझको,
बल्कि चुना है मैंने तुमको,
और तुम्हें चुन नियत किया है,
जाओ और जाकर सफल बनो।

यीशू की चेतावनी

यदि संसार बैर करता है तुमसे,
तुमसे पहले वह बैर करता मुझसे,
यदि तुम लोग जगत के होते,
तो प्यार करता अपनों की तरह से।

पर जगत के नही हो तुम,
चुन लिया है मैंने तुम्हें,
इसलिये करता रहता है बैर,
प्यार नहीं करता यह जगत तुम्हें।

याद रखो तुम मेरा वचन,
बड़ा नहीं होता दास स्वामी से,
इसलिये मुझे यातना देने वाले,
निश्चय ही देंगे यातना वो तुम्हें।

और यदि उन्होंने मेरा वचन माना,
तो मानेंगे तुम्हारा कहा भी वो,
मेरे कारण तुम्हारे साथ ये सब करेंगे,
क्योंकि वे नहीं जानते जिसने भेजा मुझको।

यदि मैं न आता, बातें न करता,
तो वे किसी पाप के दोषी न होते,
पर अब अपने पाप कर्मों के लिये,
कोई भी बहाना नहीं है पास उनके।

मेरे कार्यो को देखने के उपरांत भी,
रखते मुझसे और परम पिता से बैर,
यह इसलिये हुआ कि विधान में लिखा,
उन्होंने बेकार ही किया है मुझसे बैर।

समय आ रहा है जब हर कोई सोचेगा,
तुम्हें मार वह परमेश्वर की कर रहा सेवा,
नहीं जानते वे परम पिता को या मुझे,
पर तुम्हें याद रहे, मैंने बता दिया था।

पवित्र आत्मा के कार्य

पहले तुम्हें ये बातें नहीं बतायी थी,
क्योंकि मैं था तुम्हारे साथ,
किन्तु अब मैं, जिसने मुझे भेजा था,
जा रहा हूँ मैं उसके पास।

तुम्हारा भला है मेरे जाने में,
ताकि सहायक तुम्हारे पास आयेगा,
पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में,
जगत के संदेह वह दूर करेगा।

जब आयेगा वह सत्य का आत्मा,
तुम्हें पूर्ण सत्य की राह दिखायेगा,
कहेगा नहीं कुछ अपनी ओर से,
वह जो कुछ सुनेगा, वही बतायेगा।

वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि,
जो मेरा है, लेकर वह तुम्हें बतायेगा,
पिता की हर वस्तु है मेरी,
वह उसे लेगा और तुम्हें बतायेगा।

शोक आनन्द में बदल जायेगा

कुछ ही समय बाद तुम मुझे,
और अधिक नहीं देख पाओगे,
लेकिन फिर कुछ समय बाद,
तुम मुझे फिर से देख पाओगे।

समझ नहीं पाये उसके शिष्य कुछ भी,
करने लगे वे आपस में विचार,
उनकी मनोदशा समझ यीशू ने कहा,
यह जगत खुश होगा, तुम करोगे विलाप।

फिर कहा यीशू ने, तुम्हारा शोक,
बदल जायेगा फिर आनन्द में,
जैसे किसी माँ की प्रसव पीड़ा,
बदल जाती प्रसव के बाद खुशी में।

जब मैं तुमसे फिर यूँ मिलूँगा,
तुम्हारे हृदय भी आनन्दित होंगे,
छीन नहीं सकेगा कोई तुम्हारी खुशी,
तब तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे।

मैं सत्य कहता हूँ मेरे नाम से,
परम पिता से जो माँगोगे वह देगा,
अब तक मेरे नाम में कुछ ना माँगा,
माँगो, तुम पाओगे, तुम्हें आनन्द मिलेगा।

जगत पर विजय

मैंने ये बातें तुम्हें दृष्टान्त दे बतायी,
पर अब और समय ऐसा न करूँगा,
बताऊँगा परम पिता के बारे में तुम्हें,
नहीं कहता तुम्हारी ओर से प्रार्थना करूँगा।

परम पिता करता है स्वयं तुम्हें प्यार,
क्योंकि किया है तुमने प्यार मुझे,
तुमने माना मैं परम पिता से आया,
अब जाना है परम पिता के पास मुझे।

शिष्यों ने कहा, अब समझ गये हैं हम,
कि जानता है सब कुछ को तूँ,
अब तुझे कोई अपेक्षा नहीं कोई पूछे,
विश्वास है कि परमेश्वर से प्रकट है तूँ।

यीशू ने कहा कि समय आ गया है,
कि जब तुममें से हरेक तितर-बितर होगा,
लौट जाओगे तुम सब अपने-अपने घर,
मेरे साथ मेरा परम पिता होगा।

कहीं ये बातें मैंने तुम्हें इसलिये,
कि मेरे द्वारा शांति मिले तुम्हें,
जगत में तुम्हें यातना मिली है,
साहस रखो, जगत जीत लिया मैंने।

अपने शिष्यों के लिये यीशू की प्रार्थना

तब आकाश की ओर देख बोला यीशू,
हे परम पिता वह घड़ी आ पहुँची,
अपने पुत्र को महिमा प्रदान कर,
ताकि तेरा पुत्र कर सके महिमा तेरी।

अधिकार समूची मनुष्य जाति पर,
दिया है तूँने उसे इसलिये,
जिससे, जिसको तूँने उसे दिया,
अनन्त जीवन वह उसे दे सके।

तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को,
और यीशू मसीह तूँने भेजा जिसको,
अनन्त जीवन यह है कि,
वे जानें उन दोनों को।

जो काम सौंपे थे तूँने मुझे,
उन्हें पूरा कर महिमावान किया मैंने तुझे,
अब तूँ अपने साथ कर मुझे महिमावान,
जो जगत से पहले प्राप्त थी मुझे।

जिन लोगों को तूँने मुझे दिया,
मैंने उन्हें तेरे नाम का बोध कराया,
तेरे ही बताये उपदेश दिये मैंने उनको,
उन्होंने उन उपदेशों को ह्रदय में बैठाया।

जानते हैं वे यह निश्चयपूर्वक,
कि मैं तुझसे ही हूँ आया,
और उन्हें विश्वास हो गया है,
कि तेरा भेजा हुआ मैं आया।

कर रहा हूँ मैं उनके लिये प्रार्थना,
जिन्हें तूँने दिया है मुझको,
क्योंकि वो तेरे है, और मैं तेरा,
उनके द्वारा महिमा मिली है मुझको।

अपने उस नाम की शक्ति से,
जो तूँने मुझे दिया, रक्षा कर उनकी,
ताकि जैसे तूँ और मैं एक है,
वैसे ही एक हो सकें वो भी।

मैंने तेरा वचन दिया है उन्हें,
पर संसार ने की उनसे घृणा,
मेरी ही तरह वे भी नहीं सांसारिक,
कर उनकी दुष्ट शैतान से रक्षा।

भेजा जैसे तूँने मुझे इस जगत में,
वैसे ही मैंने उन्हें जगत में भेजा,
हो रहा उनके लिये तेरी सेवा में अर्पित,
ताकि वो भी हो अर्पित सत्य के द्वारा।

किन्तु मैं नहीं कर रहा हूँ,
प्रार्थना केवल उन ही के लिये,
उनके उपदेशों द्वारा मुझमें विश्वास करेंगे,
कर रहा हूँ प्रार्थना उनके भी लिये।

वैसे ही जैसे हे परम पिता,
तूँ मुझमें है, मैं तुझमें,
वे भी इनमें एक हों ताकि,
जगत विश्वास करे मुझे भेजा तूँने।

मैं उनमें होऊँगा और तूँ मुझमें,
जिससे वे प्राप्त हों पूर्ण एकता को,
ताकि जगत जाने तूँने प्रेम किया है,
उन्हें भी वैसे, जैसे किया मुझको,

सौंपे हैं जो लोग मुझे तूँने,
जहाँ मैं हूँ वे भी मेरे साथ हों,
ताकि वे मेरी उस महिमा को देखें,
जो दी है तूँने मुझको।

सृष्टि की रचना से भी पहले,
तूँने मुझसे प्रेम किया है,
हे पिता, यह जगत तुझे नहीं जानता,
किन्तु मैंने तुमको जान लिया है।

यीशू का बंदी बनाया जाना
यीशू को हन्ना के सामने लाया जाना
पतरस का यीशू को पहचानने से इन्कार
महायाजक की यीशू से पूछताछ
पतरस का यीशू को पहचानने से फिर इन्कार
यीशू का पिलातुस के सामने लाया जाना
यीशू को मृत्युदण्ड
यीशू का क्रूस पर चढ़ाया जाना
यीशू की मृत्यु
यीशू की अन्त्येष्टि
यीशू की कब्र खाली

मरियम मगदलिनी को यीशू ने दर्शन दिये, शिष्यों को दर्शन देना

(शेष विवरण पहले अध्यायों जैसा होने के कारण यहाँ यीशू के पुनरुत्थान के बाद का विवरण दिया जा रहा है)

उसी शाम सप्ताह के पहले दिन,
जब शिष्य दरवाजे बंद किये हुए थे,
यीशू उनके बीच आ खड़ा हुआ,
और उनसे बोला, ''तुम्हें शांति मिले''।

फिर कहा, जैसे परम पिता ने मुझे भेजा,
मैं भी भेज रहा हूँ तुम लोगों को,
यह कह उन पर फूँक मारी उसने,
और कहा, पवित्र आत्मा को ग्रहण करो।

क्षमा मिलती है उन लोगों को,
जिनके पापों को तुम क्षमा करो,
और जिनके पाप तुम क्षमा नहीं करते,
क्षमा नहीं मिल पाती है उनको।

यीशू का थोमा को दर्शन देना

थोमा जो बारह शिष्यों में एक था,
जब यीशू आया, उनके साथ न था,
दूसरे शिष्य कह रहे थे उससे,
हमने प्रभु यीशू को है देखा।

पर उसने कहा, उसके हाथों में जब तक,
मैं कीलों के निशान न देख लूँ,
विश्वास न होगा मुझे जब तक कि,
मैं उनमें अपनी उंगली न डाल लूँ।

आठ दिन बाद जब थोमस साथ था,
और दरवाजे पर ताला पड़ा था,
आ खड़ा हुआ उनके बीच में यीशू,
और उसने यह थोमस से कहा।

हाँ, मेरे हाथ देख, और उंगली डाल,
अपना हाथ फैला, डाल पंजर में मेरे,
पर धन्य हैं वे जो विश्वास करते हैं,
मेरी बातों का, बिना मुझे देखे।

यह पुस्तक यूहन्ना ने क्यों लिखी

नहीं लिखा बहुत कुछ इस पुस्तक में,
पर जो लिखा, वह लिखा इसलिये है,
ताकि तुम विश्वास करो और जीवन पाओ,
कि यीशू ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है।

यीशू झील पर प्रकट हुआ

इसके बाद झील तिबिरियास पर यीशू ने,
शिष्यों के सामने अपने को प्रकट किया,
जब वे मछली पकड़ने जा रहे थे,
उसने अपने आप को इस तरह प्रकट किया।

शमौन पतरस, थोमा, गलील का नतनएल,
जब्दी के बेटे और दो अन्य वहाँ थे,
मछली पकड़ने जा रहा था शमौन,
औरों ने कहा हम भी साथ चलेंगे।

पर वे कुछ भी पकड़ न पाये,
और तब तक सुबह हो चली,
किनारे पर खड़ा उन्हें यीशू मिला,
बोला तुम पकड़ न पाये मछली।

शिष्य उसे पहचान न पाये,
तथा यीशू ने उनसे कहा,
फेंको नाँव की दाहिनी तरफ जाल,
तो तुम्हें कुछ तो मिलेगा वहाँ।

इतनी अधिक मछलियां फँसी जाल में,
कि वे उसे खींच भी न पाये,
तब यीशू के प्रिय शिष्य ने कहा,
यह तो प्रभु है, हम पहचान न पाये।

कूद पड़ा शमौन पानी में,
दूसरे शिष्य जाल किनारे ले चले,
देखी किनारे पर आग दहकती,
और देखा यीशू को वहाँ पर खड़े।

कहा यीशू ने, जो मछलियां पकड़ी,
उनमें से कुछ यहाँ ले आओ,
साहस न हुआ उन्हें पूछें ''तूँ कौन है'',
यीशू ने कहा, भोजन करो आओ।

आगे बढ़ तब यीशू ने,
दी उन्हें रोटी और मछलियां,
यह तीसरी बार था जब यीशू,
मरे हुओं में से प्रकट हुआ।

यीशू की पतरस से बातचीत

जब वे भोजन समाप्त कर चुके,
तो यीशू ने शमौन पतरस से कहा,
जितना प्रेम ये मुझसे करते है,
उससे अधिक प्रेम तूँ करता है क्या।

कहा पतरस ने, हे प्रभु तूँ जानता,
कि करता हूँ मैं तुझसे प्रेम,
कहा यीशू ने मेरे मेमनों की रखवाली कर,
यदि तूँ करता है मुझसे प्रेम।

फिर दोबारा वही प्रश्न पूछा यीशू ने,
फिर वही उत्तर दिया पतरस ने,
''मेरी भेड़ों की रखवाली कर'',
सुन कर उसका उत्तर, कहा यीशू ने।

फिर तीसरी बार जब यीशू ने पूछा,
बहुत व्यथित हुआ पतरस उस प्रश्न से,
जब कहा उसने मैं तुझे प्रेम करता हूँ,
''मेरी भेड़ें चरा'', यीशू ने कहा उससे।

फिर कहा यीशू ने जब तूँ जवान था,
अपनी कमर कस जहाँ चाहता चला जाता था,
पर बूढ़ा होने पर कोई दूसरा तुझे,
वहाँ ले जायेगा, जहाँ तूँ नहीं चाहता।

इतना कहकर यीशू ने कहा,
आजा, ''मेरे पीछे चला आ'',
पीछे मुड़, उस प्रिय शिष्य को,
देखा पतरस ने, चला आ रहा था।

यह वही था जिसने भोजन करते समय,
उसकी छाती पर झुककर पूछा था,
हे प्रभु, बता वह कौन है जो,
तुझे धोखे से बंदी बनवायेगा।

सो पतरस ने जब उसे देखा,
यीशू से बोला, क्या होगा इसका,
यीशू ने कहा उससे तुझे क्या,
तूँ तो बस मेरे पीछे चला आ।

यही वह शिष्य है, जो साक्षी है,
और लिखी हैं जिसने ये बातें,
हम जानते हैं ये साक्षी सच है,
पूरी लिख नहीं सकते, यीशू की बातें।

प्रेरितों के काम

लूका द्वारा लिखी गयी दूसरी पुस्तक का परिचय

लिखा मैंने अपनी पहली पुस्तक में,
यीशू ने प्रारंभ से जो काम किया,
जब तक उठा न लिया गया स्वर्ग में,
उस दिन तक उसने उपदेश दिया।

अपनी मृत्यु के बाद, ठोस प्रमाणों सहित,
उसने प्रकट किया कि वह है जीवित,
चालीस दिनों तक वह होता रहा प्रकट,
बतलायी-बातें, परमेश्वर के राज्य से संबंधित।

फिर एक बार भोजन करते हुए आज्ञा दी,
तुम यरूशलेम को मत छोड़ना,
बल्कि जिसके बारे में तुमने मुझसे सुना है,
वह प्रतिज्ञा पूरी होने तक प्रतीक्षा करना।

क्योंकि यूहन्ना ने तो जल से,
दिया था लोगों को बपतिस्मा,
किन्तु थोड़े ही दिनों बाद तुम्हें,
दिया जायेगा पवित्र आत्मा से बपतिस्मा।

यीशू का स्वर्ग में ले जाया जाना

सो जब वे मिले आपस में,
तो उन्होंने यीशू से पूछा,
हे प्रभु, क्या इस्राएल के राज्य की,
तूँ अभी ही फिर करेगा स्थापना।

बोला यीशू, तुम्हारा काम नहीं,
जानना वे अवसर या तिथियां,
जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं अपने,
अधिकार से है निश्चित किया।

बल्कि जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा,
तुम शक्ति को प्राप्त करोगे,
यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया में और,
धरती के छोरों तक मेरे साक्षी बनोगे।

इतना कहने के बाद उनके देखते-देखते,
उसे स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया,
और फिर एक बादल ने उसे,
उनकी आँखों से ओझल कर दिया।

जब वह जा रहा था तो वे थे,
आकाश में उसके लिये आँखें बिछाये,
तत्काल श्वेत वस्त्रधारी दो पुरुष,
उनके बराबर में आ हुए खड़े।

कहा उन्होंने, हे गलील के लोगों,
क्यों टकटकी लगाये हो आकाश में,
जैसे उठा लिया गया स्वर्ग में यीशू,
वैसे ही लौटेगा वो तुम्हारे बीच में।

एक नये प्रेरित का चुनाव

फिर वे सब लौट आये यरूशलेम,
और उन्हीं दिनों पतरस ने कहा,
यीशू को बंदी बनाने वालों के अगुआ,
यहूदा के विषय में उसने कहा।

हे मेरे भाइयों, दाऊद के मुख से,
पवित्र आत्मा ने पहले ही कहा था,
गिना गया था वह हम में से ही,
और उस सेवा में उसका भी भाग था।

जो धन लिया था इस मनुष्य ने,
अपने नीचतापूर्ण कार्य के लिये,
उस धन से मोल ले लिया,
एक खेत उसने यरूशलेम में।

किन्तु वह पहले तो सिर के बल गिरा,
फिर शरीर फट बाहर निकल आई आंतें,
इसलिये उस खेत को 'हक्लदमा' अर्थात,
'लहू का खेत' कहने लगे लोग आपस में।

क्योंकि भजन संहिता में लिखा है,
घर उजड़ जाये उस व्यक्ति का,

उसमें रहने को बचे न कोई,
उसका मुखियापन ले ले कोई व्यक्ति दूसरा।

इसलिये यह आवश्यक है कि जब,
प्रभु यीशू हमारे बीच में था,
तब जो लोग थे हमारे साथ,
उनमें से कोई एक जाये चुना।

तब सुझाये गये दो व्यक्ति,
यूसुफ (बरसब्बा) और दूसरा मत्तियाह,
फिर प्रार्थना के बाद पर्ची डाल कर,
बारहवाँ प्रेरित चुना गया मत्तियाह।

पवित्र आत्मा का आगमन

जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो,
वे सभी एक स्थान पर थे इकट्ठा,
तभी अचानक आँधी के से शब्द से,
जहाँ बैठे थे वे वो घर भर गया।

और आग की फैलती लपटों जैसी जीभें,
वहाँ सामने देने लगीं दिखायी,
वे आग की विभाजित जीभें,
उनमें से प्रत्येक पर आ टकरायी।

हो उठे पवित्र आत्मा से वे भावित,
और अपनी-अपनी साम्थर्य के अनुसार,
दूसरी भाषाओं में वे बोलने लगे,
बयान करने लगे परमेश्वर के चमत्कार।

रहा करते थे वहाँ बहुत देशों के भक्त,
जब यह शब्द गरजा, भीड़ इकट्ठी हो गयी,
बोलते सुना जब उन्हें अपनी भाषा में,
वह भीड़ उन्हें सुन आश्चर्यचकित हो गयी।

वहाँ पारथी, मेदी, मिस्त्री, साइरीन इत्यादि,
बहुत से देशों के लोग थे जमा,
फिर भी उनमें से हर एक ने उन्हें,
अपनी ही मातृभाषा में बोलते हुए सुना।

वे सब विस्मय में पड़ आपस में,
पूछ रहे थे, यह कैसा है चमत्कार,
और कुछ दूसरे प्रेरितों का उपहास उड़ाते,
बोले, ज्यादा दाखरस ये लोग गये डकार।

पतरस का संबोधन

फिर साथियों के साथ खड़ा हुआ पतरस,
और ऊँचे स्वर में लोगों से कहा,
ये लोग पिये हुये नहीं हैं,
बल्कि जैसा योएल नबी ने कहा।

परमेश्वर कहता है, अंतिम दिनों ऐसा होगा,
कि मैं सभी पर अपनी आत्मा उड़ेल दूँगा,
करने लगेंगे तुम्हारे पुत्र और पुत्रियां भविष्यवाणी,
तथा तुम्हारे युवा लोगों को दर्शन दूँगा।

मैं ऊपर आकाश में अदभुत कर्म,
और नीचे धरती पर चिह्न दिखलाऊँगा,
लहू, आग और धुएं के बादल,
सूर्य अन्धेरे में, चाँद रक्त में बदल डालूँगा।

और जब यह हो रहा होगा,
केवल वो ही व्यक्ति तब बच पायेगा,
जो व्यक्ति अपने सम्पूर्ण मन से,
बस प्रभु का नाम पुकारेगा।*

हे इस्राएल के लोगों ये वचन सुनो,
नासरी यीशू एक ऐसा पुरुष था,
जिसे परमेश्वर ने आश्चर्यमय शक्तियां दे,
तुम्हारे सामने प्रकट किया था।

परमेश्वर की निश्चित योजना अनुसार,
उसे तुम्हारे हवाले किया गया,
और तुमने नीच मनुष्यों की सहायता से,
उसे सूली पर चढ़ा दिया।

किन्तु वेदना से मुक्त कर प्रभु ने,
फिर से जिला दिया उसे,

* योएल 2:28-32

क्योंकि यह सम्भव ही नहीं था,
कि मृत्यु वश में रख पाती उसे।

जैसा दाऊद ने कहा उसके विषय में,
मैंने प्रभु को देखा सदा ही अपने सामने,
मैं हर्षित हूँ और मेरा हृदय प्रसन्न है,
क्योंकि मेरी आत्मा तूँ छोड़ेगा नहीं अधोलोक में।

तूँ अपने पवित्र जन को,
क्षय की अनुभूति नहीं होने देगा,
ज्ञान कराया जीवन की राह का तूँने,
तूँ मुझे आनन्द से पूर्व कर देगा।

आदिपुरुष दाऊद के बारे में,
मैं कह सकता हूँ विश्वास के साथ,
उसकी कब्र हमारे यहाँ मौजूद है,
जहाँ दफनाया गया वह मृत्यु के बाद।

किन्तु क्योंकि वह एक नबी था,
और जानता था, परमेश्वर ने कहा था,
कि वह उसके वंश में से किसी,
एक को उसके सिंहसन पर बैठायेगा।

इसलिये आगे जो घटने वाला है,
देखते हुये, उसने जब यह कहा था,
उसे अधोलोक में नहीं छोड़ा गया,
न अनुभव किया देह ने सड़ने-गलने का।

कहा था यह मसीह के लिये उसने,
उसके फिर से जी उठने के बारे में,
इसी यीशू को परमेश्वर ने पुनर्जीवित किया,
साक्षी हैं हम सब इस तथ्य के।

परमेश्वर के दायें सर्वोच्च पद पाकर,
यीशू ने प्राप्त किया पवित्र आत्मा को,
और फिर उस आत्मा को उड़ेल दिया,
जिसे अब तुम देख सुन रहे हो।

दाऊद क्योंकि स्वर्ग में नहीं गया,
सो कहता है वह स्वयं इसलिये,
परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा,
तेरे शत्रु कर दूँगा तेरे चरणों तले।

सो समूचा इस्राएल निश्चय पूर्वक जान ले,
कि परमेश्वर ने इस यीशू को,
जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ा दिया,
ठहराया था प्रभु और मसीह दोनों।

व्याकुल हो उठे लोग यह सुनकर,
पूछने लगे हमें क्या करना चाहिये,
कहा पतरस ने अपना मन फिराकर,
यीशू के नाम से बपतिस्मा लेना चाहिये।

फिर तुम पवित्र आत्मा का उपहार पाओगे,
क्योंकि यह प्रतिज्ञा है उन सब के लिये,
तुम, तुम्हारी संतानें और जो बहुत दूर हैं,
जिन्हें परमेश्वर पास बुलाता है उनके लिये।

तब जिन्होंने उसके संदेश को ग्रहण किया,
बपतिस्मा दिया गया उन लोगों को,
सो जुड़ गये कोई तीन हजार लोग,
समर्पित किया उस दिन उन्होंने अपने को।

विश्वासियों का सच्चा जीवन

हर व्यक्ति पर भय मिश्रित,
विस्मय के भाव छाये रहे,
और प्रेरितों द्वारा आश्चर्य कर्म,
और चिह्न प्रकट किये जाते रहे।

जो कुछ भी था उनके पास,
सभी विश्वासी आपस में बांट लेते थे,
सब सम्पत्ति बेच, जरूरत मंदों में बांट,
वे मन्दिर में मिलते-जुलते रहते थे।

अपने घरों में रोटी के टुकड़े कर,
उदार मन आनन्द से, मिल जुलकर खाते,
प्रतिदिन करते वे परमेश्वर की स्तुति,
लोग उनके दल में जुड़ते जाते।

लँगड़े भिखारी का अच्छा किया जाना,

एक दिन जब पतरस और यूहन्ना,
जा रहे थे मन्दिर की ओर,
भीख माँगते एक जन्मजात लँगड़े ने,
अपना हाथ बढ़ाया उनकी ओर।

कहा पतरस ने हमारे पास नहीं है,
सोना, चाँदी या बहुमूल्य पदार्थ,
पर नासरी यीशू के नाम से,
तूँ खड़ा हो जा लँगड़ेपन को त्याग।

फिर हाथ बढ़ाकर उसे उठाया,
तो उसके पैरों में जान आ गयी,
गया मन्दिर में वह उनके साथ,
लोगों की आँखें खुली रह गयीं।

पतरस का प्रवचन

तब कहा पतरस ने उन लोगों से,
ऐसे क्यों तुम आश्चर्यचकित हो रहे,
जिस व्यक्ति को तुमने पकड़वा मरवा डाला,
चलने लगा यह उसी के नाम से।

उस पवित्र और नेक बंदे को,
अस्वीकार कर दिया था तुम लोगों ने,
किन्तु हम इस बात के हैं साक्षी,
फिर जिला दिया उसे परमेश्वर ने।

क्योंकि हमारा विश्वास है यीशू के नाम में,
उसके नाम ने ही इसमें फूँकी जान,
उसी विश्वास ने जो यीशू से मिलता,
इस व्यक्ति का कर दिया कल्याण।

हे भाइयों, अब मैं जानता हूँ,
जैसे अनजाने में तुमने वैसा किया,
वैसे ही तुम्हारे नेताओं ने भी,
उसी तरह का आचरण किया।

परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ताओं के मुख से,
पहले ही यह कहलवा दिया था,
कि उसके मसीह को भोगनी पड़ेंगी यातनाएं,
उसने उसे इस तरह पूरा किया।

इसलिये तुम अपना मन फिराओ,
और लौट आओ परमेश्वर की ओर,
ताकि तुम्हारे पाप धुल जायें,
और आत्मिक शांति का आये दौर।

मूसा ने कहा था प्रभु परमेश्वर,
तुम्हारे लिये एक नबी भेजेगा,
नष्ट हो जायेगा वह व्यक्ति,
जो उसकी बातों को नहीं सुनेगा।*

शमूएल और उसके बाद के नबियों ने,
इन्हीं दिनों की करी थी बातें,
तुम हो उन नबियों और करार के वारिस,
जिसे तुम्हारे पूर्वजों से किया परमेश्वर ने।

कहा था उसने इब्राहीम से,
तेरी संतानों से सब आशीर्वाद पायेंगे,**
इसलिये अपने सेवक को पुनर्जीवित कर,
भेजा तुम्हारे पास सब से पहले।

पतरस और यूहन्ना : यहूदी सभा के सामने

वे जब ये बातें कर ही रहे थे,
कुछ याजक सिपाही और मुखिया आये,
चिढ़े हुए थे वे पुनरुत्थान की बातों पर,
इसलिये उन्हें बंदी बना कर ले आये।

पर पवित्र आत्मा से भावित हो,
कहा पतरस ने दृढ़ता से उनसे,
ठीक हुआ है यह लँगड़ा व्यक्ति,
नासरी यीशू मसीह के नाम से।

किसी अन्य में नहीं उद्धार निहित,
नहीं दिया गया कोई दूसरा नाम,
जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो पाये,
और बन सकें हमारे बिगड़े काम।

पतरस और यूहन्ना की निर्भीकता देख,
और यह समझ वे बिना पढ़े लिखे थे,
जान गये वे ये यीशू के साथी हैं,
पर कहने को उनके पास शब्द न थे।

वह चंगा हुआ व्यक्ति उनके साथ था,
सो कहने को उनके पास कुछ न रहा,
आपस में विचार कर वे कहने लगे,
कि छोड़कर चले जायें वे वह महासभा।

फिर आज्ञा दी उन्हें यीशू के नाम पर,
न चर्चा करें, न किसी को दे उपदेश,
किन्तु पतरस और यूहन्ना ने कहा,
उन्हें मंजूर नहीं था उनका यह आदेश।

क्या परमेश्वर के सामने हमें उचित होगा,
कि उसकी न सुन, हम तुम्हारी सुनें,
जो कुछ हमने देखा और सुना है,
उसे न बतायें और तुमसे डरें।

पतरस और यूहन्ना की वापसी

गये लौट कर वे अपने लोगों के पास,
जो कहा गया था उन्हें सब कह सुनाया,
सब सुनकर परमेश्वर को पुकारने लगे वे,
हे स्वामी, तूँने ही यह ब्रह्माण्ड बनाया।

तूँने ही पवित्र आत्मा के द्वारा,
अपने सेवक दाऊद के मुख से कहा था,
इन जातियों ने न जाने क्यों,
षड़यंत्र रचे और अपना अहंकार दिखाया।

---

*   व्यवस्था 18:15,19
** उत्पत्ति 22:18, 26:24

धरती के राजा उसके विरुद्ध,
युद्ध करने को तैयार हुए,
शासक प्रभु और उसके मसीह के,
विरोध में वे एकत्र हुए।

हाँ, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी,
उस नगर में औरों से मिल कर,
तेरे पवित्र सेवक यीशू के विरोध में,
खड़े हो गये थे एक जुट हो कर।

वे इकट्ठे हुए थे इसलिये कि,
तेरी शक्ति और इच्छा के अनुसार,
जो पहले ही निश्चित हो चुका था,
करें उसके अनुसार ही वे व्यवहार।

हे प्रभु, अपने सेवकों को शक्ति दे,
निर्भय हो वे तेरे वचन सुनाये,
तेरे पवित्र सेवकों द्वारा यीशू के नाम,
जब भी तूँ कोई अद्भुत काम कराये।

जब करी उन्होंने प्रार्थना पूरी,
तब हिल उठा वह स्थान,
समा गया पवित्र आत्मा उनमें,
करने लगे वे प्रभु का गुणगान।

विश्वासियों का सहयोगी जीवन

एक तन और एक मन हो,
रहते थे सब विश्वासी साथ-साथ,
जिसके पास जो कुछ भी था,
आपस में वे लेते थे बाँट।

हनन्याह और सफ़ीरा

हनन्याह और सफ़ीरा नामक दम्पत्ति ने,
बेच दिया अपनी सम्पत्ति का एक हिस्सा,
रख दिया कुछ धन प्रेरितों के चरणों में,
और बचा लिया उसमें से कुछ हिस्सा।

कहा पतरस ने, शैतान को तूँने,
क्यों अपने मन में यह बात डालने दी,
कि तूँने पवित्र आत्मा से झूठ बोला,
कुछ धनराशि अपने पास ही रख ली।

हनन्याह ने जब यह शब्द सुने,
तो पछाड़ खा, दम तोड़ दिया,
जिसने भी उस विषय में सुना,
सब पर गहरा भय छा गया।

कुछ समय बाद जब उसकी पत्नी पहुँची,
उसने भी पति की बात ही दोहरायी,
कहा पतरस ने प्रभु की आत्मा की परीक्षा,
लेने पर तुममें क्यों सहमति बन आयी।

तेरे पति को दफनाने वालों के पैर,
देख, आ पहुँचे हैं तेरे दरवाजे तक,
और वे उठा ले जायेंगे तुझे भी,
दिल में ही रह जायेगी तेरी हसरत।

गिर पड़ी तब उसके चरणों पर वह,
और उसने भी दम तोड़ दिया,
दफनायी गयी वह अपने पति के साथ,
सुनने वालों पर गम्भीर भय छा गया।

प्रमाण

प्रेरितों के द्वारा लोगों के बीच,
बहुत से चिह्न प्रकट हो रहे थे,
उनमें सम्मिलित होने का साहस न करते,
पर लोग उनकी प्रशंसा अवश्य कर रहे थे।

उधर प्रभु पर विश्वास करने वाले,
लोग दिनो-दिन बढ़े जा रहे थे,
परिणामस्वरूप दुखी और दीन जो आते,
वो सभी अच्छे हो जाया करते थे।

यहूदियों का प्रेरितों को रोकने का जतन

प्रेरितों के विरोध में खड़े हो गये,
महायाजक और उसके अन्य साथी,
और कारागृह में डाल दिये गये वो,
उनके द्वारा बना कर बंदी।

किन्तु रात में एक स्वर्गदूत ने,
खोल दिये द्वार उस बंदीगृह के,
कहा, उस नये जीवन के विषय में,
लोगों को बताओ, जाकर मन्दिर में।

सुनकर यह वे भोर के तड़के,
मन्दिर में प्रवेश कर उपदेश देने लगे,
महायाजकों और उनके साथियों को,
बंद बंदीगृह में प्रेरित न मिले।

किन्तु खोल कर उन्हें मन्दिर से,
सर्वोच्च यहूदी सभा में बुलवाया गया,
पूछा, क्यों उनकी आज्ञा के विरुद्ध,
यरूशलेम के लोगों को उन्होंने उपदेश दिया।

कहा पतरस और अन्य प्रेरितों ने,
माननी चाहिये हमें परमेश्वर की बात,
उस यीशू को जिसे मरवा डाला तुमने,
परमेश्वर से हुआ पुनः जीवन प्राप्त।

उसे प्रमुख और उद्धारकर्ता के रूप में,
स्थित किया परमेश्वर ने अपने दाहिने,
ताकि इस्राएलियों का मन फिराव हो,
और क्षमा प्रदान की जा सके उन्हें।

आग बबुला हो उठे वे लोग,
और मार डालना चाहा प्रेरितों को,
पर गमलिएल नामक एक फरीसी ने,
समझाया दलील दे उन लोगों को।

कहा, कुछ समय पहले स्वयं को,
बड़ा घोषित किया था थियूदास ने,
इसी तरह यहूदा भी प्रकट हुआ,
अपनी तरफ खींचा लोगों को उन्होंने।

पर ये दोनों जब मारे गये,
तितर-बितर हो गये लोग उनके,
जो योजना मनुष्य की ओर से होती,
स्वयं मिट जाते वे काम उनके।

किन्तु यदि यह है परमेश्वर की ओर से,
तो तुम उन्हें रोक नहीं पाओगे,
तब हो सकता है तुम स्वयं को,
परमेश्वर के विरुद्ध लड़ते पाओगे।

जो काम होता परमेश्वर की ओर से,
कोई कदापि उसे रोक नहीं पायेगा,
तब हो सकता है वह स्वयं को,
परमेश्वर के विरुद्ध लड़ते पायेगा।

मान कर उसकी सलाह को,
कोड़े लगवा, प्रेरितों को छोड़ दिया गया,
आनन्दित हुए प्रेरित कि उसके नाम पर,
उन्हें अपमान सहने योग्य गिना गया।

फिर मन्दिर और घर-घर में,
देने लगे वे यीशू का सुसमाचार,
उपदेश देते, कहते यीशू मसीह है,
जारी रखा उन्होंने करना यह प्रचार।

विशेष कार्य के लिये सात पुरुषों का चुना जाना

उन्हीं दिनों बारह प्रेरितों ने शिष्यों को,
एक साथ बुला कर उनसे यह कहा,
परमेश्वर के वचन की सेवा को छोड़,
उचित नहीं हमें भोजन का प्रबन्ध करना।

सो चुन लो तुम सात श्रेष्ठ पुरुष,
जिनको हम काम का अधिकारी बना देंगे,
और हम अपने आपको प्रार्थना और,
वचन की सेवा में समर्पित कर देंगे।

विश्वास और पवित्र आत्मा से युक्त,
चुन लिया उन्होंने सात पुरुषों को,
प्रेरितों ने प्रार्थना कर अपने हाथ रख,
अधिकृत कर दिया उन लोगों को।

फैलने लगा परमेश्वर का वचन,
यरूशलेम में बढ़ गयी उनकी संख्या,
याजकों का एक बड़ा समूह भी,
इस मत का समर्थक बन गया।

यहूदियों द्वारा स्तिफनुस का विरोध

स्तिफनुस एक था उन सात व्यक्तियों में,
जो अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण था,
वह लोगों के बीच बड़े-बड़े चमत्कार,
और अद्‌भुत चिह्न प्रकट किया करता था।

पर कुछ लोग उसके विरोध में,
उतर आये विवाद करने पर,
उसकी बुद्धिमानी और आत्मविश्वास के सामने,
लेकिन वो न पाये ठहर।

फिर उन्होंने लालच दे कर,
कुछ लोगों से यह कहलवाया,
मूसा और परमेश्वर के विरोध में,
हमने उसे कहते हुये पाया।

दी गवाही उन लोगों ने,
सर्वोच्च यहूदी सभा के सामने,
पर उसके चेहरे पर स्वर्गदूत सा नूर,
चमकते हुये देखा उन लोगों ने।

स्तिफनुस का भाषण

महायाजक ने पूछा, क्या यह सच है,
तो स्तिफनुस ने उन्हें कह सुनाया,
कैसे परमेश्वर ने हमारे पिता इब्राहीम को,
अपनों से दूर इस धरती पर पहुँचाया।

कसदियों की धरती को छोड़कर,
जा बसा तब वह हरान में,
प्रेरित किया पिता की मृत्यु के बाद,
यहाँ आ बसने को उसे परमेश्वर ने।

फिर बताया सब घटनाओं के बारे में,
और कैसे सुलेमान ने मन्दिर बनवाया,

पर परमेश्वर को भवन नहीं चाहिये,
स्वर्ग को जिसने अपना सिंहसान बनाया।

पर हे हठीले लोगों तुमने सदा,
पवित्र आत्मा का किया है विरोध,
क्या कोई भी ऐसा नबी था,
जिसका तुम्हारे पूर्वजों ने न किया विरोध।

मार डाला उन्हें भी जिन्होंने,
घोषणा की उस धर्मी के आने की,
जिसे धोखा दे तुमने मरवा डाला,
व्यवस्था का पालन तुमने किया नहीं।

स्तिफनुस की हत्या

जब उन्होंने उससे यह सुना,
तो वे अत्यधिक क्रोधित हो उठे,
किन्तु पवित्र आत्मा से भावित स्तिफनुस ने,
देखा यीशू को परमेश्वर के दायें खड़े।

यह देख कहा उसने लोगों से,
मैं देख रहा हूँ स्वर्ग का द्वार खुला,
और मनुष्य के पुत्र को मैं,
देख रहा परमेश्वर के दाहिने खड़ा।

उस पर उन्होंने चिल्लाते हुए,
कर लिये कान बन्द अपने,
फिर झपट कर घसीटते हुए,
ले गये नगर के बाहर उसे।

करने लगे वे उस पर पथराव,
और उतार दिये उन्होंने वस्त्र अपने,
शाऊल नाम के एक युवक के,
रख दिये वे वस्त्र चरणों में।

जब वे उसको संगसार कर रहे थे,
स्तिफनुस यह प्रार्थना कर रहा था,
हे प्रभु यीशू मेरी प्रार्थना स्वीकार कर,
फिर वह अपने घुटनों पर गिर पड़ा।

ऊँचे स्वर में कहा उसने,
हे प्रभु, उनके पापों को,
मत ले तूँ उनके विरुद्ध,
और सो गया चिरनिद्रा में वो।

विश्वासियों पर अत्याचार

इस तरह उस युवक शाऊल ने,
समर्थन किया स्तिफनुस की हत्या का,
उसी दिन से यरूशलेम की कलीसिया पर,
प्रारम्भ हो गया घोर अत्याचार होने का।

प्रेरितों को छोड़ के सभी लोग,
हो गये इधर-उधर तितर बितर,
डालने लगा लोगों को जेल में,
शाऊल लोगों को घर से घसीट कर।

सामरिया में फिलिप्पुस का उपदेश

सामरिया नगर में जा कर फिलिप्पुस,
करने लगा मसीह का प्रचार लोगों में,
सुन उसे, और अदभुत चिह्नों को देख,
गम्भीरता से लिया उसे लोगों ने।

बहुत से दुष्टात्मा ग्रसित लोग,
और बहुत से विकलांग और रोगी,
अच्छे हो रहे थे उसके सान्निध्य में,
छा गयी थी उस नगर में खुशी।

वहीं जादू-टोना करने वाला,
शमौन नामक एक व्यक्ति रहता था,
लोगों को तरह-तरह के चमत्कार दिखा,
उन्हें आश्चर्यचकित करता रहता था।

लेकिन फिलिप्पुस के आने के बाद,
लोग मुड़ गये फिलिप्पुस की ओर,
लेने लगे वे फिलिप्पुस से बपतिस्मा,
यीशू मसीह के नाम से होकर विभोर।

शमौन ने भी उन पर विश्वास किया,
और उसने भी बपतिस्मा ले लिया,

रहने लगा फिलिप्पुस के साथ निकटता से,
महान कार्यों को देख दंग रह गया।

उधर यरूशलेम में प्रेरितों ने जब सुना,
सामरिया में जो कुछ हुआ था,
तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को,
फिलिप्पुस के पास सामरिया भेजा।

वहाँ जाकर उन्होंने करी प्रार्थना,
की उन्हें प्राप्त हो पवित्र आत्मा,
क्योंकि अभी तक उतरा नहीं था,
किसी पर भी वहाँ पवित्र आत्मा।

उन्हें प्रभु यीशू के नाम का,
अभी तक बस दिया गया था बपतिस्मा,
जब पतरस और यूहन्ना ने हाथ रखा,
तो प्राप्त हो गया उन्हें भी पवित्र आत्मा।

यह देख शमौन धन रख कर बोला,
यह शक्ति तुम मुझे दे दो,
ताकि जिस पर मैं हाथ रखूँ,
पवित्र आत्मा मिल जाये उसको।

पतरस ने कहा, तूँ सोचता है धन से,
कि परमेश्वर का वरदान तूँ मोल ले सकता,
पर खोट भरा है तेरे हृदय में,
अपना मन फिरा और दूर कर दुष्टता।

इथोपिया से आए व्यक्ति को फिलिप्पुस का उपदेश

एक देवदूत ने फिलिप्पुस से कहा,
तैयार हो जा और दक्षिण की ओर जा,
बढ़ तूँ उस राह पर जो,
यरूशलेम से जाती है गाजा।

सो तैयार हो, दक्षिण की ओर,
चल पड़ा फिलिप्पुस उस सुनसान राह पर,
इथोपिया की रानी कदांके का अधिकारी,
एक खोजा जा रहा था बैठा रथ पर।

समूचे कोष का कोषपाल था वह,
गया था यरूशलेम आराधना के लिये,
भविष्यवक्ता यशायाह का ग्रंथ,
पढ़ रहा था वह लौटते हुए।

तभी आत्मा से प्रेरणा पा कर,
रथ के पास फिलिप्पुस गया दौड़ता,
बोला खोजा से, जिसे पढ़ रहा तूँ,
क्या तूँ उसे समझ भी पा रहा।

उसने कहा, समझ सकता हूँ कैसे,
जब तक कोई करे न व्याख्या,
फिर उसने फिलिप्पुस को रथ पर,
अपने पास बैठने को बुलवाया।

यशायाह के ग्रंथ का अंश,
जिसे वह खोजा पढ़ रहा था,
लेकिन उसकी समझ के बाहर,
उसका वर्णन इस प्रकार था।

ले जाया जा रहा था उसे,
वध की भेंड़ सा मगर वह चुप था,
उस मेमने के समान जो,
ऊन काटने वाले से कुछ नहीं कहता।

ऐसी दीन दशा में उसको,
न्याय से वंचित किया गया,
उसकी पीढ़ी का वर्णन करेगा कौन,
क्योंकि उसका जीवन तो ले लिया गया।

कहा खोजा ने अनुग्रह कर बता,
यह किसके बारे में है कह रहा,
तब फिलिप्पुस ने इस शास्त्र से लेकर,
यीशू के सुसमाचार तक उसे सब कहा।

मार्ग में आगे बढ़ते हुए तब,
वे कहीं पानी के पास पहुँचे,
पानी को देख कर कहा खोजा ने,
अब तूँ बपतिस्मा दे दे मुझे।

बोला फिलिप्पुस तूँ ले सकता है बपतिस्मा,
यदि तेरा विश्वास है हृदय से पक्का,
फिर वे दोनों उतर गये जल में,
और दिया फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा।

और जब निकले वे जल से बाहर,
कहीं उठा ले गया फिलिप्पुस को आत्मा,
फिर खोजा ने उसे कभी न देखा,
चला गया अपने मार्ग पर आनन्द मनाता।

उधर फिलिप्पुस ने अपने आपको,
पाया वह था अशदोद नगर में,
सुसमाचार का प्रचार करते हुए वह,
फिर वापस पहुँचा कैसरिया नगर में।

शाऊल का हृदय परिवर्तन

अधिकार पत्र ले लिया शाऊल ने,
यदि कोई इस पंथ का अनुयायी मिले,
तो वह उन्हें दमिश्क से बंदी बनाकर,
फिर वापस यरूशलेम ला सके।

सो जब वह दमिश्क के निकट पहुँचा,
अचानक आकाश से प्रकाश आ उतरा,
धरती पर गिरा वो, एक आवाज सुनी,
ओ शाऊल, तूँ मुझे क्यों सता रहा।

शाऊल ने पूछा तूँ कौन है प्रभु,
वह बोला, यीशू तूँ सता रहा जिसे,
नगर में जा तुझे बता दिया जायेगा,
कि क्या करना चाहिये तुझे।

जो लोग उसके साथ में थे,
आवाज सुनी, पर कुछ देख न सके,
उधर शाऊल ने तीन दिनों तक,
कुछ खाया न पिया, न दिखा उसे।

उधर दमिश्क में हनन्याह नामक शिष्य को,
प्रभु ने दर्शन देकर कहा उससे,
यहूदा के घर शाऊल नामक व्यक्ति ने,
एक दर्शन में देखा है उसे।

तीन दिन से कर रहा था प्रार्थना,
फिर एक ऐसा दर्शन मिला उसे,
कि हनन्याह ने आकर उस पर हाथ रखे,
ताकि वह फिर से देख सके।

हनन्याह ने उत्तर दिया है, हे प्रभु,
तेरे संतों के साथ बुरा किया उसने,
और यहाँ भी विश्वास रखने वालों की,
बंदी बनाने का अधिकार पाया है उसने।

कहा प्रभु ने, उस व्यक्ति को,
विधर्मियों, राजाओं और इस्राएलियों के सामने,
मेरा नाम लेने के लिये,
एक साधन के रूप में चुना है मैंने।

सो हनन्याह ने वहाँ पर जाकर,
शाऊल पर हाथ रख दिये अपने,
कहा प्रभु यीशू ने मुझे भेजा है,
जो मार्ग में प्रकट हुआ तेरे सामने।

तुरंत छिलको जैसी कोई चीज ढलकी,
और फिर से उसे लगा दिखाई देने,
फिर बपतिस्मा ले कुछ खाकर,
अपनी शक्ति पुनः प्राप्त कर ली उसने।

शाऊल का दमिश्क में प्रचार करना

ठहरा कुछ समय शाऊल दमिश्क में,
फिर यहूदी धर्म सभागार में पहुँचा,
बोला, ''यह यीशू परमेश्वर का पुत्र है'',
और यीशू का प्रचार वह करने लगा।

चकित रह गया, जिस किसी ने सुना,
कि यह वही व्यक्ति शाऊल था,
जो विश्वासियों को नष्ट करने,
और बंदी बनाने उन्हें आया था।

लेकिन प्रचार करता रहा शाऊल,
अधिक से अधिक शक्तिशाली होता गया,
प्रमाणित करते हुए कि यीशू मसीह है,
यहूदियों को पराजित करने लगा।

शाऊल का यहूदियों से बच निकलना

बहुत दिन जब बीत गये,
यहूदियों ने उसके विरुद्ध षड़यंत्र रचा,
वे घात लगाये रहते थे,
पर शाऊल को चल गया पता।

शाऊल के शिष्यों ने तरकीब सोच,
एक टोकरी में उसे बैठा दिया,
फिर रात में चाहरदीवारी से लटकाकर,
नगर के बाहर उसे उतार दिया।

यरूशलेम में शाऊल का पहुँचना

फिर जब शाऊल यरूशलेम पहुँचा,
तो शिष्यों से मिलने का प्रयास किया,
किन्तु वे तो सभी उससे डरते थे,
पर बरनाबास उसे अपने साथ ले गया।

बरनाबास ने बताया प्रेरितों को,
कैसे शाऊल ने प्रभु को देखा,
और किस प्रकार दमिश्क में उसने,
यीशू के नाम का प्रचार किया।

फिर उनके साथ रहने लगा शाऊल,
करता था प्रवचन प्रभु के नाम का,
यूनानी भाषा-भाषी यहूदियों के साथ,
करता था वाद-विवाद और चर्चा।

पर वे तो चाहते थे उसे मारना,
इसलिये जब बँधुओं को पता चला,
तो वे उसे कैसरिया ले गये,
फिर उसे तरकुस दिया पहुँचा।

इस प्रकार शांति से बीता,
वह समय समूचे कलीसिया का,
और अधिक शक्तिशाली होने लगी,
और बढ़ने लगी उनकी संख्या।

फिर समूचे क्षेत्र में घूमता-फिरता,
पतरस लिद्दा के संतों से मिलने पहुँचा,
आठ साल से लकवे से पीड़ित,
अनियास नामक व्यक्ति को उसने किया अच्छा।

कहा उसने खड़ा हो, बिस्तर ठीक कर,
यीशू मसीह स्वस्थ करता है तुझे,
तुरंत ही उसे स्वस्थ हुआ देख कर,
लोग प्रभु की ओर मुड़ गये।

पतरस याफा में

याफा जो था लिद्दा के ही पास,
रहती थी वहाँ तबीता नामक एक शिष्या,
मर गयी वह बीमार हो कर,
तो लोगों ने शव कमरे में रख दिया।

शिष्यों ने पतरस को बुलाने,
दो व्यक्ति भेजे लिद्दा में,
आकर उस शव के पास पतरस ने,
घुटनों पर झुक करी प्रार्थना अकेले में।

फिर कहा शव से पतरस ने,
उठ, और उठ कर खड़ी हो जा,
तुरंत ही तबीता जीवित हो गयी,
समूचे याफा में होने लगी चर्चा।

पतरस और कुरनेलियुस

कैसरिया में कुरनेलियुस नामक एक व्यक्ति,
सेना के एक दल का नायक था,
वह परमेश्वर से डरने वाला भक्त,
और वैसा ही उसका परिवार भी था।

दिन में नवें पहर के आस पास,
उसने एक दर्शन में स्पष्ट देखा,
कि परमेश्वर का एक दूत आया,
और उसने कुरनेलियुस से कहा।

तेरी प्रार्थनाएं और दीनों को दान,
पहुंच गये हैं परमेश्वर के पास,

सो कुछ व्यक्ति भेज अब याफा से,
बुलवा ले तूँ पतरस को अपने पास।

स्वर्गदूत के कहे अनुसार उसने,
भेजे कुछ लोग पतरस को लाने,
उधर, जब वे पहुँचने ही वाले थे,
पतरस छत पर चढ़ा था प्रार्थना करने।

उसे भूख लगी, कुछ खाना चाहता था,
कि तभी उसकी समाधि लग गयी,
उसने देखा कि आकाश खुल गया,
और कोई चादर सी वस्तु नीचे उतरी।

चारों कोनों से पकड़ कर उसे,
उतारा जा रहा है धरती पर,
हर तरह के पशु-पक्षी और,
रेंगने वाले जीव थे चादर पर।

फिर एक स्वर ने उससे कहा,
"पतरस उठ। मार और खा",
उसने कहा, मैंने कभी भी कोई,
तुच्छ या अपवित्र आहार नहीं लिया।

तभी एक वाणी सुनाई दी उसे,
जो कह रही थी पतरस से,
तुच्छ मत कहना किसी भी वस्तु को,
परमेश्वर ने पवित्र बनाया हो जिसे।

तीन बार हुआ ऐसा ही,
फिर वह वस्तु वापस उठा ली गयी,
पतरस अभी सोच में डूबा था,
कि आ पहुँचे कुरनेलियुस के व्यक्ति।

अगले दिन उनके साथ चला पतरस,
कुछ अन्य लोग भी साथ हो लिये,
वहाँ अपने बन्धु-बान्धवों को बुलाकर,
कुरनेलियुस बाट जो रहा था उसके लिये।

उसके चरणों पर गिरते हुए,
कुरनेलियुस ने प्रणाम किया उसको,
बोला पतरस, मैं एक मनुष्य मात्र हूँ,
यह कहते हुए उठा लिया उसको।

भीतर जाते हुए उनसे बोला पतरस,
तुम जानते हो एक यहूदी के लिये,
किसी दूसरे से सम्बन्ध रखना,
विधान के विरूद्ध है उसके लिये।

किन्तु परमेश्वर ने मुझे दर्शाया है,
कहूँ न अशुद्ध या अपवित्र किसी को,
इसीलिये आ गया बिना आपत्ति के,
जब यहाँ बुलाया गया मुझको।

फिर कुरनेलियुस ने बताया उसे,
जो स्वर्गदूत ने कहा था उसे,
और पतरस से यह करी विनती,
कह सुनाये जो प्रभु ने कहा उसे।

कुरनेलियुस के घर पतरस का प्रवचन

कहा पतरस ने, मैं समझ गया हूँ,
कि परमेश्वर कोई भेदभाव नहीं करता,
जो कोई भी डरता परमेश्वर से,
वह हर नेक व्यक्ति को स्वीकार करता।

यही है वह संदेश जिसे उसने,
दिया मसीह के द्वारा लोगों को,
सभी का है वह प्रभु परमेश्वर,
भेजा लोगों में जिसने मसीह को।

साथ मसीह के था परमेश्वर,
किया चंगा लोगों को उसने,
मार डाला लोगों ने उसको पर,
फिर जीवित कर दिया परमेश्वर ने।

आदेश दिया हमें उपदेश देने का,
भविष्यवक्ताओं ने दी साक्षी उसकी,

कि उसमें विश्वास करने वाला हर व्यक्ति,
पाता है क्षमा उसके नाम द्वारा पापों की।

गैर यहूदियों पर पवित्र आत्मा का उतरना

पतरस अभी यह कह ही रहा था,
कि उन सब पर पवित्र आत्मा उतर आया,
सुसंदेश सुनने वाले गैर यहूदियों ने भी,
पवित्र आत्मा का यह वरदान पाया।

डूब गये सब विश्वासी आश्चर्य में,
सुन नाना भाषाओं में स्तुति करते उसे,
बोला पतरस, इन्हें भी प्राप्त हुआ है,
पवित्र आत्मा, जैसे प्राप्त हुआ है हमें।

पतरस का यरूशलेम लौटना

गैर यहूदियों ने भी प्रभु का वचन,
ग्रहण कर लिया, जब लोगों ने सुना,
सो जब पतरस पहुँचा यरूशलेम में,
खतना के पक्षधरों ने करी आलोचना।

कहा, तूँ खतना रहित लोगों के,
घर में गया, संग खाना खाया,
इस पर पतरस ने उन लोगों को,
जो भी घटा था विस्तार से बताया।

विश्वासियों ने जब पूरा वृत्तांत सुना,
तो उन्होंने बन्द कर दिया प्रश्न करना,
बोले, विधर्मियों को भी अवसर मिला है,
और करने लगे वे परमेश्वर की महिमा।

अंताकिया में सुसमाचार का आगमन

स्तिफनुस के समय यातनाओं के कारण,
वे लोग जो तितर-बितर हो गये थे,
दूर-दूर तक फीनीक, साइप्रस और,
अंताकिया तक वे जा पहुँचे थे।

यहूदियों को छोड़ किसी और को,
सुसमाचार वे नहीं सुनाते थे,
इन्हीं विश्वासियों में से कुछ,
साइप्रस और कुरैन के थे।

सो जब वे अंताकिया आये तो,
यूनानियों को भी सुसमाचार सुनाने लगे,
प्रभु की कृपा से बहुत से लोग,
विश्वासी हो, प्रभु की ओर मुड़ने लगे।

यरूशलेम में जब कलीसिया ने सुना,
तो उन्होंने बरनाबास को अंताकिया भेजा,
उत्साहित किया उसने लोगों को तो,
एक और विशाल जनसमूह साथ जुड़ गया।

ले आया शाऊल को अंताकिया वह,
लोगों को उपदेश वे देने लगे,
अंताकिया में इन्हीं शिष्यों को लोग,
सबसे पहले 'मसीही' कहने लगे।

इसी समय अगबुस नामक एक भविष्यवक्ता ने,
सारी दुनिया में अकाल की भविष्यवाणी की,
तब सभी शिष्यों ने अपने सामर्थ्यानुसार,
बुजुर्गों के पास उपहार भेज सहायता की।

हेरोदेस का कलीसिया पर अत्याचार

लगभग उसी समय राजा हेरोदेस* ने,
कुल कलीसियों को सताना शुरू कर दिया,
मरवा दिया यूहन्ना के भाई याकूब को,
पतरस को जेल में बंद करवा दिया।

चार-चार सैनिकों की चार पंक्तियों के,
पहरे के हवाले उसे कर दिया,
प्रयोजन यह था कि फसह पर्व के बाद,
चलाया जाय उस पर मुकदमा।

जेल से पतरस का छुटकारा

जब हेरोदेस उसे लाने को था बाहर,
ताकि उस पर मुकदमा चलाया जा सके,
वह पहरेदारों के बीच में सोया था,
द्वार पर पहरेदार रखवाली कर रहे थे।

अचानक वहाँ प्रकट हुआ एक देवदूत,
जगमग हो उठी जेल की कोठरी,
थपथपा कर पतरस को कहा खड़ा हो,
और उसकी जंजीरें खुल कर गिर पड़ी।

कहा देवदूत ने मेरे पीछे चला आ,
और पतरस उसके पीछे चल पड़ा,
समझ न आ रहा था उसे कुछ,
सोचा, शायद वह दर्शन देख रहा था।

आगे बढ़ते हुए फाटक पर आ पहुंचे,
जो जाता था नगर के बाहर,
खुल गया वह फाटक अपने आप,
और वो निकल कर आ गए बाहर।

वे अभी गली पार ही गये थे,
कि वह देवदूत अचानक हो गया लुप्त,
फिर पतरस को जैसे आया होश,
तो जाना प्रभु ने ही उसे किया मुक्त।

गया वह यूहन्ना की माता मरियम के घर,
जहाँ बहुत से लोग प्रार्थना कर रहे थे,
पड़ गये अचरज में उसे देखकर लोग,
बतलाया उसने उसे कैसे निकाला प्रभु ने।

उधर मच गयी खलबली पहरेदारों में,
जब जाना उन्होंने वहाँ पतरस न था,
हेरोदेस भी जब हार गया खोज कर,
पहरेदारों को मार डालने की दी आज्ञा।

* हेरोदेस– हेरोदेस प्रथम जो हेरोदेस महान का पोता था।

हेरोदेस की मृत्यु

हेरोदेस फिर रहने लगा कैसरिया में,
क्रोधित था वह सूर और सैदा वालों से,
राजा के निजी सेवक बलासतुस को मनाकर,
करी शांति की प्रार्थना उन्होंने राजा से।

एक दिन राजसी वेश भूषा में,
सिंहासन पर बैठ भाषण दिया हेरोदेस ने,
उसके भाषण को सुन लोग चिल्लाये,
मनुष्य नहीं, यह भाषण दिया किसी देवता ने।

पर क्योंकि परमेश्वर को महिमा न दी उसने,
इसलिये एक दूवदेत ने उसे बीमार कर दिया,
तत्काल उसमें कीड़े पर उसे खाने लगे,
और इस तरह राजा हेरोदेस मर गया।

बरनाबास और शाऊल का चुना जाना

अंताकिया के कलीसिया के कुछ नबी और लोग,
उपवास करते जब लगे थे उपासना करने में,
बरनाबास और शाऊल को नियत कार्य के लिये,
अलग करने को कहा पवित्र आत्मा ने।

सो जब शिक्षक और नबी,
उपवास और प्रार्थना पूरी कर चूके,
तो बरनाबास और शाऊल पर हाथ रख,
विदा कर दिया उन्होंने उन्हें।

बरनाबास और शाऊल की साइप्रस यात्रा

पवित्र आत्मा द्वारा भेजे हुए वे,
सिलुकिया होते हुए साइप्रस पहुँचे,
सलमीस पहुँच कर यहूदी सभागारों में,
परमेश्वर का वचन प्रचारित करने लगे।

पाफूस नगर के राज्यपाल ने,
बुलाया उन्हें परमेश्वर का वचन सुनने,
पर उसके विश्वास को डिगाने का जतन,
किया राज्यपाल के सेवक एक जादूगर ने।

तब शाऊल ने पवित्र आत्मा से अभिभूत हो,
एक पैनी नजर उस पर डालते हुए कहा,
तूँ नेकी का शत्रु छल, धूर्तता से भरा,
कुछ समय के लिये हो जायेगा अंधा।

तुरंत एक धुंध और अंधेरे के कारण,
उस जादूगर को दिखना बंद हो गया,
विश्वास हो गया राज्यपाल को यह देख,
प्रभु के उपदेशों को सुन वह चकित हुआ।

पौलुस* और बरनाबास का साइप्रस से प्रस्थान

फिर कुछ समय बाद पौलुस और साथी,
पहुँचे पिरगा से पिसिदिया के अंताकिया में,
अधिकारियों ने जब कहलवा भेजा उसको,
तो पौलुस ने यह वचन सुनाये उन्हें।

कहा, इस्राएल के लोगों के परमेश्वर ने,
हमारे पूर्वजों को चुना था,
और जब वे ठहरे थे मिस्र में,
उसने उन्हें महान बनाया था।

अपनी महान शक्ति से वह उन्हें,
उस धरती से बाहर निकाल लाया,
कनान देश की सात जातियां नष्ट कर,
उस धरती को उसने उन्हें दे दिया।

उसके बाद शमूएल नबी के समय तक,
उसने उन्हें दिये अनेक न्यायकर्त्ता,
फिर उन्होंने जब राजा की माँग की,
चालीस वर्ष तक दिया शाऊल नामक राजा।

फिर शाऊल को हटा कर परमेश्वर ने,
दाऊद को बनाया उनका राजा,
और वह एक ऐसा व्यक्ति था,
जो परमेश्वर के अनुकूल कार्य करता था।

* पौलुस– शाऊल को पौलुस भी कहा जाता था।

दाऊद के ही एक वंशज को,
परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार,
ला चुका है यीशू के रूप में,
इस्राएल में लोगों का करने उद्धार।

और यीशू के आने से पहले,
दिया लोगों को बपतिस्मा यूहन्ना ने,
मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार,
किया उसने इस्राएल के लोगों में।

कहा था उसने, मैं वह नहीं हूँ,
जो तुम लोग समझते हो मुझे,
लेकिन वह जो मेरे बाद आ रहा,
मैं लायक नहीं कि खोलूँ उसके तस्मे।

उद्धार के लिये यह सुसंदेश,
भेजा गया है हमारे ही लिये,
पर पहचाना नहीं यीशू को,
यरूशलेम वासियों और शासकों ने।

ठहरा दिया उन्होंने उसे दोषी,
और यूँ नबियों का वचन किया पूरा,
यद्यपि मिला न दण्ड का कोई आधार,
पर माँगा उसके लिये दण्ड मृत्यु का।

उसके विषय में जो कुछ लिखा था,
जब वे सब कुछ पूरा कर चुके,
तो उन्होंने क्रूस पर से नीचे उतारा,
और एक कब्र में रख दिया उसे।

किन्तु मरने के बाद उसे,
कर दिया फिर से जीवित परमेश्वर ने,
और जो लोग उसके साथ रहे,
कई दिनों तक उसे देखा उन्होंने।

सुसमाचार सुना रहे इस प्रतिज्ञा से संबंधित,
जो करी गयी थी हमारे पूर्वजों के साथ,
यीशू को पुनर्जीवित कर परमेश्वर ने,
पूरी करी उनकी संतानों हेतु यह बात।

फिर दाऊद अपना सेवा कार्य पूरा कर,
सो गया वह चिर-निद्र में,
दफना दिया गया उसे पूर्वजों के साथ,
और क्षय हुआ उसका अन्त में।

किन्तु मरे हुओं के बीच में से,
जिसे परमेश्वर ने जिला कर उठाया,
तुम जान लो कि उस यीशू द्वारा ही,
पापों की क्षमा का उपदेश दिया गया।

और उसी के द्वारा हर विश्वासी,
उन पापों से छुटकारा पा सकता,
मूसा की व्यवस्था जिन पापों से,
दिला नहीं सकती थी तुम्हें छुटकारा।

उनकी उन बातों को सुन कर,
बहुत प्रभावित हुए कई लोग,
अगले सब्त के दिन तो मानो,
उमड़ पड़े पूरे नगर के लोग।

उस विशाल जन समूह को देख,
बहुत से यहूदी कुढ़ने लगे,
और अपशब्दों का प्रयोग करते हुए,
पौलुस का विरोध करने लगे।

कहा पौलुस और बरनाबास ने उन्हें,
नकारते हो तुम परमेश्वर का वचन,
समझते नहीं हो अपने आपको योग्य,
पाने के लिये तुम अनन्त जीवन।

सो मुड़ते है हम गैर यहूदियों की ओर,
क्योंकि प्रभु ने ऐसी दी है आज्ञा हमें,
गैर यहूदियों के लिये तुम्हें ज्योति बनाया,
ताकि धरा पर सभी का उद्धार हो सके।

बहुत प्रसन्न हुए गैर यहूदी यह सुनकर,
उन्होंने प्रभु के वचन का सम्मान किया,
फिर अनन्त जीवन के लिये निश्चित,
लोगों ने विश्वास ग्रहण कर लिया।

इस प्रकार उस समूचे क्षेत्र में,
प्रचार होता रहा प्रभु के वचन का,
उधर यहूदियों ने सभ्रांत भक्त महिलाओं,
और प्रमुख व्यक्तियों को भड़काया।

निकलवा दिया पौलुस और बरनाबास को बाहर,
इकुनियुम की ओर वे दोनों चल दिये,
किन्तु आनन्द और पवित्र आत्मा से,
उनके शिष्य परिपूर्ण होते रहे।

इकुनियुम में पौलुस और बरनाबास

करने लगे वे प्रचार इकुनियुम में,
बहुतों ने विश्वास धारण कर लिया,
पर जो विश्वास कर न सके उन्होंने,
गैर यहूदियों को भड़काना शुरू कर दिया।

फिर जब लोगों ने नेताओं से मिलकर,
शुरू किया उनके साथ बुरा व्यवहार,
लुकाउनिया की तरफ बच निकले वो,
करने लगे वहाँ सुसमाचार का प्रचार।

लिस्तरा और दिरबे में पौलुस

लिस्तरा में एक अपंग व्यक्ति का,
जो कभी चल-फिर नहीं पाया,
नजर पड़ने पर पौलुस ने उसमें,
अच्छा होने का विश्वास मौजूद पाया।

सौ पौलुस ने ऊँचे स्वर में कहा,
अपने पैरों पर सीधे खड़ा हो जा,
तुरंत ही वह उठ खड़ा हुआ,
भीड़ ने भी यह चमत्कार देखा।

पुकार कर कहने लगे लोग,
हमारे बीच देवता उतर आये,
जेअस मन्दिर के याजक ने भेजा,
उनके लिये वे बलि चढ़ाये।

मना किया पौलुस और बरनाबास ने,
कहा व्यर्थ की बातों को छोड़ो,
जिसने आकाश, धरती और सागर बनाये,
अपना मन सजीव परमेश्वर को मोड़ो।

उधर अंताकिया और इकुनियुम से आये,
यहूदियों ने भीड़ को दिया भड़का,
पथराव किया भीड़ ने पौलुस पर,
छोड़ा तभी जब जाना उसे मरा।

ले गये घसीट कर शहर के बाहर,
जहाँ उसके शिष्यों ने उसे सँभाला,
अगले ही दिन बरनाबास के साथ,
दिरबे नगर को वह हुआ रवाना।

सीरिया के अंताकिया को लौटना

सुसमाचार का प्रचार करके वहाँ,
उन्होंने बहुत से शिष्य बनाये,
उनकी आत्माएं विश्वास में स्थिर कर,
वे लिस्तरा, इकुनियुम व अंताकिया लौट आये।

हर कलीसिया में उन्होंने उन्हें,
उस प्रभु को सौंप दिया,
जिस प्रभु में उन लोगों ने,
अपना विश्वास स्थिर किया।

फिर और नगरों में प्रचार करते,
इटली की ओर वो पहुँच गए,
वहाँ से गये वे अंताकिया को,
प्रभु के अनुग्रह को समर्पित होने।

वहाँ पहुँच कलीसिया के लोगों को,
जो बीता था विवरण कह सुनाया,
और घोषणा करी कि परमेश्वर ने,
विधर्मियों को भी है अपनाया।

यरूशलेम में एक सभा

फिर कुछ लोग यहूदिया से आये,
और देने लगे भाइयों को शिक्षा,
यदि तुम्हारा खतना नहीं हुआ हो तो,
तुम्हारा उद्धार भी नहीं हो सकता।

पौलुस और बरनाबास सहमत नहीं थे,
अतः एक विवाद वहाँ शुरू हो गया,
सो पौलुस, बरनाबास और कुछ साथियों को,
यरूशलेम भेजने का निश्चय किया गया।

जब वे लोग यरूशलेम पहुँचे तो,
प्रेरितों और बुजुर्गों ने स्वागत किया उनका,
परमेश्वर ने उनके साथ जो किया था,
वर्णन किया उन्होंने उस सबका।

कहने लगे कुछ फरीसी विश्वास करने वाले,
अवश्य किया जाना चाहिये उनका खतना,
एक लम्बे चौड़े वाद-विवाद के बाद,
पतरस ने खड़े हो शुरू किया कहना।

भाइयों! तुम जानते हो बहुत दिन पहले,
तुममें से प्रभु ने एक चुनाव किया था,
कि मेरे द्वारा अधर्मी सुसंदेश सुनेंगे,
और उस पर विश्वास होगा उनका।

और अन्तर्यामी परमेश्वर ने हमारे ही सामने,
उन्हें पवित्र आत्मा दे अपना समर्थन दर्शाया,
विश्वास द्वारा उनके हृदयों को पवित्र कर,
हमारे और उनके बीच कोई भेद न बचाया।

सो अब एक अनचाहा बोझ लाद कर,
क्यों परमेश्वर को डालते हो झमेले में,
उनका भी हमारी ही तरह उद्धार होगा,
प्रभु यीशू का अनुग्रह मिलेगा उन्हें।

इस पर चुप हो कर सब लोग,
पौलुस और बरनाबास को सुनने लगे,
और वे परमेश्वर द्वारा किये चमत्कारों का,
विवरण उन लोगों को सुनाने लगे।

जब बोल चुके वे लोग तो,
याकूब खड़ा हो कहने लगा,
कैसे कुछ गैर-यहूदियों को चुनकर,
परमेश्वर ने प्रेम प्रकट किया था।

नबियों के वचन भी करते हैं समर्थन,
जैसा कि शास्त्रों में लिखा गया,
मैं इसके बाद आऊँगा और खड़ा करूँगा,
दाऊद के उस घर को जो गिर गया।

ताकि जो गैर यहूदी कहलाते हैं मेरे,
वो सभी प्रभु की खोज करें,
जो युग-युग से ये बातें प्रकटाता रहा,
वही प्रभु कहता है ये बातें।

इस प्रकार मेरा निर्णय है,
सताना नहीं चाहिये हमें उन्हें,
बल्कि विधान की मूल बातें ही,
लिख भेजनी चाहिये हमें उन्हें।

गैर यहूदी-विश्वासियों के नाम पत्र

फिर यहूदा और सिलास को चुन,
भेजा उन्हें पौलुस बरनाबास के साथ,
और एक पत्र में मुख्य-मुख्य बातें,
लिख कर भेजीं उन लोगों के हाथ।

लिखा पवित्र आत्मा को और हमें,
नहीं उचित यह जान पड़ता,
कि तुम पर जरूरी बातों के अतिरिक्त,
बोझ डाला जाये अन्य बातों का।

मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन,
नहीं लेना चाहिए कभी प्रयोग में तुम्हें,
रक्त और गला घोटे पशु का मांस,
और व्यभिचार से बचना चाहिए तुम्हें।

अंताकिया पहुँच यह पत्र पढ़ सुनाया,
तो लोगों ने प्रोत्साहन पा आनन्द मनाया,
कुछ समय वहाँ रह उन लोगों ने,
सुसमाचार को अन्य लोगों तक पहुँचाया।

पौलुस और बरनाबास का अलग होना

प्रभु के वचनों का प्रचार,
जहाँ-जहाँ पर किया हमने,
आओ देखें क्या हो रहा वहाँ,
कहा पौलुस से बरनाबास ने।

मरकूस कहलाने वाले यूहन्ना को भी,
बरनाबास ले चलना चाहता था साथ,
किन्तु पौलुस को बरनाबास की,
ठीक लगी नहीं यह बात।

मरकूस वही था पम्फूलिया में जिसने,
उनका साथ छोड़ दिया था,
और प्रभु के कार्य में जिसने,
उनका साथ नहीं दिया था।

इस बात पर उन दोनों में,
तीव्र विरोध पैदा हो गया,
परिणाम यह हुआ इस गतिरोध ने,
उन दोनों को अलग कर दिया।

बरनाबास मरकूस को साथ ले,
चला गया साइप्रस जहाज से,
और पौलुस सिलास को चुन कर,
चला गया अपने साथ ले उसे।

तिमुथियुस का पौलुस और सिलास के साथ जाना

दिरबे और लुस्तरा में भी आया पौलुस,
वहीं तिमुथियुस नामक एक शिष्य था,
उसकी माँ थी एक विश्वासी यहूदी महिला,
किन्तु उसका पिता एक यूनानी पुरुष था।

साथ ले लिया पौलुस ने उसको,
और यहूदियों के कारण उसका किया खतना,
बताये उन्होंने लोगों को वे नियम,
शुरू हुआ दिन-प्रतिदिन उनकी संख्या बढ़ना।

पौलुस का एशिया से बाहर बुलाया जाना

मना कर दिया था पवित्र आत्मा ने,
उन्हें एशिया में वचन सुनाने को,
सो वे निकले फ्रूगिया और गलातिया से,
सोचा उन्होंने बितुनिया जाने को।

किन्तु यीशू की आत्मा ने,
जाने ना दिया उन्हें वहाँ भी,

फिर एक दिव्यदर्शन में पौलुस ने,
एक पुरुष की यह प्रार्थना सुनी।

दिव्यदर्शन में कह रहा था वह व्यक्ति,
मैसिडोनिया में आ और हमारी सहायता कर,
वहाँ जाने की ठान ली उन्होंने यह सोच,
कि सुसमाचार के हेतु बुला रहा है परमेश्वर।

लीदिया का हृदय परिवर्तन

मैसिडोनिया के एक उपनिवेश फिलिप्पी में,
सब्त के दिन वे नदी पर गये,
वहीं लीदिया नामक एक प्रभु उपासक थी,
प्रभु ने जिसके हृदय द्वार खोल दिये।

ध्यान से सुन पौलुस की बातें,
समूचे परिवार सहित बपतिस्मा ली उसने,
फिर आग्रह कर भक्ति का वास्ता दे,
अपने घर ठहरने की विनती करी उसने।

पौलुस और सिलास का बंदी बनाया जाना

फिर जब वे प्रार्थना स्थल जा रहे थे,
एक दासी मिली, जिसमें आत्मा* थी समायी,
वह लोगों को भाग्य उन्हें बता कर,
अपने स्वामियों के लिये करती थी कमाई।

वह यह चिल्लाते उनके पीछे हो ली,
ये लोग हैं परम-परमेश्वर के सेवक,
दे रहे मुक्ति के मार्ग का संदेश,
कहती रही वह यह बहुत दिनों तक।

जब पौलुस उससे परेशान हो उठा,
तो मुड़कर उसने कहा आत्मा से,
यीशू मसीह के नाम से देता हूँ आज्ञा,
निकल आ बाहर इस लड़की में से।

* आत्मा– यह आत्मा एक शैतान की रूह थी, जिसने उस लड़की को एक विशेष ज्ञान दे रखा था।

तुरंत वह आत्मा बाहर निकल आयी,
और बंद हो गयी उसकी कमाई,
उसके स्वामियों ने पौलुस और सिलास को,
ले जाकर उनके विरुद्ध शिकायत दर्ज कराई।

कहा, ये लोग हैं गैर यहूदी,
फैला रहे हैं गड़बड़ी हमारे नगर में,
दण्डाधिकारी ने उन्हें पिटवाया और,
फिर डलवा दिया उन्हें जेल में।

बिठवा दिया कड़ा पहरा उन पर,
और कस दिये गये उनके पैर काठ में,
लेकिन रात में जब वे भजन गा रहे थे,
जेल की नीवें हिला दी एक भूचाल ने।

खुल गये जेल के सब फाटक,
बेड़ियां ढीली हो नीचे गिर पड़ीं,
जेल के अधिकारी ने जाग कर देखा,
कैदियों के भागने की हुई चिन्ता बड़ी।

तभी पौलुस ने पुकार कर कहा,
चिन्ता मत कर हम हैं यहीं पर,
जेल अधिकारी जा गिरा उनके सामने,
और ले गया उन्हें तुरंत ही बाहर।

बाहर ले जाकर उनसे वह बोला,
क्या करना चाहिये मुझे उद्धार पाने को,
उन्होंने कहा, प्रभु यीशू पर विश्वास कर,
उद्धार मिलेगा उससे तुझे और तेरे परिवार को।

फिर उसके समूचे परिवार के साथ,
उन्होंने उसे प्रभु का वचन सुनाया,
अधिकारी ने अपने परिवार सहित,
उसी रात बपतिस्मा ले आनन्द मनाया।

पौं फटने पर दण्डाधिकारियों ने,
उन्हें छोड़ देने का संदेश भिजवाया,
कहा पौलुस ने हम निरपराधियों को,
बिना बात ही उन्होंने सताया।

अब चाहते हैं वो लोग,
चुपके-चुपके भेज दें हमें बाहर,
लेकिन उन्हें यह चाहिये कि वे,
स्वयं आकर निकालें हमें बाहर।

दण्डाधिकारियों को जब यह पता चला,
और कि रोमी हैं वे दोनों,
क्षमा याचना कर उन्हें बाहर ले गये,
कहा वह शहर छोड़ दें वे दोनों।

पौलुस और सिलास थिस्सलुनिके में

थिस्सलुनिके पहुँच कर शास्त्रों द्वारा पौलुस,
यीशू ही मसीह है सिद्ध करता रहा,
झेलनी ही थी मसीह को वे यातनाएं,
और मरों हुओं में से फिर जी उठना।

सहमत हो कुछ शामिल हो गए,
पौलुस और सिलास के मत में,
परमेश्वर से डरने वाले यूनानी और,
अनेक महत्त्वपूर्ण स्त्रियां भी थी उनमें।

पर डाह में जल रहे थे यहूदी,
करा दिए दंगे उन्होंने नगर में,
यासोन जिसके घर में ठहरे थे वो,
उतर आए लोग उसके विरोध में।

पौलुस और सिलास बिरिया में

फिर तुरंत ही रातों रात भाइयों ने,
पौलुस और सिलास को भेज दिया बिरिया,
वहाँ लोगों ने सुने वचन उन दोनों के,
और बहुत लोगों ने विश्वास ग्रहण किया।

पता चला जब थिस्सलुनिके के यहूदियों को,
वहाँ आ दंगे भड़काना शुरू कर दिया,
इसलिये तभी भाइयों ने तुरन्त पौलुस को,
सागर तट पर जाने को भेज दिया।

ठहरे रहे सिलास और तिमुथियुस वहीं,
पौलुस को एथेंस पहुँचा दिया गया,
सिलास और तिमुथियुस को पौलुस के पास,
शीघ्र ही आने का आदेश दिया गया।

पौलुस एथेंस में

एथेंस नगर को मूर्तियों से भरा देखकर,
पौलुस मन ही मन तिलमिलाता रहता था,
इसलिये वह यहूदियों और यूनानी भक्तों से,
हर दिन वाद-विवाद करता रहता था।

अरियुपगुस की सभा में अपने साथ,
ले गये लोग उसे पकड़कर,
कहा पौलुस ने बिना जाने ही,
पूजते हो तुम अज्ञात परमेश्वर।

उसी का वचन सुनाता हूँ तुम्हें,
समस्त जगत को रचा है उसी ने,
वही धरती और आकाश का प्रभु है,
रहता नहीं हाथों से बनाये मंदिरों में।

एक मनुष्य से पैदा की सब जातियां,
और लोगों का समय निश्चित कर दिया,
और वे स्थान जहाँ पर वे रहें,
सीमाओं में उन स्थानों को बाँध दिया।

उस का प्रयोजन यह था कि लोग,
खोज करें उस परमेश्वर की,
हो सकता है वे पा लें उसे,
पर वह किसी से भी दूर नहीं।

क्योंकि उसी में हम रहते हैं,
और उसी में गति करते हैं,
है उसी में हमारा अस्तित्व,
क्योंकि हम उसके ही बच्चे हैं।

और क्योंकि हम परमेश्वर की संतान हैं,
हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिये,
कि वह किसी मूर्ति जैसा है,
ऐसे अज्ञान से हमें बचना चाहिये।

दे रहा है वह मन फिराने का आदेश,
एक पुरुष द्वारा जिसे उसने नियुक्त किया,
उसी के साथ जगत का निर्णय करेगा,
मृतकों में से उसे जिला प्रमाण दिया।

जब सुनी उन्होंने पुनर्जीवित होने की बात,
कुछ लोग उसकी हंसी उड़ाने लगे।
कुछ लोगों ने विश्वास ग्रहण कर लिया,
और कुछ लोग उसके साथ हो लिये।

पौलुस कुरिन्थियुस में

एथेंस छोड़ कुरिन्थियुस चला गया पौलुस,
वहाँ यूनानियों को समझाने का जतन करता,
सारा समय यीशू ही मसीह है,
प्रमाणित करने में वह लगा रहता।

जब करने लगे लोग उसका विरोध,
स्वप्न में प्रभु ने उससे कहा,
चुप मत हो, मैं तेरे साथ हूँ,
कोई तुझे हानि नहीं पहुँचा सकता।

पौलुस का गल्लियों के सामने लाया जाना

जब अखाया का राज्यपाल गल्लियों था,
यहूदियों द्वारा पौलुस को पकड़ ले जाया गया,
पर न्यायाधीश ने एक ना सुनी उनकी,
गल्लियों ने भी उन पर ध्यान न दिया।

पौलुस की वापसी

बहुत दिनों तक वहाँ रुक कर,
पौलुस चल पड़ा सीरिया की तरफ,
किंखिया में उसने अपने केश उतरवाये,
क्योंकि उसने माँगी थी एक मन्नत।

फिर केसरिया पहुँच वह यरूशलेम गया,
और वहाँ से गया वह अंताकिया,
गलातिया एवं फ्रिगिया क्षेत्रों में धूम कर,
अनुयायियों का विश्वास पक्का किया।

इफिसुस में अपुल्लोस

वहीं अपुल्लोस नामक एक यहूदी था,
वह एक विद्वान वक्ता था,
दीक्षा मिली थी उसे प्रभु के नाम की,
लोगों में प्रवचन वह किया करता था।

बोलने लगा यहूदी धर्मसभा में निर्भीक,
पर सावधानी से उपदेश देता था,
प्रिस्किल्ला और अक्विला ने उसे सुनकर,
मार्ग की बरिकियों की बताई व्याख्या।

सो जब उसने जाना चाहा अखाया,
उसके स्वागत हेतु लिख भेजा भाइयों ने,
जनता के बीच जोरदार शब्दों में बोलते,
शास्त्रार्थ में पछाड़ा यहूदियों को उसने।

पौलुस इफ़िसुस में

जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था,
तभी पौलुस इफ़िसुस में आ पहुँचा,
विश्वास धारण करते वक्त पवित्र आत्मा को,
क्या ग्रहण किया तुमने, शिष्यों से पूछा।

उनके मना करने पर पौलुस ने,
यीशू के नाम का दिया बपतिस्मा,
फिर जब उन पर हाथ रखा तो,
उतर आया उन पर पवित्र आत्मा।

फिर पौलुस तरन्नुस की पाठशाला में,
दो साल तक प्रवचन करता रहा,
सो सभी एशिया-निवासी यहूदियों और,
गैर-यहूदियों ने प्रभु का वचन सुन लिया।

स्कीवा के बेटे

कर रहा था पौलुस के हाथों,
अनेक आश्चर्य भरे कर्म परमेश्वर,
बीमारियां और दुष्टात्माएं दूर हो जाती,
उसके छुये कपड़े निकट पा कर।

कुछ यहूदी जो दुष्टात्माएं उतारते,
घूमा फिरा करते थे इधर-उधर,
वे लोग भी आदेश देने लगे,
दुष्टात्माओं को यीशू के नाम पर।

एक स्कीवा नामक यहूदी महायाजक के,
सात बेटे जब कर रहे थे ऐसा,
यीशू और पौलुस को जानती हूँ मैं,
तुम कौन हो, दुष्टात्मा ने पूछा।

फिर दुष्टात्मा ग्रसित वह व्यक्ति,
झपट पड़ा स्कीवा के बेटों पर,
उसने उन पर काबू पा लिया,
और भगा दिया उन्हें घायल कर।

इफ़िसुस के यहूदियों और यूनानियों को,
पता चल गया इस बात का,
डर गये वो सभी लोग और,
आदर बढ़ गया यीशू के नाम का।

बहुत से जादू-टोना करने वालों ने,
अपनी पुस्तकें इकट्ठा कर जला डाली,
इस प्रकार प्रभुका वचन फैलने लगा,
दूर-दूर तक होकर अधिक प्रभावशाली।

पौलुस की यात्रा-योजना

इन घटनाओं के बाद पौलुस ने,
यरूशलेम जाने का किया निश्चय,
दो सहायकों को मैसिडोनिया भेज,
एशिया में बिताया थोड़ा और समय।

इफ़ियुस में उपद्रव

इफ़िसुस में एक चाँदी का सुनार,
बनवाया करता था अरतिमिस की हटरियाँ,
पर मूर्तियों के विरोध के कारण,
इसका कारोबार हो चला था मंदा।

कारीगरों को इकट्ठा कर उसने,
पौलुस के विरुद्ध उन्हें भड़काया,
अरतिमिस इफ़िसयो की देवी महान है,
उन कारीगरों ने शोर मचाया।

पौलुस का मैसिडोनिया और यूनान जाना

पर कुछ न नतीजा निकला उसका,
धीरे-धीरे वह उपद्रव शांत हो गया,
फिर यीशू के शिष्यों का होंसला बढ़ाकर,
पौलुस मैसिडोनिया की ओर चल दिया।

उत्साहित कर वहाँ लोगों को,
फिर पौलुस यूनान आ गया,
वहाँ यहूदी षड़यंत्र रच रहे थे,
सो लौट गया पौलुस मैसिडोनिया।

त्रोआस को पौलुस की अन्तिम यात्रा

त्रोआस में देर रात गये तक,
जब पौलुस लोगों से बात कर रहा था,
एक युवक गहरी नींद में डूब,
तीसरी मंजिल से नीचे गिर पड़ा।

जब उठाया उसे मर चुका था वह,
पौलुस नीचे उतर उस पर झुका,
फिर कहा लोगों से घबराओ मत,
अभी उसके प्राण नहीं हुये जुदा।

फिर ऊपर जा करने लगा बातचीत,
रोटी को तोड़ कर उसने खाया,
बहुत चैन मिला लोगों को जब,
उस युवक को उन्होंने जीवित पाया।

त्रोआस से मितुलेने की यात्रा

अस्सुम से जहाज पर चढ़कर,
हम मितुलेने की ओर चल पड़े,
क्योंकि पौलुस को यरूशलेम की जल्दी थी,
हम इफ़िसुस में बिना रूके चल पड़े।

पौलुस की इफ़िसुस के बुजुर्गों से बातचीत

इफ़िसुस के बुजुर्गों को बुलवाया पौलुस ने
और उन लोगों से उसने कहा,
यहूदियों के षड़यंत्रो से उपजी विपदाएं सह,
मैं प्रभु की सेवा करता रहा।

तुम जानते हो तुम्हारे हित की बात,
बताने से तुम्हें मैं कभी हिचका नहीं,
यहूदियों और यूनानियों को समान भाव से,
मन फिराने को कहने से रूका नहीं।

और अब पवित्र आत्मा के अधीन हो,
जा रहा हूँ मैं यरूशलेम को,
मैं नहीं जानता वहाँ मेरे साथ,
क्या कुछ रखा है घटने को।

मैं तो बस इतना जानता हूँ कि,
करती रहती है सचेत मुझे पवित्र आत्मा,
कि हर नगर में प्रतीक्षा कर रहे हैं,
मेरे लिये बंदीगृह और कठिनाइयां।

किन्तु कोई मूल्य नहीं है,
मेरे लिये मेरे प्राणों का,
मेरा तो लक्ष्य है परमेश्वर के,
अनुग्रह के सुसमाचार की साक्षी देना।

और अब मैं जानता हूँ कि तुम,
मेरा मुँह आगे नहीं देख पाओगे,
और तुम मुझे अपने खून का,
दोषी कभी ना ठहरा पाओगे।

दोषी नहीं हूँ मैं क्योंकि,
परमेश्वर की इच्छा के बारे में,
हिचकिचाया नहीं हूँ मैं कभी भी,
उसको तुम लोगों को बताने में।

रखवाली करो अपनी और अपने समुदाय की,
उसने तुम्हें उन पर नजर रखने वाला बनाया,
ताकि परमेश्वर की उस कलीसिया का ध्यान रखो,
जिसका मोल उसने अपने रक्त से चुकाया।

सावधान रहना कि मेरे जाने के बाद,
लोग उस भोले-भाले समूह को नहीं छोड़ेंगे,
अपने ही लोग, शिष्यों को फुसलाने के लिये,
बातों को तोड़-मरोड़ कर पेश करेंगे।

सौंपता हूँ मैं तुम्हें अब परमेश्वर और,
उसके सुसंदेश के अनुग्रह के हाथों,
वही तुम्हारा निर्माण कर सकता है,
दिला सकता तुम्हारा उत्तराधिकार तुम्हीं को।

तुम जानते हो कठिन परिश्रम कर,
मैंने साथियों की आशाएं करी पूरी,
लेने से देने में अधिक सुख हैं,
यीशू का यह वचन रखना याद जरूरी।

फिर सब के साथ घुटनों के बल,
झुक कर करी प्रार्थना उसने,
फूट-फूट कर रोने लगे लोग,
गले मिल कर उसे लगे चूमने।

पौलुस का यरूशलेम जाना

फिर उनसे विदा हो कर हमने,
सागर में अपनी नाँव खोल दी,
कास, रोदुस और पतरा हो कर,
साइप्रस छोड़ सीरिया की राह ली।

फिर सात दिन रूक कर वहाँ,
पतुलिमयिस हो, कैसरिया आ गये,
और इंजील के प्रचारक फिलिप्पुस के,
घर जा कर उसके साथ ठहर गये।

वहाँ यहूदिया के अगबुस नामक नबी ने,
पौलुस के कमरबंध से अपने हाथ-पैर बाँध,
कहा, पवित्र आत्मा कह रहा है ऐसे ही,
विधर्मियों को सौंपा जाएगा पौलुस को बाँध।

जब हमने यह सुना तो सबने,
विनती करी उससे यरूशलेम न जाये,
पौलुस न माना कहा यीशू के नाम,
चाहे मेरे प्राण ही ले लिये जायें।

पौलुस की याक़ूब से भेंट

यरूशलेम पहुँचने पर भाइयों ने,
उत्साह सहित हमारा स्वागत सत्कार किया,
और फिर अगले दिन हमारे साथ,
पौलुस याकूब से मिलने गया।

वहाँ विधर्मियों के बीच परमेश्वर ने,
जो काम पौलुस से कराये, बताये उसने,
जब उन लोगों ने यह सुना तो,
परमेश्वर की स्तुति कर लगे उससे कहने।

कितने ही हजारों यूहदी यहाँ ऐसे हैं,
जिन्होंने विश्वास ग्रहण कर लिया है,
किन्तु वे हैं व्यवस्था के कट्टर समथर्क,
तुम्हारे बारे में उनसे यह कहा गया है।

कि तू विधर्मियों के बीच रहते यहूदियों को,
मूसा की शिक्षाओं को त्यागने की शिक्षा देता,
और कहता है न बच्चों का खतना करायें,
न ही हमारे रीति रिवाजों पर चलने देता।

सो तू वह कर जो हम कहते हैं,
हमारे साथ हैं चार व्यक्ति मन्नत माँगने वाले,
उनके साथ शुद्धीकरण सम्मेलन में शामिल होजा,
उनको खर्चा दे दे, वे अपना सिर मुँडवा ले।

इससे सब लोग जान जायेंगे,
जो उन्होंने सुना वह सत्य नहीं,
बल्कि मूसा की व्यवस्था अनुसार,
जीता है अपना जीवन तू तो स्वयं ही।

बात मान कर उन लोगों की,
पौलुस ने उन्हें अपने साथ लिया,
और उनके साथ स्वयं को भी,
उसने अगले दिन शुद्ध कर लिया।

जब सात दिन लगभग हो चले,
देख लिया यहूदियों ने उसे मंदिर में,
भड़का दिया उन्होंने भीड़ को,
और ले लिया पौलुस को पकड़ में।

वे चिल्ला रहे थे, यह वो है जो,
करता है विरोध हमारे इस स्थान का,
और अब तो विधर्मियों को यहाँ लाकर,
इसने मन्दिर को भी भ्रष्ट कर दिया।

उन्होंने ऐसा इसलिये कहा था कि,
त्रुफिमुस नामक एक इफिसी को,
देखा था उन्होंने उसके साथ नगर में,
सोचा साथ ले आया है वह उसको।

उठ खड़ा हुआ सारा नगर विरोध में,
लोग दौड़-दौड़ कर चढ़ आये,
पौलुस को पकड़ घसीटते हुये,
वे उसे मंदिर से बाहर ले आये।

तभी आ पहुँचा एक रोमी सेनानायक,
जिसने पौलुस को कब्जे में ले लिया,
पर हो-हुल्लड़ में जान न पाया सच्चाई,
पौलुस को ले छावनी को चल दिया।

जब वह भीतर ले जाया जाने वाला था,
कुछ बोलने की अनुमति माँगी पौलुस ने,
फिर खड़े हो, भीड़ को शांत कर,
इब्रानी भाषा में पौलुस लगा कहने।

पौलुस का भाषण

कहा पौलुस ने सुनो मुझे,
हे भाइयों और पितृ तुल्य सज्जनों,
मेरे बचाव में अब मुझे,
जो कुछ कहना है उसे सुनो।

मैं एक यहूदी हूँ, तरतुस में जन्मा,
उसी नगर में मैं हुआ बड़ा,
गमलिएल* के चरणों में बैठ कर,
परम्परागत विधान में मिली शिक्षा-दीक्षा।

बड़ा उत्साही था मैं परमेश्वर के प्रति,
ठीक वैसे ही जैसे आज तुम हो,
इतना सताया कि प्राण निकल गये,
मैंने इस पंथ के लोगों को।

बंदी बना स्त्रियों और पुरुषों को,
जेलों में ठूस दिया मैंने उनको,
दमिश्क भी गया दण्ड दिलाने हेतु,
वहाँ रहने वाले उनके भाइयों को।

पौलुस का मन कैसे बदला

फिर पौलुस ने उन्हें बताया,
क्या हुआ था उसके साथ,
किस तरह दमिश्क जाते वक्त,
मार्ग में उसने देखा प्रकाश।

कैसे उस प्रकाश के कारण,
उसे देखना बंद हो गया,
और फिर हनन्या के कहने पर,
फिर तत्क्षण वह देखने लग गया।

बपतिस्मा ग्रहण कर यरूशलेम लौट आया,
तब मंदिर में मैंने समाधि में देखा,
कहा मुझसे, यरूशलेम से दूर चला जा,
विधर्मियों के बीच तुझे दूर-दूर तक भेजूँगा।

इस बात तक वे उसे सुनते रहे,
फिर चिल्ला उठे ऊँचे स्वर में,
ऐसे मनुष्य से धरती को मुक्त करों,
भलाई नहीं इसके जिंदा रहने में।

* गमलिएल– यहूदियों की एक धार्मिक शाखा फरीसियों का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण धर्म-गुरु

ले जाया गया पौलुस को किले में,
ताकि कोड़े लगा पूछताछ करी जाये,
पौलुस ने पूछा क्या यह उचित है,
किसी निरपराध रोमी को सजा दी जाये।

यह जान कि वह जन्मजात रोमी है,
पूछताछ करने वाला पीछे हट गया,
उसने उसे बिना बात बनाया है बंदी,
यह समझकर सेनापति भी डर गया।

यहूदी नेताओं के सामने पौलुस का भाषण

वह सेनानायक पता लगाना चाहता था,
यहूदियों ने पौलुस पर अभियोग क्यों लगाया,
सो अगले दिन प्रमुख याजकों और,
सर्वोच्च यहूदी महासभा को उसने बुलवाया।

फिर उनके सामने कहा पौलुस ने,
उत्तम निष्ठा के साथ मैंने जीवन जिया,
इस पर वहाँ उपस्थित महायाजक हनन्याह ने,
उसे थप्पड़ मारने को लोगों से कहा।

विरोध किया महायाजक का पौलुस ने,
कहा व्यवस्था के विरुद्ध है यह आज्ञा,
तब महायाजक का अपमान करने पर,
लोगों ने पौलुस को भला-बुरा कहा।

फिर जब पौलुस को पता चला,
उनमें है आधे सदूकी, आधे फरीसी,
तो उसने ऊँचे स्वर में कहा,
हे मेरे भाइयों, मैं हूँ एक फरीसी।

मरने के बाद जी उठने की,
मेरी इस मान्यता के कारण,
मुझ पर अभियोग चलाया जा रहा है,
और दिया जा रहा है यह प्रताड़न।

तुरंत एक विवाद उठ खड़ा हुआ,
फरीसियों और सदूकियों के बीच में*,
वहाँ बहुत शोरगुल मच गया और,
एक बहस छिड़ गयी उनके बीच में।

हिंसक रूप ले चुका था यह विवाद,
पौलुस की सुरक्षा की हुई चिन्ता,
इसलिये उसे अलग कर छावनी में,
ले जाने की सेनापति ने दी आज्ञा।

उधर चालीस यहूदियों ने मिलकर,
पौलुस की हत्या का षड़यंत्र रच डाला,
पर इस षड़यंत्र का पता चलने पर,
सेनापति ने पौलुस को वहाँ से निकाला।

पौलुस का कैसरिया भेजा जाना

रातों-रात सुरक्षा के साथ सेनापति ने,
पौलुस को भेज दिया कैसरिया को,
और एक पत्र में सब विवरण लिख,
भेजा उसने राज्यपाल फेलिक्स को।

यहूदियों द्वारा पौलुस पर अभियोग

पाँच दिन बाद हनन्याह औरों के साथ,
पौलुस पर अभियोग सिद्ध करने आया,
उनके वकील तिरतुल्लुस ने पौलुस पर,
यहूदियों में दंगे भड़काने का आरोप लगाया।

कहा यह नासरियों के पंथ का नेता,
मंदिर अपवित्र करने का इसने जतन किया,
उनके इस अभियोग में यहूदियों ने भी,
शामिल हो कर उनका समर्थन किया।

अपने बचाव में पौलुस ने कहा,
अभी दस-बारह दिन हुए मुझे यरूशलेम में,
ना ही मुझे बहस करते हुए,
या दंगे भड़काते हुए पाया है किसी ने।

* सदूकियों का कहना है कि पुनरुत्थान नहीं होता, न स्वर्गदूत होते हैं और न ही आत्माएं। किन्तु फरीसियों का इनके अस्तित्व में विश्वास है।

मैं अपने पूर्वजों के परमेश्वर की आराधना,
अपने पंथ के अनुसार करता हूँ,
व्यवस्था और नबियों के ग्रन्थ में लिखी,
हर बात पर विश्वास करता हूँ।

जैसे ये लोग भरोसा रखते हैं,
वैसे ही परमेश्वर में मैं भरोसा रखता हूँ,
कि धर्मी-अधर्मी सबका पुनरुत्थान होगा,
और अन्तरात्मा की शुद्धता का प्रयास करता हूँ।

बरसों दूर रह अपने दीन जनों हेतु,
में उपहार ले भेंट चढ़ाने आया था,
जब इन्होंने मुझे मंदिर में पाया,
मुझे विधि-विधान पूर्वक शुद्ध पाया था।

यदि मेरे विरुद्ध उनके पास कुछ है,
तो मेरे सामने आ आरोप लगायें वो,
या जब मैं यहूदी महासभा में था,
तब क्या खोट मुझमें पा सके वो।

सिवाय इसके कि इनके बीच में,
मैंने ऊँचे स्वर में कहा,
मरे हुओं में से जी उठने के विषय में,
आज मेरा न्याय किया जा रहा।

फिर फेलिक्स, जो जानकारी रखता था,
उस पंथ के बारे में पूरी,
बोला, सेनानायक के आने पर ही,
मुकदमें की कार्यवाही होगी पूरी।

पौलुस की फेलिक्स और उसकी पत्नी से बातचीत

कुछ दिनों बाद फेलिक्स ने पत्नी के साथ,
यीशू में विश्वास के विषय में उससे सुना,
दो बरस बीत गये यूँ ही बंदीगृह में,
फिर फेसतुस ने फेलिक्स का स्थान ले लिया।

पौलुस कैसर से अपना न्याय चाहता है

प्रमुख याजकों और मुखियाओं ने,
फेस्तुस के सामने अभियोग दोहराये,
अनेक गम्भीर आरोप लगाये उस पर,
पर प्रमाणित उन्हें कर न पाये।

चाहते थे वे उसे यरूशलेम ले जाना,
ताकि रास्ते में मार दें उसे,
पर पौलुस ने कैसर से कहा,
कैसर से ही न्याय मिले उसे।

अपनी परिषद में सलाह मशविरा कर,
फेस्तुस ने उसे दिया उत्तर,
तूँने कैसर से न्याय माँगा है,
इसलिये तेरा न्याय करेगी कैसर।

पौलुस की अग्रिप्पा के सामने पेशी

कुछ दिनों बाद राजा अग्रिप्पा और बिरनिके,
फेस्तुस से मिलने कैसरिया आये,
एक दिन उसने पौलुस पर लगे,
अभियोग उन लोगों को कह सुनाये।

कहा, जब मैं यरूशलेम में था,
उन्होंने माँग की थी उसे दण्ड देने की,
पर इस पर जो अभियोग लगाया,
वे बातें थी उनके धर्म सम्बन्धी।

यीशू नामक एक मृत व्यक्ति पर,
इन लोगों में कोई मतभेद था,
इन विषयों की कैसे छानबीन की जाये,
मैं समझ नहीं पा रहा था।

इसलिये मैंने पूछा इससे कि क्या,
यह न्याय कराने यरूशलेम जायेगा,
किन्तु उत्तर में पौलुस ने कहा,
वह यहीं न्याय पाना चाहेगा।

कहा राजा ने वह उसे सुनेगा,
तो लाया गया पौलुस उसके सामने,
तब राजा अग्रिप्पा और बिरनिके ने,
पौलुस को सुना सबके सामने।

पौलुस राजा अग्रिप्पा के सामने

जब कहा अग्रिप्पा ने पौलुस से,
तू कर सकता है बचाव अपना,
कहा पौलुस ने, हे राजा अग्रिप्पा,
में समझता हूँ बड़ा भाग्य अपना।

क्योंकि मैं जानता हूँ तुझे ज्ञान है,
सभी यहूदी प्रथाओं और विवादों का,
इसलिये धैर्य से मुझे सुना जाये,
यही मेरी तुझसे है विनम्र प्रार्थना।

सभी यहूदी जानते हैं कि शुरू से,
मैं एक कट्टरपंथी फरीसी था,
सोचा करता था जो बन पड़े करूँ,
विरोध करूँ उस यीशू नासरी का।

और ऐसा ही किया यरूशलेम में मैंने,
परमेश्वर के भक्तों को जेल में ठूँसा,
यहाँ तक कि उन्हें सताने के लिये,
मैं बाहर के नगरों तक में गया।

पौलुस द्वारा यीशू के दर्शन के विषय में बताना

फिर पौलुस ने बतलाया अग्रिप्पा को,
यीशू के दर्शन के बारे में,
किस तरह यीशू ने नियुक्त किया,
उसे एक सेवक के रूप में।

पौलुस के कार्य

तभी से उस दर्शन की आज्ञा का,
कभी भी उल्लंघन न करते हुए,
दमिश्क, यरूशलेम और यहूदियां में,
देता रहा मन फिराव के उपदेश मैं।

सो जब मैं यहाँ मन्दिर में था,
पकड़ लिया यहूदियों ने मुझे,
किन्तु परमेश्वर की कृपा के कारण,
साक्षी देता हुआ खड़ा हूँ मैं।

घटनी ही थी जो नबियों और मूसा अनुसार,
वे बातें छोड़ मैं और कुछ नहीं कहता,
कि यातना भोग, फिर जी उठेगा मसीह,
और देगा सबको सन्देश ज्योति का।

पौलुस द्वारा अग्रिप्पा का भ्रम दूर करने का यत्न

जब वह यह कह ही रहा था,
कि चिल्ला कर कहा फेस्तुस ने,
तेरा दिमाग खराब हो गया पौलुस,
तुझे पागल बना दिया अधिक पढ़ाई ने।

पौलुस ने कहा, हे परमगुणी फेस्तुस,
मैं पागल नहीं, बल्कि सत्य कह रहा,
स्वयं राजा जानता है ये बातें,
मैं उसे मुक्त भाव से कह सकता।

कहीं नहीं गयी ये बातें कोने में,
और नबियों ने भी ऐसा लिखा,
हे राजा अग्रिप्पा मैं जानता हूँ,
तूँने भी इन पर विश्वास रखा।

इस पर अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा,
क्या तूँ सोचता है ऐसा,
कि इतनी सरलता से तूँ मुझे,
मसीही बनने को मना लेगा।

बोला पौलुस, थोड़े या अधिक समय में,
है मेरी यह परमेश्वर से प्रार्थना,
न केवल तूँ, बल्कि और सब भी,
सबको वह बना दे, मेरे ही जैसा।

फिर राजा और अन्य लोग,
करने लगे आपस में विचार,
उसने कुछ ऐसा न किया,
कि मृत्युदण्ड दें या कारावास।

पौलुस का रोम भेजा जाना

यूलियस नामक एक सेनानायक के साथ,
भेजा गया हमें इटली को,
कठिनाई से प्रतिकूल हवाओं को झेलते,
पहुँचे हम सुरक्षित बंदरगाह को।

समय बहुत बीत चुका था,
और नाँव का आगे बढ़ना मुश्किल था,
समाप्त हो चुका था उपवास का दिन,
सो पौलुस ने चेतावनी देते हुए कहा।

मुझे लगता है हमारी यह सागर-यात्रा,
हमारे प्राणों के लिये विनाशकारी होगी,
किन्तु उसे सेनानायक ने अनसुनी कर,
कप्तान और मालिक की बात सुनी।

और क्योंकि वह बन्दरगाह,
शीत ऋतु के अनुकूल नहीं था,
इसलिये अधिकतर लोगों ने,
फिनिक्स पहुँचने का मन में सोचा।

तूँफ़ान

जब दक्षिणी पवन हौले-हौले बहने लगा,
तब उन्होंने लंगर उठा लिया,
बढ़ाने लगे जहाज क्रीत के किनारे,
कि एक आंधी ने उनको घेर लिया।

घिर गया जहाज तूँफान में,
बढ़ नहीं पा रहा था वह आगे,
छोड़ दिया हमने जहाज को यूँ ही,
कठिनाई से हम रक्षा-नौका पा सके।

रक्षा-नौकाओं को उठाने के बाद,
रस्सों से लपेट बाँध दिया गया जहाज,
करी उथले पानी में फँस न जाये,
सो पालें उतार बहने दिया जहाज।

दूसरे दिन तूँफान के थपेड़े खाते,
वे जहाज से सामान फेंकने लगे,
और तीसरे दिन तो उन्हें जहाज से,
उपकरण भी बाहर फेंकने पड़े।

फिर बहुत दिनों तक जब,
सूरज, न तारे पड़े दिखायी,
घातक तूँफान के थपेड़ों के सामने,
हम सबके प्राणों पर बन आयी।

तब उन सब लोगों के बीच,
खड़े हो कर पौलुस ने कहा,
बच जाते तुम इस आफत से,
यदि मान लेते तब मेरा कहा।

किन्तु अब भी मैं आग्रह करता हूँ,
तुम अपनी हिम्मत बाँधे रखो,
यह जहाज तो नष्ट हो जायेगा,
पर बचा लोगे तुम प्राणों को।

पिछली रात परमेश्वर का एक दूत,
कह गया है यह मुझको,
तेरे सभी सहयात्री तुझे दे दिए गए,
और तूँ पेश होगा कैसर को।

सो लोगों अपना साहस बनाये रखो,
क्योंकि मेरा विश्वास है परमेश्वर में,
होगा वैसा ही जैसा स्वर्गदूत ने बताया,
किन्तु हम जा फँसेंगे उथले पानी में।

फिर जब चौदहवीं रात आयी तो,
हम अद्रिया के सागर में थे,
आधी रात चालकों को लगा कि,
जैसे किसी तट के पास में थे।

नापने पर गहराई कम होती गयी,
तो नाविकों ने सोचा भाग निकलें,
सो रक्षा नौकाओं को नीचे गिराया,
रस्सियों को काट कर सैनिकों ने।

भोर होने से थोड़ा पहले पौलुस ने,
आग्रह कर सब को भोजन बाँटा,
पूरा खा चुकने के बाद उन्होंने,
अनाज फेंक जहाज को किया हल्का।

जहाज का टूटना

पहचान न पाये वे उस तट को,
लंगर काट कर उन्होंने कर दिये ढीले,
फिर जहाज के पतवार चढ़ा कर,
तट की ओर वे बढ़ने लगे।

जा टकराया उनका जहाज रेते में,
अगला भाग फंस कर अलग हो गया,
और शक्तिशाली लहरों के थपेड़ों से,
पिछला भाग टूट कर अलग हो गया।

सैनिकों ने सोचा मार डालें कैदियों को,
पर सेनानायक ने रोक लिया उन्हें,
कहा, जो तैर कर जा सकते हों जाएं,
बाकी तख्तों के साथ चले जायें किनारे।

माल्टा द्वीप पर पौलुस

सुरक्षापूर्वक बच निकलने के बाद,
मालूम चला वह द्वीप था माल्टा,
वहाँ के मूल निवासियों ने हमारे साथ,
असाधारण रूप से किया व्यवहार अच्छा।

क्योंकि सर्दी थी और वर्षा होने लगी थी,
उन्होंने आग जला, हम सबका स्वागत किया,
तभी आग पर लकड़िया रखते पौलुस को,
एक विषैले नाग ने हाथ पर डस लिया।

कहने लगे वे लोग आपस में,
निश्चय ही यह व्यक्ति है हत्यारा,
किन्तु पौलुस ने उस नाग को,
झटक कर उसी आग में दे मारा।

बहुत देर होने पर भी,
जब कुछ हानि न पहुँची पौलुस को,
तो अपनी धारणा बदल वे लोग,
कहने लगे 'देवता' पौलुस को।

वहीं पास में उस द्वीप के,
प्रधान अधिकारी पबलियुस के खेत थे,
अपने साथ ले जाकर तीन दिन तक,
आवभगत की उसने मुक्त भाव से।

पबलियुस का पिता बिस्तर में था,
बुखार और पेचीश हो रही थी उसे,
लेकिन ठीक हो गया वह जब पौलुस ने,
प्रार्थना कर उस पर अपने हाथ रखे।

फिर तो वहाँ के शेष रोगी भी,
आये और पौलुस के हाथों ठीक हुए,
लाद दिया उन्होंने हमें उपहारों से,
जब हम वहाँ से आगे चले।

पौलुस का रोम जाना

सिकंदरिया के एक जहाज पर चढ़,
सरकुस पहुँच वहाँ तीन दिन ठहरे,
फिर रेगियुम और पुतियुली होते हुए,
हम लोग रोम में आ पहुँचे।

जब सूचना मिली वहाँ बँधुओं को,
मिलने आये वे हम सबसे,
धन्यवाद दिया परमेश्वर को पौलुस ने,
पुलकित हो उठा उत्साह से।

पौलुस का रोम आना

जब हम लोग रोम पहुँचे तो,
दे दी गई पौलुस को अनुमति,
एक सिपाही की देख रेख में,
अपने आप अलग से रहने की।

तीन दिन बाद यहूदी नेताओं को,
पौलुस ने बुलवाया और कहा,
अपनी जाति या विधि-विधान के प्रतिकूल,
मैंने कुछ भी नहीं किया।

तो भी यरूशलेम में बंदी के रूप में,
मुझे रोमियों को सौंप दिया गया था,
उन्होंने जाँच पड़ताल कर मुझे छोड़ना चाहा,
क्योंकि मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया था।

किन्तु जब यहूदियों ने की आपत्ति,
कैसर से पुनर्विचार की माँग करी मैंने,
यही कारण है कि प्रयास किया,
तुमसे मिलने और बातचीत करने का मैंने।

यहूदी नेताओं ने कहा, तुम्हारे बारे में,
न कोई पत्र, न हमें समाचार मिला,
सब बोलते हैं उस पंथ के विरुद्ध,
हम जानते हैं, तूँ अपने विचार बता।

सो एक निश्चित समय, बड़ी संख्या में,
वे एकत्र हो पौलुस से मिले,
मूसा की व्यवस्था और ग्रंथों से,
यीशू के विषय में समझाया उन्हें।

और परमेश्वर के राज्य के बारे में,
उसने अपनी साक्षी दी और समझाया,
यही बातें करते हुए वह,
सुबह से शाम तक लगा रहा।

सहमत हो गए उसकी बातों से कुछ,
किन्तु कुछ ने विश्वास किया नहीं,
आपस में असहमत हो जब जाने लगे,
तो पौलुस ने उनसे एक बात कही।

यशायाह के द्वारा पवित्र आत्मा ने,
तुम्हारे पूवर्जों से कितना ठीक कहा था,
वे सुनेंगे, देखेंगे पर समझे बूझेंगे नहीं,
क्योंकि उनका ह्रदय जड़ता से भर गया।

इसलिये जान लेना चाहिए तुम्हें,
कि परमेश्वर का यह उद्धार,
भेज दिया गया विधर्मियों के पास,
वे ही सुनेंगे इसकी पुकार।

पूरे दो साल वहा रूका पौलुस,
परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता,
पूरी निर्भयता और बिना बाधा माने,
यीशू मसीह के विषय में उपदेश करता।

रोमियों

पौलुस जो यीशू मसीह का दास है,
जिसे परमेश्वर ने प्रेरित होने हेतु बुलाया,
जिसे परमेश्वर के उस सुसमाचार के,
प्रचार करने के लिये चुना गया।

नबियों ने शास्त्रों में जिसकी करी घोषणा,
जो वंशज है शरीर से दाऊद का,
साम्थर्य सहित दशार्या परमेश्वर का पुत्र जिसे,
यही यीशू मसीह है प्रभु हम सबका।

उसी से अनुग्रह और प्रेरित हुआ मैं,
ताकि सभी गैर यहूदी लोगों में,
विश्वास से जन्म लेती जो आस्था,
पैदा की जा सके वह उनमें।

वह मैं तुम सब के लिए,
जो रोम में हो, परमेश्वर के प्यारे,
बुलाये गये पवित्र जन होने हेतु,
यह पत्र लिख रहा पास तुम्हारे।

धन्यवाद की प्रार्थना

सबसे पहले मैं यीशू मसीह के द्वारा,
तुम्हारे लिये परमेश्वर का शुक्रिया करता,
क्योंकि संसार में सब कहीं हो रही,
तुम लोगों के विश्वास की चर्चा।

प्रभु, जिसकी सेवा में सुसमाचार दे करता,
साक्षी है, मैं तुम्हें याद करता रहता हूँ,
परमेश्वर की इच्छा से, तुम्हारे पास आने की,
मेरी यात्रा पूरी हो, विनती करता रहता हूँ।

देना चाहता हूँ तुम्हें कुछ आत्मिक उपहार,
जिससे तुम शक्तिशाली बन सको,
यानि जब मैं तुम्हारे बीच होऊँ तब,
परस्पर विश्वास से हम प्रोत्साहित हों।

यूनानी, गैर यूनानी, बुद्धिमान और मूर्ख,
सभी लोगों का कर्ज है मुझ पर,
इसीलिये मैं तुम रोमवासियों को भी,
सुसमाचार का उपदेश देने को हूँ तत्पर।

शर्मिदा नहीं हूँ मैं सुसमाचार के लिए,
क्योंकि जो भी उसमें रखता विश्वास,
उस व्यक्ति के उद्धार के लिये,
साम्यर्थ है परमेश्वर के पास।

आदि से अंत तक विश्वास पर टिका,
जैसा कि लिखा है शास्त्रों में,
धर्मी मनुष्य विश्वास से जीवित रहेगा,
यही कहा गया है सुसमाचार में।

सबने पाप किया है

सत्य को अधर्म से दबाने वालों की,
हर बुराई पर कोप प्रकट होगा,
जानते हैं वो जनाया गया है उन्हें,
इसलिये उनके साथ ऐसा ही होगा।

जब से संसार की रचना हुई,
दिखाई देता है परमेश्वर का वर्चस्व,
कोई बहाना नहीं लोगों के पास,
क्यों मानते नहीं परमेश्वर को सर्वस्व।

अन्धेरे से भर गये उनके जड़ मन,
बुद्धिमत्ता का दावा, पर मूर्ख रह गये,
अविनाशी परमेश्वर की महिमा को जो,
नाशवान प्राणियों के रूप में ढालने लगे।

इसीलिये सौंप दिया परमेश्वर ने उन्हें,
मन की बुरी इच्छाओं के हाथों,
झूठ के साथ सौदा किया सत्य का,
बिके स्रष्टा को छोड़ सृष्टि के हाथों।

करने लगे वे अस्वीकार्य और अनुचित काम,
अधर्म, लालच और बैर से भर गये,
अपना ली बुराइयां और परमेश्वर से घृणा,
प्रेम रहित और वो निदर्यी हो गये।

तुम लोग भी पापी हो

सो, न्याय करने वाले, हे मेरे मित्र,
जिसके लिये तूँ दूसरे को दोषी ठहराता,
करता है तूँ स्वयं भी वह कर्म,
सो तूँ स्वयं को भी दोषी ठहराता।

क्या बच जायेगा तूँ उसके न्याय से,
जो तूँ स्वयं भी वैसा ही करता,
या तूँ उसके महान अनुग्रह सहनशक्ति,
और धैर्य को हीन समझता।

करता है उपेक्षा उसकी करुणा की,
जो तुझे प्रायश्चित्त की तरफ ले जाती,
किन्तु अपने कठोर और कृतघ्न मन के कारण,
होगा तूँ परमेश्वर के क्रोध का भागी।

होगा जब परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रकट,
वह कर्मों के अनुसार सबको फल देगा,
जो अच्छे काम करते, सुपथ पर चलते,
उन्हें बदले में वह अनन्त जीवन देगा।

किन्तु जो अपने स्वार्थ में हो अन्धे,
अधर्म की राह पर ही चलते रहते,
उन्हें बदले में क्रोध और प्रकोप मिलेगा,
क्योंकि देता है वह फल बिना पक्षपात के।

पाप किये जिन्होंने व्यवस्था को पाये बिना,
वे व्यवस्था से बाहर रहते हुए नष्ट होंगे,
और जिन्होंने पाप किया व्यवस्था में रहते,
वे व्यवस्था के अनुसार ही दण्डित होंगे।

क्योंकि जो सुनते व्यवस्था पर चलते नहीं,
उसकी दृष्टि में वे नहीं हैं धर्मी,
बिना व्यवस्था पाए भी सदमार्ग पर चलते,
ऐसे ही लोग ठहराए जाएंगे धर्मी।

यहूदी और व्यवस्था

यदि तूँ स्वयं को कहता है यहूदी,
और अपने परमेश्वर पर करता अभिमान,
लोगों के लिये प्रकाश समझता स्वयं को,
क्योंकि व्यवस्था से मिलता तुझे ज्ञान।

तो जो तूँ सिखाता है औरों को,
सिखाता क्यों नहीं स्वयं अपने को,
करता है मनाही औरों को जिनकी,
करता है स्वयं क्यों उन्हीं कर्मों को।

तूँ जो व्यवस्था का अभिमानी है,
उसे तोड़ परमेश्वर का निरादर क्यों करता,
तुम्हारे कारण ही गैर यहूदियों में,
होता है अपमान परमेश्वर के नाम का।

खतने का सार है व्यवस्था का पालन,
वरना बेमानी है खतना करना ना करना,
शरीर का खतना, खतना नहीं वास्तव में,
आत्मा द्वारा मन का खतना है सच्चा खतना।

मिला परमेश्वर का ओदश यहूदियों को पहले,
उनमें कुछ विश्वासघात करें तो क्या,
उनका झूठ या विश्वासघात का करना,
ठहरा नहीं सकता परमेश्वर को झूठा।

किन्तु तुम कह सकते हो बुरा करने से,
और अधिक उजागर होती परमेश्वर की महिमा,
फिर भी हम दोषी ठहराये जाते हैं,
क्यों बुरा है भलाई के लिये बुरा करना।

जैसा कि हमारे बारे में कुछ लोग,
निन्दा करते हुए लगाते हैं आरोप,
ऐसे लोग दोषी ठहराए जाने योग्य हैं,
उन सब पर साबित है उनका दोष।

तो फिर क्या हम यहूदी अच्छे हैं,
किसी भी तरह गैर यहूदियों से,
नहीं, क्योंकि हम दर्शा चुके हैं कि,
हम सभी हैं पाप के वश में।

कहता है शास्त्र, कोई भी धर्मी नहीं,
सब भटके हैं कोई प्रभु को खोजता नहीं,
एक से खोटे हुए साथ-साथ सब,
कोई भी यहाँ दया तो दिखाता नहीं।

उनके मुँह खुली कब्र से बने हैं,
वे अपनी जबान से छल करते हैं,
उनके होठों पर नाग विष रहता है,
शाप और कटुता से मुँह भरे रहते हैं।

हत्या करने को उतावले रहते हरदम,
पता नहीं शांति के मार्ग का उन्हें,
जहाँ जाते नाश और संताप ही देते,
भय नहीं लगता है प्रभु का उन्हें।

अब हम जानते हैं व्यवस्था की बातें,
संबोधित हैं व्यवस्था के आधीन लोगों को,
ताकि हर मुँह को बंद किया जा सके,
और सारा जग परमेश्वर के दण्ड योग्य हो।

व्यवस्था के कामों से कोई भी व्यक्ति,
उसके सामने धर्मी सिद्ध नहीं हो सकता,
क्योंकि व्यवस्था में जो कुछ मिलता है,
उससे तो पाप का बस पता चलता।

परमेश्वर मनुष्यों को धर्मी कैसे बनाता है

किन्तु अब मनुष्य के लिये,
वास्तव में यह दर्शाया गया उसे,
कि व्यवस्था के बिना भी परमेश्वर,
अपने प्रति सही कैसे बनाता उसे।

निश्चय ही व्यवस्था और नबियों ने,
दी है साक्षी इस बात की,
कि विश्वासियों हेतु यीशू में विश्वास द्वारा,
धार्मिकता प्रकट की गयी परमेश्वर की।

क्योंकि सभी ने पाप किये हैं,
और हैं विहीन उसकी महिमा से,
किन्तु उपहार स्वरूप धर्मी ठहराये गये,
वे यीशू मसीह के अनुग्रह से।

यीशू को दिया हमें परमेश्वर ने,
हमारे पापों से दिलाने को छुटकारा,
मिल सकती है हमको पापों से मुक्ति,
यीशू के बलिदान में विश्वास के द्वारा।

किया ऐसा यह प्रमाणित करने को,
कि सहनशील है परमेश्वर,
पहले पापों के दण्ड बिना,
छोड़ चुका था उन्हें परमेश्वर।

समाप्त हो गया घमण्ड तो,
उस विधि से जिसमें विश्वास समाया,
धर्मी बनने का एक ही आधार,
बस एकमात्र विश्वास ठहराया।

या परमेश्वर क्या बस यहूदियों का है,
क्या वह गैर यहूदियों का नहीं,
नहीं, वह परमेश्वर तो बस एक है,
सबका परमेश्वर है एक वही।

धर्मी ठहरायेगा उन्हें जिनका खतना हुआ,
उन लोगों के विश्वास के बल पर,
और हुआ नहीं जिनका खतना,
उनको भी उनके विश्वास के बल पर।

सो क्या विश्वास के आधार पर हम,
ठहरा सकते हैं व्यर्थ व्यवस्था को,
निश्चय ही नहीं, बल्कि हम तो,
और मजबूत बना रहे हैं व्यवस्था को।

इब्राहीम का उदाहरण

गर्व कर सकता था हमारा पिता इब्राहीम,
यदि कहलाता धर्मी अपने कामों के कारण,
किन्तु गिना गया वह धार्मिक व्यक्ति,
परमेश्वर में अपने विश्वास के कारण।

दान नहीं है मजदूर को मजदूरी देना,
वह तो होता है उसका अधिकार,
किन्तु विश्वास जो करता परमेश्वर में,
बनता वह विश्वास धार्मिकता का आधार।

दाऊद ने भी कहा, धन्य हैं वो,
जिनके व्यवस्था रहित कामों को क्षमा मिली,
धन्य है वह पुरुष जिसके पापों को,
परम पिता परमेश्वर ने गिना नहीं।

तब क्या यह धन्यपन है,
केवल जिनका खतना हुआ उनके लिये,
नहीं, यह धन्यपान है विश्वास जनित,
यह धन्यपन है सबके लिये।

अपने विश्वास के चिह्न रूप में,
खतना ग्रहण किया इब्राहीम ने,
यह विश्वास उसने तब दर्शाया था,
जब खतना नहीं किया था उसने।

इसीलिए वह उन सबका पिता है,
जो उसके विश्वास का अनुसरण करते,
चाहे खतना ग्रहण किया हो उन्होंने,
या हो वे बिना खतने के।

विश्वास और परमेश्वर का वचन

इब्राहीम या उसके वंशजों को यह वचन,
कि वे होंगे संसार के उत्तराधिकारी,
व्यवस्था से नहीं बल्कि उस धार्मिकता से मिला,
जो विश्वास के द्वारा उत्पन्न होती।

यदि यह होता व्यवस्था को मानने से,
तो विश्वास का कोई अर्थ नहीं रहता,
और हो जाता है वचन भी बेकार,
फिर जहाँ व्यवस्था नहीं, क्या तोड़ना उसका।

परमेश्वर का वचन है विश्वास का फल,
और यह सेंतमेत में ही मिलता,
इस प्रकार उसका वचन सुनिश्चित है,
इब्राहीम के समान विश्वास है जिनका।

विश्वास किया इब्राहीम ने उसमें,
सभी मानवीय आशाओं के खिलाफ,
स्वयं की देह थी मरियल और वृद्ध,
और उसकी पत्नी सारा थी बाँझ।

बनाये रखा परमेश्वर के वचन में विश्वास,
और दी परमेश्वर के नाम को महिमा,
पूरा विश्वास था परमेश्वर के सामर्थ्य पर,
गिना गया इसीलिये उसका विश्वास धार्मिकता।

शास्त्र का यह वचन है सबके लिये,
जो परमेश्वर में रखते हैं विश्वास,
मारा गया यीशू को हमारे पापों के लिये,
फिर पुनर्जीवित कर भेजा गया हमारे पास।

परमेश्वर का प्रेम

क्योंकि हम अपने विश्वास के कारण,
हो गये हैं धर्मी परमेश्वर के लिये,
सो अपने प्रभु यीशू मसीह के द्वारा,
परमेश्वर के निकट हम आ गये।

परमेश्वर की महिमा का अंश पाने की,
आशा का हम लेते हैं आनन्द,
इतना ही नहीं विपत्तियों में भी,
अब लेते हैं हम आनन्द।

क्योंकि हम जानते हैं कि विपत्तियां,
देती हैं धीरज को जन्म,
धीरज से परखा चरित्र निकलता,
और वह देता आशा को जन्म।

निराश नहीं होने देती हमें आशा,
क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया,
उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम,
हमारे हृदय में उड़ेल दिया गया।

क्योंकि हम जब अभी निर्बल ही थे,
अपना प्रेम दिखलाया परमेश्वर ने,
उचित समय पर अपना बलिदान दे दिया,
हम भक्तिहीनों के लिये मसीह ने।

क्योंकि धर्मी हो गये उसके लहू के कारण,
अवश्य बचाये जायेंगे परमेश्वर के क्रोध से,
यीशू के द्वारा परमेश्वर की भक्ति पाकर,
अब हम आनन्द लेते हैं उसमें।

आदम और यीशू

इसीलिये एक व्यक्ति आदम के द्वारा,
पाप और फिर मृत्यु आयी धरती पर,
क्योंकि सभी ने पाप किये थे,
मृत्यु भी आयी सभी लोगों पर।

अब देखो व्यवस्था के आने से पहले,
सवर्त्र पाप था इस जगत में,
किन्तु जब तक व्यवस्था नहीं होती,
गिना नहीं जाता कोई पापियों में।

किन्तु आदम से मूसा के समय तक,
राज करती रही सब पर मृत्यु,
और जिन्होंने पाप नहीं किये थे,
उन पर भी हावी रही मृत्यु।

आदम भी वैसा ही था जैसा,
वह जो (मसीह) आने वाला था,
किन्तु परम पिता परमेश्वर का वरदान,
आदम के अपराध के जैसा नहीं था।

क्योंकि यदि उस एक के अपराध के कारण,
मृत्यु हुई जो सब लोगों की,
तो उस एक मसीह की करुणा के कारण,
क्यों ना हो भलाई सभी की।

दंड के हेतु न्याय का आगमन,
एक अपराध के बाद हुआ था,
किन्तु दोष-मुक्ति की ओर ले जाने वाला,
यह वरदान अपराधों के बाद आया था।

सो यदि तब हुआ मृत्यु का शासन,
तो जो परमेश्वर की कृपा पर रहे,
वे तो जीवन में यीशू मसीह के द्वारा,
और भी अधिक शासन करेंगे।

सो जैसे एक अपराध के कारण,
सभी लोगों को ठहराया गया दोषी,
वैसे ही एक धार्मिक काम द्वारा,
सबको अनन्त जीवनदात्री धार्मिकता मिली।

अतः जैसे एक की अवज्ञा के कारण,
सब लोग पापी बना दिये गये,
वैसे ही एक की आज्ञाकारिता के कारण,
सभी लोग धर्मी बना दिये गये।

व्यवस्था का आगमन इसीलिये हुआ,
ताकि बढ़ पायें अपराध,
लेकिन परमेश्वर का अनुग्रह और भी बढ़ा,
जहाँ-जहाँ पर बढ़ा पाप।

पाप के लिये मृत किन्तु मसीह में जीवित

तो फिर परमेश्वर के अनुग्रह के लिये,
क्या हम पाप ही करते रहें,
नहीं, हम जो पाप के लिये मर चुके,
पाप में ही कैसे जीते रहें।

या यीशू में जो लिया हमने बपतिस्मा,
उसकी मृत्यु का ही बपतिस्मा लिया,
ताकि जैसे यीशू को मिला पुनर्जीवन,
वैसे ही पायें हम एक जीवन नया।

हम जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तित्व,
यीशू के साथ चढ़ा दिया गया, क्रूस पर,
ताकि हमारे पाप भरे शरीर नष्ट हो जायें,
ना रहें हम पाप के दास बन कर।

क्योंकि जो व्यक्ति मर गया वह,
पाप के बन्धन से पा गया छुटकारा,
और क्योंकि हम मसीह के साथ मर गये,
हम उसी के साथ जियेंगे, विश्वास है हमारा।

हम जानते हैं कि मसीह अमर है,
मौत का वश न चलेगा उस पर,
वह मरा सदा के लिये पाप के लिये,
उसके जीवन का सब कुछ है परमेश्वर।

इसी तरह तुम अपने लिये भी सोचो,
कि तुम पाप के लिये मर चुके हो,
किन्तु तुम यीशू मसीह में,
अपने परमेश्वर के लिये जीवित हो।

पाप के वश न हो नाशवान शरीर,
ताकि तुम पाप की राह न चलो,
बल्कि पुनर्जीवित होने वालों के समान,
अपने आप को परमेश्वर के हवाले कर दो।

होगा नहीं तुम पर पाप का शासन,
क्योंकि जीते नहीं तुम व्यवस्था के सहारे,
बल्कि तुम तो जीते हो जीवन,
परमेश्वर के अनुगह के सहारे।

धार्मिकता के सेवक

जब तुम आज्ञा मानने के लिये,
सौंप देते हो अपने को किसी के हाथ,
चाहे बनो पाप के, चाहे आज्ञाकारिता के,
तुम बन जाते हो उसके दास।

आज्ञाकारिता ले जाती धार्मिकता की तरफ,
और पाप ले जाता पाप की ओर,
किन्तु प्रभु का धन्यवाद है कि,
तुम्हारा कदम है धार्मिकता की ओर।

तुम जब थे पाप के दास तो,
धार्मिकता की ओर से बन्धन नहीं था,
और कैसा फल मिला तब तुम्हें,
जिसके लिये आज तक तुम हो शर्मिन्दा।

किन्तु मिल चुका अब पाप से छुटकारा,
बना दिये गये हो परमेश्वर के दास,
हमारे प्रभु यीशू मसीह में अनन्त-जीवन,
है परमेश्वर का संतमेंत का वरदान।

विवाह का दृष्टान्त

हे भाइयों, व्यवस्था को जानने वालो,
क्या तुम यह नहीं जानते हो,
कि व्यवस्था का शासन तब तक रहता,
जब तक वह व्यक्ति जीता हो।

उदाहरण के लिये कोई विवाहित स्त्री,
बँधी होती तभी तक पति से,
जब तक उसका पति जीवित रहता,
फिर मुक्त हो जाती विवाह बन्धन से।

ऐसे ही मसीह की देह के द्वारा,
व्यवस्था के लिये तुम भी मर चुके हो,
इसीलिये अब तुम भी किसी दूसरे से,
स्वयं का नाता जोड़ सकते हो।

उससे, जिसे पुनर्जीवित किया गया है,
ताकि हम उत्तम कार्य कर सकें,
आत्मा की नयी रीति से प्रेरित हो,
अपने स्वामी परमेश्वर की सेवा कर सकें।

पाप से लड़ाई

तो क्या हम कहें व्यवस्था पाप है,
नहीं, पाप क्या है पहचाना उससे,
''जो अनुचित है उसकी चाहत मत करो''
जान पाये हम यह व्यवस्था ही से।

किन्तु पाप ने मौका मिलते ही,
व्यवस्था का लाभ उठाते हुए,
अनुचित के लिये हर तरह की,
इच्छाएं भर दीं उसने मुझमें।

जब व्यवस्था का आदेश आया,
तो पाप जीवन में उभर आया,
जो आदेश जीवन देने के लिये था,
मेरे लिये वह मृत्यु ले आया।

क्योंकि पाप को अवसर मिल गया,
उसने उसी व्यवस्था द्वारा मुझे छला,
और उसी व्यवस्था के आदेश द्वारा,
उस पाप ने मुझे मार डाला।

व्यवस्था और विधान पवित्र व उत्तम हैं,
तो क्या उत्तम ही बना मृत्यु का कारण,
नहीं, बल्कि पाप की पहचान के कारण,
उसकी भयानकता का किया जा सके दर्शन।

मानसिक द्वन्द्व

क्योंकि हम जानते हैं व्यवस्था आत्मिक है,
और मैं हाड़-मांस का भौतिक मनुष्य,
बिका हुआ है जो पाप के लिये,
क्या कर रहा, नहीं जानता मनुष्य।

क्योंकि मैं जो करना चाहता हूँ, नहीं करता,
बल्कि वह करना पड़ता, जिससे घृणा करता हूँ,
और यदि अनचाहे ही वह करता हूँ मैं,
तो व्यवस्था उत्तम है, मैं स्वीकार करता हूँ।

किन्तु वास्तव में वह मैं नहीं हूँ,
जो कर रहा है यह सब कुछ,
बल्कि यह मेरे भीतर बसा पाप है,
जो करा रहा मुझसे यह सब कुछ।

मुझमें यानि मेरे भौतिक मानव शरीर में,
मैं जानता हूँ, किसी अच्छाई का वास नहीं,
नेकी करने की इच्छा तो मुझ में है,
पर नेक काम मुझसे होते नहीं।

चाह कर भी नहीं करता अच्छे काम,
बल्कि अनचाहे ही बुरे काम मैं करता,
इसीलिये मेरे अनचाहे कर्मों का करने वाला,
मैं नहीं बल्कि मेरे भीतर जो पाप बसा।

परमेश्वर की व्यवस्था को मैं,
अपनी अन्तरात्मा में सहर्ष मानता हूँ,
पर एक दूसरे ही नियम को मैं,
अपने शरीर में काम करते पाता हूँ।

यह नियम मेरे चिन्तन पर,
शासन करने वाली व्यवस्था से लड़ता है,
और पाप की व्यवस्था का,
बंदी यह मुझे बना लेता है।

मौत के अधीन यह मेरा शरीर,
कौन दिलायेगा मुझे छुटकारा इससे,
पाप की व्यवस्था का गुलाम होते भी,
परमेश्वर की व्यवस्था का सेवक बुद्धि से।

आत्मा से जीवन

अब जो यीशू मसीह में स्थित है,
कोई दण्ड नहीं है उनके लिये,
क्योंकि जीवन दात्री आत्मा की व्यवस्था ने,
स्वतंत्र कर दिया तुझे पाप की व्यवस्था से।

कर ना सकी जिसे मूसा की व्यवस्था,
उसे परमेश्वर ने पूरा कर दिया,
अपना पुत्र हमारे जैसे शरीर में भेज,
पाप को उसने निरस्त कर दिया।

जिससे की हमारे द्वारा,
जो जीते नहीं देह की भौतिक विधि से,
बल्कि आत्मा की विधि से जो जीते,
व्यवस्था की आवश्यकताएं पूरी की जा सकें।

जो जीते भौतिक मानव स्वाभावानुसार,
उनकी बुद्धि इच्छाओं पर टिकी रहती,
पर वे जो जीते आत्मा के अनुसार,
उनकी बुद्धि आत्मिक अभिलाषाओं में लगी रहती।

भौतिक मानव स्वभाव से अनुशाषित मन,
नहीं रहता परमेश्वर के नियमों के अधीन,
किन्तु तुम भौतिक मानव स्वभाव के नहीं,
बल्कि तुम हो आत्मा के अधीन।

किन्तु जिसमें यीशू की आत्मा नहीं,
तो वह यीशू मसीह का न रहेगा,
पवित्र आत्मा जिसके भीतर वास करती,
परमेश्वर अपनी आत्मा से उसे जीवन देगा।

इसलिये मेरे भाइयों मरोगे तुम,
जो तुम भौतिक शरीर के अनुसार जिओगे,
किन्तु आत्मा द्वारा शरीर के व्यवहारों का अंत,
यदि कर दोगे तो तुम जी जाओगे।

परमेश्वर की आत्मा अनुसार जो चलते,
वे हैं परमेश्वर की संतान,
हमारी आत्मा से मिल वह साक्षी देती,
कि हम हैं परमेश्वर की संतान।

और क्योंकि हम उसकी संतान हैं,
हम भी उत्तराधिकारी हैं परमेश्वर के,
मसीह के साथ यदि दुख उठाते हम,
तो महिमा मिलेगी ही हमें साथ उसके।

हमें महिमा मिलेगी

कुछ भी नहीं है मेरे विचार में,
भावी महिमा के आगे हमारी यातनाएं,
यह सृष्टि आशा से प्रतीक्षा कर रही है,
परमेश्वर की संतान जब आएगी सामने।

उसकी इच्छा से यह सृष्टि निःसार थी,
जिसने इसे इस आशा के अधीन किया,
कि यह भी अपनी विनाशमानता से मुक्त हो,
आनंद लेगी परमेश्वर की संतान की स्वतंत्रता का।

क्योंकि हम जानते हैं कि समूची सृष्टि,
कराहती और तड़पती रही है पीड़ा में,
हम भी आत्मा का पहला फल पाने वाले,
कराहते रहे हैं अपने अन्तर में।

क्योंकि हमें उसके द्वारा पूरी तरह,
अपनाए जाने का है इंतजार,
कि हमारी देह मुक्त हो जाएगी,
और हो जाएगा हमारा उद्धार।

हमारे मन में आशा है,
और हम जिसकी आशा करते,
धीरज और सहनशीलता के साथ,
हम उसकी बाँट जोहते रहते।

ऐसे ही हमारे कराहने पर,
आत्मा हमारी सहायता करने आती,
करी नहीं जा सकती जिसकी व्याख्या,
आत्मा हमारे लिये वह विनती करती।

किन्तु जानता है वह अन्तर्यामी,
कि क्या मनसा है आत्मा की,
क्योंकि परमेश्वर की इच्छा से ही,
मध्यस्थता करती वह पवित्र जनों की।

हर परिस्थिति में वह आत्मा,
भक्तों के साथ मिल भलाई करता,
उन सबके लिये जिन्हें उसके,
प्रयोजन के अनुसार ही बुलाया गया।

जिन्हें उसने पहले ही चुना उन्हें,
पहले ही ठहराया पुत्र रूप में,
ताकि बहुत से भाइयों में वह,
सबसे बड़ा भाई बन सके।

जिन्हें उसने पहले से निश्चित किया,
उन्हें भी बुलाकर ठहराया धर्मी,
और उन्हें भी महिमा प्रदान की,
जिन्हें उसने ठहराया धर्मी।

परमेश्वर का प्रेम

यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है,
तो कौन हमारे विरोध में हो सकता,
मृत्यु को सौंप दिया जिसने अपना पुत्र,
वह हमें क्या कुछ नहीं दे सकता।

परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर,
ऐसा कौन है जो दोष लगायेगा,
परमेश्वर ही ठहराता है उन्हें निर्दोष,
ऐसा कौन जो उन्हें दोषी ठहराएगा।

मसीह यीशू वह है जो मर गया,
और उसे फिर जिलाया गया,
जो परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा,
हमारी ओर से विनती करता।

कौन अलग करेगा हमें मसीह के प्यार से,
यातना या कठिनाई या अत्याचार,
या अकाल या नंगापन,
या जोखिम या फिर तलवार।

तब भी उसके द्वारा जो,
हम सबको प्रेम करता है,
उन सब बातों में हमें,
एक शानदार विजय देता है।

क्योंकि मैं मान चुका हूँ कि,
कोई भी वस्तु इस सृष्टि की,
हमारे भीतर प्रभु के प्रेम से,
हमें कभी अलग कर नहीं सकती।

परमेश्वर और यहूदी लोग

मेरी चेतना मेरे साथ देती है साक्षी,
कि मेरे मन में है निरन्तर पीड़ा,
अपने बँधु-बाँधवों के लिये काश मैं,
मसीह का शाप अपने पर ले सकता।

जो इस्राएली है और जिन्हें परमेश्वर की,
संचलित संतान होने का है अधिकार,
दर्शन किया परमेश्वर की महिमा का,
और परमेश्वर के करार के भागीदार।

व्यवस्था, उपासना और वचन मिला जिन्हें,
रखते हैं पुरखे उन्हीं से सम्बंध,
देह भाव से मसीह उन्हीं में जन्मा,
जो परमेश्वर सबका और सदा धन्य।

ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने,
अपना वचन पूरा किया नहीं है,
क्योंकि जो इस्राएल के वंशज हैं,
वे सभी तो इस्राएली नहीं हैं।

और न ही इब्राहीम के वंशज होने से,
वे सब हैं सचमुच इब्राहीम की संतान,
देह नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन से,
प्रेरित होने वाले हैं उसकी संतान।

चुनाव से सिद्ध होता परमेश्वर का प्रयोजन,
जो व्यक्ति के कर्मों पर नहीं टिका,
जिसको चाहे बुलाता है वो,
सब कुछ परमेश्वर की मर्जी पर टिका।

तो क्या परमेश्वर है अन्यायी,
नहीं, क्योंकि उसने मूसा से कहा था,
जिस किसी पर चाहूँगा, दया करूँगा,
और जिस पर चाहू में अनुग्रह करूँगा।

इसलिये यह निर्भर नहीं करता,
किसी की इच्छा या दौड़-धूप पर,
बल्कि यह तो निर्भर करता है,
बस दयालू परमेश्वर की इच्छा पर।

कहा था फिरौन से परमेश्वर ने,
मैंने तुझे इसलिये खड़ा किया था,
कि मैं अपनी शक्ति तुझमें दिखा सकूँ,
मेरा नाम घोषित हो धरती पर सर्वथा।

सो जिस पर चाहता है,
दया करता है परमेश्वर,
और जिसे चाहता है उसे,
कठोर बना देता है परमेश्वर।

तो फिर तूँ शायद मुझ से कहे,
यदि हमारे कर्म नियन्त्रित करता है परमेश्वर,
तो फिर हमारे कर्मों का दोषारोपण,
क्यों करता है हम पर परमेश्वर।

कौन कर सकता उसकी इच्छा का विरोध,
तूँ कौन जो उसे उलट कर उत्तर दे,
क्या कोई रचना रचियता से पूछ सकती,
भला क्यों बनाया है ऐसा तूँने मुझे।

क्या यह अधिकार नहीं कुम्हार को,
कि वह मिट्टी के एक लौंदे से,
एक भांडा विशेष प्रयोजन के लिये बनाये,
और कुछ हो न सके दूजे भांडे से।

जो विश्वास के कारण धार्मिक थे,
पा लिया है उन्होंने धार्मिकता को,
जो बस कर्मों से कर रहे पालन,
ठोकर खा कर गिर पड़े वो।

कहता है शास्त्र, देखो सिय्योन में मैं,
रख रहा हूँ एक पत्थर, जो ठोकर दिलाता,
और एक चट्टान जो अपराध कराती है,*
पर विश्वास वाले को न होगी निराशा।

मसीह ने व्यवस्था का अंत किया,
ताकि हर कोई जो करता है विश्वास,
स्वीकार करे परमेश्वर की धार्मिकता को,
अपनी ही धार्मिकता की न रखे आस।

मूसा ने कहा धार्मिकता के बारे में,
जो व्यवस्था के नियमों पर चलेगा,
वह उस व्यवस्था के नियमों के,
पालन के कारण जीवित रहेगा।

किन्तु विश्वास से मिलने वाली धार्मिकता,
उसका आधार है मन में विश्वास,
यह विश्वास कि यीशू मसीह प्रभु है,
और उसके पुनर्जीवित होने का विश्वास।

अपने हृदय के विश्वास से व्यक्ति,
वास्तव में धार्मिक ठहराया जाता है,
और उस विश्वास को स्वीकार करने से,
उस व्यक्ति का उद्धार हो जाता है।

होना नहीं पड़ेगा विश्वासी को निराश,
सबका प्रभु है वह एक ही,
उद्धार पायेगा जो लेता नाम उसका,
अपरम्पार है उनके लिये दया जिसकी।

* यशायाह 8:14, 23:16

किन्तु वे जो उसमें विश्वास नहीं करते,
किस तरह नाम पुकारेंगे उसका,
और जिन्होंने उसके बारे में सुना नहीं,
किस तरह विश्वास करेंगे उसका।

फिर जब तक कोई उपदेशक न हो,
वे कैसे उसके बारे में सुन सकेंगे,
और जब तक उन्हें भेजा न गया हो,
कैसे उपदेशक तब तक उपदेश दे सकेंगे।

परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूला

तो मैं पूछता हूँ, क्या परमेश्वर ने,
अपने ही लोगों को नकार नहीं दिया,
निश्चय ही नहीं, क्योंकि मैं भी इस्राएली हूँ,
अपने लोगों को उसने पहले से चुन लिया।

अथवा क्या तुम नहीं जानते कि,
एलिय्याह के बारे में शास्त्र क्या कहता,
जब इस्राएल के लोगों के विरोध में,
वह परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा था।

हे प्रभु, उन्होंने मार डाला नबियों को,
और तेरी वेदियां तोड़ कर गिरा दीं,
केवल एक नबी मैं ही बचा हूँ,
कोशिश कर रहे वे मेरी हत्या की।

तब कहा परमेश्वर ने, मैंने अपने लिये,
सात हजार लोग बचा कर रखे,
जिन्होंने बाल के आगे माथा नहीं टेका,
वैसे ही कुछ लोग अब भी हैं बचे।

चुने गये जो अनुग्रह के कारण,
परमेश्वर के अनुग्रह का ही परिणाम,
और लोग जो कर्म करते हैं,
नहीं यह उन कर्मों का परिणाम।

तो इससे क्या इस्राएल के लोग,
जिसे खोज रहे थे, पा न सके,
किन्तु चुने हुओं को वह मिल गया,
बाकी सब जड़ बना दिये गये।

सो क्या उन्होंने इसलिये ठोकर खाई,
कि वे गिर कर नष्ट हो जायें,
नहीं, बल्कि उनके गलती करने से,
गैर यहूदी लोग छुटकारा पायें।

और गैर यहूदियों के छुटकारा पाने से,
पैदा हो यहूदियों में स्पर्धा,
इस तरह लाभ मिले सारे संसार को,
और भी लाभ देगी उनकी संपूर्णता।

यह अब मैं तुमसे कह रहा हूँ,
क्योंकि विशेष प्रेरित हूँ गैर यहूदियों के लिये,
जगा सकूँ अपने लोगों में मैं स्पर्धा,
और उद्धार का हेतु बन सकूँ उनके लिये।

यदि परमेश्वर द्वारा नकारने से जगत में,
उसके साथ होता मेल-मिलाप पैदा,
तो फिर क्या उनका अपनाया जाना,
नहीं होगा मरे हुओं में से जिलाया जाना।

यदि भेंट का एक भाग पवित्र है,
तो क्या नहीं है समूची भेंट पवित्र,
यदि पेड़ की जड़ पवित्र है,
तो उसकी शाखाएं भी हैं पवित्र।

नहीं करना चाहिये अभिमान टहनी को,
वह जड़ है जो उसको पाल रही,
देख तूँ परमेश्वर की कोमलता को,
और ध्यान दे कठोरता पर उसकी।

जब तुझ जंगली जैतूँन की शाखा को,
एक उत्तम जैतूँन से जोड़ दिया गया,
तो क्यों नहीं आसानी से जोड़ी जायेंगी,
उस पेड़ की अपनी ही डालियां।

ऐसे ही कुछ इस्राएल के लोग,
बना दिए गए कठोर और वे बने रहेंगे,
जब तक कि काफी गैर यहूदी लोग,
परमेश्वर के परिवार के अंग नहीं बनेंगे।

जहाँ तक सम्बन्ध है सुसमाचार का,
वे तुम्हारे हित में शत्रु हैं परमेश्वर के,
पर उनके चुने जाने के सम्बन्ध में,
वे वचन अनुसार प्यारे हैं परमेश्वर के।

क्योंकि परमेश्वर जिसे बुलाता और देता है,
अपना मन नहीं बदलता उनकी तरफ से,
क्योंकि जैसे तुम पहले करते थे,
पर अब दया पाते हो बदले में उससे।

वैसे ही अब वे करते हैं अवज्ञा,
ताकि अब उन्हें भी परमेश्वर की दया मिले,
क्योंकि उसने ही अवज्ञा के कारागार में डाला,
ताकि वह उन पर दया कर सके।

परमेश्वर धन्य है

पार ना पा सकता कोई भी,
परमेश्वर की करुणा, बुद्धि और ज्ञान का,
उसके रास्ते कितने गूढ हैं,
और कितना गहन है न्याय उसका।

क्योंकि वही है रचने वाला सबका,
और स्थिर है सभी उससे,
जो कुछ दिया सब उसने दिया,
उसकी महिमा हो सदा के लिये।

अपने जीवन प्रभु को अर्पण करो

इसलिये परमेश्वर की दया का स्मरण करा,
हे भाइयों, मैं आग्रह करता हूँ तुमसे,
अपने जीवन एक जीवित बलिदान के रूप में,
अर्पित कर दो परमेश्वर को प्रसन्न करते।

यह तुम्हारी आध्यात्मिक उपासना है,
जिसे चुकाना है तुम्हें उसे,
दुनिया की रीति को पीछे छोड़कर,
बदल डालो स्वयं को अपने मन से।

अनुग्रह स्वरूप जो उपहार दिया उसने मुझे,
उसे ध्यान में रखते हुए कहता हूँ तुमको,

जितना विश्वास उसने तुम्हें दिया है,
उसी के अनुसार समझना चाहिये अपने को।

जैसे हमारे शरीर के बहुत से अंग,
देह में जुड़ एक साथ करते हैं काम,
उसी तरह हम भी अपनी क्षमताओं को,
एक साथ प्रयोग कर करें उसका काम।

सच्चा हो प्रेम, घृणा बदी से,
रहो एक दूसरे के प्रति समर्पित,
आपस में एक दूसरे को आदर से,
दो महत्व अपने से भी अधिक।

उत्साही बनो तुम आलसी नहीं,
अपनी आत्मा के तेज से चमको,
प्रभु की सेवा, अपनी आशा में प्रसन्नता,
धीरज धरो, सेवा और प्रार्थना करते रहो।

जो तुम्हें सताते हों, दो उन्हें दुआ,
जो प्रसन्न हैं उनके साथ प्रसन्न रहो,
जो दुखी हैं, दुःख में साथ दो उनका,
मेल-मिलाप से रहो, अभिमान मत करो।

बुराई का बदला तुम भलाई से दो,
छोड़ो परमेश्वर पर निर्णय का अधिकार,
भूखे-प्यासे शत्रु को दो भोजन पानी,
नेकी से करो बदी का प्रतिकार।

प्रधान सत्ता की अधीनता में रहना,
स्वीकरना चाहिये हर एक व्यक्ति को,
क्योंकि शासन करने का अधिकार,
परमेश्वर की ओर से मिलता उसको।

इसलिये जो करता सत्ता का विरोध,
वह विरोध करता परमेश्वर की आज्ञा का,
और जो करता परमेश्वर की आज्ञा का विरोध,
अधिकारी हो जाता वह दण्ड पाने का।

नेक लोगों को नही डराते शासक,
दण्ड पाता बुरे काम करता है जो,
जो सत्ता में है परमेश्वर का सेवक है,
तेरा भला करने के लिये है वो।

जो ऋण है तुझ पर उसे चुका दे,
जो देना है तुझको दे दे वो कर,
डर उससे जिससे तुझे डरना चाहिये,
जिसका करना चाहिये उसका कर आदर।

प्रेम ही विधान है

प्रेम के सिवाय कोई ऋण मत रख,
साथियों से प्रेम, पालन है व्यवस्था का,
प्रेम अपने साथी का बुरा नहीं करता,
इसलिये प्रेम में समावेश है सबका।

आ पहुँचा है समय अब जागने का,
आओ बुरे कर्मों से छुटकारा पा लें,
दैहिक इच्छाओं से ऊपर उठ कर,
आओ प्रभु यीशू को धारण कर लें।

दूसरों में दोष मत निकाल

दुर्बल विश्वासी का भी स्वागत करो,
किन्तु मतभेदों पर झगड़ने को नहीं,
तूँ कौन देखने वाला दोष किसी का,
वह तो निर्भर है स्वामी पर ही।

हम में से कोई भी अपने लिये,
न तो जीता है न मरता है,
प्रभु के लिये ही हम जीते-मरते,
प्रभु ही हमारा सब कर्त्ता-धर्त्ता है।

इसीलिये मसीह मरा, और इसीलिये जी उठा,
ताकि वे जो मर चुके, या हैं जीवित,
दोनों ही हो सकें प्रभु के वे,
होना है सबको उसके समक्ष उपस्थित।

पाप के लिये प्रेरित मत कर

सो हम बंद करें आपस में दोष देना,
ना दूसरे के लिये खड़ी करें अड़चने,
ना ही एक दूसरे को कभी हम,
पाप की राह की ओर ढकेले।

प्रभु यीशू में आस्थावान होने के कारण,
मैं मानता हूँ कोई भोजन अपवित्र नहीं,

वह अपवित्र उसके लिये जो मानता,
उसके लिये वह भोजन उचित नहीं।

तेरे भोजन से जो पहुँचती हो ठेस,
तो अपने भाई को उससे ठेस ना पहुँचा,
तजे प्राण मसीह ने उस तक के लिये,
मत बनने दे निन्दनीय जो तुझको हो अच्छा।

बस खाना-पीना नहीं है परमेश्वर का राज्य,
वह तो है शांति, आनंद और धार्मिकता,
करता है जो मसीह की इस तरह सेवा,
रहता परमेश्वर प्रसन्न और उसे सम्मान मिलता।

इसलिये आओ, उन बातों में लगो,
जो शांति और आत्मिक उन्नति देती,
भोजन हेतु परमेश्वर का काम मत बिगाड़ो,
करो न ऐसा जिस पर हो आपत्ति।

हर तरह का भोजन पवित्र है,
किन्तु उचित नहीं किसी के भी लिये,
ऐसा कुछ खाना जो भाई को,
ले जाये पाप के रास्ते।

श्रेष्ठ है मांस-भक्षण न करना,
और मदिरा का सेवन न करना,
जो तेरे भाई को ढकेले पाप में,
ऐसा कोई भी काम न करना।

रख तूँ अपने विश्वास को,
अपने और परमेश्वर के ही बीच,
जिसे खाने के प्रति आश्वस्त नहीं,
दोषी होगा वो खाकर वह चीज।

दोषी होगा वह क्योंकि उसका खाना,
उसके विश्वास के अनुसार नहीं,
और पाप है वह सब कुछ,
जिसकी नींव विश्वास पर टिकी नहीं।

हम जो आत्मिक रूप से शक्तिशाली हैं,
सहनी चाहिये हमें निर्बलों की दुर्बलता,
उनकी आत्मिक उन्नति के लिये,
रखें मन में हम अपनी भावना।

यीशू मसीह के उदाहरण पर चल कर,
आपस में मिल जुल कर रहो,
ताकि तुम साथ-साथ एक स्वर में,
परमपिता परमेश्वर को महिमा प्रदान करो।

सभी आशाओं का स्रोत परमेश्वर तुम्हें,
सम्पूर्ण आनन्द और शांति से भर दे,
ताकि तुम आशा से भरपूर हो जाओ,
पवित्र आत्मा की शक्ति से।

पौलुस द्वारा अपने पत्र और कामों की चर्चा

हे मेरे भाइयों, मुझे भरोसा है तुम पर,
कि तुम नेकी और ज्ञान से भरे हो,
इस लायक हो तुम लोग कि,
एक दूसरे को शिक्षा दे सकते हो।

किन्तु तुम्हें फिर से याद दिलाने के लिये,
मैंने कुछ विषयों पर साफ-साफ लिखा है,
मिला है परमेश्वर का जो अनुग्रह मुझे,
उसके कारण मैंने ऐसा किया है।

यानि गैर यहूदियों के लिये याजक बन,
प्रसार करूँ मैं परमेश्वर के सुसमाचार का,
ताकि परमेश्वर के आगे स्वीकार्य भेंट बनें वे,
पूरी तरह पवित्र बने पवित्र आत्मा द्वारा।

मेरे मन में सदा यह अभिलाषा रही है,
कि मैं सुसमाचार का उपदेश वहाँ दूँ,
जहाँ कोई मसीह का नाम तक नहीं जानता,
किसी दूसरे की नींव पर निर्माण न करूँ।

पौलुस की रोम जाने की योजना

रोकते रहें हैं मेरे कर्त्तव्य बार-बार
मुझे तुम्हारे पास में आने से,
किन्तु क्योंकि अब यहाँ कोई स्थान न बचा,
स्पेन जाते हुए होगी भेंट तुम से।

हे भाइयों, यीशू मसीह की ओर से,
आत्मा से जो प्रेम पाते हैं हम,
उसकी साक्षी दे प्रार्थना करता हूँ,
मेरी प्रार्थनाओं में मेरा साथ दो तुम।

कि बचा रहूँ मैं अविश्वासियों से,
और मेरी सेवा पवित्र जन स्वीकारें,
ताकि उसकी इच्छानुसार तुम्हारे पास आ,
आनन्द मना सकूँ मैं साथ तुम्हारे।

रोम के मसीहियों को पौलुस का संदेश

मैं तुम से सिफ़ारिश करता हूँ,
विशेष सेविका हमारी बहन फ़ीबे की,
बहुत सहायता करी है उसने हमारी,
जो अपेक्षित हो मदद करना उसकी।

नमस्कार मेरा सभी सहकर्मियों को,
अपने प्राण उन्होंने दाव पर लगाये,
समस्त कलीसिया को भी मेरा नमस्कार,
धर्म प्रचार के लिये वे आगे आये।

हे भाइयों, तुमने जो शिक्षा पाई है,
उसके विपरीत तुममें जो फूट डालते,
सावधान रह उनसे तुम दूर रहो,
जो दूसरों के विश्वास को बिगाड़ते।

परमेश्वर की महिमा

उसकी महिमा से जो तुम्हारे विश्वास अनुसार,
समर्थ है तुम्हें सुदृढ़ बनाने में,
छिपा हुआ था जो रहस्यपूर्ण सत्य युगों से,
परमेश्वर की कृपा से बता दिया गया हमें।

प्रभु यीशू मसीह के द्वारा,
उस एक मात्र ज्ञानमय परमेश्वर की,
अनन्त काल तक हो महिमा,
प्रार्थना स्वीकार हो हम सबकी।

1. कुरिन्थियों

हमारे भाई सोस्थिनिस के साथ,
पौलुस की ओर से जिसे,
परमेश्वर ने अपनी इच्छा अनुसार,
चुना प्रेरित बनने के लिये।

कुरिन्थुस में उस कलीसिया के नाम,
जो यीशू मसीह में पवित्र किये गये,
हमारे परम पिता और यीशू की ओर से,
सब को उसका अनुग्रह और शांति मिले।

पौलुस का परमेश्वर को धन्यवाद

जो अनुग्रह मिला तुम्हें प्रभु यीशू द्वारा,
उसके लिये मैं करता परमेश्वर का धन्यवाद,
तुम्हारी यीशू मसीह में स्थिति के कारण,
दी गयी है तुम्हें समस्त वाणी और ज्ञान।

जो साक्षी दी हमने मसीह के विषय में,
प्रमाणित हुई है वह तुम्हारे बीच,
और इसी के परिणामस्वरूप तुम्हारे पास,
कम नहीं है उसके पुरस्कार की कोई चीज।

वह तुम्हें प्रभु यीशू के दिन तक,
बनाए रखेगा निष्कलंक और खरा,
परमेश्वर विश्वासपूर्ण है, उसी के द्वारा,
तुम्हें सत् संगति हेतु चुना गया।

कुरिन्थुस के कलीसिया की समस्याएं

हे भाइयों, पता चला है मुझे,
कि तुम्हारे बीच आपस में हैं झगड़े,
बाँट लिया है तुमने मसीह को,
अलग-अलग नामों पर तुम हो अड़े।

कोई कहता पौलुस का हूं मैं,
कोई किसी ओर का अपने को कहता,
पर पौलुस तो नहीं चढ़ा क्रूस पर,
ना ही दिया उसके नाम का बपतिस्मा।

परमेश्वर का धन्यवाद कि कुछ को छोड़,
मैंने औरों को दिया नहीं बपतिस्मा,
क्योंकि बपतिस्मा नहीं बल्कि सुसमाचार का,
प्रचार करने को मुझे मसीह ने भेजा।

परमेश्वर की शक्ति और ज्ञान-स्वरूप मसीह

क्रूस का सन्देश एक निरी मूर्खता है,
वे जो भटक रहे हैं, उनके लिये,
लेकिन वह है परमेश्वर की शक्ति,
जो उद्धार पा रहे हैं, उनके लिये।

कहाँ हैं ज्ञानी, कहाँ विद्वान,
और कहाँ शास्त्रार्थी इस युग का,
क्या परमेश्वर ने सांसारिक बुद्धिमानी को,
सिद्ध नहीं किया है निरी मूर्खता।

इसीलिये क्योंकि परमेश्वरीय ज्ञान के द्वारा,
यह संसार अपने बुद्धि बल से,
परमेश्वर को नहीं पहचान सका तो,
हम संदेश की तथाकथित मूर्खता बखानते।

यहूदी चाहते चमत्कारपूर्ण संकेत,
गैर-यहूदी खोज रहें हैं विवेक,
किन्तु हम तो बस देते हैं,
क्रूस पर चढ़े मसीह का उपदेश।

एक ऐसा उपदेश जो कि है,
यहूदियों के लिये कारण विरोध का,
और गैर यहूदियों के लिये,
जो उपदेश है बस निरी मूर्खता।

सोचो, जब बुलाया था तुम्हें परमेश्वर ने,
बहुतेरे न बुद्धिमान थे न शक्तिशाली,
बल्कि परमेश्वर ने चुने तथाकथित अकिंचन,
ताकि लज्जित हों, जो थे बलशाली।

संसार में से उन्हीं को चुना परमेश्वर ने,
जो नीचे थे, जिनसे की जाती थी घृणा,
ताकि अभिमान न कर पायें अभिजात्य लोग,
और दीन-हीनों को मिले उसकी कृपा।

किन्तु तुम यीशू मसीह में,
स्थित हो उसी के कारण,
वहीं परमेश्वर के वरदान रूप में,
बना हमारी बुद्धि का कारण।

उसी के द्वारा हम ठहराये गये निर्दोष,
ताकि परमेश्वर को समर्पित हो सकें,
शास्त्र में लिखा, यदि गर्व करना हो तो,
वह प्रभु में अपनी स्थिति पर गर्व करें।

क्रूस पर चढ़े मसीह के विषय में संदेश

हे भाइयों जब मैं तुम्हारे पास आया था,
बुद्धि और वाणी की चतुरता रखी दूर,
यीशू मसीह और क्रूस पर उसकी मृत्यु,
इन्हीं बातों से रखा मन को भरपूर।

मेरी वाणी और मेरे संदेश में,
प्रमाण था आत्मा की शक्ति का,
ताकि मानव के बजाय तुम्हारा विश्वास,
परमेश्वर की शक्ति पर रहे टिका।

परमेश्वर का ज्ञान

जो समझदार हैं उन्हें हम बुद्धि देते,
किन्तु यह बुद्धि इस युग की नहीं,
न ही इस युग के उन शासकों की,
विनाश के कगार पर जिनकी जिंदगी टिकी।

यह उपदेश मसीह है, परमेश्वर की शक्ति है,
उनके लिये जिन्हें बुला लिया गया,
क्योंकि मनुष्य के ज्ञान और शक्ति से,
अधिक सक्षम है परमेश्वर की तथाकथित दुर्बलता।

बल्कि देते हैं हम वह रहस्यपूर्ण विवेक,
जो छिपा हुआ था अनादि काल से,
और परमेश्वर ने निश्चित किया था,
हमारी महिमा के लिये जिसे।

समझे नहीं जिसे इस युग के शासक,
क्योंकि यदि वे समझ पाये होते,
तो वे उस महिमावान प्रभु को,
कभी क्रूस पर न चढ़ाये होते।

किन्तु परमेश्वर ने आत्मा के द्वारा,
प्रकट किया है उन्हीं बातों को,
क्योंकि सब ढूँढ निकालती है आत्मा,
परमेश्वर की छिपी गहराइयों तक को।

कौन जान सकता मन की बातों को,
सिवाय उसके भीतर बसी आत्मा के,
इसी प्रकार परमेश्वर के विचारों को भी,
कौन जान सकता सिवाय उसकी आत्मा के।

किन्तु हमने नहीं पायी सांसारिक आत्मा,
बल्कि वह आत्मा जो परमेश्वर से मिलती,
ताकि हम उन बातों को जान सकें,
जो परमेश्वर से मुक्त रूप से मिलती।

मानवबुद्धि द्वारा विचारे गये शब्दों में,
नहीं बोलते हम उन ही बातों को,
बल्कि आत्मा द्वारा विचारे गये शब्दों से,
वर्णित करते हैं हम आत्मा की बातों को।

परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रकाशित सत्य को,
एक प्राकृतिक व्यक्ति ग्रहण नहीं करता,
क्योंकि उसके लिये वह निरी मूर्खता होती,
आत्मस्तर पर ही उन्हें समझा जा सकता।

सब न्याय कर सकता आध्यात्मिक व्यक्ति,
पर उसका कोई न्याय नहीं कर सकता,
क्योंकि प्रभु के मन को किसने जाना,
उसको कौन सिखाए, ऐसा शास्त्र है कहता।

मनुष्यों का अनुसरण उचित नहीं

किन्तु हे भाइयों तुम अभी सांसारिक हो,
आपसी कलह और ईर्ष्या में उलझे,
मैं पौलुस का मैं अपुल्लोस का हूँ,
व्यर्थ ही तुम लोग ऐसा कहते रहते।

क्या पौलुस और क्या अपुल्लोस,
बस केवल सेवक हैं हम तो,
जिनके द्वारा तुमने विश्वास ग्रहण किया,
पूरा कर रहे सौंपे हुए काम को।

मैंने बीज बोया, अपुल्लोस ने उसे सींचा,
किन्तु उसकी बढ़वार तो परमेश्वर ने ही की,
न बोने वाला, न सींचने वाला,
किन्तु इसमें बड़ाई है बस परमेश्वर की।

वह जो बोता और जो सींचता,
उन दोनों का प्रयोजन है एक समान,
हर एक व्यक्ति को मिलता है,
उसके ही कर्मों का परिणाम।

स्पष्ट दिखेगा हर व्यक्ति का कर्म,
क्योंकि वह दिन* उसे उजागर कर देगा,
प्रकट होगा वह दिन ज्वाला के साथ,
जिसका प्रकाश कर्मों को परखेगा।

तुम परमेश्वर का मंदिर हो,
परमेश्वर की आत्मा तुममें बसती,
नष्ट कर देगा परमेश्वर उसे,
जो पहुँचाता उसके मंदिर को क्षति।

मत समझो तुम बुद्धिमान स्वयं को,
क्योंकि सांसारिक चतुरता तो है बस मूर्खता,
बुद्धिमानों के लिये चतुरता उनकी ही,
उन्हें फँसाने वाला जाल बन जाता।

* वह दिन– वह दिन जब यीशू सभी लोगों का न्याय करने के लिये आयेगा।

मसीह के संदेशवाहक

जानों हमें बस मसीह के सेवक,
परमेश्वर ने हमें रहस्यपूर्ण सत्य सौंपे,
विश्वास योग्य होना है उनका दायित्व,
परमेश्वर ने जिन्हें ये रहस्य सौंपे।

प्रभु ही एक है सबका न्यायकर्ता,
इसलिये जब तक प्रभु न आ जाये,
न्याय मत करो किसी भी बात का,
कुछ नहीं छिपता उससे छिपाये।

भर न जाओ अहंकार में,
औरों से श्रेष्ठ समझ अपने को,
तेरे पास अपना क्या है ऐसा,
दिया नहीं गया हो जो तुझको।

और जब तुझे सब कुछ,
किसी और के द्वारा दिया गया है,
तो फिर अभिमान किस बात का,
जैसे तूने किसी से कुछ न लिया है।

तुम सोचते हो, तुम्हारे पास है सब,
हमारे बिना तुम बन बैठे हो राजा,
अच्छा होता कि तुम सचमुच राजा होते,
तुम्हारे साथ बन जाते हम भी राजा।

पर मेरा विचार है कि परमेश्वर ने,
हम प्रेरितों को दिया अंत में स्थान,
क्योंकि हम बने हैं तमाशा और मूर्ख,
किन्तु तुम हो मसीह में बहुत बुद्धिमान।

हम दुर्बल, अपमानित, भूखे प्यासे हैं,
तुम सबल, सम्मानित और सम्पन्न,
हम गाली खा कर भी आशीर्वाद देते हैं,
नहीं पैदा करते कहीं कोई अड़चन।

नहीं लिख रहा हूँ मैं यह,
तुम्हें लज्जित करने के लिये,
बल्कि अपने प्रिय बच्चों के रूप में,
तुम्हें चेतावनी देने के लिये।

क्योंकि चाहे तुम्हारे पास मसीह में,
मौजूद हैं दसियों हजार संरक्षक तुम्हारे,
लेकिन उनके सबके बावजूद भी,
पिता नहीं हैं अनेक तुम्हारे।

क्योंकि सुसमाचार द्वारा मसीह यीशू में,
मैं बना हूँ पिता तुम्हारा,
इसलिये तुमसे आग्रह है मेरा,
करो अनुकरण तुम हमारा।

कुछ लोग फूले रहते अहंकार में,
पर शक्ति कुछ उनमें होती नहीं,
परमेश्वर का राज्य शक्ति पर टिका,
वाचालता पर वह टिका नहीं।

कलीसिया में दुराचार

सचमुच ऐसा बताया गया है कि,
तुम लोगों में फैला हुआ है दुराचार,
और फिर तुम अभिमान में फूले हो,
ऐसो का कर देना चाहिए था प्रतिकार।

जब तुम मेरे साथ यीशू के नाम में,
यीशू की शक्ति के साथ एकत्रित होओगे,
तो तुम्हारे पापपूर्ण स्वभाव को मिटाने हेतु,
शैतान के हाथों सौंप दिये जाओगे।

अच्छा नहीं है तुम्हारा यह बड़बोलापन,
तुम तो जानते ही हो इस कहावत को,
थोड़ा सा खमीर खमीरमय कर देता है,
आटे के पूरे ही लौंदे को।

छुटकारा पाओ पुराने खमीर से,
ताकि आटे का नया लौंदा बन सको,
हमें पवित्र करने के लिये, मेमने सा,
बलि चढ़ा दिया गया मसीह को।

बुराई और दुष्टता रूपी खमीर से,
आओ, हम अपना फसह पर्व न मनायें,
बल्कि निष्ठा और सत्य से युक्त,
बिना खमीर की रोटी से मनायें।

मैंने जो पिछले पत्र में लिखा था,
उसका प्रयोजन यह नहीं था,
कि जो व्यभिचारी या दुराचारी लोग हैं,
उनसे तुम रखो ना नाता।

ऐसा होने पर तो तुम्हें,
इस संसार से ही निकल जाना होगा,
लेकिन जो मसीही बन्धु दुराचारी हों,
उनको तो दूर ही रखना होगा।

जो लोग कलीसिया के नहीं हैं,
उनके न्याय से मेरा क्या वास्ता,
लेकिन कलीसिया के भीतर के लोग,
उनका न्याय तो करना ही पड़ेगा।

आपसी विवादों का निबटारा

क्या तुम नहीं जानते कि जगत का न्याय,
परमेश्वर के पवित्र पुरुष ही करेंगे,
संसार का न्याय जिनके द्वारा किया जाना है,
क्या छोटी-छोटी बातों को निबटा न सकेंगे।

यदि हर दिन तुम्हारे बीच में,
कोई न कोई विवाद रहता ही है तो,
क्या न्यायाधीश ऐसे व्यक्ति को चुनोगे,
कलीसिया में कोई स्थान ना रखता हो जो।

कह रहा हूँ यह मैं तुमसे इसलिये,
ताकि तुम्हें कुछ लाज आये,
कि क्या तुम्हारे बीच नहीं कोई ऐसा,
जो ये आपसी झगड़े सुलझा पाये।

तुम्हारी पराजय है तुम्हारे आपसी मुकदमों में,
क्यों नहीं आपस में अन्याय सह लेते,
तुम तो स्वयं अन्याय करते हो,
अपने ही मसीही भाइयों को लूट लेते।

अथवा क्या तुम नहीं जानते कि बुरे लोग,
नहीं पायेंगे परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकार,
तुममें से कुछ ऐसे ही थे जिनको,
पवित्र कर, किया जा चुका धर्मी करार।

अपने शरीर को परमेश्वर की महिमा में लगाओ

अनाचार के लिये नहीं हैं हमारे शरीर,
बल्कि हैं प्रभु की सेवा के लिये,
और वह परम पावन परमेश्वर है,
हमारी देह के कल्याण के लिये।

केवल प्रभु को ही पुनर्जीवित नहीं किया,
बल्कि परमेश्वर हमको भी जिला उठायेगा,
प्रभु से अपनी लौ लगाने वाला,
उसकी आत्मा में एकाकार हो जायेगा।

दूसरे सभी पाप होते शरीर से बाहर,
व्यभिचारी करता शरीर के विरुद्ध पाप,
तुम्हारे शरीर उस पवित्र आत्मा के मंदिर हैं,
जो तुम्हारे भीतर करता है निवास।

वह आत्मा तुम्हारा अपना नहीं है, क्योंकि,
परमेश्वर ने तुम्हें कीमत चुका खरीदा,
इसलिये अपने शरीरों के द्वारा,
प्रदान करो तुम परमेश्वर को महिमा।

विवाह

अनैतिकता की संभावना से बचने के लिये,
स्त्री-पुरुषों को विवाह कर लेना चाहिये,
पति और पत्नी को एक दूसरे को,
उनका यथोचित अधिकार देना ही चाहिये।

लेकिन अविवाहित और विधवाओं के लिये,
अकेले ही रहें तो उत्तम रहेगा,
पर स्वयं पर ना रख सकें काबू,
तो उनके लिये विवाह करना ठीक रहेगा।

अकेले रह वासना की आग में,
जलते रहना होता नहीं अच्छा,
विवाह कर जीवनसाथी के साथ,
रहना इससे है अधिक अच्छा।

विवाहितों के लिये है यह आदेश,
कि पत्नी को पति नहीं त्यागना चाहिये,
किन्तु यदि वह उसे छोड़ ही दे तो,
उसे फिर अविवाहित ही रहना चाहिये।

या फिर उसे अपने पति से,
मेल-मिलाप कर लेना चाहिये।
और ऐसे ही पति को भी,
अपनी पत्नी को नहीं छोड़ना चाहिये।

और यदि किसी मसीही भाई की,
पत्नी इस पंत में विश्वास नहीं रखती,
तो उसे उसको त्यागना नहीं चाहिये,
यदि उसकी साथ रहने की हो सहमति।

इसी तरह यह बात लागू होती है,
किसी मसीही बहन के पति पर,
क्योंकि निकट सम्बन्धों के कारण वे भी,
पवित्र हो जाते हैं साथ रह कर।

फिर भी यदि कोई अविश्वासी जीवनसाथी,
अलग होना चाहता तो वह हो सकता,
ऐसी स्थिति में किसी मसीही बंधु पर,
कोई बंधन लागू नहीं हो सकता।

जैसे हो वैसे जिओ

प्रभु ने जिसको जैसा दिया या चुना,
उसे उसी तरह ही जीना चाहिये,
खतना किया हो या ना किया हो,
इसको महत्त्व नहीं देना चाहिये।

जिस स्थिति में उसे बुलाया गया हो,
उसे उसी स्थिति में रहना चाहिये,
परमेश्वर ने तुम्हें कीमत चुका कर खरीदा,
तुम्हें मनुष्यों का दास नहीं बनना चाहिये।

विवाह करने सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर

यह संसार नाशवान है,
थोड़े दिन का है बसेरा इस में,
विवाह कर संसार में लिप्त होने से,
बेहतर है मन लगाना प्रभु में।

जो सोचते उन्हें विवाह कर लेना चाहिये,
वे विवाह कर करते हैं अच्छा,
लेकिन वे और भी अच्छा करते हैं,
जो अपने मन को कर लेते पक्का।

चढ़ाने का भोजन

हम जानते हैं, ''हम सब ज्ञानी हैं'',
पर ज्ञान भर देता मन में अहंकार,
प्रेम से व्यक्ति बनता है शक्तिशाली,
पाता है वह परमेश्वर से उपहार।

यदि कोई सोचे वह कुछ जानता है,
जानता नहीं वह, जानना चाहिये जिसे,
परमेश्वर के द्वारा वह जाना जाता है,
परमेश्वर से प्रेम होता है जिसे।

हम जानते हैं कि इस दुनिया में,
कहीं नहीं है परमेश्वर की वास्तविक प्रतिमा,
और यह कि परमेश्वर केवल एक ही है,
और बहुत से हैं तथाकथित देवता।

वह एक ही परमेश्वर है पिता हमारा,
और एक ही है प्रभु यीशू मसीह हमारा,
उसी के द्वारा सभी वस्तुओं का अस्तित्व है,
और उसी के द्वारा जीवन है हमारा।

किन्तु सबके पास नहीं यह ज्ञान,
कुछ अभी तक है मूर्ति-पूजा के आदी,
मूर्तियों पर अर्पित बलि खाने से,
उनकी आत्मा निर्बल हो, दूषित हो जाती।

इसलिये यदि मूर्ति वाले मंदिर में,
तुझ जैसे जानकार को कोई खाते देखता,
तो क्या उस व्यक्ति का दुर्बल मन,
बलि खाने की हद तक नहीं भटक जाएगा।

इस प्रकार अपने भाइयों के मन को,
चोट पहुँचाते तुम पाप कर रहे हो,
इसलिये यदि पाप की राह पर बढ़ाता,
तो छोड़ ही दूँगा मैं मांस भक्षण को।

पौलुस भी दूसरे प्रेरितों जैसा है

क्या मैं स्वतंत्र या प्रेरित नहीं हूँ,
मेरे प्रेरित होने का तुम हो प्रमाण,
क्या विश्वासिनी पत्नी को साथ रखने का,
अधिकार नहीं है मुझे औरों के समान।

अथवा क्या मुझे और बरनाबास को ही,
अपनी आजीविका के लिये करना चाहिये काम,
कौन सिपाही बिना तनख्वाह लिये सेना में,
अपने ही खर्चे पर करता है काम।

अथवा अंगूर की बगिया लगा कर,
कौन होगा जो उसका फल ना चखे,
या कौन होगा जो रेवड़ तो चराये,
पर थोड़ा भी भेड़ों का दूध ना चखे।

क्या मैं ऐसा कर रहा हूँ,
अपने मानवीय चिन्तन के ही नाते,
आखिरकार क्या व्यवस्था का विधान भी,
कहता नहीं है ऐसी ही बातें।

लिखा है मूसा के व्यवस्था विधान में,
खलिहान में बैल का मुँह मत बाँधो,*
पशुओं के ही संदर्भ में तुम,
इस बात का आशय न जानो।

क्योंकि खेत जोतने वाला और,
उसमें काम करने वाले लोग,
फसल का कुछ भाग पाने की,
क्या रखते नहीं आशा वो लोग।

फिर यदि हमने तुम्हारे हित के लिये,
आध्यात्मिकता के बीज बोये हैं,
एवज में कुछ पाने के अधिकार की आशा,
क्या हम लोग गलत संजोये हैं।

क्या औरों से अधिक नहीं है,
अधिकार हमारा तुम लोगों पर,
लेकिन अब तक हम सहते रहें हैं,
ताकि मार्ग न रोके कोई बाधा बनकर।

जो लोग मन्दिर में काम करते हैं,
वे अपना भोजन पाते हैं मंदिर से,
इसी प्रकार सुसमाचार के प्रचारकों हेतु,
प्रभु ने व्यवस्था करी उसके प्रचार से।

किन्तु उन अधिकारों में से मैंने,
एक का भी कभी प्रयोग नहीं किया,
और ये बातें इसलिये लिखी भी नहीं,
कि ऐसा कुछ मेरे बारे में जाये किया।

अपने गौरव को त्यागने की अपेक्षा,
मैं मर जाना ही ठीक समझूँगा,
सुसमाचार का प्रचार मेरा कर्त्तव्य है,
यह कर्त्तव्य निष्काम भाव से पूरा करूँगा।

यद्यपि मैं किसी से बँधा नहीं हूँ,
फिर भी स्वयं को आपका सेवक बताया,
अधिकतर लोगों को हृदय जीतने के लिये,
मैंने अपने को उनके अनुकूल बनाया।

यहूदियों के लिये यहूदी जैसे बना मैं,
व्यवस्था वालों के लिये व्यवस्था के अधीन,
व्यवस्था विधान को जो मानते नहीं है,
उनके लिये बना मैं व्यवस्था विहीन।

* व्यवस्था विधान 25:4

यद्यपि मैं परमेश्वर की व्यवस्था से रहित नहीं,
बल्कि हूँ मसीह की व्यवस्था के अधीन,
ताकि जो व्यवस्था के विधान को नहीं मानते,
उनके विरोध को भी कर दूँ विलीन।

हर किसी के लिये उस जैसा बन,
उद्धार के लिये किया हर संभव उपाय,
ताकि सुसमाचार के प्रचार के वरदान में,
कुछ भाग मेरा भी हो जाय।

खेल के मैदान में दौड़ते हैं बहुत,
पर जीत होती है किसी एक की,
जब दौड़ो तो तुम ऐसे दौड़ो,
कि जीत हो बस तुम्हारी ही।

प्रतियोगिता में हर प्रतियोगी को,
हर तरह आत्मसंयम करना होता,
वे तो पाना चाहते एक नाशमान जयमाल,
किन्तु हमारा लक्ष्य अविनाशी मुकुट होता।

इस प्रकार उसकी तरह दौड़ता हूँ मैं,
जो दौड़ता लक्ष्य को ध्यान रख कर,
इसलिये अपने शरीर को साधता हूँ,
उसे कठोर अनुशासन में तपा कर।

ताकि कहीं ऐसा न हो जाय,
कि दूसरों को उपदेश देने के बाद,
परमेश्वर के द्वारा मैं स्वयं ही,
कहीं ठहरा न दिया जाऊँ बेकार।

यहूदियों जैसे मत बनो

बपतिस्मा दिया गया था हमारे पूर्वजों को,
मूसा के अनुयायियों के रूप में,
किन्तु बहुतों से परमेश्वर प्रसन्न नहीं था,
इसलिये मारे गये वे मरुभूमि में।

हमारे लिये उदाहरण हैं ये बातें,
कि हम बुरी बातों की कामना ना करें,
मूर्ति-पूजक न बनें, जैसे उनमें कुछ थे,
और कभी हम व्यभिचार न करें।

सावधान रहे, जो दृढ़ता के साथ खड़ा है,
ताकि वह नीचे गिर न पड़े,
जो मनुष्यों के लिये सामान्य नहीं है,
तुम किसी ऐसी परीक्षा में ना पड़े।

परमेश्वर विश्वसनीय है, तुम्हारी शक्ति से अधिक,
तुम्हें परीक्षा में वह पड़ने नहीं देगा,
उस परीक्षा को उत्तीर्ण कर सको तुम,
साथ-साथ उसका मार्ग भी तुम्हें देगा।

अपनी स्वतन्त्रता का प्रयोग परमेश्वर की महिमा के लिये करो

जैसा कि कहा गया है कि,
स्वतन्त्र हैं हम कुछ भी करने के लिये,
किन्तु मात्र अपने स्वार्थ की चिन्ता न कर,
सोचना चाहिये औरों के परमार्थ के भी लिये।

किसी अविश्वासी के यहाँ भोजन करते समय,
अपने अन्तर्मन के अनुसार सब खाओ,
किन्तु यह 'चढ़ावा' है, बतलाये जाने पर,
उसके और अन्तर्मन के कारण मत खाओ।

यदि मैं प्रभु को धन्यवाद देकर,
लेता हूँ भोजन में अपना हिस्सा,
तो जिसके लिये दिया परमेश्वर को धन्यवाद,
उसके लिये नहीं की जानी चाहिये आलोचना।

इसलिये चाहे तुम खाओ, चाहे पिओ,
जो भी करो, परमेश्वर की महिमा के लिये,
यहूदी, गैर-यहूदी या कलीसिया के,
बाधा मत बनो किसी के भी लिये।

अधीन रहना

मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ क्योंकि,
तुम मुझे हमेशा याद करते रहते हो,
और जो शिक्षाएं मैंने तुम्हें दी है,
उनका सावधानी से पालन करते रहते हो।

मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो,
कि स्त्री का सिर पुरुष है,
पुरुष का सिर है मसीह,
और मसीह का सिर परमेश्वर है।

सिर ढक कर प्रार्थना करने वाला पुरुष,
वह परमेश्वर का करता है अपमान,
या जो परमेश्वर की ओर से बोलता,
वह भी करता है उसका अपमान।

पर बिना सिर ढके प्रार्थना करने वाली स्त्री,
वह अपने पुरुष का करती है अपमान,
या जनता में परमेश्वर की ओर से बोलती,
वह भी अपने पुरुष का करती है अपमान।

यदि कोई स्त्री अपना सिर नहीं ढकती,
तो उसे बाल भी क्यों नहीं मुंडवाने चाहिये,
यदि यह उसके लिये लज्जा की बात है,
तो उसे अपना सिर भी ढकना चाहिये।

उचित नहीं पुरुष के लिये सिर ढ़कना,
वह परमेश्वर के स्वरूप और महिमा का प्रतिबिंब,
और एक स्त्री का सिर होता है,
उसके पुरुष की महिमा का प्रतिबिंब।

ऐसा इसलिये क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं,
बल्कि स्त्री बनाई गयी है पुरुष से,
पुरुष स्त्री के लिये नहीं रचा गया,
किन्तु स्त्री रची गयी है पुरुष के लिये।

फिर भी प्रभु में स्त्री या पुरुष,
स्वतन्त्र नहीं वे एक-दूसरे से,
क्योंकि जैसे पुरुष से स्त्री आयी,
वैसे ही पुरुष जन्मतें है स्त्री से।

किन्तु आते हैं सब परमेश्वर से,
इसलिये स्वयं ही निर्णय करो,
क्या उसका आदर नहीं करना चाहिये,
जो सिखाती है प्रकृति तुमको।

प्रभु का भोज

प्रभु का भोज जो तुम करते हो,
उसके लिये क्या तुम्हारी प्रशंसा करूँ,
टूट पड़ते हो अपने खाने पर तुम,
क्या इसको कलीसिया का अनादर न कहूँ।

क्योंकि जो सीख दी है मैंने तुम्हें,
वह सीख मुझे प्रभु से मिली थी,
उस रात जब उसे पकड़ा गया था,
तो प्रभु यीशू ने एक रोटी ली थी।

धन्यवाद दे, तोड़ कर रोटी को,
कहा उसने 'यह शरीर है मेरा',
ऐसा ही तुम किया करो,
स्मरण करने के लिये मेरा।

भोजन कर चुकने के बाद इसी प्रकार,
उसने प्याला उठाया और कहा,
यह प्याला है मेरे लहू के द्वारा,
किया गया एक नया वाचा।

जितनी बार तुम यह रोटी खाते हो,
और इस प्याले को पीते हो,
उतनी बार जब तक वह आ नहीं जाता,
तुम प्रभु की मृत्यु का प्रचार करते हो।

अतः जो कोई भी अनुचित रीति से,
प्रभु की रोटी या प्याला खाता, पीता,
वह व्यक्ति प्रभु की देह और,
उस के लहू के प्रति अपराधी होता।

व्यक्ति को चाहिये पहले परखे स्वयं को,
फिर वह रोटी या प्याला खाये, पीये,
क्योंकि बिना इसे समझे जो ऐसा करता,
निमंत्रित करता है दण्ड वह अपने लिये।

किन्तु यदि स्वयं को परख लिया होता,
तो हमें प्रभु का दण्ड न भोगना पड़ता,
हमें संसार के लिये दंडित न किया जाये,
इसलिये अनुशासित करने को हमें दण्ड देता।

हे भाइयों, जब भोजन करने इकट्टे हों,
तो परस्पर एक दूसरे की प्रतीक्षा करो,
उसे घर पर ही खा लेना चाहिये,
यदि सचमुच किसी को बहुत भूख लगी हो।

पवित्र आत्मा के वरदान

हे भाइयों, अब मैं नहीं चाहता कि तुम,
आत्मा के वरदानों के विषय में अनजान रहो,
भटकते थे तुम मूर्तियों की ओर जैसे भटकाया जाता,
जब तुम विधर्मी थे, तुम जानते हो।

परमेश्वर की आत्मा की ओर से बोलने वाला,
यीशू को शाप लगे कोई भी नहीं कहता,
और पवित्रात्मा के द्वारा कहने वालों को छोड़,
'यीशू प्रभु है' कोई कह नहीं सकता।

आत्मा के वरदान मिलें हैं,
अलग-अलग हर एक व्यक्ति को,
किन्तु उन्हें देने वाली आत्मा,
एक ही है वह आत्मा तो।

सेवाएं अनेक प्रकार की निश्चित की गई,
पर वह सेवा लेने वाला है एक,
सभी के बीच सब कर्मों को करने वाला,
वह परमेश्वर तो है बस केवल एक।

हर किसी में प्रकट होता है,
आत्मा किसी न किसी रूप में,
और यह आत्मा प्रकट होता है,
हर एक की भलाई करने।

परमेश्वर के ज्ञान से युक्त हो,
बोलने की योग्यता दी गई किसी को,
विश्वास का वरदान, चँगा करने की क्षमता,
अन्य आश्चर्यजनक शक्तियां दी गई किसी को,

किन्तु यह वही एक आत्मा है,
जो जैसा-जैसा ठीक समझता,
उस-उस को वैसा देते हुए,
उन सब बातों को पूरा करता।

मसीह की देह

जैसे अनेक अंग हैं हमारी देह में,
उन सबसे मिल बनती है देह एक,
वैसे ही हमें बपतिस्मा मिला आत्मा द्वारा,
प्यास बुझाने को मिली सब को आत्मा एक।

परमेश्वर ने जैसा समझा ठीक,
अंगों को वैसे शरीर में स्थान दिया,
यदि सारे अंग एक से हो जाते,
तो क्या शरीर ही कहीं रहता।

एक अंग दूसरे से नहीं कह सकता,
मुझे नहीं है तेरी आवश्यकता,
परस्पर एक दूसरे पर हैं रहते निर्भर,
सभी एक देह के होते हिस्सा।

ऐसे ही तुम मसीह का शरीर हो,
अलग-अलग रूप से उसके अंग हो,
इसी तरह हैं नबी और अन्य कलीसिया में,
बड़ा वरदान पाने का यत्न तुम करते रहो।

प्रेम महान है

यदि मुझे सब ऐश्वर्य प्राप्त हो,
पर मेरे हृदय में प्रेम न हो,
ज्ञान भी हो, विश्वास हो मुझमें,
पर सब व्यर्थ है जो प्रेम न हो।

प्रेम धैर्यपूर्ण है, प्रेम दयामय है,
पर होती नहीं ईर्ष्या प्रेम में,
प्रेम अपनी प्रशंसा आप नहीं करता,
होता नहीं स्वार्थ या अभिमान प्रेम में।

रखता नहीं बुराइयों का लेखा-जोखा,
प्रेम तो सदा करता है रक्षा,
सहनशील, सत्य पर आनंदित होने वाला,
प्रेम आशा से परिपूर्ण रहता।

समाप्त हो जायेगा सब सामर्थ्य, क्षमताएं,
पर प्रेम अमर है, सदा बना रहता,
ज्ञान अधूरा है, भविष्यवाणियां है अपूर्ण,
जान सकेंगे सब जब आयेगी पूर्णता।

आध्यात्मिक वरदानों को कलीसिया की सेवा में लगाओ

प्रयत्नशील रहो प्रेम की राह पर,
अभिलाषा करो आध्यात्मिक वरदानों की,
समूचे कलीसिया की आत्मा सुदृढ़ करता है,
जो बोली बोलता परमेश्वर की।

यदि दूसरी भाषाओं में बोलूँ मैं तो,
इससे तुम्हारा क्या भला होगा,
जब तक उसमें कोई दिव्यज्ञान या रहस्य,
या परमेश्वर का कोई सन्देश न होगा।

भाँति-भाँति की बोलियां हैं दुनिया में,
और उनमें से कोई निरर्थक नहीं,
सो जब तक मैं वह भाषा न जानूँ,
बोलने वाले के लिये रहूँगा अजनबी।

सो जो बोलता है दूसरी भाषा में,
प्रार्थना करो, अपना कहा समझा सके,
अन्य भाषा में प्रार्थना करने से,
बुद्धि शामिल नहीं होती उसमें।

मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि,
बोल सकता हूँ मैं विभिन्न भाषाएं,
किन्तु अन्य भाषा में बहुत बोलने से,
बेहतर है वो बोलूँ जो वे समझ पाएं।

हे भाइयों, बुराई के विषय में,
बने रहो तुम अबोध बच्चे से,
पर सयाने बनो चिन्तन में अपने,
और बचकाने न रहो विचारों में।

तुम्हारी सभाएं और कलीसिया

सो हे भाइयों, जब तुम इकट्ठे हो,
जो भी करो, करो आत्मिक सुदृढ़ता के लिये,
किसी अन्य भाषा में ज्यादा ना बोलो,
और कोई उपस्थित हो व्याख्या के लिये।

परमेश्वर के दूत के रूप में,
जिन्हें बोलने का वरदान मिला,
ऐसे दो या तीन व्यक्ति ही बोलें,
औरों को चाहिये उन्हें परखना।

यदि वहाँ बैठे किसी व्यक्ति पर,
किसी बात का रहस्य उद्घाटन होता,
तो परमेश्वर की ओर से बोलने वाला,
चुप हो जाये वह पहला वक्ता।

क्योंकि तुम एक-एक करके,
परमेश्वर की ओर से बोल सकते हो,
ताकि सभी लोग वक्ताओं से,
कुछ सीखें और प्रोत्साहित हों।

रहती हैं नबियों के वश में,
नबियों की अपनी आत्माएं,
क्योंकि परमेश्वर शांति देता है,
उसका प्रमाण हैं संतों की सभाएं।

स्त्रियों को बोलने की अनुमति नहीं है,
इसलिये सभाओं में स्त्रियां चुप रहें,
यदि वे कुछ जानना चाहती हैं तो,
घर में अपने-अपने पति से पूछें।

यीशू का सुसमाचार

दिलाना चाहता हूँ अब सुसमाचार की याद,
जिसे मैंने सुनाया था तुम्हें,
जिसमें तुम निरन्तर स्थिर बने हुए हो,
और जो उद्धार दिला रहा है तुम्हें।

पर याद रखना होगा उन शब्दों को,
जिनका मैंने तुम्हें आदेश दिया था,
अपने में दृढ़ता से उन्हें थामे रखो,
वरना विश्वास धारण करना ही बेकार गया।

जो सर्वप्रथम बात मुझे प्राप्त हुई थी,
उसे मैंने तुम तक पहुँचा दिया,
कि मसीह हमारे पापों के लिये मरा,
और फिर उसे दफना दिया गया।

और शास्त्र कहता है कि फिर,
तीसरे दिन उसे जिला उठा दिया गया,
फिर वह प्रकट हुआ पतरस के समक्ष,
उसके बाद बारह प्रेरितों को दर्शन दिया।

दिखाई दिया फिर पाँच सौ को एक साथ,
उनमें से बहुतेरे है जीवित अब तक,
उसके बाद दर्शन दिये उसने याकूब को,
फिर पुनः सभी प्रेरितों के समक्ष हुआ प्रकट।

और फिर सब से अंत में,
दर्शन दिये मुझे भी उसने,
मैं तो सतमासे बच्चे जैसा,
सबसे छोटा हूँ प्रेरितों में।

मैं तो प्रेरित कहलाने योग्य भी नहीं,
क्योंकि मैं कलीसिया को सताया करता था,
किन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से बदल गया मैं,
मुझ पर उसका अनुग्रह व्यर्थ नहीं गया।

मैंने तो उन सबसे बढ़कर परिश्रम किया,
यद्यपि वह मैं नहीं उसका अनुग्रह था,

सो चाहे तुम्हें उपदेश मैंने किया या उन्होंने,
हम यही कहते, इसी पर तुमने विश्वास किया।

हमारा पुनर्जीवन

किन्तु जब कि यीशू मसीह को,
मरे हुओं में से पुनरुत्थापित किया गया,
तो तुममें से कुछ ऐसा क्यों कहते,
सम्भव नहीं मृत्यु के बाद जी उठना।

यदि तुम ऐसा ही समझते हो तो,
फिर बेकार है तुम्हारा विश्वास धारण करना,
यदि यीशू में आशा केवल भौतिक जीवन हेतु,
फिर तो हम सर्वाधिक अभागे हैं समझ रखना।

किन्तु मसीह वास्तव में पुनर्जीवित किया गया,
वह मरे हुओं की फसह का फल है पहला,
क्योंकि जब एक मनुष्य के द्वारा मृत्यु आयी,
तो आया एक के द्वारा पुनर्जीवित हो उठना।

ठीक जैसे आदम के कर्मों के कारण,
मृत्यु आई हर किसी को,
वैसे ही मसीह के द्वारा फिर से,
जिला उठा दिया जायेगा सब को।

किन्तु हर एक को अपने कर्मानुसार,
पहले मसीह को, फिर औरों को,
सब शक्तियों का अंत कर मसीह,
सौंप देगा राज्य परमेश्वर के हाथों।

सबसे अंतिम शत्रु के रूप में,
मृत्यु का नाश किया जायेगा,
क्योंकि परमेश्वर ने हर किसी को,
मसीह के चरणों के अधीन रखा।

यदि मरे हुए जिलाये नहीं जाते,
तो आओ, खाओ, पिओ, मौज करें,
क्योंकि कल तो मर ही जाना है,
क्यों फिर कल की फिक्र करें।

अब बस करो, बंद करो भटकना,
बुरी संगति से अच्छाई नष्ट हो जाती,
होश में आओ, अच्छा जीवन अपनाओ,
बुझा दो पाप की जलती बत्ती।

हमें कैसी देह मिलेगी

किन्तु कोई पूछ सकता है,
मरे हुए कैसे जिलाये जाते हैं,
और फिर जिलाये जाने पर वे,
कैसी देह धारण कर आते हैं।

सो सुनो, जो पौधा तुम बोते हो,
तुम उस भरपूर पौधे को तो नहीं बोते,
परमेश्वर जैसा चाहे वैसा रूप देता उसको,
तुम तो धरती में बस बीज ही बोते।

हर बीज को वह उसका,
अपना शरीर प्रदान करता है,
इसलिये सभी जीवित प्राणियों का,
शरीर एक जैसा नहीं होता है।

मनुष्यों का शरीर एक तरह का होता है,
जबकि पशुओं का शरीर दूसरी तरह का,
कुछ देह दिव्य, कुछ पार्थिव होती,
अलग-अलग होती है उनकी आभा।

नाशमान है वह देह जिसे,
धरती में दफना कर बोया गया,
किन्तु महिमा मंडित और अविनाशी है,
जिस देह का पुनरुत्थान हुआ।

प्राकृतिक है वह काया जिसे,
मरने पर धरती में दफनाया गया,
किन्तु वह आध्यात्मिक शरीर है,
जिस काया को पुनर्जीवित किया गया।

जैसे प्राकृतिक शरीर होते हैं,
वैसे ही अस्तित्व आध्यात्मिक शरीरों का,
पहला* मनुष्य बना एक सजीव प्राणी,
किन्तु अंतिम आदम जीवनदाता आत्मा बना।

मिट्टी से बनाया गया पहले मनुष्य को,
और दूसरा मनुष्य** (मसीह) स्वर्ग से आया,
जैसे उस मनुष्य की रचना मिट्टी से हुई,
वैसे ही सभी लोगों को मिट्टी से बनाया।

और उस दिव्य पुरुष के समान,
स्वर्गीक हैं अन्य दिव्य पुरुष भी,
सो जैसे हम माटी से आकार लेते हैं,
वैसे ही धारण करेंगे स्वर्गिक रूप भी।

पा नहीं सकता हमारा यह पार्थिव शरीर,
परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकार,
और न ही जो विनाशवान है,
पा सकता अविनाशी का उत्तराधिकार।

सुनो, बताता हूँ तुम्हें एक रहस्यपूर्ण सत्य,
हम मरेंगे नहीं, बल्कि बदल दिये जायेंगे,
जब अंतिम तुरही बजेगी तब पलक झपकते,
मरे हुए फिर से जिला दिये जायेंगे।

क्योंकि इस नाशवान देह का,
आवश्यक है अविनाशी चोला धारण करना,
और इस मरणशील काया का,
अनिवार्य है अमर चोला धारण करना।

पाप मृत्यु का दंश है,
जो व्यवस्था से अपनी शक्ति पाता,
किन्तु परमेश्वर का धन्यवाद है जो,
प्रभु यीशू द्वारा हमें विजय दिलाता।

* आदम ** मसीह

सो हे भाइयो, अटल बन डटे रहो,
प्रभु के कार्य में समर्पित कर दो,
प्रभु में किया गया तुम्हारा कार्य,
व्यर्थ नहीं है, जानते ही हो तुम तो।

दूसरे विश्वासियों के लिये भेंट

इकट्ठा कर बचाओ, कुछ अपनी आय से,
भेजा जा सके जो यरूशलेम में,
मेरे वहाँ आने पर जिसे चाहोगे,
भेज दिया जायेगा उसे यह दान ले।

पौलुस की योजनाएं

मैं जब मैसिडोनिया होकर जाऊँगा,
तो तुम्हारे पास भी आऊँगा,
आशा है कि यदि प्रभु ने चाहा,
कुछ समय तुम्हारे साथ ठहर पाऊँगा।

यदि तिमुथियुस आ पहुँचे तो,
ध्यान रखना उसे कोई कष्ट न हो,
वह भी प्रभु का काम कर रहा है,
इसलिये तुम कोई उसे छोटा न समझो।

पौलुस के पत्र की समाप्ति

सावधान रहो, और दृढ़ता के साथ,
अपने विश्वास में अटल बने रहो,
साहसी बनो और शक्तिशाली बनो,
जो कुछ करो, प्रेम से करो।

2. कुरिन्थियों

परमेश्वर की इच्छा के अनुसार,
पौलुस तथा तिमुथियुस की ओर से,
कुरिन्थुस परमेश्वर की कलीसिया तथा,
अखाया के समस्त पवित्र जनों के लिये।

पौलुस का परमेश्वर को धन्यवाद

हमारे प्रभु यीशू मसीह का,
धन्य है परमेश्वर परम पिता,
वह करुणा का स्वामी है,
और स्त्रोत है वो आनन्द का।

वह शांति देता है हमें विपत्ति में,
ताकि हम आप्तजनों को शांति दे सकें,
जैसे मसीह की यातनाओं में सहभागी हैं हम,
वैसे ही हमारा आनन्द है तुम्हारे लिये।

हे भाइयों, हमें एशिया में,
बहुत सी यातनाएं झेलनी पड़ी थी,

यहाँ तक कि हमें जीने तक की,
कोई आशा नहीं रह गयी थी।

अपने मन में हमें लगता था ऐसा,
कि हमें मृत्यु दण्ड दिया जा चुका है,
ताकि अपना नहीं परमेश्वर का करें भरोसा,
जो मरे हुओं को फिर जिला देता है।

हमें उस मृत्यु से उसी ने बचाया,
और वो ही हमें बचाता रहेगा,
हमारी आशा उसी पर टिकी है,
वही हमें आगे भी सुरक्षित रखेगा।

यदि तुम भी हमारी ओर से प्रार्थना करोगे,
और इस तरह हमें जो अनुग्रह मिलेगा,
उसके लिये बहुतों को हमारी ओर से,
धन्यवाद देने का हेतु मिल सकेगा।

पौलुस की योजनाओं में परिवर्तन

हमने उस जगत के साथ,
और खासकर तुम लोगों के साथ,
दुनियावी बुद्धि से नही बल्कि,
व्यवहार किया सरलता-सच्चाई के साथ।

मैंने पहले तुम्हारे पास आने की ठानी थी,
ताकि तुम्हें दोबारा आशीर्वाद का लाभ मिल सके,
मैं सोचता हूँ मैसिडोनिया आते-जाते तुमसे मिलूं,
फिर विदा किया जाऊ यहूदिया के लिये।

मैंने जब ये योजनाएं बनायी थी,
तब कोई संशय नहीं था मेरे मन में,
क्या ये योजनाएं सांसारिक ढंग से बनाता हूँ,
कि एक साथ कहूँ हाँ और ना मैं।

मैं परमेश्वर की दुहाई देते हुए और,
अपने जीवन की शपथ ले चाहता हूँ कहना,
कि मैं दोबारा कुरिन्थुस इसलिये नहीं आया,
ताकि फिर से कष्ट तुम्हें पड़े न सहना।

क्योंकि यदि मैं तुम्हें दुखी करूँगा तो,
फिर भला कौन है जो मुझे सुखी करेगा,
जानता हूँ मेरी प्रसन्नता में तुम प्रसन्न हो,
मेरा प्रेम प्रकट करती है मेरी वेदना।

बुरा करने वाले को क्षमा कर

यदि किसी ने मुझे दुख पहुँचाया है,
तो वह दुख तुमको भी पहुँचा,
उसको जो दण्ड तुम लोगों ने दिया,
वह पर्याप्त है अब कर दो क्षमा।

कहीं वह दुःख में डूब न जाये,
तुम उसके प्रति अपने प्रेम को बढ़ाओ,
यह मैंने तुम्हें यह देखने को लिखा,
कैसे तुम उस परीक्षा में पूरा उतरते हो।

यदि तुम किसी को क्षमा करते हो,
मैं भी उसे क्षमा करता हूँ, तुम्हारे लिये,
ताकि हम शैतान से मात न खा जाये,
अन्जान नहीं हैं हम उसकी चालों से।

पौलुस की अशांति

जब मैं त्रोवास आया तो वहाँ,
मेरे लिये प्रभु का द्वार खुला था,
पर अपने भाई तितुस को वहाँ न पा,
मेरा मन बहुत व्याकुल था।

मसीह से विजय

परमेश्वर धन्य है जो मसीह के द्वारा,
अपने विजय अभियान में हमें राह दिखाता,
और हमारे द्वारा हर कहीं वह,
अपने ज्ञान की सुगंध फैलाता।

जो अभी उद्धार की राह पर हैं,
उनके लिये हैं हम सुगंधित धुप से,
और उनके लिये जो विनाश की राह पर,
मृत्यु की ओर ले जाने वाली दुर्गन्ध से।

नयी वाचा

इससे क्या ऐसा लगता है कि हम,
फिर से आत्म प्रशंसा करने लगे,
अथवा क्या तुम्हारे लिये या तुमसे,
परिचय पत्र लेने की जरूरत है हमें।

निश्चय ही नहीं क्योंकि हमारा पत्र तो,
तुम स्वयं हो जो हमारे मन में लिखा है,
जिसे सभी लोग जानते हैं और पढ़ते हैं,
जो परमेश्वर की आत्मा से लिखा गया है।

भरोसा है हमें मसीह के कारण,
परमेश्वर के सामने ऐसा दावा करने का,
हम अपने आप से कुछ कर नहीं सकते,
बल्कि हमें साम्यर्थ तो परमेश्वर से मिलता।

सेवक बनने के योग्य ठहराया,
उसी ने हमें एक नये करार का,
यह लिखित संहिता नहीं आत्मा का वाचा है,
क्योंकि वह मारती, जबकि जीवन देता है आत्मा।

पौलुस की सेवा मूसा की सेवा से महान है

किन्तु वह सेवा जो मृत्यु से युक्त थी,
यानी पत्थरों पर अंकित व्यवस्था का विधान,
उसमें उतना तेज था कि इस्राएल के लोग,
मूसा के मुख पर ना जमा सकते थे ध्यान।

फिर भला आत्मा से युक्त सेवा,
क्यों नहीं होगी और अधिक तेजस्वी,
दोषी ठहराने वाली सेवा जब इतनी तेज है,
तो कितनी तेज होगी जो ठहराती धर्मी।

क्योंकि जो पहले तेज से परिपूर्ण था,
इस तेज के समक्ष तेजहीन हो गया वो,
यदि वह तेजस्वी होने वाला था तेजस्वी,
तो कितनी तेजस्वी होगी वह नित्य है जो।

जो अपने मुख पर पर्दा डाले रहता था,
नहीं हैं हम उस मूसा के जैसे,
जिस सेवा का विनाश निश्चित था,
इस्राएली कहीं उसका अंत न देख लें।

किन्तु उनकी बुद्धि जड़ हो गयी थी,
क्योंकि जब वे पुराना वाचा पढ़ते हैं,
तो आज तक वही पर्दा वे लोग,
अपने ऊपर बिना हटाये पड़ा पाते हैं।

क्योंकि वह पर्दा जो पड़ा हुआ था,
बस मसीह के द्वारा ही हटाया जाना है,
पढ़ा जाता है जब वह मूसा का ग्रंथ,
पाठको के मन पर पर्दा पड़ा रहता है।

किन्तु जब किसी व्यक्ति का हृदय,
प्रभु परमेश्वर की ओर मुड़ता है,
तो उस व्यक्ति के मन पर से,
वह पर्दा हटा दिया जाता है।

देखो, जिस प्रभु की ओर मैं,
इंगित कर रहा हूँ, है वही आत्मा,
और छुटकारा है वहीं पर,
जहां पर है प्रभु की आत्मा।

सो जब हम ध्यान करते प्रभु के तेज का,
तो होने लगते हैं हम भी वैसे ही,
और हमारा तेज अधिकाधिक बढ़ने लगता है,
मिलता है जो प्रभु यानी आत्मा से ही।

माटी के भांडों में अध्यात्म का घन

क्योंकि मिली परमेश्वर के अनुग्रह से यह सेवा,
इसलिये हम निराश नहीं होते,
प्रकट करके सत्य को सरल रूप में,
लोगों में सुसमाचार का प्रचार करते।

यदि इस पर कोई पर्दा पड़ा है,
तो यह केवल उनके लिये पड़ा,
जो विनाश की राह पर चल रहे,
जिन्हें शैतान ने कर दिया है अँधा।

हम स्वयं अपना प्रचार नहीं करते,
बल्कि मसीह यीशू का उपदेश देते,
और अपने बारे में तो कहते हैं यही,
हम सेवक हैं तुम्हारे, यीशू के नाते।

'अंधकार से ही प्रकाश चमकेगा' कहा जिसने,
प्रकाशित हुआ वही परमेश्वर हमारे हृदय में,
ताकि हमें यीशू मसीह के व्यक्तित्व में,
परमेश्वर की महिमा के ज्ञान की ज्योति मिले।

किन्तु हम जैसे मिट्टी के भांडों में,
यह सम्पत्ति इसलिये रखी गयी,
कि यह अलौकिक शक्ति हमारी नहीं,
बल्कि सिद्ध हो परमेश्वर की।

हम हर समय हर किसी प्रकार से,
जीते हैं कठिन दबावों में,
हम बिखराये नहीं गये हैं,
यद्यपि दी गई हैं हमें यातनाएं।

अपनी देह में यीशू की हत्या को,
हम सदा हर कहीं लिये रहते,
ताकि हमारी देहों में स्पष्ट रूप से,
प्रभु यीशू का जीवन भी प्रकटे।

यीशू के कारण हम जीवितों को,
सौंपा जाता है निरन्तर मृत्यु के हाथों,
ताकि स्पष्ट रूप से यीशू का जीवन भी,
नाशवान शरीरों में उजागर हो।

''मैंने विश्वास किया था इसलिये मैं बोला''
लिखा है यह वाक्य शास्त्रों में,
हम भी विश्वास करते है, बोलते हैं,
विश्वास की वही आत्मा है हममें।

हम जानते हैं जिसने प्रभु यीशु को,
मरे हुओं में से जिला कर उठाया,
वह हमें भी उसी तरह जीवित करेगा,
जिस तरह से उसने यीशू को जिलाया।

विश्वास से जीवन

यद्यपि क्षीण हो रहे हैं हमारे शरीर,
हमारी अंतरात्मा निरन्तर नवीन हो रही,
जो देखा जा सकता है, वह विनाशी है,
हमारी दृष्टि अदृश्य अविनाशी पर टिकी।

हम जानते हैं यदि हमारी कायारूपी,
यह तम्बू धरती पर गिरा दिया जाये,
तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग में,
एक चिरस्थायी भवन मिल जाये।

भौतिक शरीर में जो स्थित हैं,
बोझ से दबे कराह रहे हैं,
क्योंकि वे इन वस्त्रों को त्यागे बिना,
दूसरे वस्त्र धारण करना चाहते हैं।

तैयार किया है जिसने हमें,
इस प्रयोजन हेतु वह परमेश्वर ही है,
उसी ने आश्वासन के रूप में,
बयाने में हमें आत्मा दी है।

जब तक हम अपनी देह में रह रहे,
हम जानते हैं हम दूर हैं प्रभु से,
हम चाहे उपस्थित रहें या अनुपस्थित,
चाहते हैं हम उसे अच्छे लगते रहें।

हम सब को अपने शरीर में स्थित रह,
भला या बुरा जो कुछ किया होगा,
उसका फल पाने को हमें मसीह के,
न्यायासन के सामने उपस्थित होना होगा।

परोपकारी परमेश्वर के मित्र होते हैं

इसीलिये प्रभु से डरते हुए लोगों को,
समझाते हैं हम सत्य ग्रहण करने को,
हमारे और परमेश्वर के बीच कोई पर्दा नहीं,
आशा है तुम भी हमें पूरी तरह जानते हो।

हमारा नियन्ता तो मसीह का प्रेम है,
क्योंकि हमने अपने मन में धारा,
कि वह एक व्यक्ति मसीह,
सब लोगों के लिये मरा।

उसके मरने में मर गये सभी,
और वह मरा सब लोगों के लिये,
क्योंकि जो जीवित हैं, अपने लिये नहीं,
बल्कि जियें वे उसके लिये।

परिणामस्वरूप अब से आगे हम,
देखें न किसी को भी सांसारिक दृष्टि से,
यद्यपि एक समय हमने मसीह को भी,
देखा था सांसारिक दृष्टि से।

कुछ भी हो अब हम उसे,
उस प्रकार से नहीं देखते,
इसलिये यदि कोई मसीह में स्थित है,
तो अब अंग है वे नयी सृष्टि के।

हो गया है सब कुछ नया,
जाती रही हैं पुरानी बातें,
और फिर परमेश्वर की ओर से,
हुआ करती है सब बातें।

जिसने हमें मसीह के द्वारा,
मिला लिया है अपने में,
और लोगों को परमेश्वर से मिलन का,
सौंपा है यह काम हमें।

हमारा संदेश है कि परमेश्वर,
लोगों के पापों की अनदेखी करते,
मसीह के द्वारा वह उनको,
मिला रहा है अपने में।

इसलिये काम कर रहे हैं हम,
मसीह के प्रतिनिधि के रूप में,
परमेश्वर के साथ मिल जाओ,
चेता रहा है मानों परमेश्वर तुम्हें।

साथ-साथ परमेश्वर का काम करने के नाते,
हम आग्रह करते हैं तुम लोगों से,
उसे यूँ ही व्यर्थ मत जाने दो,
परमेश्वर का जो अनुग्रह मिला है तुम्हें।

क्योंकि उसने कहा है उचित समय,
तुझे सहारा देने आया उद्धार के दिन,
और देखो यही है वह उचित समय,
और यही है वह उद्धार का दिन।

हम कोई विरोध उपस्थित नहीं करते,
जिससे हमारे काम में कोई कमी आये,
बल्कि परमेश्वर के सेवक के रूप में,
स्वयं को अच्छा सिद्ध करते आये।

धैर्य के साथ हम सब सहते हुए,
यातनाओं, विपत्तियों और कठिनाइयों के बीच,
रात-रात भर जाग, भूखे रह कर,
अपना काम करते रहते इन सबके बीच।

सच्चे संदेश और परमेश्वर की शक्ति से,
नेकी को हाथों में ढाल बना कर,
हम अपने को उपस्थित करते रहे हैं,
आदर, निरादर, मान, अपमान सह कर।

हे कुरिन्थियों, पूरी तरह खुल कर,
हमने की हैं तुमसे बातें,
तुम्हारे लिये खुला है हमारा मन,
और प्यार बसा है हमारे मन में।

किन्तु रोक दिया तुमने हमसे प्यार करना,
इसलिये कह रहा हूँ तुम्हें अपना बच्चा समझते,
उचित प्रतिदान के रूप में अपना मन,
पूरी तरह खुला रखना चाहिये हमारे लिये तुम्हें।

गैर मसीहियों की संगत के विरुद्ध चेतावनी

मत करो बेमेल संगत अविश्वासियों के साथ,
भला नेकी और बदी की कैसी समानता,
कैसे हो सकता मसीह और शैतान में मेल,
कैसे हो सकती प्रकाश और अंधेरे में मित्रता।

पौलुस का आनन्द

स्थान दो हमें अपने मन में,
हमने किसी का कुछ भी ना बिगाड़ा,
ना ही किसी को कोई ठेस पहुँचाई,
ना ही हमने कभी किसी को छला।

तुम पर मुझे बड़ा गर्व है,
और तुम पर मैं भरोसा रखता,
अपनी सभी यातनाएं झेलते हुए भी,
मेरे दिल में आनन्द उमड़ता रहता।

जब हम मैसिडोनिया आये थे,
तब भी हमें आराम न मिला था,
हर प्रकार के दुख उठाने पड़े थे,
बाहर झगड़ो से और मन में डर था।

किन्तु असहायों के सहायक परमेश्वर ने,
तितुस को यहा पहुँचा हमें सान्त्वना दी,
तुमने उसे जितना सुख दिया था,
उसने हमें और भी अधिक सान्त्वना दी।

उसने हमें बताया कि तुम,
हमसे मिलने को कितने व्याकुल हो,
तुम्हें हमारी कितनी चिंता है,
उसने और भी प्रसन्न किया हमको।

यद्यपि अपने पत्र से मैंने तुम्हें दुख पहुँचाया,
फिर भी मुझे पत्र लिखने का खेद नहीं,
इस दुःख के कारण तुमने पछतावा किया,
मन फिराव कर देता है यह पछतावा ही।

यह दुख जिसे परमेश्वर ने दिया है,
उसने कितना उत्साह जगा दिया तुममें,
कितना साहस, पापी को प्रताड़ना इत्यादि,
ऐसी कितनी ही भावनाएं भर दी तुममें।

हमारा दान

हे भाइयों, हम चाहते हैं कि तुम,
जानो उस अनुग्रह के बारे में,
मैसिडोनिया क्षेत्र की कलीसियाओं पर,
अनुग्रह किया है जो परमेश्वर ने।

मेरा अभिप्राय यह है कि यद्यपि,
उनकी कठिन परीक्षा ली गयी,
तो भी गहन दरिद्रता में प्रसन्नता से,
उनकी सम्पूर्ण उदारता उमड़ पड़ी।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि उन्होंने,
जितना वे दे सकते थे दिया,

इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने,
अपने साम्थर्य से भी अधिक दिया।

संत जनों की सहायता करने में,
सहयोग करने की करते रहे विनती हमसे,
उन्होंने पहले किया प्रभु को समर्पण,
फिर वे अर्पित हो गये हमें।

इसलिये प्रार्थना की हमने तितुस से कि,
जैसे वह अपना कार्य प्रारम्भ कर चुका,
वैसे ही इस अनुग्रह के कार्य को,
वह तुम्हारे लिये करे पूरा।

भरपूर हो जैसे कि तुम,
प्रेम, विश्वास, वाणी और ज्ञान में,
उसी तरह तुम भरपूर हो जाओ,
इस अनुग्रह के काम में।

हमारे प्रभु यीशू के अनुग्रह से,
तुम परिचित हो और तुम जानते हो,
धनी होते हुये भी बन गया निर्धन ताकि,
उसकी निर्धनता से तुम मालामाल हो जाओ।

पिछले साल दान देने की चाह,
और दान देने में तुम सबसे आगे थे,
अब दान करने की उस तीव्र इच्छा को,
जो कुछ पास है पूरा करो उसी से।

क्योंकि जो व्यक्ति के पास है, तदानुसार ही,
उसका दान ग्रहण करने योग्य ठहरता,
हम यह नहीं चाहते कि औरों को सुख,
किन्तु एवज में तुमको कोई कष्ट पड़े सहना।

हम तो बस चाहते इस अभाव के समय,
तुम्हारी सम्पन्नता पूरी करे उनकी जरूरतें,
ताकि आगे चल कर आवश्यकता पड़ने पर,
उनकी सम्पन्नता तुम्हारे अभाव दूर कर सके।

हम तो चाहते है समानता स्थापित हो,
जैसा कि इस विषय में शास्त्र कहता,
''जिसने बहुत बटोरा उसके पास रहा न अधिक,
जिसने अल्प बटोरा, उसके पास स्वल्प न रहा।''

तितुस और उसके साथी

परमेश्वर का धन्यवाद है जिसने,
तुम्हारी सहायता हेतु तितुस के मन में,
वैसी ही तीव्र इच्छा भर दी है,
जैसी इच्छा है हमारे मन में।

भेज रहे हैं हम उसके साथ,
अपने उन कुछ भाइयों को भी,
सुसमाचार के प्रचार और परोपकार में,
छोड़ी नहीं है जिन्होंने कोई कमी।

साथियों की मदद करने

तुम्हारे उत्साह ने प्रेरित किया है,
अखाया के लोगों को सत्कार्मों के लिये,
किन्तु मैं भाइयों को भेज रहा हूँ,
तुम रहो तैयार दान देने के लिये।

याद रखो जो छितरा बोता है,
वह काटता भी है छितरा ही,
और जिस की बुआई होती सघन।
सघन होती है कटाई भी उसकी।

हर कोई बिना कष्ट या दबाव के,
इतना ही दे मन में सोचा जितना,
क्योंकि परमेश्वर प्रेम करता है,
उससे जो अपनी प्रसन्नता से देता जितना।

जो कुछ देता, वह परमेश्वर ही देता,
देता है सबको वह मुक्त भाव से,
परमेश्वर के प्रति धन्यवाद का भाव उपजता,
दान की इस पवित्र सेवा से।

पौलुस द्वारा अपनी सेवा का समर्थन

मैं तुम्हारे बीच रहते विनम्र हूँ,
अन्यथा तुम्हारे लिये हूँ निर्भय,
यद्यपि हम इस संसार में रहते,
पर नहीं लड़ते संसारियों की तरह।

जिन शास्त्रों से हम युद्ध लड़ते हैं,
परमेश्वर की शक्ति निहित है उनमें,
लोगों के तर्क और परमेश्वर के विरुद्ध,
प्रत्येक अवरोध का खण्डन करते हैं उनसे।

यदि कोई व्यक्ति अपेन मन में,
मानता है कि वह है मसीह का,
तो वह फिर से याद करे कि,
जितना हम वह भी उतना है मसीह का।

स्वयं को महत्वपूर्ण समझने वालों से,
हम अपनी तुलना का साहस नहीं करते,
किन्तु जब वे आपस में अपने को नापते,
अपनी मूर्खता नहीं जानते, वे यह दर्शाते।

उचित सीमाओं से बाहर बढ़-चढ़ कर,
जो भी हो हम बात नहीं करेंगे,
आशा है जैसे-जैसे तुम्हारा विश्वास बढ़ेगा,
हम भी तुम्हारे बीच व्यापकता से फैलेंगे।

इससे तुम्हारे क्षेत्र से आगे भी हम,
कर पायेंगे सुसमाचार का प्रचार,
किसी अन्य ने जो काम किया है,
उसके क्षेत्र का नहीं हमें अधिकार।

कहता है शास्त्र जिसे गर्व करना है,
वह प्रभु के करे पर गर्व करें,
क्योंकि अच्छा वही माना जाता है,
जिसे प्रभु अच्छा स्वीकार करे।

बनावटी प्रेरित और पौलुस

मैं तुम्हारे लिये ऐसी सजगता के साथ,
जो परमेश्वर से मिलती है सजग हूँ,
मैंने तुम्हारी मसीह से सगाई करा दी,
ताकि पवित्र कन्या सा उसे अर्पित कर सकूँ।

किन्तु मैं डरता हूँ कि कहीं,
जैसे उस सर्प ने भ्रष्ट किया हव्वा को,
वैसे ही एकनिष्ठ भक्ति और पवित्रता से,
भटका न दिया जाए तुम्हारे मन को।

जो नकली प्रेरित हैं ढोंग करते हैं,
मसीह के प्रेरित होने का,
इसमें अचरज नहीं क्योंकि शैतान भी तो,
देवदूत का रूप धारण कर लेता।

सो उसके सेवक भी नकली रूप रखें,
तो इसमें क्या है बात बड़ी,
किन्तु अन्त में उन्हें अपनी,
करनी के अनुसार फल मिलेगा ही।

पौलुस की यातनाएं

दोहराता हूँ मैं फिर यह कि,
समझे न मूर्ख कोई मुझको,
यदि फिर भी तुम ऐसे समझते हो,
तो मुझे मूर्ख मानकर ही स्वीकार करो।

इब्रानी वे ही तो नहीं, मैं भी हूँ,
इस्राएली वे ही तो नहीं, मैं भी हूँ,
क्या वे ही हैं मसीह के सेवक,
मैं तो और अधिक मसीह का सेवक हूँ।

बहुत कठोर परिश्रम किया है मैंने,
बार-बार मैं जेल गया हूँ,
तरह-तरह की यातनाएं दी गयी मुझे,
मौत से भी मैं नहीं डरा हूँ।

यदि मुझे बढ़चढ़ कर बातें करनी हैं तो,
करूँगा मैं अपनी दुबर्लता की बातें,
यीशू और परमपिता परमेश्वर जानता है,
कि मैं नहीं कर रहा झूठी बातें।

दमिश्क में अरितास के राज्यपाल ने,
मुझे बंदी बनाने का जतन किया था,
किन्तु नगर की चारदीवारी से टोकरी में बैठा,
मुझे नीचे उतार निकाल दिया गया था।

पौलुस पर प्रभु का विशेष अनुग्रह

अब तो मुझे गर्व करना ही होगा,
प्रभु के दर्शनों और दैवी संदेशों पर,
मैं जानता हूँ मसीह में स्थित ऐसा व्यक्ति,
जिसे उठा लिया गया था तीसरे स्वर्ग पर।

और सुने उसने अनिर्वचनीय शब्द,
जिन्हें बोलने की मनुष्य को नहीं अनुमति,
हां ऐसे मनुष्य पर मैं अभिमान करूँगा,
स्वयं पर अभिमान में करूँगा नहीं।

असाधारण दैवी संदेशों के कारण,
कहीं कोई गर्व न हो जाये मुझे,
इसलिये सालते रहने वाला एक काँटा,
दे दिया गया है साथ में मुझे।

यह काँटा है शैतान का दूत,
दुखता रहता है वह मुझे,
यह काँटा इसलिये है मेरे साथ,
कहीं बहुत घमण्ड न हो जाये मुझे।

लेकिन प्रभु का अनुग्रह ही प्रर्याप्त है मुझे,
क्योंकि निर्बलता में निहित होती उसकी शक्ति,
इसलिये गर्व करता मैं अपनी निर्बलता पर,
ताकि मुझ में रहे मसीह का शक्ति।

कुरिन्थियों के प्रति पौलुस का प्रेम

मूर्खों सा बतियाने को विवश किया तुमने,
तुम्हें तो मेरी प्रशंसा करनी चाहिये थी,
यद्यपि वैसे तो में कुछ नहीं हूँ पर,
तुम्हारे उन ''महाप्रेरितों'' से कैसे भी छोटा नहीं।

चमत्कार और संकेत प्रकट किये गये,
हर प्रकार की यातनाएं झेली मैंने,
सिवाय तुम पर कभी भार न बना,
सब कुछ तुम्हारे लिये किया मैंने।

मुझे तुम्हारी सम्पत्ति की नहीं,
बल्कि मुझे चाहत है तुम्हारी,
बच्चे माता-पिता के लिये नहीं बचाते,
उनके लिये बचाते माता-पिता ही।

सो मेरे पास में जो कुछ है,
खर्च करूँगा वह प्रसन्नता से तुम्हारे लिये,
यदि मेरे ह्रदय में है तुम्हारे लिये प्रेम,
तो कैसे प्रेम न होगा तुममें मेरे लिये।

तुम्हारा कहना है मैं कपटी था,
अपनी चालाकी में फँसा लिया तुमको,
मैंने जिन्हें तुम्हारे पास भेजा था,
क्या उन लोगों ने छला है तुमको।

कर रहे हैं हम जो कुछ भी,
है तुम्हें आध्यात्मिक शक्ति देने के लिये,
मुझे भय है हम वैसा ना पाएं,
जैसा सोचते हैं एक दूसरे के लिये।

अंतिम चेतावनी और नमस्कार

तुम्हारे पास आने का यह तीसरा अवसर है,
मैं देता हूँ चेतावनी तुम्हें फिर से,
जिन्होंने पाप किया या लिप्त है उसमें,
नहीं बच सकेंगे वे लोग मुझ से।

ऐसा मैं कह रहा हूँ इसलिये,
कि तुम इस बात का प्रमाण चाहते हो,
कि मुझमें बोलता है यीशू मसीह,
निर्बल नहीं बल्कि समर्थ है जो।

यह सच है कि क्रूस पर चढ़ाया गया,
उसे उसकी दुर्बलता के कारण,
किन्तु अब वह जी रहा है,
परमेश्वर की शक्ति के कारण।

परखो स्वयं को यह देखने के लिये,
कि क्या विश्वासपूर्वक जी रहे हो तुम,
वह यीशू मसीह तुम्हारे भीतर ही है,
जाचों स्वयं को क्या नहीं जानते तुम।

मैं आशा करता हूँ तुम जान जाओगे,
कि इस परीक्षा में तुम विफल न हुए,
हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि,
तुम में से कोई भी कुछ बुराई न करे।

इसलिये नहीं कि परीक्षा में दिखाई दे खरे,
बल्कि इसलिये कि जो उचित है वह करो,
चाहे इस परीक्षा में दिखाई दें विफल,
सत्य हेतु ही करते हैं, करते हैं जो।

हमारी निर्बलता और तुम्हारी सबलता,
प्रसन्न करती है यह हमको,
हम उसी के लिये प्रार्थना करते रहते हैं,
कि तुम दृढ़ से दृढ़तर बनो।

अब हे भाइयों, मैं विदा लेता हूँ,
अपने आचरण को ठीक रखो,
प्रेम, शांति का स्रोत परमेश्वर साथ रहेगा,
एक जैसो सोचो, शांतिपूर्वक रहो।

गलातियों

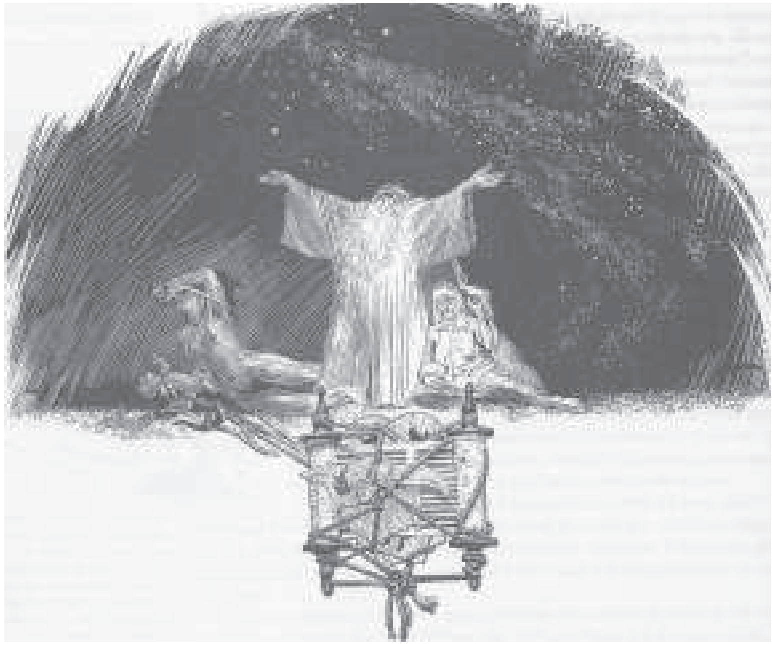

पौलुस जिसने ऐसा सेवाव्रत धारण किया,
जो किसी मनुष्य से प्राप्त न हुआ,
बल्कि मसीह द्वारा उस परम पिता से,
जिसने उसे मरे हुओं में से जिला दिया।

मेरे साथ सब भाइयों की ओर से,
गलातिया क्षेत्र की कलीसियाओं के नाम,
तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले,
परमेश्वर सदा सर्वदा हो महिमावान।

सच्चा सुसमाचार एक ही है

मुझे अचरज है कि तुम लोग,
इतनी जल्दी मुँह मोड़ उस परमेश्वर से,
जिसने बुलाया था, तुम्हें मसीह के अनुग्रह द्वारा,
किसी दूसरे समाचार की ओर जा रहे।

सुसमाचार तो वास्तव में एक ही है,
किन्तु कुछ लोग तुम्हें भरमा रहे हैं,
और वे लोग मसीह के सुसमाचार में,
हेर-फेर का जतन कर रहे हैं।

किन्तु चाहे हम हों या कोई स्वर्गदूत,
यदि कोई सुनाता है भिन्न सुसमाचार,
तो मैं अपने कहे को दोहरा रहा हूँ,
वह चाहे कोई हो, उस पर है धिक्कार।

इससे क्या तुम्हें लगता मैं मनुष्यों का,
समर्थन या उन्हें प्रसन्न करना चाहता,
यदि मैं जतन करता उन्हें प्रसन्न करने का,
तो मैं मसीह के सेवक का सा न होता।

पौलुस का सुसमाचार परमेश्वर से प्राप्त है

हे भाइयों मैं तुम्हें जताना चाहता हूँ कि,
यह सुसमाचार मिला नहीं मुझे मनुष्यों से,
बल्कि दैवी संदेश के रूप में यह,
यीशू मसीह द्वारा प्रकट हुआ सामने मेरे।

तुम जानते हो परमेश्वर की कलीसिया पर,
पहले मैंने कितना अत्याचार किया,
पूर्वजों की परम्पराओं में आस्था के कारण,
उन्हें मिटा डालने तक का प्रयास किया।

किन्तु मेरे जन्म से पहले ही,
परमेश्वर ने मुझे चुन लिया था,
अपने पुत्र का मुझे ज्ञान करा दे,
सो अपने अनुग्रह में बुला लिया था,

ना मैंने किसी और से राय ली,
ना मैं यरूशलेम प्रेरितों के पास गया,
बल्कि गैर यहूदियों को सुसमाचार देने में,
पहले अरब, फिर वहाँ से दमिश्क गया।

फिर तीन साल के बाद मैं,
पतरस से मिलने यरूशलेम पहुँचा,
किन्तु वहाँ प्रभु के भाई याकूब को छोड़,
मैं किसी दूसरे प्रेरित से नहीं मिला।

यहूदिया के मसीह को मानने वाले कलीसिया,
लोगों को यह कहते सुनते थे,
यह व्यक्ति जो हमें सताया करता था,
लगा है उसी मत का प्रचार करने में।

पौलुस को प्रेरितों की मान्यता

बरनाबास और तितुस को साथ ले,
चौदह वर्ष बाद मैं फिर यरूशलेम गया,
गैर यहूदियों को जो सुसमाचार सुनाता था,
वही कलीसिया के मुखियाओं को भी दिया।

मैं वहाँ इसलिये गया था,
क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा दर्शाया था मुझे,
ताकि जो काम किया और कर रहा हूँ,
वह यूँ ही व्यर्थ न चला जाये।

परिणाम-स्वरूप तितुस तक को,
जो मेरे साथ था और यूनानी था,
विवश नहीं किया गया फिर भी उसे,
कि वह कराये अपना खतना।

किन्तु उन झूठे बँधुओं के कारण,
जो घुस आए थे बनकर भेड़िये,
यह बात उठी, किन्तु हमने,
उनकी अधीनता में घुटने नहीं टेके।

किन्तु जाने-माने प्रतिष्ठित लोगों से,
मुझे या सुसमाचार को मिला ना लाभ,
किन्तु उन मुखियाओं ने देखा कि परमेश्वर ने,
पतरस की तरह ही मुझे सौंपा है काम।

एक प्रेरित के रूप में काम करने की,
परमेश्वर ने दी पतरस को शक्ति,
और परमेश्वर ने मुझे भी दी है,
प्रेरित के रूप में काम करने की शक्ति।

किन्तु मैं हूँ गैर यहूदियों का प्रेरित,
उन्होंने परमेश्वर का यह अनुग्रह समझ लिया,
याकूब, पतरस और यूहन्ना ने प्रतीक रूप में,
बरनाबास और मुझसे हाथ मिला लिया।

वे सहमत हो गये कि हम,
विधर्मियों के बीच उपदेश देते रहें,
उन्होंने हमसे बस यही कहा कि,
हम उनके निर्धनों का ध्यान रखें।

पौलुस की दृष्टि में पतरस अनुचित

किन्तु जब पतरस अंताकिया आया तो मैंने,
उसके अनुचित व्यवहार का विरोध किया,
क्योंकि याकूब के भेजे लोगों के आने के बाद,
उसने गैर-यहूदियों से अपना हाथ खींच लिया।

उसने उन लोगों के डर से ऐसा किया,
जो चाहते थे गैर यहूदियों का भी खतना,
साथ दिया इस दिखावे में औरों ने भी,
और बरनाबास तक भी भटक गया।

सुसमाचार में निहित सत्य के अनुसार,
जब देखा वे सीधे रास्ते नहीं चल रहे,
स्वयं गैर-यहूदियों सा जीवन जीने वाले,
उन्हें यहूदियों सा जीने को विवश कैसे करें।

हम जानते हैं व्यवस्था के कारण नहीं,
बल्कि विश्वास के कारण ठहराये जाते नेक,
हमने इसी लिये धारण किया विश्वास कि,
इस विश्वास के कारण ठहराये जायें नेक।

परमेश्वर का वरदान विश्वास से मिलता है

हे मूर्ख गलातियों, आत्मा का वरदान,
क्या पाया था तुमने व्यवस्था पालन से,
या तुमने यह वरदान पाया था,
सुसमाचार को सुनने, विश्वास करने से।

परमेश्वर, जो तुम्हें आत्मा प्रदान करता है,
और जो तुम्हारे बीच करता है चमत्कार,
क्या इसलिये कि व्यवस्था का विधान पालते हो,
या इसलिये की विश्वास पूर्वक सुना तुमने सुसमाचार।

वे लोग जो विश्वास करते हैं,
इब्राहीम के साथ आशीष पाते हैं,
पर जो व्यवस्था के विधान पर निर्भर,
वे तो कोई अभिशाप ग्रस्त लगते हैं।

स्पष्ट है कि व्यवस्था के विधान के द्वारा,
परमेश्वर के सामने कोई नेक नहीं ठहरता,
विश्वास पर नहीं टिका व्यवस्था का विधान,
जो उसे पालेगा, उसके सहारे ही जीयेगा।

मसीह ने हमारा शाप अपने ऊपर ले,
मुक्त कर दिया उस शाप से हमें,

ताकि विश्वास द्वारा वह आत्मा पा सके,
दिया गया था जिसका वचन हमें।

व्यवस्था का विधान और वचन

जैसे मनुष्य द्वारा कोई करार करने पर,
उसमें कुछ बदलाव नहीं किया जा सकता,
इसी तरह अपनी जगह पर स्थित है,
इब्राहीम और उसके वंशज से की गई प्रतिज्ञा।

देखो, बहुतों को इंगित करने को,
शास्त्र "और उसके वंशजों को" नहीं कहता,
एक-वचन का प्रयोग कर शास्त्र,
और उसके वंशज को ही कहता।

अतः जिस करार को परमेश्वर ने,
पहले ही सुनिश्चित कर दिया था,
430 साल बाद का व्यवस्था का विधान,
उसमें कोई बदलाव नहीं कर सकता।

क्योंकि यदि विधान पर टिका है,
तो फिर वचन पर नहीं टिकेगा उत्तराधिकार,
किन्तु परमेश्वर ने वचन के द्वारा,
दिया इब्राहीम को मुक्त रूप से उत्तराधिकार।

आज्ञा उल्लघंन के अपराध के कारण,
विधान को वचन से जोड़ा गया,
ताकि दिया गया था जिसके लिये वचन,
उस वंशज के आने तक रहे बना।

मूसा की व्यवस्था के विधान का प्रयोजन

यदि ऐसी व्यवस्था का विधान दिया गया होता,
जो लोगों में जीवन का संचार कर सकता,
तो वह विधान परमेश्वर के सामने,
धार्मिकता को सिद्ध करने का साधन ठहरता।

किन्तु शास्त्र ने घोषणा की है कि यह,
समूचा संसार है अधीन पाप की शक्ति के,
ताकि यीशू मसीह में विश्वास के आधार पर,
दिया गया वचन विश्वासी जनों को भी मिले।

इस विश्वास के आने से पहले,
हमें व्यवस्था के विधान की देखरेख में,
इस आने वाले विश्वास के प्रकट होने तक,
रखा गया था बंदी के रूप में।

मसीह तक ले जाने के लिए,
यह विधान एक कठोर अभिभावक सा था,
अब हम उस अभिभावक के अधीन नहीं है,
अब जब यह विश्वास प्रकट हो चुका।

यीशू मसीह में विश्वास के कारण,
तुम सभी संतान हो परमेश्वर की,
क्योंकि मसीह का बपतिस्मा ले कर,
समा गये हो तुम मसीह में ही।

सो अब किसी में कोई अन्तर नहीं,
बिना किसी भेदभाव के तुम सब एक हो,
इब्राहीम के वंशज और मसीह के होने से,
उस वचन के तुम उत्तराधिकारी हो।

किन्तु उत्तराधिकारी जब तक बालक रहता,
वह अभिभावकों और सेवकों के अधीन रहता,
सब कुछ का स्वामी बन पाता तभी,
जब पिता द्वारा निश्चित समय आ जाता।

सो हम भी जब थे बच्चे,
सांसारिक नियमों के थे दास,
उचित अवसर आने पर परमेश्वर ने,
अपने पुत्र को भेजा हमारे पास।

एक स्त्री से जन्मा था वह,
और व्यवस्था के अधीन जीता था,
ताकि हमें मुक्त कर बना सके,
हमें परमेश्वर का गोद लिया बच्चा।

और फिर क्योंकि तुम परमेश्वर के पुत्र हो,
उसने तुम्हारे हृदयों में पुत्र की आत्मा को भेजा,
इसलिये अब तूँ दास नहीं बल्कि पुत्र है,
और उसने तुझे अपना उत्तराधिकारी भी बनाया।

गलाती मसीहियों के लिये पौलुस का प्रेम

पहले जब नहीं जानते थे परमेश्वर को,
तो तुम लोग देवताओं के दास थे,
अब पहचान लिया गया तुम्हें परमेश्वर द्वारा,
फिर क्यों होना चाहते हो अधीन उनके।

तुम्हारे बारे में मुझे डर है,
कि तुम्हारे लिये जो काम मैंने किया,
कहीं वह सारा का सारा काम,
यूँ ही व्यर्थ तो नहीं हो गया।

हे भाइयों, कृपया मेरे जैसे बन जाओ,
देखो, मैं भी बन गया हूँ तुम जैसा,
तुम्हें ही सुनाया था सबसे पहले सुसमाचार,
तुमने स्वागत किया था मेरा स्वर्गदूत सा।

सो क्या हुआ तुम्हारी उस प्रसन्नता का,
मैं साक्षी हूँ तुम्हारे लिये इस बात का,
यदि समर्थ होते तुम, मुझे आँखें भी दे देते,
क्या सच बोलने से ही मैं शत्रु हो गया।

व्यवस्था के विधान पर चलाना चाहने वाले,
लेते है बड़ी गहरी रुचि तुममें,
किन्तु अच्छा नहीं है उनका उद्देश्य,
अलग करना चाहते हैं वे तुम्हें मुझसे।

मेरे प्रिय बच्चों, तुम्हारे लिये मैं,
फिर से झेल रहा हूँ प्रसव वेदना,
जब तक हो नहीं जाते मसीह जैसे,
यही तुम्हारे लिये करता हूँ प्रार्थना।

सारा और हाजिरा का उदाहरण

विधान के अधीन रहना चाहने वालों,
क्या तुमने विधान का यह कहना न सुना,
कि इब्राहीम को दो पुत्र जन्में थे,
एक दासी से, एक स्वतन्त्र स्त्री से जन्मा।

दासी से पैदा हुआ वह पुत्र,
प्राकृतिक परिस्थितियों में जन्मा था,
किन्तु वह दूसरा पुत्र परमेश्वर द्वारा,
की गयी प्रतिज्ञा का परिणाम था।

इन बातों का प्रतीकात्मक अर्थ है,
ये दो स्त्रियां प्रतीक हैं दो वाचाओं का,
एक सिनै पर्वत में प्राप्त वाचा जिसने,
दासता के लिये लोगों को जाना।

यह वाचा सम्बन्धित है हाजिरा से जो,
प्रतीक है अरब स्थित सिनै पर्वत का,
वह वर्तमान यरूशलेम को इंगित करती है,
क्योंकि बच्चों के साथ भुगत रही दासता।

किन्तु स्वतन्त्र है स्वर्ग में स्थित यरूशलेम,
और वही हमारी है जन्मदाता माता,
जैसा कि इस विषय में कहता है शास्त्र,
बांझ! आनन्द मना तूने किसी को न जना।

हर्ष नाद कर, तुझे प्रसव वेदना न हुई,
और हँसी-खुशी में तू खिलाखिला,
क्योंकि परित्यक्ता की अनगिनत संतानें हैं,
उसकी इतनी नहीं जो है पविव्रता।

सो भाइयों, अब तुम इसहाक की जैसी,
परमेश्वर के वचन की संतान हो,
तुम उस दासी की संतान नहीं,
बल्कि तुम तो स्वतन्त्र स्त्री की संतान हो।

स्वतन्त्र बने रहो

मसीह ने हमें स्वतन्त्र किया है,
ताकि हम स्वतन्त्रता का आनन्द ले सकें,
इसलिये दृढ़ बनाये रखना है अपना विश्वास,
ताकि फिर विधान के बोझ से न दबें।

सुनो, मैं पौलुस स्वयं कहता हूँ तुमसे,
यदि तुम करा कर अपना खतना,
लौटना चाहते हो व्यवस्था के विधान को,
तो फिर मसीह का महत्त्व क्या बचना।

अपना खतना कराने वाले प्रत्येक व्यक्ति को,
अनिर्वाय है व्यवस्था के विधान पर चलना,
ऐसा कर जो धर्मी स्वीकृत होना चाहते हैं,
तुम उनको मसीह से दूर ही समझना।

हम आशा रखते हैं विश्वास के द्वारा,
परमेश्वर द्वारा धर्मी स्वीकार किये जाने की,
और आत्मा की सहायता से हम,
बाट जोह रहे हैं सब उसकी।

क्योंकि यीशू मसीह में स्थिति के लिये,
खतना करने न करने का नहीं महत्व,
बल्कि उसमें तो प्रेम से जन्में,
विश्वास का ही है एक मात्र महत्त्व।

जीते रहे हो तुम एक मसीह का जीवन,
क्या रोक रहा है अब तुम्हें सत्य से,
ऐसी विमति जो सत्य से दूर कर रही,
आयी नहीं है परमेश्वर की ओर से।

प्रभु के प्रति है मेरा पूरा भरोसा,
कि तुममें से कोई दूसरा मत नहीं अपनायेगा,
किन्तु तुम्हें विचलित करने वाला,
चाहे कोई भी हो, उचित दंड पायेगा।

हे भाइयों, तुम अपनी स्वतन्त्रता को,
स्वार्थ पूर्ति का साधन मत बनने दो,
उसके विपरीत प्रेम के कारण,
परस्पर एक-दूसरे की सेवा करो।

क्योंकि समूचे व्यवस्था के विधान का निचोड़ है,
अपने साथियों को स्वयं सा प्यार करो,
यदि तुम एक-दूसरे को नकारते रहोगे,
तो संभव है तुम यूँ ही मर-मिटो।

मानव-प्रकृति और आत्मा

मैं कहता हूँ आत्मा के अनुशासन में रहो,
अपनी पाप-पूर्ण प्राकृतिक इच्छाओं से बचो,
क्योंकि विरोधी हैं ये एक दूसरे की,
इसलिये वो कर नहीं सकते, जो तुम चाहते हो।

व्यभिचार, अपवित्रता, भोग-विलास, मूर्तिपूजा,
डाह, क्रोध, बैर, स्वार्थ, नशा, लपंटता,
और ऐसी ही पापपूर्ण इच्छापूर्ति से,
छिन जाती परमेश्वर के राज्य की उत्तराधिकारिता।

इसके विपरीत पवित्र आत्मा उपजाता है,
प्रेम, प्रसन्नता, शांति, धीरज और दयालुता,
नेकी, विश्वास, नम्रता और आत्म-संयम,
जिनके विरुद्ध नहीं है कोई व्यवस्था।

उन लोगों ने जो यीशू मसीह के हैं,
क्रूस पर चढ़ा दिया सभी बुरी बातों को,
हमारे इस नये जीवन का स्रोत आत्मा है,
तो आओ मार्गदर्शन करने दें आत्मा को।

एक दूसरे की सहायता करो

हे भाइयों, तुममें से यदि कोई व्यक्ति,
कोई पाप करते पकड़ा जाए तो,
तो तुम्हें चाहिये नम्रता के साथ उसे,
सुमार्ग पर वापस लाने में सहायता करो।

स्वयं अपने लिये भी सावधानी बरतो,
कहीं किसी परीक्षा में न पड़ जाओ,
मसीह की व्यवस्था का पालन करने को,
परस्पर एक दूसरे का भार उठाओ।

करते रहना चाहिये अपने कर्म का मूल्यांकन,
किसी और से किये बिना तुलना,
क्योंकि हर किसी को अपना दायित्व,
स्वयं अपने आप ही पड़ेगा उठाना।

चाहिये प्रत्येक उस व्यक्ति को,
सुनाया गया परमेश्वर का वचन जिसे,
जो उत्तम वस्तुएं उसके पास हैं,
अपने उपदेशक को साझी बनाए उसमें।

जीवन खेत-बोने जैसा है

मत छलो तुम अपने आपको,
परमेश्वर को कोई बुद्धू बना नहीं सकता,
सब भुगतेंगे अपनी करनी का फल,
जो जैसा बोयेगा वह वैसा काटेगा।

जो बोयेगा अपनी काया के लिये,
वह काया से विनाश की फसल काटेगा,
किन्तु जो आत्मा के खेत में बीज बोएगा,
आत्मा द्वारा अनन्त जीवन की फसल काटेगा।

सो आओ भलाई करते हम कभी ना थकें,
उचित अवसर पर मिलेगा फल भलाई का,
हमें सभी के साथ करनी चाहिये भलाई,
विशेषकर ध्यान रखे अपने सहधर्मियों का।

पत्र का समापन

जो शारीरिक रूप से दिखावा करना चाहते,
तुम पर खतना कराने का दबाव डालते,
क्रूस के कारण सहनी पड़े न यातनाएं,
वे बस ऐसा इसलिये ही करते।

वे स्वयं भी जिनका खतना हो चुका,
व्यवस्था के विधान का पालन नहीं करते,
किन्तु फिर भी चाहते तुम खतना कराओ,
ताकि मार सकें वो इस पर डींगें।

किन्तु जिसके द्वारा मैं संसार के लिये,
और संसार मेरे लिये मर गया,
प्रभु यीशू मसीह के उस क्रूस को छोड़,
किसी और पर गर्व करूँ न जरा।

खतना या बिना खतना कोई महत्त्व नहीं,
महत्त्व है तो बस है नयी सृष्टि का,
सो जो इस धर्म-नियम पर चलेंगे उन पर,
और परमेश्वर के इस्राएल पर होती रहे दया।

इफिसियों

पौलुस की ओर से इफिसुस के संतों,
और यीशू में विश्वासियों के नाम,
परमेश्वर और यीशू मसीह की ओर से,
तुम्हें अनुग्रह तथा शांति का मिले ईनाम।

मसीह में स्थितों के लिये आध्यात्मिक आशीषें

परम पिता परमेश्वर धन्य हो,
मसीह के रूप में उसने हमें आशीर्वाद दिया,
सृष्टि रचना से पहले ही उसने हमें,
पवित्र और निर्दोष बनने के लिये चुना।

यीशू मसीह की बलिदानी मृत्यु के द्वारा,
हम अपने पापों से छुटकारा पा रहे,
उसके सम्पन्न अनुग्रह के कारण,
हम अपने पापों की क्षमा पा रहे।

अपने उसी प्रेम के द्वारा जिसे वह,
मसीह द्वारा हम पर प्रकट करना चाहता था,
बताया है हमें अपनी इच्छा का रहस्य,
जैसा मसीह द्वारा वह दिखाना चाहता था।

परमेश्वर की योजना थी कि उचित समय पर,
सभी वस्तुओं को मसीह में एकत्र करे,
सब होता है परमेश्वर के निर्णय अनुसार,
उसने ही निजी प्रयोजन के कारण चुना हमें,

जब तुमने इस सत्य का संदेश सुना,
जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार था,
तो तुम पर उसकी छाप लगायी गयी,
जिस पवित्र आत्मा का वचन दिया था।

उत्तराधिकार के भाग की जमानत के रूप में,
वह आत्मा तब तक के लिये दिया गया है,
जब तक कि वह हमें, जो उसके अपने हैं,
पूरी तरह से छुटकारा नहीं दे देता है।

इफिसियों के लिये पौलुस की प्रार्थना

प्रभु यीशू मसीह में तुम्हारे विश्वास,
और संतों के प्रति प्रेम के विषय में,
सुना है मैंने जब से लोगों से,
तुम्हारा उल्लेख करता हूँ अपनी प्रार्थनाओं में।

विवेक और दिव्यदर्शन की ऐसी आत्मशक्ति,
प्रदान करे हमारे यीशू का परमेश्वर तुम्हें,
खुल जाये तुम्हारे हृदय की आखें जिससे,
और परम पिता परमेश्वर का ज्ञान मिले तुम्हें।

जान सको तुम वह आशा क्या है,
जिसके लिये बुलाया है उसने तुम्हें,
और कितना अदभुत और सम्पन्न है,
वह उत्तराधिकार जो वह देगा तुम्हें।

हम विश्वासियों के लिये उसकी शक्ति,
अतुलनीय रूप से कितनी महान है,
मसीह को मरे हुओं में से जिलाया,
यह उस प्रयोग के समान है।

अपने दाहिनी ओर बिठाकर मसीह को,
उन सभी पदवियों के ऊपर स्थापित किया उसे,
न केवल अभी बल्कि आने वाले युग में,
दिया जा सकता हो किसी को भी जिसे।

सब कुछ को किया मसीह के अधीन,
सर्वोच्च शिरोमणि बनाया कलीसिया का,
और सब विधियों से सब कुछ को,
परिपूर्ण करती है उसकी ही पूर्णता।

मृत्यु से जीवन की ओर

एक समय तुम पापों में लिप्त थे,
और आध्यात्मिक रूप से मरे हुए थे,
संसार के दूसरे लोगों के समान,
तुम परमेश्वर के क्रोध के पात्र थे।

किन्तु परमेश्वर करुणा का धनी है,
हमारे प्रति अपने महान प्रेम के कारण,
मसीह के साथ-साथ हमें भी जीवन दिया,
और उसके साथ दिया सिंहासन पर आसन।

हुआ है परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा,
अपने विश्वास के कारण उद्धार तुम्हारा,
यह तो है परमेश्वर का वरदान,
जिसमें नहीं है कुछ भी तुम्हारा।

इसलिये की उसने हमारी सृष्टि मसीह में,
ताकि हम नेक कामों को करें,
जिन्हें उसने पहले से ही तैयार किया,
और उन्हीं को जीवन भर करते रहें।

मसीह में एक

याद रखो, जब तुम बिना मसीह के थे,
तुम इस्राएल की बिरादरी से बाहर थे,
अपने भक्तों को जो वचन दिये परमेश्वर ने,
उन पर आधारित वाचा से अनजान थे।

किन्तु अब तुम्हें जो परमेश्वर से दूर थे,
परमेश्वर के निकट ले आया गया है,
यहूदी और गैर यहूदियों के बीच दीवार को,
मसीह द्वारा बलिदान दे गिरा दिया गया है।

सो अब अन्जान या पराये न रहे तुम,
बल्कि संत जनों के संगी साथी हो गये,
प्रेरितों और नबियों की नींव पर खड़े,
तुम वैसे ही एक भवन हो गये।

स्वयं यीशू मसीह इस भवन का,
अत्यंत महत्त्वपूर्ण पत्थर है कोने का,
इसमें आत्मा द्वारा निवास करता परमेश्वर,
और तुम्हारा भी निर्माण किया जा रहा।

गैर यहूदियों में पौलुस का प्रचार-कार्य

इसलिये मैं, पौलुस तुम गैर यहूदियों के लिये,
मसीह यीशू के हेतु बना हूँ बंदी,
परमेश्वर ने अनुग्रह सहित जो काम मुझे सौंपा,
वह योजना दिव्यदर्शन द्वारा जनाई गयी थी।

यह रहस्य पिछली पीढ़ी के लोगों को,
उस तरह नहीं जनाया गया था,
पवित्र प्रेरितों और नबियों की आत्मा द्वारा,
जैसे अब है जनाया जा चुका।

यह रहस्य है कि यहूदियों के साथ,
गैर यहूदी भी हैं सह उत्तराधिकारी,
मसीह यीशू में जो दिया गया वचन,
उस वचन में दोनों हैं सहभागी।

सुसमाचार के कारण मैं उस सुसमाचार का,
प्रचार करने वाला एक सेवक बन गया,
यद्यपि संतजनों में मैं सबसे छोटा हूँ,
किन्तु प्रचार का यह अनुग्रह मुझे मिल गया।

मसीह में विश्वास के कारण हम,
रखते हैं पहुँच परमेश्वर तक,
सो, तुम्हारे लिये मैं जो यातनाएं भोग रहा,
उन से अपनी आशा छोड़ बैठना मत।

मसीह का प्रेम

स्वर्ग में या धरती पर के सभी वंश,
उसी से अपने-अपने नाम ग्रहण करते,
मैं प्रार्थना करता हूँ वह अपनी आत्मा द्वारा,
तुम्हारे भीतरी व्यक्तित्व को सुदृढ़ कर दे।

मसीह का निवास हो तुम्हारे हृदय में,
तुम्हारी जड़ें और नींव प्रेम पर टिकें,
मसीह का प्रेम कितना व्यापक व गम्भीर है,
यह समझने की शक्ति मिल जाये तुम्हें।

और जान लो मसीह के इस प्रेम को,
जो है सभी प्रकार के ज्ञानों से परे,
और इस प्रेम को जान तुम भर जाओ,
परमेश्वर की सभी परिपूर्णताओं से।

एक देह

प्रार्थना करता हूँ जीओ जीवन को ऐसे,
जैसा कि सन्तों के अनुकूल होता,
एक दूसरे को प्रेम से सहते रहो,
धरो धीरज, नम्रता और कोमलता।

वह शांति जो तुम्हें आपस में बाँधती,
उससे उत्पन्न आत्मा की एकता को बनाये रखो,
देह एक है और पवित्र आत्मा भी एक,
एक ही आशा में तुम भागीदार हो।

एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास,
और एक ही है बपतिस्मा,
सबका पिता परमेश्वर भी एक है,
हर किसी में समाया, स्वामी सबका।

दिया गया हममें से हर किसी को,
उसके अनुग्रह का एक विशेष उपहार,
मसीह की उदारता के अनुकूल,
कुछ बनें नबी और कुछ करें प्रचार।

दिये उन्हें ये वरदान मसीह ने,
संतजनों की सेवा के लिये,
ताकि हम जो मसीह की देह हैं,
आत्मा में और दृढ़ हो सकें।

परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान,
और विश्वास में एकाकार होकर,
छू लें मसीह के गौरव की ऊँचाई,
विश्वास करते, परिपक्व पुरुष बन कर।

ताकि हम बालक ही न बने रहे,
जो किसी भी बहकाने में बहक जायें,
लोगों के छल और धूर्त योजनाओं में,
इधर-उधर कहीं ना भटक जायें।

बल्कि प्रेम सहित सत्य बोलते हुए,
मसीह जैसा बनने को विकास करें,
समस्त देह का मसीह सिर है,
प्रेम सहित सब अंग अपना काम करें।

ऐसे जीओ

प्रभु को साक्षी कर तुम्हें देता चेतावनी,
मत जीओ उनके व्यर्थ विचारों के साथ,
परमेश्वर से दूर, अंधकार पूर्ण बुद्धि,
लज्जा रहित उन जड़ मन वालों के साथ।

उतार फेंको अपने पुराने व्यक्तित्व को,
जो भरा हुआ भटकाने वाली इच्छाओं से,
बुद्धि और आत्मा में नया किया जा सके,
और नया स्वरूप धारण कर सको तुम जिससे।

सो त्याग दो तुम झूठ बोलना,
क्रोध में भर पाप न कर बैठो,
चोरी करने वाले करे ना चोरी,
कोई उपयोगी काम करें अपने हाथों।

बोलों ना कोई अनुचित बात कभी,
जो विकास करे, बोलो वो उत्तम बात,
कड़वाहट, बैर, द्वेष और निन्दा को,
आने न दो अपने हृदय के पास।

दयालु और करुणावान बनो तुम,
एक दूसरे के अपराधों को करो क्षमा,
उसी तरह जैसे मसीह के द्वारा,
परमेश्वर ने किया है तुम्हें क्षमा।

ज्योतिमर्य जीवन

प्यारे बच्चों जैसे परमेश्वर का करो अनुकरण,
मसीह की तरह प्रेम के साथ जीओ,
ना व्यभिचार ना कोई भी अपवित्रता,
ना तुममें किसी तरह का लालच हो।

क्योंकि तुम निश्चयपूर्वक यह जानते हो,
कि कोई भी दुराचारी, अपवित्र या लालची,
मसीह के और परमेश्वर के राज्य का,
पा नहीं सकता वह उत्तराधिकार कभी।

एक समय था तुम अंधकार से भरे थे,
पर अब हो प्रभु के अनुनायी तुम,
इस रूप में ज्योति से परिपूर्ण हो,
सो करो प्रकाश पुत्रों का सा आचरण तुम।

सावधानी के साथ देखते रहो कि,
किस तरह का जीवन जी रहे हो,
हर अवसर का पूरा पूरा उपयोग,
अच्छे कर्म करने को करते रहो।

पत्नी और पति

मसीह के प्रति सम्मान के कारण,
एक-दूसरे को समर्पित हो रहो,
हे पत्नीयों, अपने पतियों के प्रति,
प्रभु की तरह समर्पित हो रहो।

क्योंकि किसी भी पत्नी के लिये,
उसका पति ही सर्वोपरि है,
वैसे ही जैसे हमारी कलीसिया के लिये,
प्रभु यीशू मसीह ही सर्वोपरि है।

जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है,
वैसे ही पत्नी रहे समर्पित पति को,
और जैसे मसीह ने किया कलीसिया से प्रेम,
हे पतियों प्रेम करो तुम अपनी पत्नियों को।

पतियों को अपनी-अपनी पत्नियों से,
अपनी देह की तरह करना चाहिये प्रेम,
जो प्रेम करता है अपनी पत्नी से,
वह स्वयं अपने आप से करता है प्रेम।

घृणा नहीं करता कोई अपनी देह से,
बल्कि वह उसे पालता-पोसता, ध्यान रखता,
कहता है शास्त्र, अपने माता-पिता को छोड़,
पुरुष पत्नी से बँध, एक देह हो रहता।

यह रहस्यपूर्ण सत्य बहुत महत्त्वपूर्ण है,
मसीह और कलीसिया पर भी लागू होता।
सो कुछ भी हो पति-पत्नी को,
व्यवहार करना चाहिये प्रेम और आदर का।

बच्चे और माता-पिता

हे बालको, प्रभु में आस्था रखते हुए,
अपने माता-पिता की आज्ञा पालन करो,
उचित है तुम्हारे लिये यह सर्वदा,
अपने माँ-बाप का सदा सम्मान करो।

यह वह पहली आज्ञा है,
इस प्रतिज्ञा से भी मुक्त है जो,
तेरा भला हो और तू,
इस धरती पर चिरायु हो।''

और हे पिताओं तुम भी अपने,
बालकों को क्रोधित न करो,
बल्कि प्रभु से मिली शिक्षा को,
देते हुए उनका पालन पोषण करो।

सेवक और स्वामी

हे सेवको, अपने सांसारिक स्वामियों की,
आज्ञा को शिरोधार्य कर पालन करो,
भय और आदर के साथ ऐसे मानो,
जैसे तुम मसीह की आज्ञा मानते हो।

केवल दिखावे को ही मत करो काम,
बल्कि मसीह के सेवक बन काम करो,
मानो लोगों की नहीं प्रभु की सेवा हो,
उत्साह में भरकर ऐसे काम करो।

याद रखो तुम में से हर एक,
चाहे वह सेवक हो या हो आजाद,
यदि कोई अच्छा काम करता है,
तो प्रभु से पायेगा उसका प्रतिलाभ।

हे स्वामियों, सेवकों के साथ,
तुम भी वैसा ही व्यवहार करो,
उनका और तुम्हारा स्वामी है स्वर्ग में,
वह पक्षपात नहीं करता, याद रखो।

प्रभु का अभेद कवच धारण करो

प्रभु में अपने आप को स्थित कर,
उसकी शक्ति से अपने को शक्तिशाली बनाओ,
धारण करो परमेश्वर के सम्पूर्ण कवच को,
ताकि शैतान की योजनाएं तुम असफल बनाओ।

क्योंकि हमारा संघर्ष मनुष्यों से नहीं है,
बल्कि है दुष्ट अधिकारियों और शक्तियों के साथ,
जब बुरे दिन आयें हर सम्भव प्रयत्न कर,
तुम अडिग रह सको दृढ़ता के साथ।

सो अपनी कमर पर सत्य का फेंटा कस,
और धार्मिकता की झिलम पहन कर,
शांति के सुसमाचार सुनाने की तत्परता के जूते,
पैरों में धारण कर तुम खड़े रहो जमकर।

उन सब से बड़ी बात यह है कि,
विश्वास को ढाल के रूप में ले लो,
जिसके द्वारा तुम बुझा सकोंगे,
बदी द्वारा छोड़े गये जलते तीरों को।

छुटकारे का शिरत्राण पहन कर,
आत्मा की तलवार उठा लो,
करते रहो प्रार्थना और निवेदन,
संतों के लिये विनती अपनालो।

और मेरे लिये भी प्रार्थना करो,
कि जब भी मैं अपना मुँह खोलूँ,
मुझे एक सुसंदेश प्राप्त हो,
सुसमाचार का सत्य तुमसे बोलूँ।

अंतिम नमस्कार

हे भाइयो तुम्हें परमेश्वर और यीशू का,
विश्वास, शांति और प्रेम मिले,
जो यीशू से अमर प्रेम रखते हैं,
परमेश्वर का अनुग्रह मिलता है उन्हें।

फिलिप्पियों

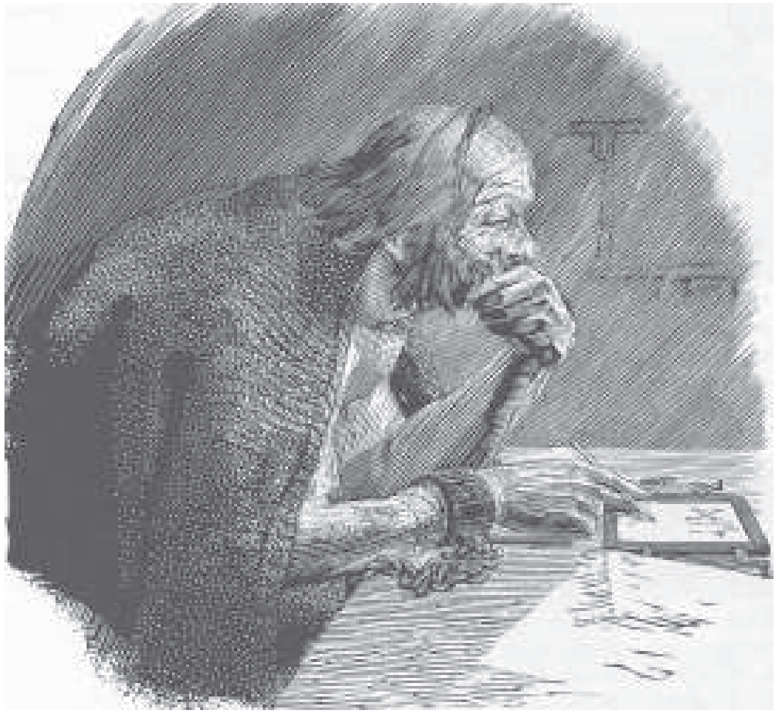

यीशू मसीह के सेवक पौलुस,
और तिमुथियस की ओर से,
मसीह यीशू में स्थित फिलिप्पी के,
रहने वाले सभी संत जनों से।

पौलुस की प्रार्थना

मैं जब जब तुम्हें याद करता हूँ,
तब तब देता परमेश्वर को धन्यवाद,
अपनी हर प्रार्थना में सदा तुम्हारे लिये,
करता हूँ प्रार्थना प्रसन्नता के साथ।

क्योंकि पहले दिन से ही आज तक तुम,
सुसमाचार के प्रचार में मेरे सहयोगी रहे हो,
मुझे भरोसा है परमेश्वर इसे बनाये रखेगा,
जब तक पुनः यीशू द्वारा यह पूरा हो।

मैं प्रार्थना करता हूँ तुम्हारे प्रेम,
गहन हो और ज्ञान के साथ बढ़े,
सदा भले लोगों को अपनाओ तुम,
भले-बुरे में अन्तर कर के।

इस तरह पवित्र और अकलुष बन जाओगे,
तुम उस दिन को जब मसीह आयेगा,
यीशू की करुणा पाकर उत्तम काम करोंगे,
जो उसकी स्तुति बनते और देते उसे महिमा।

पौलुस की विपत्तियां प्रभु के कार्य में सहायक

हे भाइयों, मेरे साथ जो कुछ हुआ है,
उससे सुसमाचार को बढ़ावा ही मिला है,
सबको पता चल गया कि मुझे प्रभु का,
अनुयायी होने के कारण बंदी बनाया गया है।

प्रभु में स्थित अधिकतर भाई,
मेरे बंदी होने से उत्साहित हुए हैं,
और अधिकाधिक साहस के साथ,
सुसमाचार को निर्भयता से सुना रहे हैं।

कुछ ऐसा करते ईर्ष्या और बैर से,
लेकिन कुछ करते प्रेम के कारण,
जो भी हो सुसमाचार का प्रचार हो रहा,
मुझे आनन्द मिल रहा इसके कारण।

क्योंकि मैं जानता हूँ तुम्हारी प्रार्थना द्वारा,
जो सहायता मसीह की आत्मा से मिलती,
उसके परिणामस्वरूप मुझे शीघ्र रिहाई मिलेगी,
मेरी तीव्र इच्छा और आशा है यही।

मुझे इसका विश्वास है कि मैं,
किसी भी बात से नहीं होऊँगा निराश,
चाहे मैं जीऊँ या चाहे मैं मरूँ,
मसीह की महिमा की करूँगा बात।

क्योंकि मेरे जीवन का अर्थ है मसीह,
और मृत्यु का अर्थ है एक उपलब्धि,
जीवित रहने का अर्थ है कर्मो का आनन्द,
सो नहीं जानता मैं क्या हो मेरी गति।

मैं अपने जीवन से विदा होकर,
जाना चाहता हूँ मसीह के पास,
किन्तु तुम्हारे लिये अधिक आवश्यक है,
मेरा यहाँ रहना शरीर के साथ।

हर प्रकार से ऐसा करो कि,
तुम्हारा आचरण सुसमाचार के अनुकूल रहे,
मैं चाहे तुम्हारे पास रहूं या दूर,
तुम्हारा विश्वास दृढ़ता से सुसमाचार में रहे।

मैं सुनना चाहता हूँ अपने विरोधियों से,
तुम किसी प्रकार भी डर न रहे हो,
तुम्हारा यह साहस है उनके विनाश का प्रमाण,
यही मुक्ति के लिये मंजूर परमेश्वर को हो।

एकतापूर्वक एक दूसरे का ध्यान रखो

यदि तुम मसीह के प्रति हो उत्साहित
तो एक सा सोचो, परस्पर प्रेम करो,
ईर्ष्या और बेकार के अहंकार को त्याग,
नम्र बनों, दूसरों के हितों का ध्यान रखो।

यीशू से निस्वार्थ होना सीखो

अपना चिंतन यीशू का सा रखो,
जो अपने स्वरूप में साक्षात परमेश्वर था,
किन्तु इस समानता को विस्मृत कर वह,
सब कुछ त्याग एक सेवक बना था।

बाहरी रूप में मनुष्य जैसा बन वह,
परमेश्वर का इतना आज्ञाकारी बन गया,
कि अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिये,
औरों के लिये क्रूस पर चढ़ गया।

इसलिये परमेश्वर ने भी उसे,
ऊँचे से ऊँचे स्थान पर उठाया,
और जो सब नामों के ऊपर है,
परमेश्वर ने उसे वह नाम दिया।

परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनो

परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण आदर के साथ,
करते जाओ प्रयास अपने उद्धार के लिये,
क्योंकि उसे करने की इच्छा और ताकत,
परमेश्वर ही पैदा करता वह भाव तुममें।

बिना कोई शिकायत या लड़ाई-झगड़े के,
भोले-भाले, पवित्र बन सब काम करो,
इस कुटिल और पथभ्रष्ट पीढ़ी में तुम,
परमेश्वर के निष्कलंक बालक बन रहो।

तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस

प्रभु यीशू की सहायता से तीमुथियुस की,
जल्दी तुम्हारे पास भेजने की आशा है मुझे,
दूसरा ऐसा कोई नहीं मुझसी भावनाएं हों जिसमें,
और चिंतित हो जो तुम्हारे कल्याण के लिये।

क्योंकि और सभी अपने कामों में लगे हैं,
यीशू मसीह के कामों में कोई ना लगा,
सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ उसने,
एक पुत्र की तरह की है सेवा।

मैं आवश्यक समझता हूँ कि इपफ्रुदीतुस को भी,
जो मेरा भाई है और है साथी कार्यकर्ता,
भेज दूँ उसे मैं तुम्हारे पास ताकि,
तुम्हारा प्रतिनिधि बन करें वह मेरी सहायता।

मसीह सबके ऊपर है

सावधान रहो कुकर्म करने वालों से,
परमेश्वर की उपासना है सच्चा खतना,
शारीरिक चीजों पर भरोसा है बेमानी,
सच्चा है बस यीशू पर गर्व रखना।

यद्यपि मैं स्वयं जो कुछ शारीरिक है,
उस पर भरोसा कर सकता था,
मेरे पास ऐसा करने के लिये,
औरों से कहीं बढ़ कर कारण था।

आठवें दिन कर दिया गया मेरा खतना,
मैं इस्राएली हूँ बेंजमीन के वंश का,
इब्रानी माता-पिता से जन्म लिया,
व्यवस्था विधान का समर्थक फरीसी था।

जहाँ तक मेरी निष्ठा का प्रश्न है,
सताया था बहुत कलीसिया को मैंने,

किन्तु तब जो मेरा लाभ था आज उसे,
मसीह के लिये अपनी हानि पाया मैंने।

मसीह यीशू के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण,
आज तक सब कुछ को मैं हीन समझता,
उसी के लिये सब त्याग दिया है मैंने,
सब कुछ को घृणा की वस्तु समझता।

मेरी उस धार्मिकता के कारण नहीं जो,
व्यवस्था के विधान पर टिकी थी,
बल्कि उस धार्मिकता के कारण जो,
मसीह में विश्वास के कारण मिलती।

जानना चाहता हूँ मैं मसीह को,
उस शक्ति का अनुभव चाहता हूँ करना,
जिससे उसका पुनरुत्थान हुआ था,
महसूस करना चाहता हूँ उसकी भावना।

पा लेना चाहता हूँ उसी रूप को,
जिसे उसने मृत्यु के द्वारा पाया था,
मैं भी मरे हुओं में से जी उठूँ,
उसी तरह, इसकी करता हूँ आशा।

लक्ष्य पर पहुँचने का यत्न करते रहो

ऐसा नहीं है कि मुझे हो चुकी उपलब्धि,
अथवा मैं पूरा सिद्ध ही बन चुका,
कर रहा हूँ पर उसे पाने का यत्न,
जिसके लिये यीशू ने मुझे बनाया था बँधुआ।

जो बीत गया उसे बिसार कर,
लक्ष्य पाने को संघर्ष करता रहा हूँ,
जिसे पाने के लिये परमेश्वर ने बुलाया,
उसे पाने का यत्न करता रहा हूँ।

फिलिप्पियों को पौलुस का निर्देश

तुम मेरी प्रसन्नता हो, मेरा गौरव हो,
हे भाइयों, प्रभु में दृढ़ बने रहो,
बनाये रखो प्रभु में एक से विचार,
और प्रभु में सदा आनन्द मनाते रहो।

तुम्हारी सहनशील आत्मा का ज्ञान,
हे भाइयों, सब लोगों को हो,
हर परिस्थिति में धन्यवाद देते हुए,
परमेश्वर से प्रार्थना करते रहो।

परमेश्वर से मिलने वाली शांति,
तुम्हारी समझ से परे है जो,
मसीह यीशू में बनाये रखेगी,
तुम्हारे हृदय और बुद्धि को।

जो सत्य, उचित और पवित्र है,
प्रशंसा और जो बाते हैं, सराहने योग्य,
उन बातों का अभ्यास करते रहो,
तुम्हारे साथ रहेगा परमेश्वर शांति का स्रोत।

फिलिप्पी मसीहियों के उपहार के लिये पौलुस का धन्यवाद

तुम मेरी भलाई के लिये,
निश्चय ही सोचा करते थे,
किन्तु तुम्हें अवसर मिला नहीं,
अपनी भावना प्रकट करने के लिये।

अब आखिरकार तुममें मेरे प्रति,
जाग उठी है चिंता फिर से,
मैं प्रभु में बहुत आनंदित हुआ हूँ,
अवगत हो तुम्हारी इस भावना से।

कह नहीं रहा हूँ मैं यह,
किसी भी आवश्यकता के कारण,
क्योंकि सीख लिया है मैंने,
विचलित न होना किसी भी कारण।

चाहे अभाव हो या हो सम्पन्नता,
चाहे पेट भरा हो या रहूँ भूखा,
जो मुझे शक्ति देता है उसके द्वारा,
सामना कर सकता हूँ सब कुछ का।

कुछ भी हो हे फिलिप्पियों तुमने,
अच्छा किया है मेरे कष्टों में हाथ बढ़ा,
सुसमाचार के प्रचार के उन आरम्भिक दिनों में,
तुम्हारी कलीसिया ने ही बस मेरा साथ दिया।

बार-बार सहायता भेजी मुझे तुमने,
मेरी आवश्यकताओं से बढ़ चढ़ कर,
मसीह यीशू में प्राप्त अपने भव्य धन से,
तुम्हारी सभी आवश्यकताएं पूरी करे परमेश्वर।

पत्र का समापन

मसीह यीशू के हर संत को नमस्कार,
तुम्हें सब लोग कहते हैं नमस्कार,
तुममें से हर एक पर प्रभु यीशू का,
सदा अनुग्रह रहे तुम्हारी आत्मा के साथ।

कुलुस्सियों

पौलुस तथा हमारे भाई तिमुथियुस की ओर से,
कुलुस्से के सभी विश्वासी और सन्तों को,
परमेश्वर की ओर से अनुग्रह और शांति मिले,
तुम्हारे लिये प्रार्थना करते धन्यवाद देते उसको।

मसीह यीशू में तुम्हारा विश्वास,
और संत जनों से प्रेम तुम्हारा,
यह उस आशा के कारण हुआ,
सुन चुके जिसे सुसमाचार के द्वारा।

उस परम पिता का धन्यवाद करो,
जिसने तुम्हें इस योग्य बनाया,
कि संत जनों के साथ तुम्हें भी,
उत्तराधिकार पाने में सहभागी बनाया।

उद्धार किया हमारा अन्धकार की शक्ति से,
अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया,
छुटकारा मिला हमें उस पुत्र के द्वारा ही,
यानि हमें हमारे पापों से माफ करवाया।

मसीह के दर्शन में परमेश्वर के दर्शन

वह अदृश्य परमेश्वर का दृश्य रूप है,
और सिरमौर है वह सारी सृष्टि का,
जो कुछ स्वर्ग में और धरती पर है,
उसी की शक्ति से सब सम्पन्न हुआ।

कुछ भी चाहे दृश्यमान हो या अदृश्य,
चाहे सिंहासन हो या कोई शासक हो,
सब कुछ रचा गया है उसी के द्वारा,
और उसी के लिये रचा गया है वो।

अस्तित्व था उसी का सबसे पहले,
उसी की शक्ति से रहती सब वस्तुएं बनी,
वही आदि है और मरों को फिर से,
जी उठाने का सर्वोच्च अधिकारी है वही।

अपनी समग्रता के साथ परमेश्वर ने,
करना चाहा उसी में वास,
उसी के द्वारा समूचे ब्रह्मण्ड को परमेश्वर ने,
पुनः करना चाहा अपने साथ।

एक समय बुरे कामों और विचारों के कारण,
तुम परमेश्वर के लिये अनजाने थे,
किन्तु मसीह की मृत्यु के द्वारा उसने,
तुम्हें स्वयं ले लिया अपने आप से।

ताकि तुम्हें पवित्र और निष्कलंक बना कर,
अपने सम्मुख प्रस्तुत किया जा सके,
विश्वास में अटलता, सुसमाचार में आशा,
दोनों की जरूरत है उसके वास्ते।

कलीसिया के लिये पौलुस का कार्य

उठाता हूँ तुम्हारे लिये मैं जो कष्ट,
उनमें आनन्द का अनुभव करता हूँ,
मसीह की यातनाओं में रह गयी जो कमी,
उसे अपने शरीर में पूरा करता हूँ।

परमेश्वर ने मुझे जो आदेश दिया,
तथानुसार उसका सेवक ठहराया गया हूँ,
ताकि मैं परमेश्वर के समाचार का,
पूरी तरह से प्रचार कर सकूँ।

यह संदेश रहस्यपूर्ण सत्य है जो,
आदिकाल से सभी की आँखों से ओझल था,
किन्तु अब इसे परमेश्वर के द्वारा,
संत जनों पर प्रकट कर दिया गया।

परमेश्वर अपने संत जनों पर,
चाहता था यह प्रकट कर देना,

कि परमेश्वर का यह रहस्यपूर्ण सत्य,
वैभव से परिपूर्ण है कितना।

और वह रहस्यपूर्ण सत्य यह है,
कि मसीह तुम्हारे भीतर ही रहता,
और परमेश्वर की महिमा प्राप्त करने को,
वही है हमारी एक मात्र आशा।

अपने समूचे ज्ञान का उपयोग कर,
हम औरों को शिक्षा और निर्देश देते,
ताकि मसीह में एक परिपूर्ण व्यक्ति बना,
परमेश्वर के आगे उपस्थित कर सकें उसे।

मैं चाहता हूँ तुम्हें पता चल जाये,
कठोर परिश्रम जो मैं कर रहा,
ताकि तुम सबके मन को प्रोत्साहन मिले,
और परस्पर प्रेम का बंधन हो गहरा।

सच्चे ज्ञान से प्राप्य विश्वास का धन,
और वह रहस्यपूर्ण सत्य, स्वयं मसीह है जो,
विवेक और ज्ञान की सब निधियां जिसमें,
मैं चाहता हूँ उन्हें मिल जाये वो।

कह रहा हूँ यह मैं इसलिये तुम्हें,
की कोई कहीं तुम्हें भरमा न दे,
मसीह में तुम्हारे विश्वास की दृढ़ता और,
तुम्हारे अनुशासन को देख, प्रसन्न हूँ मैं।

मसीह में बने रहो

बने रहो प्रभु यीशू मसीह में तुम,
तुम्हारी जड़ें, तुम्हारा निर्माण उसी पर हो,
पाते रहो अपने विश्वास में दृढ़ता,
परमेश्वर के प्रति अत्यधिक आभारी रहो।

ध्यान रखो मनुष्य के हाथों नहीं बल्कि,
तुम्हारा खतना भी उसी में हुआ,
पापपूर्ण मानव प्रकृति से छुटकारा दिला,
यह खतना मसीह द्वारा सम्पन्न हुआ।

जिस परमेश्वर ने उसे पुनः जिलाया,
उसके कार्य में तुम्हारे विश्वास के कारण,
सब पापों को मुक्त रूप से क्षमा कर,
मसीह के साथ-साथ तुम्हें दिया जीवन।

वह अभिलेख जो हमारे विरुद्ध और प्रतिकूल था,
क्रूस पर कीलों से जड़ मिटा दिया गया,
आध्यात्मिक शासकों व अधिकारियों को परमेश्वर द्वारा,
अपने विजय अभियान में बंदी बना चलाया गया।

मनुष्य की शिक्षा और उसके बनाये नियमों पर मत चलो

सो खाने पीने या त्योहारों को लेकर,
कोई तुम्हारी आलोचना न करे,
झूठी उपासना ना करे खुद को प्रताड़ित,
वह तुम्हारा मार्ग बाधित न करे।

क्योंकि तुम मर चुके हो मसीह के साथ,
संसारी रस्मों से छुटकारा पा चुके हो,
फिर क्यों करते हो तुम ऐसा आचरण,
जैसे तुम उसी दुनिया के हो।

ऐसे नियमों का पालन करते हो,
जैसे ये मत छूओ, इसे ना खाओ,
ये सब वस्तुएं नष्ट हो जायेंगी,
क्यों इनकी अधीनता स्वीकार करते हो।

मसीह में नया जीवन

क्योंकि यदि तुम्हें जिला कर उठाया गया है,
मसीह के साथ मरे हुओं में से,
तो उन वस्तुओं के लिये प्रयत्नशील रहो,
जो वस्तुएं सम्बन्धित हैं स्वर्ग से।

क्योंकि तुम्हारा पुराना व्यक्तित्व मर चुका है,
और नया जीवन छिपा है परमेश्वर में,
जब मसीह जो हमारा जीवन है, फिर प्रकटेगा,
तुम भी प्रकट होओगे उसकी महिमा में।

अंत कर दो सांसारिक वासनाओं का,
मूर्ति पूजा का ही एक रूप हैं ये,
प्रकट होने जा रहा परमेश्वर का क्रोध,
उसके क्रोध का कारण बनती हैं ये।

अपने रचियता के स्वरूप में स्थित होकर,
तुम्हारा व्यक्तित्व निरन्तर नया होता जा रहा,
परिणामस्वरूप कोई अन्तर न रहा किसी में,
मसीह है विश्वासियों का निवासऔर सर्वेसर्वा।

क्योंकि तुम परमेश्वर के चुने हुए,
पवित्र और उसके प्रिय जन हो,
इसलिये सहानुभूति, दया, नम्रता, कोमलता,
और धीरज को तुम धारण करो।

आपस में एक दूसरे को क्षमा कर दो,
जैसे परमेश्वर मुक्त भाव से क्षमा करता,
परिपूर्ण करता प्रेम आपस में बाँधकर,
तुम्हारे मन में शांति का शासन हो सदा।

जो कुछ भी तुम करो या कहो,
वह सब प्रभु यीशू के नाम पर हो,
उसी के द्वारा तुम हर समय,
परमेश्वर को धन्यवाद देते रहो।

नये जीवन के नियम

अपने पतियों को समर्पित रहो, हे पत्नियों,
जैसे प्रभु के अनुयायियों को शोभा देता,
हे पतियों, प्रेम करो अपनी पत्नियों से,
उनके प्रति नरम रहे तुम्हारा रवैया।

हे बालकों, अपने माता पिता की,
पालन करो सब बातों में आज्ञा,
क्योंकि प्रभु के अनुयायियों के,
उस व्यवहार से परमेश्वर प्रसन्न होता।

लेकिन हे पिताओ, अपने बालकों को,
मत भरो तुम कडुवाहट से,
कहीं ऐसा न हो कि इस कारण,
प्रयत्न ही करना छोड़ दें वे।

हे सेवकों, अपने सांसारिक स्वामियों की,
सब बातों का तुम पालन करो,
ऊपरी तौर पर केवल उसी समय नहीं,
जब वे तुमको देख रहे हों।

करो तुम जो कुछ भी काम,
सच्चे और समूचे मन से करो,
मानो तुम उन लोगों के लिये नहीं,
बल्कि प्रभु के लिये कर रहे हो।

याद रखो कि तुम्हें प्रभु से,
उत्तराधिकार का प्रतिफल प्राप्त होगा,
वहाँ कोई पक्षपात नहीं है,
जो जैसा करेगा वैसा ही पायेगा।

हे स्वामियों, तुम अपने सेवकों को,
जो उचित और बनता है दे दो,
तुम्हारा भी है कोई स्वामी,
सब कुछ तुमको देता है जो।

पौलुस की मसीहियों के लिये सलाह

लगे रहो सदा प्रार्थना में,
सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहो,
हमें प्रवचन व प्रचार का अवसर मिले,
हमारे लिये भी प्रार्थना करते रहो।

विवेकपूर्ण व्यवहार करो बाहरी लोगों से
हर अवसर का पूरा-पूरा उपयोग करो,
मीठी बोली, बुद्धि की छटा बिखेरे,
जिसको जैसा उचित हो उत्तर दो।

पौलुस के साथियों के समाचार

प्रभु में स्थित मेरे विश्वासी साथी,
तुम्हें मेरे सभी समाचार बता देगें,
तुम आध्यात्मिक रूप से विकास करते रहो,
वे तुम्हारे लिये प्रयास करते रहेंगे।

1. थिस्सलुनीकियों

थिस्सलुनीकियों के परम पिता परमेश्वर,
और प्रभु यीशू में स्थित कलीसिया को,
पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से,
परमेश्वर का अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

थिस्सलुनीकियों का जीवन और विश्वास

हम तुम सब के लिये परमेश्वर को,
सदा धन्यवाद देते रहते हैं,
और अपनी प्रार्थनाओं में हम,
सदा तुम्हें शामिल करते रहते हैं।

हमें ध्यान बना रहता है सदा,
तुम्हारे कठोर परिश्रम, विश्वास और प्रेम का,
और हमारे प्रभु यीशू मसीह में आशा से,
उत्पन्न तुम्हारी धैर्यपूर्ण सहनशीलता का।

चुने हुए हो तुम क्योंकि सुसमाचार,
मात्र शब्दों में तुम्हारे पास नहीं पहुँचा,
बल्कि सामर्थ्य और गहन श्रद्धा के साथ,
पवित्र आत्मा द्वारा तुम्हारे पास पहुँचा।

कठोर यातनाओं के बीच तुमने,
पवित्र आत्मा से प्राप्त प्रसन्नता सहित,
ग्रहण किया सुसमाचार को और,
जीने लगे एक आदर्श चरित्र।

थिस्सुलुनीका में पौलुस का कार्य

हे भाइयों, तुम जानते हो कि,
हमारा तुम्हारे पास आना निरर्थक नहीं था,
दुर्व्यवहार और विरोध सह कर भी,
हमें सुसमाचार सुनाने का साहस मिला।

अपने उपदेश सुनाने का हेतु,
यह नहीं कि हममें है कोई भटकन,
न ही हमारे उद्देश्य दूषित हैं,
न किसी को छलने का जतन।

करते न किसी को प्रसन्न करने की कोशिश,
बल्कि हम तो परमेश्वर को प्रसन्न करते,
हमारा उपदेश किसी लोभ का बहाना नहीं,
न किसी मान-सम्मान की आशा करते।

मसीह के प्रेरितों के रूप में हम,
यद्यपि अपना अधिकार जमा सकते थे,
किन्तु माँ जैसे बच्चों का पोषण करती,
वैसे ही नम्रता से तुम्हारे बीच रहे।

तुम और परमेश्वर भी है साक्षी,
आस्था और धार्मिकता से व्यवहार किया हमने,
जैसे पिता करता बच्चों के साथ व्यवहार,
वैसे ही सुख चैन दिया तुम्हें हमने।

हे भाइयों तुमने अपने देश-भाइयों से,
वैसी ही यातनाएं हैं झेली,
जैसे यहूदिया में कलीसिया के लोगों ने,
उन लोगों के हाथों थी झेली।

मार डाला प्रभु यीशू को जिन्होंने,
और नबियों को खदेड़ बाहर किया,
वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते,
उन्होंने तो मानवता का विरोध किया।

विधार्मियों को सुसमाचार का उपदेश देने से,
बाधा खड़ी करते रहते हैं वो,
कहीं औरों का उद्धार न हो जाये,
अपने पापों का घड़ा भरते रहते हैं वो।

फिर मिलने की इच्छा

हे भाइयों, थोड़े समय के लिये,
बिछुड़ गये थे हम शरीर से तुमसे,
मुझ पौलुस ने अनेक बार प्रयत्न किया,
पर बाधा डाली शैतान ने उसमें।

ठहर गये थे हम एथेंस में अकेले,
पर तिमुथियुस को भेजा तुम्हारे पास,
ताकि इन वर्तमान यातनाओं से डरकर,
कहीं कोई छोड़ बैठे न आस।

तिमुथियुस ने लौटकर दिया हमें,
तुम्हारे विश्वास और प्रेम का समाचार,
उसने बताया तुम हमें प्यार करते हो,
जैसे हम हैं तुमसे मिलने को बेकरार।

परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशू हमें,
तुम्हारे पास आने का मार्ग दिखायें,
और तुममें परस्पर और औरों के प्रति,
जो प्रेम हैं उसमें बढ़ोत्तरी करायें।

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन

हे भाइयों, प्रभु यीशू के नाम पर,
हमारे उपदेशानुसार अपना जीवन जीते जाओ,
वासनाओं और व्यभिचार से दूर रह,
एक आदरणीय और पवित्र जीवन जीते जाओ।

चाहता है परमेश्वर हम पवित्र बनें,
इसलिये जो इस शिक्षा को नकारता,
वह वास्तव में पवित्र आत्मा देने वाले,
उस परम पिता परमेश्वर को ही नकारता।

शांतिपूर्ण जीने को आदरणीय समझ,
अपने काम से ही बस काम रखो,
काम करो स्वयं अपने हाथों से,
किसी और की ना आस रखो।

प्रभु का लौटना

जो चिर-निद्रा में सो गये हैं,
हे भाइयों, उनके विषय में भी जानो,
ताकि जिनके पास आशा नहीं है,
उनकी तरह तुम शोक न मानों।

क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं,
कि यीशू मर कर फिर जी उठा,
तो जिन्होंने उसमें विश्वास करते त्यागे प्राण,
परमेश्वर उनके साथ भी करेगा वैसा।

जब प्रभु का फिर से आगमन होगा,
तो हम जो जीवित और यहीं हैं,
उनसे आगे नहीं निकल पाएंगे,
जो मर चुके और यहाँ नहीं हैं।

क्योंकि जब परमेश्वर की बिगुल बजेगी,
तो प्रभु स्वयं स्वर्ग से उतरेगा,
उस समय जिन्होंने मसीह में प्राण त्यागे,
पहले उन्हें ही उठाया जायेगा।

उसके बाद हमें प्रभु से मिलने के लिये,
बादलों के बीच ऊपर उठा लिया जाएगा,
इस प्रकार हमें सदा के लिये,
प्रभु के साथ एक कर दिया जाएगा।

प्रभु के स्वागत को तैयार रहो

हे भाइयों, तुम तो जानते हो कि,
चुपके से आ जायेगा वह दिन,
जब प्रभु फिर से लौट कर आयेगा,
और कोई बच न पायेगा उस दिन।

किन्तु तुम अन्धकार के वासी नहीं हो,
कि वह दिन चुपके से चोर सा आ जाये,
तुम तो प्रकाश और दिन की संतान हो,
इसलिये सावधान रहो सोते ना रह जाये।

आओ विश्वास और प्रेम के साथ,
उद्धार की आशा को दृढ़ कर लें,
क्योंकि परमेश्वर ने प्रभु यीशू के द्वारा,
मुक्ति पाने के लिये बनाया है हमें।

अंतिम निर्देश और अभिवादन

हे भाइयों, प्रभु में जो तुम्हें राह दिखाते,
प्रेम से उन्हें पूरा आदर देते रहो,
शांति से रहो, आलसियों को चेताओ,
और डरपोकों को प्रोत्साहित करते रहो।

करते रहो दीनों की सहायता,
सब के साथ धीरज से रहो,
बुराई का बदला बुराई से नहीं,
भलाई का प्रयास सदा करते रहो।

छोड़ों ना कभी प्रार्थना करना,
हर परिस्थिति में परमेश्वर का धन्यवाद करो,
जानों मत नबियों के संदेश को छोटा,
हर बात की असलियत को परखो।

2. थिस्सलुनीकियों

पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से,
थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम,
परमेश्वर और प्रभु यीशू की ओर से,
अनुग्रह और शांति का मिले वरदान।

पौलुस का धन्यवाद तथा परमेश्वर के न्याय की चर्चा

हे भाइयो, तुम्हारे लिये हमें सदा,
करना चाहिये परमेश्वर का धन्यवाद,
क्योंकि तुम्हारे विश्वास और प्रेम का,
आश्चर्यजनक रूप से हो रहा विकास।

निश्चय ही न्यायोचित ही है,
यह परमेश्वर की दृष्टि में,
कि जो तुम्हें दुख दे रहे हैं,
बदले में दुख ही मिले उन्हें।

और तुम जो कष्ट उठा रहे हो,
हमारे साथ उन्हें तब विश्राम दिया जाये,
जब प्रभु यीशू अपने दूतों के साथ,
स्वर्ग से धधकती आग में प्रकट हो जाये।

और जो परमेश्वर को नहीं जानते,
तथा यीशू के सुसमाचार पर नहीं चलते,
हटा लिया जाएगा प्रभु के सामने से,
और अनन्त विनाश का दण्ड मिलेगा उन्हें।

इसलिये हम सदा प्रार्थना करते हैं,
तुम्हारी हर उत्तम इच्छा वह पूर्ण करे,
और जो तुम्हारे विश्वास का परिणाम है,
हर उस काम को सफल करे।

प्रभु के आने से पूर्व दुर्घटनाएं घटेगी

हे भाइयो, मत खोना तुम अपना विवेक,
ना ही स्वयं को छला जाने दो,
जब तक परमेश्वर से मुँह मोड़ने का,
समय नहीं आता दिन नहीं आएगा वो।

व्यवस्थाहीनता का व्यक्ति प्रकट होकर,
अपने को हर वस्तु से ऊपर कहेगा,
मंदिर में जा, सिंहासन पर बैठ,
परमेश्वर होने का वह दावा करेगा।

उस व्यवस्थाहीन व्यक्ति का आना,
शैतान की शक्ति से होगा,
झूठी शक्ति, चमत्कार छल-प्रपंच,
उन सब से वह भरा होगा।

सत्य से प्रेम नहीं किया जिन्होंने,
परमेश्वर उनमें एक छली शक्ति भर देगा,
झूठ पर विश्वास करेंगे वे लोग,
ऐसे झूठों को परमेश्वर दण्ड देगा।

तुम्हें छुटकारे के लिये चुना गया है

पवित्र कर आत्मा के द्वारा परमेश्वर ने,
और सत्य में तुम्हारे विश्वास के कारण,
उद्धार पाने के लिये चुना है तुम्हें,
और करने यीशू की महिमा को धारण।

जिस सुसमाचार का हमने तुम्हें उपदेश दिया,
उसके द्वारा परमेश्वर ने बुलाया है तुम्हें,
जिसने हमें आनन्द दिया, अपना प्रेम दर्शाया,
हर अच्छी बात में सुदृढ़ बनाये तुम्हें।

हमारे लिये प्रार्थना करो

हे भाइयो, हमारे लिये प्रार्थना करो,
कि प्रभु का संदेश फैले, महिमा पाये,
प्रार्थना करो कि हम भटके हुओं,
और दुष्ट लोगों के नजदीक न जायें।

कर्म की अनिवार्यता

हमारे प्रभु यीशू के नाम में,
हे भाइयो, यह आदेश है तुम्हें,
कि हर उस भाई से दूर रहो,
अनुचित जीवन जीना हो जिन्हें।

तुम जानते हो, तुम्हारे बीच रह कर,
दिन रात काम में जुटे रहे हम,
कभी मुफ्त में ग्रहण किया न भोजन,
ना कभी किसी पर बोझ बने हम।

ऐसा नहीं कि हमें अधिकार नहीं था,
कि हम तुमसे कोई सहायता ले सकें,
बल्कि हम इसलिये करते रहे मेहनत,
कि लोग हमारा अनुसरण कर सकें।

हमें बताया गया है कि तुम्हारे बीच,
कुछ ऐसे लोग भी रहते हैं,
जो काम न करते, बस टांग अड़ाते,
यूँ ही इधर-उधर घूमा करते हैं।

जो चले ना हमारे इन आदेशों पर,
ऐसे व्यक्तियों पर अपनी नजर रखो,
उनसे दूर रहो ताकि उन्हें लज्जा आये,
पर शत्रु जैसा व्यवहार मत करो।

1. तीमुथियुस

परमेश्वर और हमारी आशा यीशू के आदेश से,
पौलुस की ओर से जो एक प्रेरित बना,
तीमुथियुस को जो विश्वास में सच्चा पुत्र है,
अनुग्रह, दया और शांति प्राप्त हो सदा।

झूठे उपदेशों के विरोध में चेतावनी

मार्कदुनिया जाते समय मैंने तुझसे,
जो इफिसुस में ठहरने को कहा था,
मैं उसी आग्रह को फिर दोहरा रहा हूँ,
ताकि झूठी शिक्षा लोगों को न दे बहका।

इस आग्रह का प्रयोजन वह प्रेम है,
जो उत्पन्न होता निश्छल विश्वास से,
कुछ लोग भटक वाद-विवादों में उलझे,
जो कहते वो वह भी नहीं समझते।

हम जानते हैं कि व्यवस्था के विधान का,
ठीक-ठीक प्रकार से प्रयोग है अच्छा,
व्यवस्था का विधान धर्मियों के लिये नहीं,
बल्कि बना दुराचारियों को देने को शिक्षा।

परमेश्वर के अनुग्रह का धन्यवाद

धन्यवाद करता हूँ मैं प्रभु यीशू मसीह का,
उसने नियुक्त किया मुझे अपनी सेवा में,
यद्यपि पहले मैं उसका अपमान करता था,
पर मुझे अनुग्रह और प्रेम मिला यीशू में।

यह सत्य है और स्वीकार करने योग्य,
कि यीशू मसीह करने आया उद्धार पापियों का,
फिर मैं तो सब से बड़ा पापी हूँ,
इसीलिये तो की गयी है मुझ पर दया।

ताकि आगे जो उसमें विश्वास ग्रहण करेंगे,
उनके लिये अनंत जीवन प्राप्ति के लिये,
एक उदाहरण बना कर मुझ पापी का,
अपनी असीम सहनशीलता को प्रदर्शित कर सके।

मेरे पुत्र तीमुथियुस भविष्यवक्ताओं के वचनानुसार,
दे रहा हूँ मैं यह आदेश तुझे,
ताकि विश्वास और उत्तम चेतना युक्त हो,
तू नेकी की लड़ाई लड़ सके।

हुमिनयुस और सिकंदर ऐसे है जिनका,
विश्वास और उत्तम चेतना नष्ट हो गये,
सौंप दिया है मैंने उन्हें शैतान को,
ताकि उन्हें उचित दण्ड दिया जा सके।

स्त्री-पुरुषों के लिये कुछ नियम

चाहता है परमेश्वर सभी व्यक्तियों का उद्धार,
और चाहता है वे सत्य को पहचानें,
क्योंकि परमेश्वर एक और एक ही है मध्यस्थ,
और वह मनुष्य है मसीह यीशू सब जाने।

फिरौती के रूप में दे डाला उसने,
सब लोगों के लिये स्वयं अपने को,
इस प्रकार दी उसने इसकी साक्षी,
और इसका प्रचार करने को चुना मुझको।

इसलिये मैं चाहता हूँ हर कहीं सब पुरुष,
पवित्र हाथों को ऊपर उठाकर,
प्रार्थना करें परमेश्वर को समर्पित हो,
क्रोध और मन-मुटाव मिटा कर।

स्त्रियों से यह चाहता हूँ मैं,
वे शालीन और आत्म-नियन्त्रित हो रहें,
जो स्वयं को परमेश्वर की उपासिका मानती,
उत्तम कार्यों से स्वयं को सजाती रहें।

स्त्री को चाहिये कि वह शांत भाव से,
समग्र समपर्ण के साथ शिक्षा ग्रहण करे,
मैं नहीं चाहता कि स्त्री पुरुष को,
सिखाए पढ़ाये या उस पर शासन करे।

क्योंकि बनाया गया था आदम को पहले,
और तब पीछे बनाया गया हव्वा को,
आदम को बहकाया नहीं जा सका था,
लेकिन बहका लिया गया था हव्वा को।

किन्तु माँ के कर्त्तव्यों को निभाते,
रहें प्रेम, पवित्रता, समपर्ण के साथ,
तो मेरा विश्वास है कि वे,
उद्धार को अवश्य करेंगी प्राप्त।

कलीसिया के निरीक्षक

आवश्यक है यह निरीक्षक के लिये कि वह,
एक पत्नीव्रता, शालीन और आत्मसंयमी हो,
सज्जन शांति प्रिय और हो सन्तोषी,
अपने परिवार का अच्छा प्रबंधक हो।

उसके बच्चे रहें नियन्त्रण में उसके,
और उसका पूरा सम्मान करते हों,
जो कर न सके घर का प्रबन्ध,
कैसे कलीसिया का निरीक्षक बन सकता है वो।

कलीसिया के सेवक

सम्मानीय होने चाहिये कलीसिया के सेवक,
जिनके शब्दों पर विश्वास किया जाता हो,
मदिरा पान से दूर, नेक कमाई वाले,
मन में विश्वास के सत्य को धरे हो।

पहले परखे जाये ये निरीक्षक की तरह,
फिर कलीसिया के सेवक का कार्य करें,
केवल एक ही पत्नी होनी चाहिये उनकी,
और जो घर का अच्छा प्रबन्ध करें।

हमारे जीवन का रहस्य

लिख रहा हूँ यह इस आशा के साथ,
कि जल्दी ही पास आऊँगा मैं तुम्हारे,
यदि देर हो जाये, तो तुम्हें पता रहे,
कैसा व्यवहार होना चाहिये लोगों का तुम्हारे।

याद रखो कि कलीसिया ही,
सत्य की नींव और आधार स्तम्भ है,
हमारे धर्म के सत्य का रहस्य,
निःसन्देह महान और महिमामय है।

नर देह धर वह प्रकट हुआ,
और आत्मा ने नेक साधा उसे,
प्रचारित हुआ, विश्वसनीय हुआ राष्ट्रों में,
महिमा में ऊपर उठाया गया उसे।

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

स्पष्ट कहा गया है कि आगे चल कर,
लोग झूठे उपदेशों पर ध्यान देने लगेंगे,
भटक जायेगें वे अपने विश्वास से,
विवाह और भक्ष्य पदार्थों का निषेध करेंगे।

परमेश्वर की रची हर वस्तु उत्तम है,
त्यागने योग्य नहीं है कोई भी वस्तु,
धन्यवाद के साथ ग्रहण करने पर,
प्रार्थना से पवित्र हो जाती वह वस्तु।

मसीह के उत्तम सेवक बनो

परमेश्वर की सेवा के लिये,
अपने को साधने में लगे रहो,
क्योंकि परमेश्वर की सेवा मूल्यवान है,
आज और भविष्य का आशीर्वाद है वो।

दो इन्हीं बातों का आदेश और उपदेश,
युवक होने से कोई तुझे तुच्छ न समझें,
बल्कि तूँ उनके लिये उदाहरण बन जा,
अपने व्यवहार और पवित्र प्रेममय आचरण से।

व्यवहार के कुछ नियम

किसी बड़ी आयु के व्यक्ति से,
मत बोलो कभी कठोरता के साथ,
बल्कि उन्हें पिता सा देखते हुए,
व्यवहार करो उनसे नम्रता के साथ।

समझो बड़ी महिलाओं को माँ,
और युवा स्त्रियों को बहन समझो,
जो स्त्रियां वास्तव में विधवा हैं,
उन विधवाओं का विशेष ध्यान रखो।

यदि किसी विधवा स्त्री के हो,
पुत्र-पुत्री अथवा नाती-पोते,
तो देखभाल करनी चाहिये परिवार की,
उन्हें अपने धर्म मार्ग पर चलते।

उन्हें चाहिये कि वे बदला चुकायें,
अपने माता-पिता द्वारा पालन पोषण का,
यह उनका कर्त्तव्य भी है और,
ऐसा करने से परमेश्वर प्रसन्न होता।

परमेश्वर ही है जिसकी आशाओं का सहारा,
वह असहाय विधवा प्रार्थना में लगी रहती,
किन्तु विषय भोग की दास विधवा,
जीते जी ही मृत के समान हो रहती।

इसलिये विश्वासी लोगों को दो,
आदेश उनकी सहायता करने का,
यदि वे परिवार की सहायता नहीं करते,
तो विश्वासी होना किस काम का।

आर्थिक सहायता लेने वाली विशेष सूची में,
उसी विधवा का नाम लिखा जाये,
जो बुजुर्ग हो, पतिव्रता रही हो और,
जिसका जीवन समर्पित जीवन कहा जाये।

युवती-विधवाओं के लिये बेहतर है,
वे अपना घर फिर से बसा लें,
चलें ना भटक कर शैतान के पीछे,
खुद सँभलें, घर-बार सँभालें।

जो बुजुर्ग कलीसिया की उत्तम अगुआई करते,
दुगने सम्मान के पात्र होने चाहिये वो,
विशेष कर वे जो उपदेश देते या पढ़ाते,
क्योंकि उचित प्रतिफल का हक रखते हैं वो।

जब तक उचित प्रमाण न हो,
किसी बुजुर्ग पर लांछन न करो स्वीकार,
जो सदा पाप में लगे रहते हैं,
सबके सामने लगाओ उन्हें फटकार।

मत कर कोई काम पक्षपात के साथ,
बिना बिचारे न चुन कलीसिया का मुखिया,
मत बन किसी के पाप में भागीदार,
और रख तू अपने को पवित्र सदा।

कुछ के पाप स्पष्ट प्रकट हो जाते,
कुछ के पाप प्रकट होते बाद में,
ऐसे ही भले काम भी होते प्रकट,
पर जो प्रकट नहीं होते वो भी नहीं छिपते।

जो फँसे अंधविश्वास के कुचक्रों में,
करना चाहिये उन्हें अपने स्वामियों का सम्मान,
और जिनके स्वामी हैं विश्वासी,
उन्हें तो करना चाहिये और ज्यादा सम्मान।

मिथ्या उपदेश और सच्चा धन

यदि कोई यीशू के सदवचनों को नहीं मानता,
तथा भक्ति से परिपूर्ण शिक्षा से सहमत नहीं,
तो ऐसा व्यक्ति अहंकार से फूला है,
और वह कुछ भी जानता नहीं।

वह तो कुतर्क में घिरा है,
और शब्दों को ले झगड़ने के रोग से,
ईर्ष्या, बैर, निन्दा, गाली-गलौच,
और मतभेद पैदा होते हैं इनसे।

सत्य से वंचित वे लोग,
बस ऐसे ही करते विचार,
धन कमाने का साधन ही मात्र,
परमेश्वर की सेवा संत-सत्कार।

परमेश्वर की सेवा-भक्ति से ही,
निश्चय ही व्यक्ति बनता सम्पन्न,
इसी से ही संतोष मिलता है,
फिर इच्छाएं न होती उत्पन्न।

किन्तु वह जो बनना चाहता धनवान,
प्रलोभनों में पड़ जाल में फँस जाता,
मूखर्तापूर्ण और विनाशकारी लालच उसे,
पतन की खाई में ढकेल ले जाता।

क्योंकि धन का प्रेम देता है,
जन्म हर प्रकार की बुराई को,
इच्छाएं भटका देती विश्वास से,
और पैदा करती महान दुःख को।

याद रखने योग्य बातें

किन्तु हे परमेश्वर के जन,
तूँ इन बातों से दूर रह,
धार्मिकता भक्तिपूर्ण सेवा, विश्वास, प्रेम,
धैर्य और सज्जनता में लगा रह।

कर ले अपने लिये अनन्त जीवन अर्जित,
उसी के लिये बुलाया गया है तुझे,
निर्दोष भाव से चलता रह उसी पर,
जिसका आदेश दिया गया है तुझे।

वह उस परम धन्य सम्राटों के प्रभु को,
उचित समय आने पर प्रकट कर देगा,
वह अगम्य प्रकाश का निवासी है जिसे,
न कोई देख सकता, न किसी ने देखा।

वर्तमान युग की वस्तुओं के कारण जो,
धनवान बने हुए हैं, अभिमान न करें,
बता उन्हें कि जो शीघ्र चला जाएगा,
उस धन पर वो कोई आशा न रखें।

परमेश्वर पर ही अपनी आशा टिकायें,
हमारे आनन्द के लिये जो सब देता,
उन्हें आज्ञा दे कि अच्छे काम करें,
और उत्तम कार्यो से ही धन करें पैदा।

उदार रहें और दूसरों के साथ,
वे अपनी वस्तुओं को बाँटें,
स्वर्गीय कोष संचित कर सकेंगे उससे,
सच्चे जीवन को रहेंगे थामें।

तीमुथियुस, तुझे जो सौंपा गया है,
उसकी रक्षा कर बच व्यर्थ बातों से,
''मिथ्या ज्ञान'' जनित व्यर्थ के विश्वास,
जिसने लोगों को डिगाया बस उससे।

2. तीमुथियुस

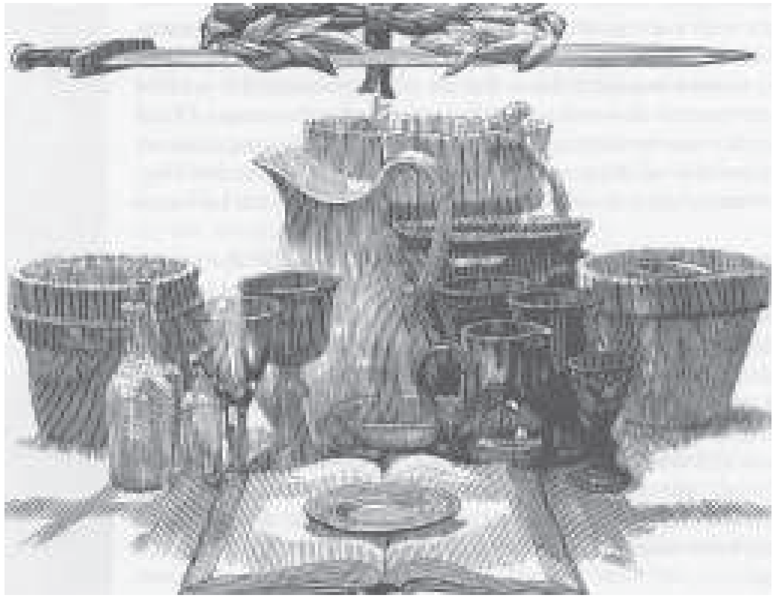

पौलुस, जो परमेश्वर की इच्छा से,
यीशू मसीह का है प्रेरित,
जो यीशू में जीवन पाने की,
प्रतिज्ञा का प्रचार करने में है हर्षित।

परमपिता परमेश्वर और यीशू की ओर से,
प्रिय पुत्र तीमुथियुस को,
यीशू मसीह की ओर से तुझे करुणा,
अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

धन्यवाद तथा प्रोत्साहन

रात दिन अपनी प्रार्थनाओं में,
करते हुए निरन्तर तुम्हारी याद,
शुद्ध मन से उसकी पूजा करते,
करता हूँ परमेश्वर को धन्यवाद।

मेरे लिये बहाये हैं तुमने जो आँसू,
उन्हें याद कर आतुर हूँ मिलने को,
मुझे तेरा वह सच्चा विश्वास भी याद है,
जो पहले मिला तेरी नानी और माँ को।

भरोसा है मुझे वही विश्वास तुझमें है,
इसीलिये में तुझे दिला रहा हूँ याद,
जलाये रख परमेश्वर के वरदान की वह ज्वाला,
जो मेरे हाथ रखने से हुई थी प्राप्त।

क्योंकि परमेश्वर ने दी जो हमें आत्मा,
कायर नहीं वह हमें बनाती,
बल्कि वह तो भर देती है,
हममें प्रेम, संयम और शक्ति।

इसलिये मत लजा प्रभु की साक्षी देने में,
बल्कि साथ दे सुसमाचार हेतु यातना झेलने में,
उसी ने हमारी की है रक्षा,
और पवित्र जीवन के लिये बुलाया है हमें।

कर दिया उसने मृत्यु का अंत,
जीवन को सुसमाचार द्वारा प्रकाशित किया,
इसी सुसमाचार को फैलाने के लिये मुझे,
एक प्रचारक, प्रेरित और शिक्षक नियुक्त किया।

और यही कारण है जिससे मैं,
इन बातों का दुःख उठा रहा हूँ,
और यह सब कुछ सहने पर भी,
किंचित भी लज्जित नहीं हो रहा हूँ।

जिस पर मैंने विश्वास किया है,
और सौंपी जो शिक्षा मुझे उसने,
जब तक वह दिन* आये,
समर्थ है वह उसकी रक्षा करने में।

हमारे भीतर निवास करने वाली,
उस पवित्र आत्मा के द्वारा,
तूँ उस बहुमूल्य धरोहर की रखवाली कर,
जिसे तुझे गया है सौंपा।

मसीह यीशू का सच्चा सिपाही

सुदृढ़ हो जा ऐ मेरे पुत्र,
यीशू में प्राप्त होने वाले अनुग्रह से,
और मुझसे तूने जो कुछ सुना है,
विश्वासी व्यक्तियों को सौंप दे उसे।

यातनाएं झेलने में मेरे साथ आ मिल,
यीशू के एक उत्तम सैनिक के समान,
उलझता नहीं साधारण जीवन के जंजाल में,
वह जो सेवा करता सैनिक के समान।

करते रहो यीशू मसीह का स्मरण,
जो मरे हुओं में से फिर जी उठा,
यही उस सुसमाचार का सार है,
जिसके लिये यातनाएं झेलना, उपदेश देता।

जकड़ा गया अपराधी सा मैं जंजीरों से,
किन्तु बँधन रहित है वचन परमेश्वर का,
इसी कारण हर दुःख उठाता रहता हूँ मैं,
ताकि दे सकूँ सुसमाचार अनन्त उद्धार का।

यह वचन सवर्था विश्वास योग्य है कि,
यदि हम उसके साथ मरे, तो साथ जीयेंगे,
यदि दुःख उठाये हैं हमने उसके कारण,
तो उसके साथ ही हम शासन भी करेंगे।

यदि हम उसको छोड़ हट जायेंगे,
तो वह भी हमको तज देगा,
हम चाहें विश्वास हीन हो,
पर वह सदा सर्वदा विश्वासनीय रहेगा।

स्वीकृत कार्यकर्त्ता

सावधान करते रहो लोगों को,
वे शब्दों को लेकर लड़ाई झगड़ा न करें,
स्वयं को परमेश्वर द्वारा ग्राह्य बना,
पेश आये एक सेवक के रूप में।

सांसारिक वाद-विवाद और व्यर्थ की बातें,
ले जाती हैं ये परमेश्वर से दूर,
वह जो स्वयं को प्रभु का कहता।
उसे रहना चाहिये बुरी बातों से दूर।

एक बड़े घर में होते हैं बरतन,
सोने-चांदी, लकड़ी और मिट्टी के,
कुछ होते हैं विशेष उपयोग के लिये,
और कुछ होते साधारण उपयोग के।

इसलिये जो बुराइयां दूर कर लेता,
तो विशेष उपयोग का वह बनेगा,
और फिर पवित्र बन स्वामी के लिये,
उत्तम कार्य के लिये तत्पर रहेगा।

* वह दिन– जब सभी लोगों का न्याय करने के लिये यीशू मसीह आएगा और उन्हें अपने साथ रहने के लिए ले जाएगा।

दूर रहो जवानी की बुरी इच्छाओं से,
बेकार के तर्क-वितर्क से बचे रहो,
विश्वास, प्रेम और शांति के लिये,
प्रभु के भक्तों के साथ प्रयत्नशील रहो।

झगड़ना नहीं चाहिये प्रभु के सेवक को,
उसे तो करनी चाहिये सब पर दया,
होनी चाहिये उसमें सहन करने की शक्ति,
और इस योग्य हो कि दे सके शिक्षा।

विरोधियों को भी इस आशा के साथ,
कि परमेश्वर उनका भी मन-फिराव कर देगा,
समझाना चाहिये उसे उन्हें विनम्रता के साथ,
ताकि उन्हें भी सत्य का ज्ञान मिल सकेगा।

और फिर वे सचेत हो कर,
शैतान के उस फन्दे से बच निकलें,
जिसमें शैतान ने उन्हें जकड़ रखा है,
और परमेश्वर की इच्छा अनुसार चल सकें।

अंतिम दिनों में

याद रखो कि अंतिम दिनों में,
हम पर बहुत बुरा समय आयेगा,
लोगों का व्यवहार स्वार्थी, लालची, अभिमानी,
प्रेम रहित, असंमयी और बर्बर हो जायेगा।

करेंगे वे परमेश्वर की निन्दा,
और माता-पिता की अवहेलना,
जो कुछ अच्छा है उसका विरोध,
कैसे भी हो चाहेंगे सुख भोगना।

करेंगे दिखावटी धर्म का पालन,
किन्तु उसकी भीतरी शक्ति नकार देंगे,
बेहतर है ऐसों से दूर ही रहना,
वरना वे सब कुछ बिगाड़ देंगे।

अंतिम आदेश

कुछ भी हो, किया है पालन तूँने,
मेरी शिक्षा, मेरी जीवन पद्धति का,
मेरी यातनाओं और पीड़ाओं में,
दिया है तुमने साथ मेरा।

नेकी के साथ जो जीना चाहेंगे,
सताये ही जायेंगे लोगों के द्वारा,
किन्तु पापी और ठग दूसरों को छलते,
पकड़े ही रहेंगे मार्ग बुरा।

तुझे पता है बचपन से ही,
तूँ पवित्र शास्त्रों को भी जानता,
दे सकते हैं वे तुझे वह विवेक,
जिससे छुटकारा तुझे मिल सकता।

सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र रचा गया है,
परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा ही,
लोगों को सत्य और सुधारने हेतु,
और धार्मिक प्रशिक्षण में है उपयोगी।

परमेश्वर और यीशू को साक्षी बना,
जो करने वाला है न्याय सभी का,
और क्योंकि उसका पुनः आगमन निकट है,
मैं आदेश देता हूँ प्रचार कर सुसमाचार का।

तुझे सुविधा हो चाहे हो असुविधा,
अपना कर्त्तव्य करने को रह तैयार,
लोगों को क्या करना चाहिये समझा उन्हें,
बुरा काम करने से पहले करें विचार।

एक समय ऐसा आयेगा जब लोग,
उत्तम उपदेश को सुनना तक नहीं चाहेंगे,
वे अपनी इच्छाओं के अनुकूल,
अपने लिये बहुत से गुरू ढूँढ लायेंगे।

वे गुरु वही सुनायेंगे उन्हें,
जो उनसे वे सुनना चाहेंगे,
फेर लेंगे अपने कान सत्य से,
कल्पित कथाओं पर ध्यान देने लगेंगे।

किन्तु तू निश्चयपूर्वक हर स्थिति में,
अपने आप पर नियन्त्रण रख,
यातनाएं झेल सुसमाचार का प्रचार कर,
और जो सेवा सौंपी उसे पूरा कर।

जहाँ तक मेरी बात है मैं तो अब,
अर्ध के समान हूँ उडेलें जाने पर,
मैंने विश्वास के पथ की रक्षा की,
अब विजय मुकुट मुझे है मिलने पर।

निजी संदेश

मुझसे जितना शीघ्र हो सके,
प्रयत्न करना मिलने आने का,
क्योंकि इस जगत के मोह में पड़,
देमास ने मुझको त्याग दिया।

और भी बहुत से लोग,
चले गये हैं मुझे छोड़कर,
जो हमारे उपदेश का विरोध करते,
रहना उनसे तुम सचेत हो कर।

प्रारम्भ में जब मैं अपना,
बचाव पक्ष प्रस्तुत करने लगा,
आया नहीं कोई मेरे पक्ष में,
अकेला उन्होंने मुझे छोड़ दिया।

मेरे पक्ष में खड़े होकर,
प्रभु ने ही दी शक्ति मुझे,
ताकि मेरे द्वारा सुसमाचार का,
भरपूर तरह से प्रचार हो सके।

तीतुस

पौलुस की ओर से जिसे,
परमेश्वर के चुने हुए लोगों को,
उनके विश्वास में सहायता देने और,
भेजा उनकी रहनुमाई करने को।

कह रहा हूँ यह ऐसा मैं इसलिए,
कि उन्हें अनन्त जीवन की बँधे आस,
परमेश्वर ने जो कभी झूठ नहीं बोलता,
अनादि काल से दिया अनन्त जीवन का विश्वास।

उचित समय पर प्रकट किया परमेश्वर ने,
अपने सुसन्देश को उपदेशों के द्वारा,
हमारे उद्धार कर्त्ता परमेश्वर की आज्ञा से,
वही सुसन्देश मुझे गया है सौंपा।

हमारे समान विश्वास में,
मेरे सच्चे पुत्र तीतुस को,
परमेश्वर और यीशू की ओर से,
अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

क्रेते में तीतुस का कार्य

मैंने तुझे क्रेते में इसलिये छोड़ा,
कि जो मेरे काम रह गये अधूरे,
उन्हें ठीक कर मेरे आदेश के अनुसार,
हर नगर में बुजुर्गों को नियुक्त करे।

पर वे बुजुर्ग होने चाहिये निर्दोष,
एक पत्नीव्रता, उनके बच्चे हो विश्वासी,
जिनको परमेश्वर का काम सौंपा गया हो,
नहीं होनी चाहिये उनमें कोई खराबी।

अतिथियों की आवभगत करने वाला,
और हो वह नेकी को चाहने वाला,
विवेक-पूर्ण, धर्मी, भक्त, सन्तोषी,
और घर पर नियंत्रण रखने वाला।

धारण करे रहे वह संदेश दृढ़ता से,
जिसकी दी गयी है उसे शिक्षा,
ताकि विरोधियों का खण्डन कर सके,
और लोगों को दे सके सदाशिक्षा।

क्योंकि बहुत से लोग विद्रोही होकर,
व्यर्थ बातें बना दूसरों को भटकाते,
जो बातें नहीं सिखाने की हैं,
वे उन्हें सिखा लोगों का घर बिगाड़ते।

दावा करते परमेश्वर को जानने का,
पर उनके कर्म कुछ और ही दर्शाते,
वे घृणित और अवज्ञा करने वाले,
कुछ भी अच्छा नहीं करना जानते।

सच्ची शिक्षा का अनुसरण

किन्तु तुम सदा ऐसी बातें बोला करो,
जो सदशिक्षा के अनुकूल हों,
शालीन और आत्म नियंत्रण वाले बने,
वृद्ध पुरुषों को यह शिक्षा दो।

इसी प्रकार वृद्ध महिलाओं को सिखाओ,
कि वे उत्तम व्यवहार वाली बनें,
युवतियों को सिखायें अच्छी अच्छी बातें,
और अपने पतियों की आज्ञाकारी बनें।

इसी तरह युवकों को सिखाओ,
कि वे सदाचारी और संयमी बनें,
दासों को सिखाओ कि हर बात में,
वे अपने स्वामियों की आज्ञा पालन करें।

क्योंकि प्रकट हुआ है परमेश्वर का अनुग्रह,
सब मनुष्यों के उद्धार के लिये,
इससे हमें यह सीख मिलती है,
कि हम परमेश्वर विहीनता को नकारें।

करते हुए सांसारिक इच्छाओं का निषेध,
हम विवेकपूर्ण, नेक और भक्तिमय जीवन जियें,
जब प्रकट होगी उद्धारकर्त्ता यीशू की महिमा,
उस धन्य दिन की प्रतीक्षा करते रहें।

जीवन की उत्तम रीति

लोगों को याद दिलाता रह कि वे,
राजाओं और अधिकारियों के अधीन रहें,
निन्दा न करें कभी किसी की,
शांतिप्रिय और सज्जन बन कर रहें।

यह मैं इसलिये बता रहा हूँ,
क्योंकि हम भी एक समय मूर्ख थे,
अवज्ञाकारी और भ्रम में पड़े,
अपनी वासनाओं के दास बने थे।

किन्तु जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की,
मानवता के प्रति करुणा और प्रेम प्रकटे,
तो किया उसने हमारा उद्धार,
बिना कुछ भी हमारे किये हुए।

सम्पन्न हुआ यह सब उसकी करुणा से,
पवित्र आत्मा द्वारा हमें नया बनाया उसने,
हमारे उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशू के द्वारा,
भरपूर उँडेला पवित्र आत्मा को हम पर उसने।

अब ठहराया है निर्दोष हमें,
परमेश्वर ने अपने अनुग्रह के द्वारा,
ताकि जिसकी हम आशा कर रहे थे,
उत्तराधिकार पा लें उस अनन्त जीवन का।

विवादों, झगड़ों और व्यर्थ के मतभेदों से,
होता है उनसे कुछ लाभ नहीं,
फूट डालने वालों से हो जाओ अलग,
भटकें हैं वे यह अच्छी बात नहीं।

फिलेमोन

यीशू मसीह के लिये बंदी बने पौलुस,
तथा हमारे भाई तिमुथियुस की ओर से,
हमारे प्रिय मित्र और सहकर्मी फिलेमोन,
तथा अन्य लोग और कलीसिया के लिये।

हमारे परम पिता परमेश्वर और,
प्रभु यीशू मसीह की ओर से,
तुम सब लोगों को उनका,
अनुग्रह और शांति मिले।

फिलेमोन का प्रेम और विश्वास

अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारा उल्लेख करते हुए,
मैं सदा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ,
क्योंकि संत जनों के प्रति तुम्हारे प्रेम और,
यीशू में विश्वास की बातें सुनता रहता हूँ।

मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारे विश्वास से उत्पन्न,
उदार सहभागिता लोगों का मार्ग दर्शन करे,
जिससे मसीह के उद्देश्य को आगे बढ़ाने हेतु,
जो बातें घट रही हैं, उनका ज्ञान मिले।

हे भाई, तेरे उन सद् प्रयत्नों से,
हो गये हैं संत जनों के हृदय हरे,
इसलिये तेरे इस प्रेम से मिली है,
बहुत शांति और आनन्द मुझे।

उनेसिमुस को भाई स्वीकारो

प्रेम सहित तुमसे मैं करता हूँ निवेदन,
मैं पौलुस जो अब बूढ़ा हो चला हूँ,
और बना हुआ हूँ मसीह के लिये बंदी,
उस उनेसिमुस के लिये निवेदन कर रहा हूँ।

जो तब मेरा धर्मपुत्र बना था,
जब मैं बंदीगृह में बंदी था,
एक समय नहीं था किसी काम का वह,
लेकिन अब है वह बहुत काम का।

भेज रहा हूँ उसे फिर तेरे पास,
उसे अपने पास ही मैं रखना चाहता था,
ताकि सुसमाचार के लिये मुझ बंदी को वह,
तेरी ओर से कर सके सेवा।

किन्तु तेरी अनुमति के बिना,
मैं कुछ भी करना नहीं चाहता,
ताकि तेरे किसी भी उत्तम कर्म का,
कारण ना हो कोई विवशता।

हो सकता है थोड़े समय के लिये उसे,
तुझसे दूर करने का कारण यही हो,
कि तूँ फिर उसे सदा के लिये पा ले,
दास नहीं बल्कि प्रिय बँधु सा हो वो।

मैं उससे बहुत प्रेम करता हूँ,
तूँ भी बहुत प्रेम करेगा उससे,
केवल एक मनुष्य के रूप में ही नहीं,
बल्कि प्रभु में स्थित एक बँधु जैसे।

सो यदि तूँ मुझे अपना साझीदार सा समझता,
तो उसे भी समझ साझीदार तू अपना,
मेरे खाते में डाल दे जो उसने किया,
या यदि उससे तुझे कुछ हो लेना-देना।

इब्रानियों

परमेश्वर अपने पुत्र के माध्यम से बोलता है

परमेश्वर ने अतीत में नबियों के द्वारा,
कई बार हमारे पूर्वजों से बात की,
किन्तु इन अंतिम दिनों में उसने हमसे,
अपने पुत्र के माध्यम से बात की।

किया उसने उसे सब का उत्तराधिकारी नियुक्त,
और उसके द्वारा रचना की समूचे ब्रह्माण्ड की,
वह परमेश्वर की महिमा का तेज-मंडल है,
और उसके स्वरूप का यथावत प्रतिनिधि।

बनाये रखता है सब वस्तुओं की स्थिति,
वह अपने समर्थ वचन के साथ,
सबको पापों से मुक्त करने का विधान कर,
वह बैठ गया परमेश्वर के दाहिने हाथ।

इस प्रकार वह स्वर्गदूतों से,
बन गया उतना ही उत्तम,
जितना उसे उत्तराधिकार में मिला नाम,
बना उनके नामों से उत्तम।

क्योंकि परमेश्वर ने कहा नहीं,
कभी ऐसा किसी स्वर्गदूत से,
तूँ मेरा पुत्र है और मैं,
बन गया हूँ तेरा पिता आज से।

कहता है वह अपने पुत्र के लिये,
हे परमेश्वर! शाश्वत है सिंहासन तेरा,
तुझको धार्मिकता ही प्रिय है,
और पापों से रही है तुझको घृणा।

सो परमेश्वर, तेरे परमेश्वर ने चुना तुझको,
और उस आदर का आनन्द दिया,
और परमेश्वर ने कृपा कर तुझ पर,
तुझको तेरे साथियों से कहीं अधिक दिया।

और कहता है, सृष्टि की रचना के समय,
तूने धरती की नींव धरी,
स्वर्ग तेरे हाथ का कतृत्व है,
तू चिरन्तन रहेगा, इनके नष्ट होने पर भी।

ये सब वस्त्र से फट जायेंगे,
और तू परिधान सा लपेटेगा उनको,
वे फिर वस्त्र जैसे बदल जायेंगे,
यथावत ही रहेगा किन्तु तू तो।

सावधान रहने की चेतावनी

इसलिये हमें और भी सावधानी से,
जो सुना, चाहिए उस पर ध्यान देना,
ताकि हम कहीं भटक न जायें,
और अवज्ञा का दण्ड पड़े न सहना।

करी गयी थी प्रभु के द्वारा,
उस उद्धार की पहली घोषणा,
और हमारे लिये सृष्टि की उसकी,
उनके द्वारा जिन्होंने था उसे सुना।

परमेश्वर ने भी चिह्नों, चमत्कारों द्वारा,
तथा पवित्र आत्मा के उन उपहारों द्वारा,
जो उसकी इच्छानुसार बाँटे गये थे,
इस बात को पूरी तरह प्रमाणित किया।

उद्धारकर्त्ता मसीह का मानव देह धारण

परमेश्वर ने उस भावी संसार को,
किया नहीं स्वर्गदूतों के अधीन,
कुछ भी ऐसा छोड़ा नहीं परमेश्वर ने,
जो किया ना हो उसके अधीन।

यीशू को जिसे थोड़े समय के लिये,
कर दिया गया था स्वर्गदूतों से नीचे,
महिमा और आदर का मुकुट अब,
हम देखते हैं, पहनाया गया है उसे।

क्योंकि झेली उसने मृत्यु की यातना,
जिससे परमेश्वर के अनुग्रह के कारण,
वह प्रत्येक के लिये कर सके अनुभव,
मृत्यु के दुःख का उत्पीड़न।

वह जो मनुष्यों को पवित्र बनाता,
और वे जो पवित्र बनाए जाते,

एक ही परिवार के हैं वे दोनों,
सो यीशू लजाता नहीं उन्हें भाई कहते।

उसने कहा मैं अपने बँधुओं में,
तेरे नाम का उदघोष करूँगा,
गाऊँगा सबके सामने तेरी प्रशंसा के गीत,
और फिर मैं इसका विश्वास करूँगा।

क्योंकि संतान मांस और लहू युक्त थी,
सो वह भी मनुष्यता में सहभागी हो गया,
ताकि जिसके पास मारने की शक्ति है,
उस शैतान का कर सके वो सफाया।

और मुक्त कर ले उन व्यक्तियों को,
जो मृत्यु से डर जीवन दासता में बीताते,
इसलिये हर भाइयो के जैसा बनाया गया उसे,
ताकि वह परमेश्वर की सेवा में खरा उतरे।

और लोगों को उनके पापों की,
क्षमा दिलाने के लिये बलि दे सके,
क्योंकि भोगी है उसने स्वयं यातनाएं,
औरों की सहायता वह कर सके।

यीशू मूसा से महान

अतः स्वर्गीय बुलावे में भागीदार हे भाइयों,
अपना ध्यान उस यीशू पर लगाये रखो,
हमारे घोषित विश्वासानुसार परमेश्वर का,
प्रतिनिधि और प्रमुख याजक है जो।

जैसे परमेश्वर के समूह घराने में,
सबके विश्वास के योग्य था मूसा,
अपने नियुक्तकर्त्ता परमेश्वर के प्रति,
यीशू भी विश्वासपूर्ण था वैसा।

जैसे भवन का निर्माण करने वाला,
पाता है भवन से अधिक आदर,
वैसे ही माना गया यीशू को पात्र,
मूसा से अधिक पाने को आदर।

क्योंकि प्रत्येक भवन का होता,
कोई न कोई बनाने वाला,
लेकिन वह परमेश्वर तो है,
हर एक वस्तु का बनाने वाला।

परमेश्वर के समूच घराने में मूसा,
एक सेवक के समान विश्वास पात्र था,
जो कही जाती थी परमेश्वर द्वारा,
वह उन बातों का साक्षी था।

किन्तु परमेश्वर के घराने में मसीह तो,
एक पुत्र के समान विश्वास योग्य है,
अपने साहस और आशा में विश्वास रखे तो,
हम ही उसका घराना कहलाने योग्य हैं।

अविश्वास के विरुद्ध चेतावनी

इसलिये पवित्र आत्मा कहता है,
आज यदि उसकी आवाज सुनो,
तो जैसे बगावत के दिनों में किये,
वैसे अपने हृदय जड़ मत करो।

जब मरुस्थल में परीक्षा हो रही थी,
मुझे तुम्हारे पूर्वजों ने परखा था,
उन्होंने मेरा धैर्य, मेरे कार्य देखे,
जिन्हें मैं चालीस वर्षों से करता रहा था।

यह वही कारण था जिससे मैं,
क्रोधित हुआ था उन लोगों से,
और कहा था मैंने शपथ लेकर,
इन्हें वंचित किया गया है शांति से।

देखते रहो कहीं तुममें से किसी के,
मन में पाप और अविश्वास न समाये,
जो तुम्हें सजीव परमेश्वर से ही,
कहीं दूर भटका कर ले जाये।

जब तक यह ''आज'' का दिन कहलाता,
बँधाते रहो परस्पर एक दूसरे को ढाँढस,

ताकि पाप के छलावे में पड़कर,
बन न जाये कोई जड़ और बेबस।

यदि हम अंत तक दृढ़ता के साथ,
अपने प्रारम्भ के विश्वास को थामे रहते,
तो फिर जैसा पहले कहा गया है,
हम मसीह के भागीदार बन जाते।

भला वे कौन थे जिन्होंने,
पवित्र आत्मा को सुना पर विद्रोह किया,
क्या वे, वे नहीं थे जिन्हें मूसा ने,
मिस्र से बचा कर निकाल लिया।

क्रोधित रहा वह पाप करने वालों पर,
और जिन्होंने किया उसकी आज्ञा का उल्लंघन,
सो वे उसकी विश्रान्ति से अलग हो रहे,
केवल अपने ही अविश्वास के कारण।

संतों के लिये विश्रान्ति

सावधान रहना चाहिये हमें कि अब,
हममें से कोई अनुपयुक्त सिद्ध न हो,
क्योंकि हमें भी इन्हीं के समान,
दिया गया है सुसमाचार के उपदेश को।

छः दिन में सृष्टि की रचना कर,
सांतवें दिन विश्राम लिया परमेश्वर ने,
और जिन्होंने पहले सुसन्देश सुन की अवज्ञा,
विश्रान्ति से वंचित कर दिया गया उन्हें।

किन्तु औरों के लिये अभी भी,
खुला हुआ है द्वार विश्रान्ति का,
इसलिये परमेश्वर ने फिर एक विशेष दिन,
चुन कर रखा नाम ''आज'' उसका।

तो तब यदि यहोशू उन्हें,
विश्रान्ति में ले गया होता,
तो किसी और दिन के बारे में,
बाद में परमेश्वर ने नहीं बताया होता।

जो भी हो परमेश्वर के भक्तों के लिये,
रहती ही है एक वैसी विश्रान्ति,
जैसी सृष्टि रचना करने के बाद,
थी सातवें दिन परमेश्वर की विश्रान्ति।

क्योंकि जो कोई भी परमेश्वर की,
विश्रान्ति में प्रवेश करता है,
तो परमेश्वर की तरह वह भी अपने,
कर्मों से विश्राम पा जाता है।

सजीव और क्रियाशील है परमेश्वर का वचन,
किसी दूधारी तलवार से भी अधिक पैना,
आत्मा और प्राण, सन्धियों और मज्जा तक में,
बेध जाता है वह वचन अति गहरा।

परख लेता है मन की वृत्ति और विचार,
परमेश्वर की दृष्टि से कुछ ओझल नहीं,
उसने सामने जिसे देना है हमें लेखा-जोखा,
छिपी रह सकती कोई वस्तु आवरण में नहीं।

महान महायाजक यीशू

एक ऐसा महान महायाजक है यीशू,
जो हमारी दुर्बलताओं से है परिचित,
हमारी ही तरह वह परखा गया,
फिर भी है वह सर्वथा पाप रहित।

तो फिर आओ, हम भरोसे के साथ,
अनुग्रह पाने परमेश्वर की ओर बढ़ें,
ताकि जरूरत पड़ने पर सहायता के लिये,
हम दया और अनुग्रह प्राप्त कर सकें।

मनुष्यों में से ही चुना जाता महायाजक,
रूहानी प्रतिनिधित्व के लिये नियुक्ति की जाती,
और क्योंकि वह स्वयं दुर्बलताओं के अधीन है,
उससे दुर्बलों के लिये वही अपेक्षा की जाती।

यह सम्मान नहीं किसी के अपने वश में,
हारून की तरह मिलता परमेश्वर की ओर से,

इसी तरह महायाजक बनने की महिमा को,
बख्शा गया यीशू पर परमेश्वर की ओर से।

यद्यपि यीशू परमेश्वर का पुत्र था,
फिर भी उसने आज्ञा पालन करना सीखा,
और सम्पूर्ण बन जाने पर आज्ञाकारियों हेतु,
वह अनन्त छुटकारे का स्रोत बन गया।

पतन के विरुद्ध चेतावनी

तुम्हारी समझ बहुत धीमी है,
तुम अभी हो दुध मुँहे बच्चे से,
धार्मिकता के वचन उनके लिये हैं,
जो भले बुरे में फर्क कर सकते।

अतः आओ, आरम्भिक शिक्षा को छोड़,
हम परिपक्वता की ओर बढ़ें,
जिन बातों से की हमने शुरूआत,
फिर उनकी ओर नहीं बढ़ना है हमें।

जिन्हें एक बार प्रकाश प्राप्त हो चुका,
जो स्वर्गीय वरदान का आस्वादन कर चुके,
यदि वे भटक जायें तो असम्भव है,
फिर मन-फिराव की ओर लौटाना उन्हें।

उन्होंने तो जैसे अपने ढंग से,
नये सिरे से परमेश्वर के पुत्र को,
मानों फिर क्रूस पर चढ़ा दिया,
और अपमान का विषय बनाया उसको।

हे प्रिय मित्रों चाहें हम कहें ऐसा,
लेकिन तुम्हारे बारे में है विश्वास हमें,
तुम्हारा उसके जनों के प्रति प्रेम और सहायता,
भूलायेगा नहीं कभी परमेश्वर उसे।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा अटल है

जब परमेश्वर ने की इब्राहीम से प्रतिज्ञा,
तो था नहीं कोई स्वयं उससे बड़ा,
इसलिये ली उसने स्वयं अपनी शपथ,
और कहा तुझे आशीर्वाद और वंशज दूँगा।

लोग लेते हैं अपने से महान की शपथ,
ताकि वह उस बात को कर दे पक्का,
परमेश्वर ने ली शपथ यह स्पष्ट करने को,
कि वह अपनी बात कभी न बदलेगा।

इस बात से हैं हम अत्यधिक उत्साहित,
यह आशा है हमारी आत्मा का संबल,
परदे के पीछे भीतर से भीतर,
छू रही है यह हमारा अन्तरतम।

जहाँ हमारी ओर से यीशू ने,
प्रवेश किया हमसे पहले,
बन गया मिलिकिसिदक की परम्परा में,
वह प्रमुख याजक सदा सर्वदा के लिये।

याजक मिलिकिसिदक

यह मिलिकिसिदक* सालेम का राजा था,
और याजक था सर्वोच्च परमेश्वर का,
इब्राहीम लौट रहा था जब राजाओं को जीत,
मिलिकिसिदक ने उसको आशीर्वाद दिया।

इब्राहीम ने उस सब में से,
जो उसने युद्ध में जीता था,
मिलिकिसिदक को उस माल का,
इब्राहीम ने दसवाँ भाग दिया।

उसके पिता अथवा माँ का,
और पूर्वजों का इतिहास नहीं मिलता,
उसके जन्म अथवा मृत्यु का भी,
कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता।

परमेश्वर के पुत्र के समान ही वह,
सदा-सदा के लिये याजक बना रहता,
जिसको इब्राहीम ने दसवाँ भाग दिया,
तनिक सोचो, वह व्यक्ति कितना महान था।

व्यवस्था के अनुसार लेवी वंशज याजक,
ले सकते हैं बँधुओं से दसवाँ भाग,
फिर भी मिलिकिसिदक ने जो लेवी नहीं था,
इब्राहीम को आशीर्वाद दे लिया दसवाँ भाग।

यदि सम्पूर्णता प्राप्त की जा सकती,
लेवी सम्बन्धी याजकता के द्वारा,
तो किसी दूसरे याजक के,
आने की थी क्या आवश्यकता।

एक ऐसे याजक की जो,
मिलिकिसिदक की परम्परा का हो,
क्योंकि जब याजकता बदलती है तो,
आवश्यक है व्यवस्था में परिवर्तन हो।

जिसके विषय में ये बातें कही गयी,
वह है किसी दूसरे गोत्र का,
और उस गोत्र का कोई भी व्यक्ति,
कभी वेदी का सेवक न रहा।

क्योंकि यह तो स्पष्ट ही है कि,
हमारा प्रभु यहूदा का वंशज था,
और मूसा ने उस गोत्र के लिये,
याजकों के विषय में कुछ नहीं कहा था।

यीशू मिलिकिसिदक के समान है

वह दूसरा याजक वंश के आधार पर नहीं,
बल्कि अमर जीवन के आधार पर बना याजक,
क्योंकि घोषित किया गया था तूँ है,
शाश्वत मिलिकिसिदक के जैसा एक याजक।

क्योंकि वह निर्बल और व्यर्थ था,
इसलिये पहला नियम रद्द कर दिया गया,
जिसके द्वारा हम परमेश्वर के निकट स्थित है,
फिर उस उत्तम आशा का सूत्रपात किया गया।

---

* मिलिकिसिदक– अर्थात धार्मिकता का राजा, और सालेम का राजा या शांति का राजा।

यह भी महत्त्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने,
यीशू को शपथ द्वारा प्रमुख याजक बनाया,
इस शपथ के कारण यीशू को,
एक और अच्छे वाचा का जमानती बनाया।

अब देखो बहुत से याजक हुआ करते थे,
जिन्हें मृत्यु ने नहीं रहने दिया याजक बना,
किन्तु क्योंकि यीशू अमर है इसलिये,
उसका याजकपन रहेगा सदा-सदा के लिये बना।

अतः जो उसके द्वारा परमेश्वर तक पहुँचते,
वह समर्थ है उनके शाश्वत उद्धार के लिये,
क्योंकि यीशू तो सदा जीता है,
उनकी मध्यस्थता करने के लिये।

दोषरहित, पवित्र, पापियों के प्रभाव से दूर,
स्वर्गों से भी जिसे ऊँचा उठाया गया हो,
ऐसा ही महायाजक हमारी आवश्यकता पूरी कर सकता,
जिसे पापों हेतु बलियां न चढ़ानी पड़ती हो।

सदा-सदा के लिये उनके पापों के हेतु,
उसने तो स्वयं को बलिदान कर दिया,
और परमेश्वर ने प्रमुख याजक के रूप में,
नये वाचा के साथ पुत्र को नियुक्त किया।

नये वाचा का प्रमुख याजक

हमारे कथन की मुख्य बात यह है,
कि हमारे पास एक ऐसा महायाजक है,
जो विराजमान है उस महिमावान के दाहिने,
और परमेश्वर की सेवा में कार्यरत है।

पृथ्वी के याजकों की सेवा-उपासना,
स्वर्ग के यथार्थ की है बस एक छाया,
इसलिये पवित्र तम्बू के बारे में मूसा को,
कहा, वैसा ही बनाना, जैसा पर्वत पर दिखाया।

किन्तु जो सेवा कार्य यीशू को मिला,
वह श्रेष्ठ है उनके सेवा कार्य से,
क्योंकि वह जिस वाचा का मध्यस्थ है,
वह उत्तम है पुरानी वाचा से।

यदि पहली वाचा में कोई खोट न होता,
तो दूसरी वाचा के लिये स्थान न रहता,
किन्तु परमेश्वर को उन लोगों में खोट मिला,
तभी दूसरी वाचा के लिये वह यह कहता।

वह समय आ रहा है जब मैं,
इस्राएल और यहूदा के घराने से,
एक दूसरी नयी वाचा करूँगा,
जो नहीं होगी पहले के वाचा जैसे।

और फिर उसके बाद प्रभु घोषित करता है,
उनके मनों में अपनी व्यवस्था बठाऊँगा मैं,
लिख दूँगा उसको मैं उनके हृदयों पर,
मैं उनका परमेश्वर उन्हें अपना बनाऊँगा मैं।

पुराने वाचा की उपासना

पहले वाचा में भी उपासना के नियम थे,
और था मानव निर्मित उपासना गृह भी,
एक तम्बू, तम्बू के भीतर कक्ष इत्यादि,
पवित्र स्थान, परम पवित्र कमरा और वेदी।

सब कुछ व्यवस्थित हो जाने के बाद,
याजक बाहरी कक्ष में करते थे सेवा,
किन्तु भीतरी कक्ष में साल में एक बार,
केवल प्रमुख याजक ही प्रवेश करता था।

बिना लहू की भेंट लिये वह,
कभी प्रवेश नहीं करता था,
अपने या औरों द्वारा किये पापों हेतु,
वह यह लहू की भेंट चढ़ाता था।

पवित्र आत्मा उसके द्वारा दर्शाता था,
कि जब तक है पहला तम्बू खड़ा,
परम पवित्र स्थान के उजागर होने में,
तब तक है व्यवधान खड़ा।

यह आज के युग के लिये दर्शाता,
कि भेंटो से चेतना शुद्ध नहीं होती,
ये बाहरी नियम हैं तब तक के लिये,
जब तक नयी व्यवस्था लागू नहीं होती।

मसीह का लहू

किन्तु अब मसीह इस और अच्छी व्यवस्था का,
आ गया है प्रमुख याजक बनकर,
जो मानव हाथों से नहीं बनी थी,
उस उत्तम और सम्पूर्ण तम्बू से प्रवेश कर।

लिया नहीं उसने किसी अन्य का लहू,
बल्कि स्वयं का ही उसने लहू लिया,
इस प्रकार उसने हमारे लिये पापों से,
अनन्त छुटकारा सुनिश्चित कर दिया।

जब अशुद्धों को शुद्ध बनाता है,
बकरों और सांडों का लहू,
जब यह सच है तो सोच कर देखो,
कितना प्रभावशाली होगा मसीह का लहू।

उसने अनन्त आत्मा के द्वारा किया समर्पित,
अपने आपको एक सम्पूर्ण बलि के रूप में,
वह छुटकारा दिलायेगा हमें मृत्योन्मुखी कर्मों से,
ताकि हम सजीव परमेश्वर की सेवा कर सकें।

इसी कारण नये वाचा का मध्यस्थ बना,
ताकि जिन लोगों को बुलाया गया,
वे उत्तराधिकार का अनन्त आशीर्वाद पा सकें,
जिसकी परमेश्वर ने की थी प्रतिज्ञा।

जहाँ तक वसीयतनामे* का प्रश्न है,
तो उसके लिये जिसने उसे लिखा है,
उसकी मृत्यु को प्रमाणित करना आवश्यक है,
क्योंकि तभी वसीयतनामा प्रभावी होता है।

मूसा ने भी सभी आदेशों की घोषणा कर,
बकरों और बछड़ों का लहू छिड़का था,
व्यवस्था चाहती है लहू से हो शुद्धि,
क्योंकि बिना लहू बहाये नहीं है क्षमा।

मसीह का बलिदान पापों को धो डालता है

आवश्यक है कि जो स्वर्ग की प्रतिकृति हैं,
उन्हें पशुओं के बलिदानों से शुद्ध किया जाये,
किन्तु स्वर्ग की वस्तुएं तो अपेक्षा करती हैं,
और भी उत्तम बलिदानों से शुद्ध किया जाये।

प्रवेश नहीं किया मसीह ने,
मानव निर्मित परम पवित्र स्थान में,
उसने तो प्रवेश किया स्वयं स्वर्ग में ही,
ताकि प्रकट हो वह परमेश्वर की उपस्थिति में।

प्रकट हुआ वह अपने बलिदान द्वारा,
लोगों के पाप हर लेने के लिये,
दूसरी बार फिर वह प्रकट होगा,
लोगों का उद्धार लाने के लिये।

अंतिम बलिदान

आने वाली उत्तम बातों की छाया मात्र,
प्रदान करता है व्यवस्था का विधान,
अपने आप में वे बातें यथार्थ नहीं हैं,
सदा-सदा के लिये नहीं करता वह निदान।

किन्तु वे बलियां तो बस पापों की,
एक वार्षिक स्मृति मात्र हैं,
क्योंकि पशुओं का लहू पापों से उबार दे,
यह तो बस एक कल्पना मात्र है।

इसलिये जगत में आ यीशू ने कहा था,
तूने बलिदान और कोई भेंट नहीं चाहा,
प्रसन्न नहीं हुआ होमबलि या पापबलि से,
हे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया।

* वसीयतनामे– यूनानी में जो शब्द वाचा है वही शब्द वसीयत का अर्थ भी देता है।

हर याजक एक के बाद दूसरे दिन,
अपने धार्मिक कर्त्तव्यों को पूरा करता,
वह पुनःपुनः चढ़ाता वैसे ही बलियां,
पर पाप दूर नहीं उनसे कर सकता।

किन्तु मसीह तो याजक के रूप में,
सदा के लिये एक ही बलि चढ़ा कर,
जा बैठा परमेश्वर के दाहिने हाथ,
अपनी बलि से परमेश्वर को प्रसन्न कर।

परमेश्वर के निकट आओ

जब भरोसा है हमें यीशू के बलि द्वारा,
उस परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने का,
तो फिर आओ, सच्चे हृदय और विश्वास से,
पकड़े रहें परमेश्वर से निकटता की आशा।

प्रेम और अच्छे कर्मों के प्रति,
उत्साहित करें हम एक दूसरे को,
आ रहा है वह दिन* निकट,
सो लगा दें अपनी पूरी ताकत को।

मसीह से मुँह मत फेरो

सत्य का ज्ञान पा लेने के बाद भी,
यदि कोई जान बूझकर पाप में लगा रहता।
फिर तो पापों की क्षमा के लिये,
कोई बलिदान बाकी बचा नहीं रहता।

बल्कि फिर तो न्याय की भयानक प्रतीक्षा,
और भीषण अग्नि ही शेष रह जाती,
चट कर जायेगी जो परमेश्वर के विरोधियों को,
कोई आशा उनके लिये रह नहीं जाती।

विश्वास बनाये रखो

याद करो आरम्भ के उन दिनों को,
जब तुम लोगों ने पाया था प्रकाश,
कष्टों का सामना करते डटे रहे,
कठोर संघर्ष में दृढ़ता के साथ।

कभी लोगों के सामने किया गया अपमानित,
और कभी तुम्हें सताया गया,
कभी जिनके साथ ऐसा किया जा रहा था,
तुमने उन लोगों का साथ दिया।

सहानुभूति जताई बंदी बने लोगों से,
सहर्ष स्वीकार की अपनी सम्पत्तियों की जब्ती,
क्योंकि तुम जानते थे कि तुम्हारे पास,
हैं उनसे अच्छी और टिकाऊ सम्पत्ति।

सो मत त्यागो अपने निडर विश्वास को,
क्योंकि इसका भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा,
धैर्यपूर्वक करो परमेश्वर की इच्छा पूरी,
जिसका वचन दिया वह तुम्हें दिया जायेगा।

विश्वास की महिमा

विश्वास का अर्थ है, जिसकी आशा करते,
उसके लिये हमारा सुनिश्चित होना,
किसी वस्तु को चाहे देख न रहे हों,
उसके अस्तित्व के बारे में सुनिश्चित होना।

विश्वास से ही हम जानते हैं कि,
परमेश्वर के आदेश से हुई ब्रह्माण्ड की रचना,
इसलिये जो दिख रहा है हमको,
वह दृश्य से ही है नहीं बना।

विश्वास के कारण ही हाबिल ने परमेश्वर को,
चढ़ाई थी कैन से उत्तम बलि,
उसे धर्मी के रूप में तब सम्मान मिला,
परमेश्वर से भेटों की प्रशंसा मिली।

विश्वास के कारण ही हनोक को,
इस जीवन से ऊपर उठा लिया गया,
परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले के रूप में,
उठाये जाने से पहले उसे सम्मान मिला।

* वह दिन– अर्थात जब मसीह फिर प्रकट होगा।

असम्भव है परमेश्वर को प्रसन्न करना,
जब तक ना हो मन में दृढ़ विश्वास,
जो खोजते है सच्चाई के साथ उसे,
निश्चय ही प्रतिफल पाता है उनका विश्वास।

विश्वास के कारण ही नूह ने,
चेतावनी को मान एक नाव बनाई,
देखी ना थी जो बात अभी उसने,
विश्वास कर परिवार की जान बचाई।

विश्वास के कारण ही इब्राहीम ने,
परमेश्वर की आज्ञा को माना,
दिया गया था जिसे देने का वचन,
स्वीकार किया उस धरती को बसाना।

बूढ़ा हो चला था जब इब्राहीम,
और बाँझ थी तब तक उसकी पत्नी सारा,
जिसने वचन दिया उसे विश्वासनीय समझकर,
माता-पिता बन गये इब्राहीम और सारा।

और इस प्रकार उस एक ही व्यक्ति से,
जो बूढ़ा हो चला और मरियल सा था,
आकाश के तारों और रेत कणों सी,
जो गिनी ना जा सके हुई संतानें पैदा।

विश्वास के कारण ही इब्राहीम ने,
जब परमेश्वर आजमा रहा था उसको,
चढ़ाने चला अपने पुत्र इसहाक की बलि,
सबसे ज्यादा प्यार करता था वह जिसको।

यद्यपि परमेश्वर ने यह कहा था उससे,
इसहाक के द्वारा ही वंश बढ़ेगा तेरा,
पर इब्राहीम को विश्वास था कि परमेश्वर,
मरे हुये को भी कर सकता है जिन्दा।

विश्वास के कारण ही इसहाक ने,
याकूब और इसाऊ को आशीर्वाद दिया,
विश्वास के कारण ही मरते वक्त याकूब ने,
यूसुफ के हर पुत्र को आशीर्वाद दिया।

विश्वास के कारण ही यूसुफ ने,
अपने अंतकाल में इस्राएल वासियों को,
मिस्र से निर्गमन के बारे में बता कर,
अपनी अस्थियों के लिये दिया आदेश उनको।

विश्वास के आधार पर ही माता-पिता ने,
तीन महीने तक छिपाये रखा मूसा को,
और मूसा ने क्षणिक सुख-भोगों की अपेक्षा,
चुना संतजनों के मार्ग पर चलने को।

विश्वास के कारण ही मूसा,
डरा नहीं राजा के कोप से,
डटा रहा वह अपने मार्ग पर,
और चला गया वह बाहर मिस्र से।

विश्वास से ही उसने फसह पर्व,
और लहू छिड़कने का किया पालन,
ताकि पहली संतानों का विनाश करने वाला,
इस्राएल की पहली संतान का करे ना हनन।

विश्वास के कारण ही लाल सागर से,
लोग पार हो गये जैसे सूखी धरती हो,
किन्तु जब मिस्र के लोग बढ़े आगे,
सब के सब उसमें डूब गये वो।

अब और अधिक मैं क्या कहूँ,
विश्वास ने क्या-क्या न कर दिखाया,
लोगों ने सहे कितने जुल्मों सितम,
पर उनका विश्वास डिगने न पाया।

अपने विश्वास के कारण ही,
उन सब लोगों को सराहा गया,
किन्तु परमेश्वर का वचन मिलने पर भी,
उन्होंने परमेश्वर को ना पाया।

परमेश्वर के पास अपनी योजना अनुसार,
हमारे लिये कुछ और अधिक उत्तम था,
जिससे उन्हें भी बस हमारे साथ ही,
सम्पूर्ण सिद्ध किया जाना था।

परमेश्वर अपने पुत्रों को सिधाता है

आओ झटक फेंके उस पाप को हम,
जो सहज में ही हमें उलझा लेता,
दृष्टि लगायें विश्वास के अगुआ यीशू पर,
जिसने हमारे लिये झेली क्रूस की यातना।

पाप के विरुद्ध अपने संघर्ष में,
इतना नहीं लड़ना पड़ा है तुम्हें,
तुम उस वचन को भूल गये थे,
जो पुत्र के नाते सम्बोधित है तुम्हें।

''तिरस्कार मत कर प्रभु के अनुशासन का,
बुरा मत मान कभी उसकी फटकार का,
क्योंकि प्रभु डाटता है अपने प्रेमियों को ही,
जैसे पिता प्रिय पुत्र को दण्ड देता।''

सहन करो कठिनाई को अनुशासन मान,
परमेश्वर के लिये तुम पुत्र समान हो,
फिर ऐसा कौन पुत्र होगा जिसे,
अपने पिता द्वारा सिंधाया ना गया हो।

सिधाते हैं हमें हमारे दैहिक पिता,
इसके लिये हम उन्हें देते हैं मान,
तो फिर अपनी आत्माओं के पिता को,
कितना अधिक देना चाहिये हमें सम्मान।

हमारे पिताओं ने थोड़े समय के लिये,
जैसा उन्होंने उत्तम समझा सिधाया हमें,
किन्तु परमेश्वर सिधाता हमें भलाई के लिये,
जिससे हम पवित्रता के सहभागी हो सकें।

जिस समय सिधाया जा रहा होता,
उस समय सिधाना अच्छा नहीं लगता,
किन्तु जो भी हो, सिधाने के बाद यह,
नेकी और शांति का सुफल प्रदान करता।

चेतावनीः परमेश्वर को नकारो मत

प्रयत्नशील रहो हर प्रकार से,
शांति और पवित्रता के लिये,
कर नहीं पायेगा प्रभु के दर्शन,
कोई भी बिना पवित्रता के।

ध्यान रखो कि परमेश्वर के अनुग्रह से,
कोई भी विमुख होने न पाये,
तुम्हें या औरों को कष्ट पहुँचाने को,
कोई झगड़े की जड़ बोने न पाये।

देखो कि कोई व्यभिचार न करे,
न इसाऊ के समान परमेश्वर से विमुख हो,
जिसने बस एक जून भर खाने के लिये,
उत्तराधिकार पाने का अधिकार बेच दिया हो।

फिर बाद में जब पाना चाहा वरदान,
तो उसे अयोग्य गया ठहराया,
यद्यपि रो-रोकर भूल सुधारनी चाही,
पर किये को अनकिया नहीं कर पाया।

तुम अग्नि से जलते हुए,
इस पर्वत के पास नहीं आए,
न अंधकार विषाद या बवंडर,
न तुरही की ध्वनि के पास आए।

सुन न सके उस ध्वनि को वे,
वह आदेश वे झेल नहीं पाये,
मूसा ने कहा वह दृश्य देख,
मेरा शरीर और मन कँपकँपायें।

किन्तु तुम तो सजीव परमेश्वर की नगरी,
स्वर्ग के यरूशलेम के निकट आ पहुँचे,
परमेश्वर और नये करार के मध्यस्थ यीशू,
तुम उसके उत्तम वचन तक आ पहुँचे।

नकारो मत तुम उस बोलने वाले को,
बच नहीं पायेंगे हम बिल्कुल भी उससे,
हमारा परमेश्वर एक धधकती ज्वाला है,
धन्यवाद दें उसे आदर मिश्रित भय से।

निष्कर्ष

परस्पर प्रेम करते रहो भाई के समान,
अतिथियों का सत्कार करना मत भूलो,
याद करो बंदियों को इस रूप में,
मानों तुम भी संग में बंदी रहे हो।

विवाह की सेज को रखो पवित्र,
परमेश्वर व्यभिचारियों को दण्ड देगा,
मुक्त रहो धन के लालच से,
जो तुम्हें चाहिये परमेश्वर देगा।

याद रखो अपने मार्ग दर्शकों को,
जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया,
अनुग्रह द्वारा सुदृढ़ बनें तुम्हारे मन,
व्यर्थ की बातों से ना जाये भरमाया,

आओ यीशू द्वारा करें हम अर्पित,
परमेश्वर को स्तुति रूपी बलि,
मत भूलो अपनी वस्तुएं औरों को बाँटना,
परमेश्वर को भाती नेकी रूप बलि।

जिसने भेड़ों के उस महान रखवाले,
हमारे प्रभु यीशू के लहू द्वारा,
उस सनातन करार पर मुहर लगाकर,
मरे हुओं में से दिया जिला।

वह शांति दाता परमेश्वर तुम्हें,
सभी उत्तम साधनों से सम्पन्न करे,
जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी कर सको,
वह हमारे भीतर उसे सक्रिय करे।

याकूब

याकूब की ओर से जो है,
परमेश्वर और प्रभु यीशू मसीह का दास,
समूचे संसार में जो फैले हुए हैं,
संतों के बारह कुलों को पहुँचे नमस्कार।

विश्वास और विवेक

हे मेरे भाइयों जब कभी तुम,
तरह तरह की आजमाईश में पड़ो,
तो धैर्य रखो और विश्वास के साथ,
उसे बड़े आनन्द की बात समझो।

क्योंकि जब सफल होता है विश्वास,
तो धैयपूर्ण सहन शक्ति मिलती उससे,
जो देती एक ऐसी पूर्णता को जन्म,
परिपूर्ण सिद्ध तुम बन सकते जिससे।

देता है सभी को वह उदारता के साथ,
यदि विश्वासपूर्वक उससे कुछ माँगा जाये,
अस्थिर लहर के समान उसे कुछ नहीं मिलता,
जिसके हृदय में जरा भी संदेह रह जाये।

सच्चा धन

साधारण भाई को गर्व करना चाहिये कि,
परमेश्वर ने उसे आत्मा का धन दिया,
और धनी भाई को यह गर्व हो कि,
परमेश्वर ने उसे नम्र स्वभाव दिया।

क्योंकि घास पर खिलने वाले,
फूल के समान उसे झड़ जाना है,
इसी प्रकार धनी व्यक्ति को भी,
भाग दौड़ के साथ मर जाना है।

परमेश्वर परीक्षा नहीं लेता

वह धन्य है जो रहता परीक्षा में अटल,
क्योंकि परीक्षा में खरा उतरने के बाद,
जीवन के उस विजय मुकुट को धारण करेगा,
जिसे परमेश्वर अपने प्रेमियों को देता उसके बाद।

किसी को यह नहीं कहना चाहिये,
कि परमेश्वर ले रहा है मेरी परीक्षा,
क्योंकि बुरी बातों से उसका सरोकार नहीं,
वह परमेश्वर नहीं लेता किसी की परीक्षा।

अपनी ही बुरी इच्छाओं के भ्रम में,
फँस कर पड़ता इंसान परीक्षा में,
फिर जब वह इच्छा फलवती होती तो,
पाप बढ़ कर बदल जाता मृत्यु में।

सो मेरे प्रिय भाइयों, धोखा मत खाओ,
प्रत्येक दान और उपहार ऊपर से ही मिलता,
स्वर्गीय प्रकाश को जन्म देने वाले,
उस परम पिता द्वारा नीचे लाया जाता।

वह नक्षत्रों की गतिविधि से उत्पन्न,
छाया से कभी नहीं बदलता,
सुसंदेश द्वारा चुना हमें अपनी संतान,
और सब में स्थान दिया हमें पहला।

सुनना और उस पर चलना

हे मेरे प्रिय भाइयों, याद रखो,
हर किसी को तत्परता के साथ सुनना चाहिये,
करनी नहीं चाहिये कभी बोलने में जल्दी,
और क्रोध करने में उतावली नहीं करनी चाहिये।

दूर रहो घिनौने आचरण और दुष्टता से,
नम्रता से परमेश्वर का वचन ग्रहण करो,
बनो परमेश्वर की शिक्षा पर चलने वाले,
केवल सुनने भर वाले कभी न बनो।

जो केवल सुनता, आचरण न करता,
वो तो छलता है स्वयं अपने को,
जो उतारता उसे आचरण में अपने,
करता है वही धन्य स्वयं को।

भक्ति का सच्चा मार्ग

यदि कोई सोचता कि वह भक्त है,
पर अपनी जिह्वा पर नियंत्रण नहीं रखता,
तो ऐसा व्यक्ति है धोखे में,
उसे भक्ति का सुफल नहीं मिलता।

सच्ची और शुद्ध भक्ति वह है जिसमें,
अनाथो और विधवाओं की सुधि ली जाये,
और स्वयं का आचरण हो ऐसा कि,
कोई सांसारिक कलंक न लगने दिया जाये।

सबसे प्रेम करो

हे मेरे भाइयों, प्रभु यीशू मसीह में,
जो तुम्हारा विश्वास है, पक्षपातपूर्ण न हो,
धनी और निर्धन व्यक्ति के बीच,
कभी निर्धन व्यक्ति का अपमान न हो।

क्या परमेश्वर ने दुनिया की नजरों में,
निर्धनों को विश्वास में धनी न चुना,
क्या परमेश्वर ने उन निर्धन लोगों को,
अपने राज्य का उत्तराधिकारी न चुना।

किन्तु निर्धन और धनी में भेद कर,
तुमने तो निर्धन के प्रति घृणा दर्शायी,
क्या वे धनिक व्यक्ति वो नहीं है,
जिन्होंने जब चाहा तुम्हें चोट पहुँचायी।

यदि मानते हो शास्त्र की उच्चतम व्यवस्था,
अपने पड़ौसी को अपना सा प्रेम करो,
तो अच्छा ही करते हो ऐसा कर के,
पक्षपात दिखाकर तुम मत पाप करो।

समग्र व्यवस्था का पालन करने वाला भी,
यदि किसी एक बात में चूक जाता है,
तो वह अपनी उस चूक के कारण,
व्यवस्था के उल्लंघन का दोषी हो जाता है।

क्योंकि जिसने कहा था व्यभिचार मत करो,
हत्या मत करो उसने ही यह भी कहा,
सो तुम व्यभिचार न कर हत्या करते हो,
तो तुम्हारा व्यवस्था का पालन कहाँ रहा।

जिनके ह्रदय में दया नहीं है,
उनका न्याय भी होगा दया बिना,
लेकिन याद रखो न्याय और दया में,
विजयी होती है सदा करूँणा।

विश्वास और सत् कर्म

यदि कोई स्वयं को विश्वासी कहता,
पर कर्म विश्वास के अनुकूल न हो,
तो ऐसा विश्वास उद्धार नहीं कर सकता,
जरूरी है उन दोनों में तालमेल हो।

यदि कोई भूखा और वस्त्र विहीन हो,
तुम्हारा कहना भर उनको काफी न होगा,
जब तक उन्हें आवश्यक वस्तुएं न दो,
तुम्हारे कहने का कोई मूल्य न होगा।

क्या हमारा पिता इब्राहीम अपने कर्मों द्वारा,
उस समय धर्मी नहीं ठहराया गया,
जब उसने अपने पुत्र इसहाक को,
बलि वेदी पर अर्पित कर दिया।

तू देख कि उसका वह विश्वास,
कर्मों के साथ ही सक्रिय हो रहा था,
और उसके कर्मों के ही द्वारा,
उसका विश्वास परिपूर्ण किया गया था।

इसी प्रकार क्या राहब वेश्या भी,
धर्मी नहीं ठहरायी गयी अपने कर्मो से,
जब शरण दी उसने घर में दूतों को,
और भेज दिया उन्हें कहीं और मार्ग से।

इस प्रकार जैसे मरा हुआ है,
यह देह बिना आत्मा के,
वैसे ही निर्जीव है विश्वास,
जुड़ा न हो यदि वह कर्म से।

वाणी का संयम

हे मेरे भाइयों, तुममें से बहुतों को,
शिक्षक बनने की इच्छा नहीं करनी चाहिये,
तुम जानते ही हो कि हम शिक्षकों का,
न्याय किया जायेगा और अधिक कड़ाई से।

मैं तुम्हें ऐसे इसलिये चेता रहा हूँ,
कि हम सब भूल करते रहते हैं,
सिद्ध है वह जो वाणी को साथ ले,
हम सब तो चूक करते रहते हैं।

वश में हो जाता घोड़ा लगाम से,
जहाज वश में हो जाते पतवारों के,
इसी प्रकार एक छोटी सी जीभ,
मारती है बड़ी बड़ी बातों की डींगे।

अब तनिक सोचो एक जरा सी लपट,
जला सकती है समूचे जंगल को,
तो यह जीभ भी एक लपट है, जो,
भ्रष्ट कर सकती है समूची देह को।

नरक की आग सी यह धधकती रहती,
वश में इसे कोई कर नहीं सकता,
यह घातक विष से भरा ऐसा अंग है,
जो कभी चैन से रह नहीं सकता।

इसी से प्रभु की हम स्तुति करते,
और इसी से कोसते हम लोगों को,
इसी जिह्वा से अभिशाप और वरदान,
क्या ऐसा उचित है करना हमको।

सच्चा विवेक

भला तुममें ज्ञानी और समझदार कौन है,
व्यवहार में झलकनी चाहिये तुम्हारी सज्जनता,
मत पीटो अपने ज्ञान का तुम ढोल,
अगर मन में भरा है स्वार्थ और ईर्ष्या।

ऐसा करके तो सत्य पर पर्दा डाल,
तुम असत्य आचरण कर रहे हो,
ऐसा ज्ञान तो वह भौतिक ज्ञान है,
स्वर्ग से नहीं उतरा है जो।

यह ज्ञान आत्मिक नहीं शैतान का है,
जिसमें महत्त्वकांक्षाए और बुराइयां भरी,
किन्तु स्वर्ग से आने वाले ज्ञान में,
पवित्रता, शांति, प्रसन्नता और करूँणा रहती।

परमेश्वर को समर्पित हो जाओ

क्यों होते हैं तुम्हारे बीच लड़ाई-झगड़े,
क्या उनका कारण तुम्हारे भीतर नहीं,
तुम्हारी इच्छाएं जो तुम्हें उकसाती रहती,
क्या उन्हीं से ये पैदा नहीं।

तुम लोग चाहते तो हो लेकिन,
तुम्हें इच्छित फल मिल नहीं पाता,
लड़ते-झगड़ते हो तुम इसी कारण से,
परमेश्वर से तुमसे माँगा नहीं जाता।

और जब माँगते भी हो परमेश्वर से,
तुम्हारा उद्देश्य अच्छा नहीं होता,
अपने भोग-विलास की ही बस सोचते,
तुम्हारा मन दुनिया में ही भटका होता।

क्या नहीं जानते ओ विश्वास विहीन लोगों,
संसार से प्रेम है परमेश्वर से घृणा जैसा,
जो रखना चाहता इस दुनिया से दोस्ती,
वह बन जाता परमेश्वर का शत्रु जैसा।

हमारी आत्मा इच्छाओं से भरी है,
क्या व्यर्थ ही कहता शास्त्र यह बात,
कर दो स्वयं को परमेश्वर के अधीन,
तो शैतान सामने से जायेगा भाग।

आओ परमेश्वर के पास आओ,
वह भी तुम्हारे पास आयेगा,
प्रभु के सामने स्वयं को नवाओ,
प्रभु तुम्हें ऊँचा उठायेगा।

न्यायकर्त्ता तुम नहीं हो

बंद करो परस्पर विरोध में बोलना,
जो बोलता विरोध में अपने ही भाई के,
व्यवस्था के ही विरोध में बोलता है वह,
और सर मढ़ता है दोष व्यवस्था के।

और यदि तुम दोष व्यवस्था पर लगाते,
तो बन जाते हो तुम उसके न्यायकर्त्ता,
लेकिन व्यवस्था का विधान देने वाला,
और बस एक ही है उसका न्यायकर्त्ता।

वही कर सकता है रक्षा,
और वही उसे नष्ट कर सकता,
तो फिर कौन होते हो तुम,
अपने ही साथी के न्यायकर्त्ता।

अपना जीवन परमेश्वर को चलाने दो

जो कहते हैं हम ऐसा कर देंगे,
व्यापार करेंगे और पैसा बना लेंगे,
किन्तु तुम तो यह भी नहीं जानते,
कल राह में फूल या काँटे बिछेंगे।

देखो तुम तो उस धुंध जैसे हो,
उठती है और फिर खो जाती जो,
इसलिये तुम्हें तो बस कहना चाहिये,
ऐसा करेंगे अगर प्रभु की मर्जी हो।

स्वार्थी धनी दण्ड के भागी होंगे

धनवानों सुनो, आने वाली विपत्तियों हेतु,
रोओ और ऊँचे स्वर में विलाप करो,
तुम्हारी धन-दौलत सब बिगड़ गयी है,
गवाही देगी तुम्हारे ही खिलाफ, फिक्र करो।

लूटा और सताया है तुमने जिनको,
उनकी पुकार परमेश्वर तक जा पहुँची,
भोग विलास में डूबे रहे तुम,
वध-पशु सी अपनी काया पुष्ट की।

धैर्य रखो

सो हे मेरे भाइयों, धीरज धरो,
प्रभु के फिर से आने तक,
जैसे किसान बाट जोहता रहता है,
अपनी मूल्यवान फसल की पकने तक।

बनाये रखो अपने हृदयों को दृढ़,
क्योंकि निकट है फिर आना प्रभु का,
प्रभु कितना दयालु और करुणापूर्ण है,
अय्यूब की तरह फल देता धैर्य का।

सोच विचार कर बोलो

हे मेरे भाइयो, सबसे बड़ी है यह बात,
छोड़ो स्वर्ग और धरती की कसमें खाना,
कहीं पड़े न तुम पर परमेश्वर का दण्ड,
तुम्हारी हाँ, हाँ और ना होनी चाहिये ना।

प्रार्थना की शक्ति

यदि कोई तुममें से विपत्ति में पड़ा,
तो करनी चाहिए उसे प्रार्थना,
और यदि कोई प्रसन्न है,
तो उसे स्तुति गीत चाहिये गाना।

रोगी बुलाये कलीसिया के अगुवाओं को,
और वे उसके लिये प्रार्थना करें,
प्रभु कर देता है क्षमा पापों को,
यदि अपने अपराध हम स्वीकार करें।

एक दूसरे के लिये करो प्रार्थना,
भले लोगों की प्रार्थना होती स्वीकार,
एलिय्याह भी हमारे जैसा मनुष्य था,
जिसकी प्रार्थना प्रभु ने करी स्वीकार।

एक आत्मा की रक्षा

लौटा लाता जो सत्य से भटके को,
वह उसे अनन्त मृत्यु से बचाता,
और उसके अनेक पापों के,
क्षमा किये जाने का कारण बन जाता।

1. पतरस

यीशू के प्रेरित पतरस की ओर से,
परमेश्वर के उन चुने लोगों के नाम,
जो अपनी आत्मा द्वारा उसे समर्पित हों,
उन्हें परमेश्वर का अनुग्रह और शांति लाभ।

सजीव आशा

परम पिता परमेश्वर ने,
यीशू मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा,
एक नया जन्म दिया हमें,
उसकी करुणा में पाने को सजीव आशा।

ताकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में सुरक्षित रखे,
अविनासी उत्तराधिकार को तुम पा लो,
समय के अंतिम छोर पर स्थित उद्धार,
जो विश्वास से सुरक्षित हैं उन्हें प्राप्त हो।

तुम्हारा परखा हुआ विश्वास जो,
मूल्यवान है आग में तपे सोने सा,
उसे जब यीशू प्रकट होगा तब,
मिलेगी परमेश्वर से महिमा और प्रशंसा।

यद्यपि तुम नहीं देख पा रहे हो उसे,
फिर भी उसमें विश्वास रखते हो,
और तुम अपने विश्वास के परिणामस्वरूप,
अपनी आत्मा का उद्धार कर रहे हो।

इस उद्धार के विषय में नबियों ने,
बड़े परिश्रम के साथ खोजबीन की,
और सावधानी के साथ पता लगाकर,
इस अनुग्रह के बारे में भविष्यवाणी की।

उन्होंने मसीह की आत्मा से यह जाना,
जो उसके दुःखो को बता रही थी,
और वह महिमा जो दुःखो के बाद प्रकटेगी,
वह आत्मा उन्हें बता रही थी।

दर्शा दिया गया था यह उन्हें,
ये बाते कब होंगी और तब क्या होगा,
और यह कि उन बातों के प्रवचन से,
वे अपनी नहीं, कर रहे थे तुम्हारी सेवा।

वे बातें स्वर्ग से भेजे गये,
पवित्र आत्मा के द्वारा,
तुम्हें सुसमाचार के उपदेशकों के,
माध्यम से दीं गयी थीं बता।

पवित्र जीवन के लिये बुलावा

इसलिये मानसिक रूप से सचेत रह,
अपने आप पर नियन्त्रण रखो,
यीशू के प्रकटने पर जो दिया जाना है,
उस वरदान पर पूरी आशा रखो।

जब तुम अज्ञानी थे, उन इच्छाओं के अनुसार,
अपने आप को मत ढालो,
बल्कि जैसे वह परमेश्वर पवित्र है,
वैसे ही अपने कर्मों में पवित्र बनो।

और यदि तुम निष्पक्ष न्यायकर्त्ता परमेश्वर को,
हे पिता कह कर पुकारते हो,
तो इस परदेसी धरती पर रहते,
सम्मानपूर्वक भय के साथ जीवन जीओ।

तुम जानते हो नहीं मिल सकता छुटकारा,
तुम्हें सोने, चाँदी या वैसी चीजों से,
बल्कि वह तो मिल सकता है केवल,
यीशू मसीह के बहुमूल्य रक्त ही से।

वह तो चुन लिया गया था,
इस सृष्टि की रचना से पहले ही,
किन्तु तुम लोगों के लिये उसे,
प्रकट किया गया इन अंतिम दिनों में ही।

उस मसीह के कारण ही तुम,
विश्वास करते रहे उस परमेश्वर में,
जिसने उसे पुनर्जीवित कर दिया,
और महिमा प्रदान करी उसे।

अब जब तुमने सत्य का पालन करते,
बना लिया है पवित्र अपनी आत्मा को,

तो पवित्र मन से तीव्रता के साथ,
परस्पर प्रेम को अपना लक्ष्य बना लो।

प्राप्त नहीं किया है तुमने,
किसी नाशमान बीज से पुनर्जीवन,
बल्कि परमेश्वर के सजीव और अटल,
सुसंदेश से हुआ है तुम्हारा पुनर्जन्म।

सजीव पत्थर और पवित्र प्रजा

सभी बुराइयों, पाखण्ड, वैर-विरोध,
और परस्पर दोष लगाने से बचे रहो,
लालायित रहो शुद्ध आध्यात्मिक दूध के लिये,
ताकि उससे तुम्हारा विकास और उद्धार हो।

आओ सजीव ''पत्थर'' यीशू के निकट,
जिसे संसारी लोगों ने नकार दिया,
किन्तु जो परमेश्वर के लिये बहुमूल्य है,
और जो उसके द्वारा चुना गया।

तुम भी सजीव पत्थरों के समान,
एक आध्यात्मिक मन्दिर से बनाये जा रहे हो,
ताकि कर सको उसमें वह बलिदान समर्पित,
जो यीशू द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हो।

शास्त्र में लिखा है, देखो, सिय्योन में,
रख रहा हूँ एक कोने का पत्थर,
जो विश्वास करेगा उसे लजाना न पड़ेगा,
इस बहुमूल्य और चुने हुए पत्थर पर।

किन्तु जो लोग विश्वास नहीं करते,
खाते हैं इस पत्थर से ठोकर,
क्योंकि वे परमेश्वर का वचन नहीं पालते,
उनकी नियति ही बन गयी है ठोकर।

किन्तु तुम तो परमेश्वर के अपने हो,
जिसने अन्धकार से तुम्हें प्रकाश में बुलाया,
एक वक्त था जब तुम प्रजा नहीं थे,
अब उसने अपनी प्रजा और दयापात्र बनाया।

परमेश्वर के लिये जीओ

हे प्रिय मित्रों, मैं तुमसे, जो,
इस संसार में अजनबियों से हो,
निवेदन करता हूँ उन सांसारिक इच्छाओं से,
जो आत्मा से जूझती हैं दूर रहो।

विधर्मियों के बीच उत्तम बनाये रखो व्यवहार,
कि चाहे वे कितनी ही तुम्हारी आलोचना करें,
किन्तु तुम्हारे उत्तम कर्मों के कारण परमेश्वर को,
वे उसके आने के दिन महिमा प्रदान करें।

अधिकारी की आज्ञा मानो

आज्ञा मानों अधिकारियों और राजा की,
परमेश्वर ने ही भेजा है उन्हें,
देने के लिये कुकर्मियों को दण्ड,
और सज्जनों की प्रशंसा हेतु उन्हें।

क्योंकि परमेश्वर की यही इच्छा है,
कि मूर्ख तुम्हारे उत्तम कार्यों से सीखें,
जीओ स्वतन्त्र व्यक्ति से पर स्वतन्त्रता,
बुराई के लिये कभी आड़ न बनें।

जीओ परमेश्वर के सेवक के समान,
सबका सम्मान करो, परस्पर प्रेम करो,
आदर सहित भय मानो परमेश्वर का,
और अपने शासक का सम्मान करो।

मसीह की यातना का दृष्टांत

हे सेवकों, यथोचित आदर के साथ,
तुम अपने स्वामियों के अधीन रहो,
ना ही केवल उनके जो अच्छे हों,
बल्कि उनके भी जो कठोर हों।

क्योंकि परमेश्वर के प्रति सचेत रह,
यातनाएं और अन्याय झेलने में है प्रशंसा,
किन्तु जिन्हें बुरे कर्मों का मिलता दण्ड,
उनके दण्ड सहने में कैसी प्रशंसा।

किन्तु अच्छे कामों के लिये सताया जाना,
परमेश्वर के सामने है प्रशंसा के योग्य,
मसीह ने भी हमारे लिये दुःख उठाकर,
उदाहरण दिया है अनुसरण के योग्य।

जब वह अपमानित हुआ तब उसने,
नहीं किया किसी का भी अपमान,
और जब उसने इतने दुःख झेले,
बनाया क्रोध का ना किसी को सामान।

बल्कि उसने तो न्यायकर्त्ता परमेश्वर के आगे,
अपने आपको अर्पित कर दिया,
उसने क्रूस पर अपनी देह में,
हमारे पापों को खुद पर ओढ़ लिया।

ताकि मर जायें हम अपने पापों के प्रति,
और जो नेक है बस उसके लिये जीयें,
यह उसके उन घावों के कारण ही हुआ,
जिनसे किये गये हो तुम चंगे।

क्योंकि भेड़ों के समान तुम,
भटक रहे थे इधर-उधर,
लेकिन अब तुमने पाया है विश्राम,
अपने गड़ेरिये से मिल कर।

पत्नी और पति

इसी प्रकार हे पत्नीयो! तुम भी,
अपने पतियों के प्रति रहो समर्पित,
क्योंकि यदि वे परमेश्वर से विमुख हो,
तो अपने व्यवहार से कर लो विजित।

दिखावटी नहीं हो तुम्हारा साज-शृंगार,
बल्कि मन का भीतरी व्यक्तित्व हो,
जो कोमल और शान्त आत्मा के,
अविनाशी सौन्दर्य से युक्त हो।

क्योंकि बीते युग की पवित्र महिलाओं का,
खुद को सजाने-सँवारने का यही ढंग था,
जैसे इब्राहीम के अधीन रहने वाली सारा ने,
इब्राहीम को ही अपना सर्वस्व माना था।

ऐसे ही हे पतियो, अपनी पत्नीयों के साथ,
समझदारी से रहो, उनका आदर करो,
तुम्हारी प्रार्थनाओं में बाधा न पड़े इसलिये,
उन्हें जीवन के वरदान में शामिल करो।

सतकर्मों के लिये दुःख झेलना

बनो सहनशील, परस्पर प्रेम करने वाले,
दयालू और नम्र औरों के प्रति,
बुराई से ना दो बुराई का बदला,
सदभाव ही रखो तुम उनके प्रति।

बुलाया है परमेश्वर ने तुम्हें,
ऐसा ही करने के लिये,
परमेश्वर के आशीर्वाद का उत्तराधिकार,
इसी से ही मिलेगा तुम्हें।

कहता है शास्त्र, जो चाहे आनन्द,
और जो समय की सदगति को देखना चाहे,
बोले न कभी वह बोल बुरे,
अपने अधरों को वह छल-वाणी से रोके।

उसे चाहिये वह मुँह फेर ले,
उससे जो नेक नहीं होता,
उत्तम कार्य ही करता रहे वह,
और प्रयत्न करे शांति पाने का।

जो उत्तम हैं प्रभु की नजरो में रहते,
सुनता है प्रभु प्रार्थना उनकी,
पर जो बुरे कर्मों में लिप्त रहते,
एक नहीं सुनता प्रभु उनकी।

यदि उत्तम ही करने को रहो लालायित,
तब कौन भला तुम्हें हानि पहुँचा सकता,
किन्तु यदि दुःख उठाना पड़े भलाई हेतु,
तो धन्य भाग्य समझो तुम अपना।

अपने मन में तुम मसीह को,
प्रभु के रूप में आदर दो,
तुम्हारे विश्वास के बारे में पूछे कोई,
तो विनम्रता और आदर से उत्तर दो।

शुद्ध रखो अपने ह्रदय को ताकि,
मसीह में तुम्हारें उत्तम आचरण के निदंक,
अगर तुम्हारा अपमान करना चाहें तो,
लज्जा से उनकी आँखें हो नत।

यदि परमेश्वर चाहता है तुम दुःख उठाओ,
तो उत्तम काम करते हुए दुःख झेलो,
हमारे पापों के लिये दुःख उठाया मसीह ने,
ताकि परमेश्वर के समीप ले जा सके वह हमको।

शरीर के भाव से तो वह मारा गया,
पर आत्मा के भाव से जिलाया गया,
आत्मा की स्थिति में ही जाकर उसने,
बंदी स्वर्गीय आत्माओं को संदेश दिया।

वे आत्माएं जो नूह के समय,
नहीं मानने वाली थीं परमेश्वर की आज्ञा,
बच पाये थे आठ व्यक्ति ही पानी से,
और परमेश्वर धैर्यपूर्वक कर रहा था प्रतीक्षा।

यह पानी उस बपतिस्मा के समान है,
जिससे अब तुम्हारा उद्धार होता है,
इसमें शरीर का मैल छुड़ाना नहीं,
शुद्ध अन्तःकरण के लिये प्रार्थना है।

बदला हुआ जीवन

जब मसीह ने यातनाएं झेली तो तुम भी,
इसी मानसिकता को शस्त्र सा धारण करो,
क्योंकि उठाता है जो शारीरिक कष्ट,
पा लेता है पापों से छुटकारा वो।

फिर न भागे वह इच्छाओं के पीछे,
बल्कि परमेश्वर की इच्छा का करे पालन,
बीता चुके हो बहुत वक्त यूँ ही,
अब प्रभु आज्ञा के अनुरूप बिताओ जीवन।

अच्छे प्रबन्धकर्त्ता बनो

वह समय निकट है जब,
हो जायेगा अंत सब कुछ का,
सो समझदार बन अपने पर काबू रखो,
ताकि प्रार्थना करने में मिले सहायता।

निरन्तर एक दूसरे के प्रति बनाये रखो प्रेम,
इससे निवारण होता अनगिनत पापों का,
परमेश्वर के अनुग्रह को उत्तम प्रबन्धकों के समान,
काम में ला करो एक दूसरे की सेवा।

जो सेवा करो पूर्ण शक्ति के साथ,
ताकि मसीह द्वारा हो परमेश्वर की महिमा,
जो कुछ महिमा और सार्म्थय है,
सब कुछ उसी का है सदा सर्वदा।

मसीही के रूप में दुःख उठाना

तुम्हारे बीच की इस अग्नि-परीक्षा पर,
हे मित्रों, जो हैं तुम्हें परखने को,
ऐसे अचरज मत करना कि जैसे,
तुम्हारे साथ कोई अनहोनी घट रही हो।

बल्कि आनन्द मनाओ कि तुम,
मसीह की यातनाओं में हिस्सा बटा रहे हो,
ताकि जब उसकी महिमा प्रकट हो,
तब तुम भी आनंदित और मगन हो सको।

मसीह के नाम पर यदि हो अपमान,
तो सहन करो तुम उस अपमान को,
बसती है परमेश्वर की महिमावान आत्मा तुममें,
क्योंकि तुम मसीह के अनुयायी हो।

यदि कठिन है धर्मियों का भी उद्धार पाना,
तो सोचो क्या घटेगा पापियों के साथ,
सो विश्वासी जन उत्तम कार्य करते हुए,
सौंप दें अपनी आत्माएं परमेश्वर के हाथ।

परमेश्वर का जन समूह

अब तुम्हारे बीच जो बुजुर्ग है,
करता हूँ मैं उनसे यह निवेदन,
परमेश्वर के जन समूह की तुम,
करते हो स्वेच्छा से सेवा और निरीक्षण।

देखरेख के लिये जो तुम्हें सौंपे गये,
तुम उनके कठोर निरंकुश शासक न बनो,
प्रेम से लाओ उन्हें सदमार्ग पर,
और स्वयं उनके लिये एक आदर्श बनो।

इसी प्रकार हे नवयुवकों तुम भी,
अपने बुजुर्ग संरक्षकों के अधीन रहो,
और हे नवयुवको और हे बुजुर्गों,
तुम एक दूसरे के लिये विनम्र रहो।

क्योंकि वह परम पिता परमेश्वर,
विरोध करता है अभिमानी लोगों का,
किन्तु दीन जनों पर रहता है,
सदा-सदा के लिये अनुग्रह उसका।

इसलिये तुम अपने आप को नवाओ,
परमेश्वर के महिमावान हाथ के नीचे,
ताकि वह उचित अवसर आने पर,
अनुग्रह कर उठा सके तुम्हें ऊँचे।

छोड़ दो अपनी सब चिंताएं उस पर,
क्योंकि तुम्हारे लिये वह है चिंतित,
सावधान रह डटे रहो अपने विश्वास पर,
और अपने मन को रखो नियंत्रित।

यीशू मसीह में अनन्त महिमा का सहभागी,
होने के लिये बुलाया जिस परमेश्वर ने तुम्हें,
थोड़े समय यातनाएं झेलने के बाद वह,
फिर स्थिरता से स्थापित कर समर्थ बनाएगा तुम्हें।

पत्र का समापन

मैंने तुम्हें यह छोटा-सा पत्र,
लिखा है सिलवानुस के सहयोग से,
परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है,
यह साक्षी देने को लिखा है इसे।

---

2. पतरस

यीशू मसीह के सेवक और प्रेरित,
शमौन पतरस की ओर से,
उन लोगों के नाम जिन लोगों को,
हम जैसा ही विश्वास मिला परमेश्वर से।

हमारा परमेश्वर और मसीह न्यायपूर्ण है,
और तुम उनको जान चुके हो,
इसलिये परमेश्वर की कृपा और अनुग्रह,
तुम्हें अधिक से अधिक प्राप्त हो।

परमेश्वर ने हमें सब कुछ दिया है

अपने जीवन और परमेश्वर की सेवा के लिये,
जो कुछ हमें चाहिये सब उसने दिया हमें,
हम जानते हैं अपनी दिव्य शक्ति द्वारा,
अपनी धार्मिकता और महिमा के कारण बुलाया हमें।

इन्हीं के द्वारा उसने हमें,
दिये वे महान और अमूल्य वरदान,
जिन्हें देने की उसने प्रतिज्ञा की थी,
ताकि हो जाओ तुम उसके समान।

और उस विनाश से बच जाओ जो,
बुरी इच्छाओं के कारण स्थित है जगत में,
सो ज्ञान, आत्म-संयम, धैर्य, भक्ति और प्रेम,
बढ़ाते जाओ सब उत्तम गुण अपने विश्वास में।

यदि ये गुण तुममें विकसित हो रहे हैं,
तो वे तुम्हें कर्मशील और सफल बना देंगे,
उनसे तुम्हें यीशू का परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा,
लेकिन गुण-विहीन लोग कुछ नहीं जानेंगे।

इसलिये तत्पर रहो यह दिखाने के लिये,
कि तुम्हें परमेश्वर ने बुलाया और चुना,
इस तरह मसीह के अनन्त राज्य में तुम्हें,
प्रवेश देकर दिखायेगा परमेश्वर अपनी उदारता।

इसी कारण इन बातों को मैं,
काया रहने तक तुम्हें याद दिलाता रहूँगा,
क्योंकि जैसा मुझे मसीह ने समझाया,
उस काया को मैं शीघ्र ही छोड़ दूँगा।

हमने मसीह की महिमा के दर्शन किये हैं

यीशू के समर्थ आगमन के विषय में,
जब हमने तुम्हें बताया था,
तब हमने चतुरतापूर्वक गढ़ी हुई,
कहानियों का सहारा नहीं लिया था।

क्योंकि हम तो स्वयं साक्षी हैं,
प्रभु यीशू मसीह की महानता के,
जब सम्मान और महिमा प्राप्त की,
उसने परम पिता परमेश्वर से।

तब परमेश्वर की उस दिव्य महिमा से,
प्रकट हुई एक विशिष्ट वाणी,
यह मेरा प्रिय पुत्र, मैं इससे प्रसन्न हूँ,
पर्वत पर उसके साथ सुनी हमने यह वाणी।

हमें भी नबियों के वचन पर,
हुई और भी अधिक आस्था,
इस पर ध्यान देकर तुम भी,
कर रहे हो बहुत अच्छा।

क्योंकि यह तो एक प्रकाश है जो,
तब तक अन्धकार में चमक रहा,
जब तक पौ फटे और उदित हो,
तुम्हारे हृदय में भोर का तारा।

शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी नहीं है,
किसी भी नबी के निजी विचारों का परिणाम,
क्योंकि वे तो पवित्र आत्मा की प्रेरणा से,
करते हैं परमेश्वर की वाणी का बखान।

झूठे शिक्षक

उन संत जनों के बीच जैसे,
दिखाई पड़ने लगे थे झूठे नबी,
बिल्कुल वैसे ही प्रकट होंगे,
तुम्हारे बीच भी झूठे नबी।

वे सूत्रपात करेंगे घातक धारणाओं का,
और उस स्वामी तक को नकार देंगे,
जिसने उन्हें दिलायी स्वतंत्रता और,
अपने विनाश को शीघ्र निमंत्रण देंगे।

बहुत से लोग अनुसरण करेंगे,
उनकी भोग-विलास की प्रवृत्तियों का,
और ऐसे लोगों के कारण,
होगा बदनाम मार्ग सच्चाई का।

लोभ के कारण अपनी बनावटी बातों से,
वे धन कमाएंगे तुम लोगों से,
उनका विनाश प्रतीक्षा कर रहा है,
और दंड निर्धारित हो चुका परमेश्वर से।

क्योंकि परमेश्वर ने पाप करने वाले,
दूतों तक को जब नहीं छोड़ा,
और न्याय के दिन तक उन्हें पाताल की,
अन्धेरे से भरी कोठरियों में रख छोड़ा।

छोड़ा नहीं उसने उस पुरातन संसार को भी,
किन्तु नूह की उस समय रक्षा की,
जब अधर्मी लोगों के संसार पर,
जल-प्रलय भेजी गयी थी।

नूह उन आठ व्यक्तियों में से एक था,
जो बचे थे उस जल-प्रलय से,
नूह स्वयं एक धार्मिक व्यक्ति था,
धर्म-प्रचार करता था अपने उपदेश से।

सदोम और अमोरा जैसे नगरों को,
दण्ड दे राख बना दिया गया,
ताकि अधार्मियों के साथ जो बातें घटेगी,
उनके लिये ठहरे यह एक चेतावनी सा।

बचा लिया उसने लूत को,
जो स्वयं एक नेक पुरुष था,
उद्दण्ड लोगों के अनैतिक आचरण से,
वह बहुत दुःखी रहा करता था।

वह धर्मी पुरुष उनके बीच रहते,
दिन-प्रतिदिन जैसा देखता सुनता था,
उससे उनके व्यवस्था रहित कर्मों के कारण,
उसकी आत्मा को कष्ट हुआ करता था।

प्रभु जानता है कि भक्तों को,
न्याय के दिन तक कैसे बचाया जाता,
और जो पापपूर्ण वासनाओं में रहते लिप्त,
उन्हें दण्ड के लिये कैसे रखा जाता।

उद्दण्ड और स्वेच्छाचारी लोगों को,
पशु की तरह नष्ट कर दिया जायेगा,
सदा रहते थे पापपूर्ण भोगों में प्रवर्त,
इन्हें बुराई के बदले बुरा दिया जायेगा।

बओर के बेटे बिलाम की तरह,
बदी की मजदूरी प्यारी थी जिसको,
मनुष्य की वाणी में बोल एक गदही ने,
डाँट फटकार कर रोका उस नबी को।

ये झूठे उपदेशक सूखे जल-स्रोत हैं,
सूखे मेघ जिन्हें तूँफान उड़ा ले जाता,
अपनी व्यर्थ की अहंकार पूर्ण बातों से,
लोगों का मन ये देते हैं भटका।

जगत में फँस बदी से हार गये थे,
हमारे उद्धारकर्त्ता यीशू को जानने के बाद,
उनकी यह बाद की स्थिति है,
पहली स्थिति से कहीं ज्यादा खराब।

क्योंकि उनके लिये यही अच्छा था कि,
वे यह धार्मिकता का मार्ग जान न पाते,
बजाय उसके कि पवित्र आज्ञा जो दी गयी,
उसे जानकर ये उससे मुँह फेर जाते।

यीशू फिर आयेगा

हे प्यारे मित्रों, यह दूसरा पत्र है,
जो लिख रहा तुम्हें याद दिलाने के लिये,
पवित्र नबियों के वचन और प्रभु के आदेश,
जो तुम्हारे प्रेरितों द्वारा तुम्हें दिये गये।

तुम्हें जान लेना चाहिये कि अंतिम दिनों में,
स्वेच्छाचारी हँसी उड़ाने वाले हँसी उड़ाते आयेंगे,
''क्या हुआ उसके फिर आने की प्रतिज्ञा का,
यह सृष्टि तो वैसे ही चल रही'' कहेंगे।

किन्तु यह आक्षेप करते वे भूल जाते हैं,
यह सृष्टि रची गयी है उसके आदेश से,
किया जायेगा अधर्मी लोगों का न्याय अवश्य,
नष्ट किये जायेगें वे उसी के आदेश से।

मत भूलो कि प्रभु के लिये,
एक दिन बराबर है हजार साल के,
प्रभु प्रतिज्ञा पूरी करने में देर नहीं लगाता,
हजार साल है उसके लिये एक दिन जैसे।

धीरज रखता है वह हमारे प्रति क्योंकि,
किसी को वह नष्ट होने देना नहीं चाहता,
सभी मन फिराव की ओर बढ़ें,
परमेश्वर तो बस यही देखना चाहता।

किन्तु प्रभु का दिन चुपके से,
किसी चोर की तरह आ जायेगा,
उस दिन एक भंयकर गर्जना के साथ,
धरती, आकाश सब नष्ट हो जाएगा।

जब ये सब नष्ट होने जा रहा,
सोचो तुम्हें किस प्रकार का बनना चाहिये,
जीना चाहिये परमेश्वर को अर्पित पवित्र जीवन,
हर प्रकार के उत्तम कर्म करने चाहिये।

किन्तु हम बाट जो रहे हैं,
नये आकाश और नयी धरती की,
परमेश्वर के वचन के अनुसार,
जहाँ पर धार्मिकता निवास करती।

इसलिये हे मित्रों, प्रभु की दृष्टि में,
तुम निर्दोष और निष्कलंक ठहरो,
और जैसा पौलुस ने तुम्हें लिखा था,
हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो।

उसके पत्रों में कुछ बातें ऐसी हैं,
आसान नहीं है जिनका समझना,
अज्ञानी उनके अर्थ का अनर्थ करते हैं,
दूसरे शास्त्रों के साथ भी करते हैं ऐसा।

बुराइयों और व्यवस्थाहीन लोगों के द्वारा तुम,
अपनी स्थिर स्थिति से डिगाये न जाओ,
बल्कि प्रभु यीशू के अनुग्रह और ज्ञान में,
तुम निरन्तर ही आगे को बढ़ते जाओ।

1. यूहन्ना

यह सृष्टि के आरम्भ से ही था,
हमने इसे सुना है, आँखों से देखा,
ध्यान से निहारा और उसे हमने,
स्वयं अपने ही हाथों से छुआ।

यह उस वचन के विषय में है,
जो जीवन है, जिसका ज्ञान हमें कराया गया,
हमने उसे देखा, उसके साक्षी हैं हम,
उसी की हम कर रहे हैं उद्घोषणा।

यह अनन्त जीवन पिता के साथ था,
और हमें जिसका बोध कराया गया,
हमने उसे देखा है और सुना है,
अब तुम्हें भी दे रहे उपदेश उसी का।

ताकि तुम भी हमारे साथ सहभागिता रखो,
जो है परम पिता और यीशू के साथ,
हम इन बातों को लिख रहे इसलिये,
कि हमारा आनन्द हो परिपूर्णता को प्राप्त।

परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है

हमने यीशू मसीह से जो सुसमाचार सुना है,
इसे हम सुना रहे हैं वह यह है,
हमारा परम पिता परमेश्वर प्रकाश है,
और उसमें लेशमात्र भी अंधकार नहीं है।

यदि हम कहें कि हम उसके साक्षी हैं,
पर पाप का जीवन जीते रहें हैं,
तो झूठ बोल रहे हैं हम,
और सत्य का अनुसरण नहीं कर रहे हैं।

किन्तु यदि बढ़ते हम प्रकाश में आगे,
क्योंकि प्रकाश में ही परमेश्वर है,
तो हम विश्वासी के रूप में,
एक दूसरे के सहभागी हैं।

यदि स्वीकार कर क्षमा माँग लेते पापों की,
तो वह हमें शुद्ध कर देता पापों से,
यदि हम कहते हमने कोई पाप नहीं किया,
तो परमेश्वर को हम झूठा बनाते।

यीशू हमारा सहायक है

हे मेरे प्यारे पुत्र और पुत्रियों,
बेहतर है तुम कोई पाप न करो,
किन्तु यदि कोई पाप करता है,
तो यीशू ही है तुम्हें बचाने को।

यीशू मसीह एक बलिदान है,
जो करता है हरण हमारे पापों का,
न केवल हमारे पापों का बल्कि,
वह समूचे संसार के पापों को हरता।

यदि हम पालन करते परमेश्वर के आदेशों का,
तो यह जतलाता हमने उसे जान लिया,
पर जो उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करता,
और कहे उसे जानता है, वह है झूठा।

जो करता है परमेश्वर के उपदेश का पालन,
उसमें परमेश्वर का प्रेम परिपूर्ण झलकता,
और जो परमेश्वर में स्थित हैं उनको,
जीना चाहिये जीवन यीशू के जैसा।

सबसे प्रेम करो

मैं कोई नयी आज्ञा नहीं लिख रहा,
बल्कि यह है एक सनातन आज्ञा,
सुन चुके हो जिसको तुम,
वह सुसंदेश है यह पुरानी आज्ञा।

मैं लिख रहा हूँ एक दूसरी नयी आज्ञा,
जिसका सत्य उजागर हुआ तुम्हारे जीवन में,
क्योंकि अन्धकार विलीन हो रहा है,
और सच्चा प्रकाश चमक रहा सर्वत्र में।

जो कहता है, ''वह प्रकाश में स्थित है'',
पर करता है अपने भाई से घृणा,
तो निश्चित ही है ऐसे व्यक्ति को,
अंधेरे ने अंधा दिया है बना।

उलझो मत संसार और उसकी चीजों में,
क्योंकि जो संसार से रखता है प्रेम,
उसके हृदय में संसार बस जाता,
परमेश्वर के प्रति रहता नहीं प्रेम।

सांसारिक है इस संसार की हर वस्तु,
और यह संसार हर पल विलीन होता जाता,
किन्तु परमेश्वर की इच्छा का पालन,
जो करता है वह अमर हो जाता।

मसीह के विरोधियों का अनुसरण मत करो

हे प्रिय बच्चों, अन्तिम घड़ी आ पहुँची है,
प्रकट हो रहे हैं मसीह के विरोधी,
निकले हैं वे हमारे ही भीतर से,
पर वास्तव में वे हैं हमारे नहीं।

किन्तु तुम्हारा तो उस परम पवित्र ने,
अभिषेक कराया है आत्मा के द्वारा,
और तुम जानते हो सत्य से कभी,
कोई झूठ निकल नहीं सकता।

किन्तु जो कहता यीशू मसीह नहीं है,
वह व्यक्ति तो है वास्तव में झूठा,
मसीह का शत्रु ऐसा व्यक्ति,
पिता और पुत्र दोनों को नकारता।

और वह जो नकारता है पुत्र को,
पिता भी नहीं है उसके पास,
किन्तु जो मानता है पुत्र को,
पिता का भी वह पाता विश्वास।

सुना है तुमने जो अनादि काल से,
उसे अपने भीतर बनाये रखो स्थित,
यदि वह तुममें बना रहता है तो,
रहोगे तुम पिता और पुत्र दोनों में स्थित।

हम परमेश्वर की सन्तान हैं

विचार कर देखो कि हम पर,
कितना महान प्रेम दर्शाया परमेश्वर ने,
ताकि वास्तव में जो हम हैं ही,
पुत्र-पुत्री कहला सकें हम उसके।

संसार इसलिये हमें नहीं पहचानता,
क्योंकि वह मसीह को नहीं पहचानता,
हम परमेश्वर की सन्तान हैं लेकिन भविष्य में,
हम क्या होंगे, इसका बोध नहीं कराया गया।

जो भी हो, मसीह के पुनः प्रकटने पर,
उसी के समान हम हो जायेंगे,
हर कोई जो ऐसी आशा रखते हैं,
उसी के समान पवित्र हो जायेंगे।

जो कोई पाप करता है, नियम तोड़ता,
क्योंकि नियम का तोड़ना ही है पाप,
उसने मसीह को जाना नहीं है,
हर वह जो करता रहता है पाप।

वह जो धर्मपूर्वक आचरण करता रहता,
धर्मी है वह ठीक मसीह के जैसे,

और वह जो पाप करता ही रहता,
शैतान का है, ठीक शैतान के जैसे।

जो परमेश्वर की सन्तान बन गया,
वह पाप करता नहीं रह सकता,
जो पाप करता परमेश्वर का नहीं है,
ना वह जो भाई को प्रेम नहीं करता।

परस्पर प्रेम से रहो

सुना है यह उपदेश तुमने आरम्भ से ही,
कि हमें परस्पर प्रेम रखना चाहिये,
और जिसने अपने भाई को मार डाला,
हमें उस कैन* जैसा नहीं बनना चाहिये।

हे भाइयों, यदि यह संसार तुमसे,
घृणा करता है तो अचरज मत करो,
तुम्हें पता है कि तुम मृत्यु के पार,
एक नये जीवन में आ पहुँचे हो।

हत्यारा है वह प्रत्येक व्यक्ति,
जो अपने भाई से करता घृणा,
और कोई हत्यारा रखता नहीं है,
अनन्त जीवन को अपनी सम्पत्ति बना।

हमारे लिये त्याग दिया मसीह ने जीवन,
उसी से हम जानते हैं क्या है प्रेम,
हमें भी अपने भाइयों के लिये,
प्राण न्यौछावर कर जतलाना चाहिये प्रेम।

केवल शब्दों और बातों तक,
सीमित नहीं रहना चाहिये हमारा प्रेम,
बल्कि प्रकटना चाहिये हमारे कर्मों द्वारा,
और सच्चा होना चाहिये हमारा प्रेम।

* कैन– कैन और अबेल आदम और हव्वा के बेटे थे। कैन अबेल से जलता था, सो उसने उसे मार डाला।

बुरे कामों के लिये हमारा मन,
जब भी हमारा निषेध करता है,
यह इसलिये कि परमेश्वर मन से बड़ा है,
और वह सब कुछ को जानता है।

यदि कोई काम करते समय,
हमारा मन हमें दोषी नहीं ठहराता,
तो परम पिता परमेश्वर के सामने,
हमारा विश्वास बना रहता।

पाते हैं हम जो माँगते उससे,
क्योंकि हम उसके आदेशों पर चल रहें हैं,
और जो बातें भातीं हैं उसको,
हम उन्हीं बातों को कर रहें हैं।

उसका आदेश हैः हम उसके पुत्र,
यीशू मसीह के नाम में विश्वास रखें,
तथा जैसा कि उसने हमें आदेश दिया है,
हम एक दूसरे से प्रेम करें।

जो उसके आदेशों का पालन करता है,
वह परमेश्वर में ही बना रहता,
और परमेश्वर प्रदत्त आत्मा के द्वारा,
हम जानते हैं वह हममें निवास करता।

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

हर आत्मा का विश्वास मत करो,
बल्कि सदा उन्हें परख कर देखो,
फैले हुए हैं झूठे नबी संसार में,
भटका सकते हैं तुम्हें भी वो।

हर वह आत्मा जो यीशू मसीह को,
मनुष्य रूप में पृथ्वी पर आया मानती,
परमेश्वर की ओर से है वह आत्मा,
उसकी ओर से नहीं, जो ऐसा नहीं मानती।

नहीं मानता जो व्यक्ति यीशू को,
ऐसा व्यक्ति तो मसीह का दुश्मन है,

वे मसीह विरोधी लोग सांसारिक हैं,
और उनका कहना सुनना सांसारिक जीवन है।

किन्तु हम लोग तो परमेश्वर के हैं,
सो जो उसे जानता, सुनता है हमारी,
किन्तु जो व्यक्ति परमेश्वर का नहीं,
वह व्यक्ति नहीं सुनता है बातें हमारी।

प्रेम परमेश्वर से मिलता है

हे प्यारे मित्रों, हम परस्पर प्रेम करें,
क्योंकि प्रेम परमेश्वर से मिलता,
और हर वह जो प्रेम करता है,
परमेश्वर की सन्तान बन रहता।

क्योंकि परमेश्वर ही प्रेम है,
प्रेमी ह्रदय परमेश्वर को जान जाता,
पर जिनके ह्रदय में प्रेम नहीं है,
परमेश्वर उन्हें कभी न मिल पाता।

अपने एकमात्र पुत्र को संसार में भेज,
परमेश्वर ने अपना प्रेम दर्शाया,
उस पुत्र ने हमारे पाप धारण कर,
अपना बलिदान दे हमें पापों से बचाया।

देखा नहीं कभी परमेश्वर को किसी ने,
किन्तु यदि हम आपस में करते प्रेम,
तो परमेश्वर हममें निवास करता है और,
हमारे भीतर सम्पूर्ण हो जाता उसका प्रेम।

इस प्रकार हम जान सकते हैं कि,
हम करते हैं परमेश्वर में निवास,
दिया हमें अपनी आत्मा का अंश,
वह परमेश्वर करता है हमारे भीतर निवास।

हमने उसे देखा और हम साक्षी हैं,
कि उद्धार हेतु उसने अपने पुत्र को भेजा,
जो मानता, ''यीशू परमेश्वर का पुत्र है'',
उसके ह्रदय में परमेश्वर निवास करता।

उस प्रेम पर टिकाया है हमने विश्वास,
जो परमेश्वर में है हमारे लिये,
परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में स्थित,
परमेश्वर में ही स्थिति है उसके लिये।

नहीं होता कोई भय प्रेम में,
बल्कि प्रेम सब भय भगा देता,
सो जिसमें भय है उसके प्रेम को,
मिल ना सकी है अभी पूर्णता।

हम प्रेम करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने,
आगे बढ़ पहले हमें प्रेम किया है,
सो परमेश्वर से प्रेम, भाई से घृणा,
जो करता हो ऐसा वह झूठा है।

क्योंकि उस भाई को जिसे देखा उसने,
यदि वह प्रेम नहीं कर सकता,
तो परमेश्वर को जिसे उसने देखा नहीं,
कैसे कभी वह प्रेम कर सकता।

सो मसीह से मिला हमें यही आदेश,
वह जो करता परमेश्वर से प्रेम,
परमेश्वर से प्रेम तभी संभव है,
करे जब वह अपने भाई से प्रेम।

परमेश्वर की संतान संसार पर विजयी होती है

जो विश्वास करता कि यीशू मसीह है,
वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता,
और जो परम पिता से प्रेम करता,
उसकी सन्तान से भी प्रेम करने लग जाता।

इस प्रकार जब हम करते परमेश्वर को प्रेम,
और उसके आदेशों का पालन करते हैं,
तो हम जान लेते हैं कि हम,
परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम करते हैं।

जो कोई परमेश्वर की सन्तान बन जाता,
वह जगत पर विजय पा लेता,
और यह विश्वास ही विजयी बनाता उसे,
कि यीशू मसीह है परमेश्वर का बेटा।

परमेश्वर का कथनः अपने पुत्र के विषय में

वह यीशू मसीह ही है जो हमारे पास,
आया जल और लहू के साथ,
केवल जल के साथ नहीं,
बल्कि जल और लहू के साथ।

उसकी साक्षी देता है आत्मा,
क्योंकि है आत्मा ही सत्य,
आत्मा, जल और लहू ये तीनों,
एक ही साक्षी पर हैं सहमत।

जब मनुष्य की साक्षी मानते हैं हम,
तो और भी मूल्यवान है परमेश्वर की साक्षी,
और उसकी साक्षी का महत्त्व इसमें है,
कि अपने पुत्र के लिये है उसकी साक्षी।

वह जो उसके पुत्र में रखता विश्वास,
अपने भीतर उस साक्षी को रखता,
पर जिसे नहीं परमेश्वर पर विश्वास,
वह परमेश्वर को झूठा ठहराता।

क्योंकि उस साक्षी का उसने विश्वास न किया,
जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के लिये दी,
कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है,
और वह जीवन प्राप्त होता पुत्र में ही।

वह जो उसके पुत्र को धारण करता है,
करता है उस जीवन को धारण,
किन्तु जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं,
उसके पास नहीं है वह जीवन।

अब अनन्त जीवन हमारा है

परमेश्वर में विश्वास रखने वालो,
ये बातें लिख रहा हूँ इस कारण,
जिससे तुम यह जान लो,
कि तुम्हारे पास है अनन्त जीवन।

हमारा परमेश्वर में है यह विश्वास कि,
उसकी इच्छानुसार विनती करने पर वह सुनता,
फिर चाहे हम उससे कुछ भी माँगे,
जो हमने माँगा वह हमारा हो चुका।

यदि कोई देखे कोई ऐसा पाप कर रहा,
अनन्त मृत्यु नहीं है फल जिसका,
तो उसके लिये प्रार्थना करनी चाहिए उसे,
परमेश्वर उसे जीवन प्रदान करेगा।

परमेश्वर का जो पुत्र बन गया,
वह पाप नहीं करता रहता है,
हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र,
उस व्यक्ति की रक्षा करता रहता है।

2. यूहन्ना

मुझ बुजुर्ग की ओर से उस महिला को,
जो चुनी गयी है परमेश्वर के द्वारा,
और उसके बालकों के नाम जिन्हें मैं,
सत्य के सहभागियों के रूप में प्रेम करता।

केवल मैं ही नहीं करता हूँ प्रेम तुम्हें,
बल्कि वे सभी भी जो सत्य जान गये,
यह हुआ हममें विराजित सत्य के कारण,
और जो हमारे साथ रहेगा सदा के लिये।

परमेश्वर की ओर से उसका अनुग्रह,
दया और शांति सदा हमारे साथ रहेंगी,
तथा उसके पुत्र यीशू मसीह की ओर से,
सत्य और प्रेम में हमारी स्थिति बनी रहेगी।

तुम्हारे पुत्र-पुत्रियों को परमेश्वर के आदेशानुसार,
जीवन जीते देखे बड़ा आनन्दित हूँ मैं,

लिख नहीं रहा मैं कोई नया आदेश तुम्हें,
बल्कि वही सनातन आदेश लिख रहा हूँ मैं।

करना चाहिये हमें परस्पर प्रेम,
यानि हम उसके आदेशों पर चलें,
प्रारम्भ से सुना वही आदेश है यह,
कि प्रेमपूर्वक जीना चाहिये तुम्हें।

बहुत से भटकने वाले हैं दुनिया में,
जो नहीं मानते मसीह मनुष्य बन आया,
टिका नहीं रहता जो सच्चे उपदेश पर,
कभी परमेश्वर को प्राप्त नहीं कर पाया।

सावधान रहो, जो मसीह का विरोधी है,
अपने घर उसका आदर सत्कार मत करो,
क्योंकि जो ऐसे का सत्कार करता है,
उसके बुरे कामों में बनता है भागीदार वो।

3. यूहन्ना

यूहन्ना की ओर से प्रिय मित्र गयुस को,
जिसे सत्य में सहभागी जान मैं प्रेम करता,
तू जैसे आध्यात्मिक रूप से उन्नति कर रहा,
वैसे ही सब प्रकार से उन्नति रह करता।

सत्य के प्रति तुम्हारी निष्ठा को जानकर,
बहुत आनन्द मिला है मुझे,
मेरे बालक सत्य का अनुसरण कर रहे,
अत्यधिक प्रसन्न करता है यह मुझे।

हम विश्वासियों को हमारे भाइयों के लिये,
जो कुछ कर सकते हैं, करना चाहिये,

सत्य के सहकर्मी सिद्ध हो सके हम,
हमें उनकी भरसक सहायता करनी चाहिये।

दियुत्रिफेस जो बनना चाहता है कलीसिया का नेता,
अपशब्दों के साथ दोष लगाता है मुझ पर,
वह हमारे बंधुओं का आदर सत्कार नहीं करता,
और ऐसा जो करते उन्हें निकाल देता बाहर।

हे प्रिय मित्र हमें बदी का नहीं,
बल्कि अनुकरण चाहिये करना नेकी का,
जो नेकी करता है, परमेश्वर का है,
बदी करने वाला परमेश्वर से है अनजाना।

यहूदा

यीशू के सेवक और याकूब के भाई,
यहूदा की ओर से तुम लोगों को,
जो परमेश्वर के प्रिय और बुलाये गये हो,
तुम्हें दया, शांति और प्रेम प्राप्त हो।

पापी दण्ड पायेंगे

जिस उद्धार के हम भागीदार हैं,
उसके विषय में मैं चाहता था लिखना,
ताकि उस विश्वास हेतु करते रहो संघर्ष,
जिसे परमेश्वर ने संत जनों को बख्शा।

क्योंकि कुछ लोग चोरी से,
घुस आए हैं हमारे समूह में,
शास्त्रों ने पहले ही की थी भविष्यवाणी,
उन लोगों के दण्ड के विषय में।

परमेश्वर विहीन हैं ये लोग,
जो परमेश्वर के अनुग्रह का दुरुपयोग करते,
भोग-विलास का उसे बनाते हैं बहाना,
और हमारे प्रभु यीशू को नहीं मानते।

याद करो जिस प्रभु ने पहले,
अपने लोगों को मिस्त्र से बचा निकाला,
किस प्रकार नष्ट कर दिये गये वो,
जिन्होंने बाद में विश्वास को नकारा।

इसी प्रकार सदोम और अमोरा के लोगों को,
जो दौड़ते रहे घोर अनाचार के पीछे,
मिला शाश्वत अग्नि में जलने का दण्ड,
एक उदाहरण बन गये वे हमारे लिये।

ठीक ऐसे ही ये घुस आने वाले,
कर रहें हैं अपनी मनमानी,
उन बातों की आलोचना करते हैं ये,
जिन्हें ये समझते हैं ही नहीं।

निर्भरता से तुम्हारे संग ये खाते-पीते,
किन्तु करते अपने स्वार्थ की ही चिन्ता,
पतझड़ के पेड़, बिना जल के बादल,
खुद अपने लिये खोद रहे ये गड्ढा।

जतन करते रहने के लिये चेतावनी

किन्तु प्रिय मित्रों याद रखो वे शब्द,
जो कहे जा चुके हैं प्रेरितों द्वारा,
"अंत समय कुछ लोग दिव्य बातों पर हँसेंगे,
और हांके जायेंगे अपनी अपवित्र इच्छाओं द्वारा।

अपनी प्राकृतिक इच्छाओं के दास हैं ये,
उनके भीतर तो आत्मा ही नहीं,
किन्तु हे मित्रों तुम एक दूसरे को,
करते रहो अपने विश्वास में धनी।

बाट जोहते प्रभु यीशू की करुणा की,
पवित्र आत्मा के साथ प्रार्थना करो,
ले जायेगी वह तुम्हें अनन्त जीवन तक,
परमेश्वर की भक्ति में लीन रहो।

दया करो उन पर जो डाँवाडोल हैं,
औरों को आगे बढ़ आग में से निकालो,
पर सावधान रहो दया दिखाते समय कि,
उनका स्वभाव तुम खुद ना अपना लो।

परमेश्वर की स्तुति

उसके प्रति जो तुम्हें गिरने से बचा सकता,
और तुम्हें निर्दोष करके प्रस्तुत कर सकता,
हमारे प्रभु यीशू के द्वारा उस उद्धारकर्त्ता,
परमेश्वर की महिमा बनी रहे, सदा-सर्वदा।

प्रकाशित वाक्य

यह यीशू मसीह का दैवी-सन्देश है,
जो उसे परमेश्वर द्वारा इसलिये दिया गया,
कि जो बातें शीघ्र ही घटने वाली हैं,
उन्हें अपने दासों को दिया जाये दर्शा।

अपना स्वर्गदूत भेज कर यीशू मसीह ने उसे,
अपने सेवक यूहन्ना को संकेत द्वारा बतलाया,
वे धन्य हैं जो यह दैवी सुसन्देश सुनते,
और जिन्होंने इसे अपने आचरण में अपनाया।

कलीसियाओं के नाम यूहन्ना का सन्देश

यूहन्ना की ओर से एशिया प्रान्त* में स्थित,
सात कलीसियाओं के नाम,
उस परमेश्वर की ओर से जो,
सदा सदा है वर्तमान।

उन सात आत्माओं की ओर से,
जो हैं उसके सिंहासन के सामने,
और उस यीशू मसीह की ओर से,
जो सर्वप्रथम है फिर जी उठने वालों में।

धरती के राजाओं का भी राजा,
और वह हमसे प्रेम करता है जो,
अपना लहू दे हमें पापों से छुड़ाया,
उसकी ओर से तुम्हें शांति प्राप्त हो।

देखो मेघों के साथ मसीह आ रहा,
हर आँख दर्शन करेगी उसका,
होंगे उन लोगों में वे भी,
जिन लोगों ने उसको बेधा था।

* एशिया प्रान्त– एशिया माइनर में स्थित एक प्रान्त

प्रभु परमेश्वर वह जो है,
जो था और जो है आनेवाला,
जो सर्वशक्तिमान है यह कहता है,
मैं ही हूँ अल्फा और ओमेगा।

यातनाओं, राज्य तथा यीशू में मैं,
धैर्यपूर्ण सहनशीलता में साक्षी हूँ तुम्हारा,
परमेश्वर के वचन, यीशू की साक्षी के कारण,
पत्तमुस द्वीप से दिया गया था मुझे निकाला।

प्रभु के दिन आत्मा के वशीभूत हो,
तुरही की सी एक तीव्र आवाज सुनी मैंने,
कह रही थी जो कुछ तूँ देख रहा है,
लिखता जा उसे तू एक पुस्तक में।

और फिर जो लिखा किताब में,
भेज दे उन्हें इन सातों कलीसिया,
इफियुस, स्मुरना, पिरगुमन, थुआतीरा,
सरदीस, फिलोदलफिया और लौदीकिया।

फिर यह देखने को कि किसकी है आवाज,
जो मुझसे बोल रही थी मैं मुड़ा,
सोने के सात दीपाधार देखे मैंने,
और उनके बीच एक व्यक्ति को देखा।

वह व्यक्ति ''मनुष्य के पुत्र'' जैसा था,
जिसने पैरों तक लम्बा चोगा पहना था,
और उस पुरुष की छाती पर,
एक सुनहरी पटका लिपटा हुआ था।

उसका सिर और सिर पर केश,
सफेद ऊन जैसे उजले थे,
और उसके नेत्र अग्नि की,
चमचमाती लपटों के जैसे थे।

दमक रहे थे उसके चरण,
भट्ठी में तपाये काँसे के समान,
और उसका धीर-गम्भीर स्वर था,
अनेक जलधाराओं के गर्जन के समान।

सात तारे थे उसके दाहिने हाथ में,
मुख से तेज दोधारी तलवार निकलती,
और उस दिव्य पुरुष की वह छबि,
तीव्रतम दमकते सूर्य के समान उज्ज्वल थी।

मैंने जब उसे देखा तो मैं,
उसके चरणों पर मृत सा गिर पड़ा,
अपना दाहिना हाथ मुझ पर रखते हुए,
तब उस दिव्य पुरुष ने मुझसे कहा।

डर मत, मैं ही प्रथम और अंतिम हूँ,
और जो जीवित है वह मैं ही हूँ,
मैं मर गया था किन्तु देख अब,
सदा-सदा के लिये मैं जीवित हूँ।

सो जो कुछ तूने देखा है,
और जो कुछ अभी घट रहा,
या घटने जा रहा जो भविष्य में,
उस सब को तू लिखता जा।

ये जो सात तारे और दीपाधार हैं,
इनका रहस्यपूर्ण अर्थ भी जान ले,
ये तारे सात कलीसियाओं के दूत हैं,
और ये दीपाधार हैं सात कलीसियाएं।

इफिसुस की कलीसिया को मसीह का सन्देश

इफिसुस की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिख,
वह जो तारे हाथ में धारण करता,
और विचरण करता सात दीपधारों के बीच,
तुम लोगों से इस प्रकार है कहता।

जानता हूँ मैं तेरे कर्मों को,
तेरे कठोर परिश्रम और सहनशीलता को,
और जानता हूँ मैं यह भी कि तूँ,
सहन नहीं कर पाता बुरे लोगों को।

तूने उन्हें परखा है जो कहते हैं कि,
वे प्रेरित हैं, किन्तु वे हैं नहीं,
मेरे नाम पर तूने झेले कष्ट,
लेकिन फिर भी तू थका नहीं।

किन्तु तेरे विरोध में मुझे कहना है,
तुझमें अब पहले सा प्रेम न रहा,
सो मन फिरा और वो कर्म कर,
जिन्हें तू आरम्भ में करता रहा।

और यदि तूने मन न फिराया तो,
तेरा दीपाधार अपने स्थान से हटा दूँगा,
किन्तु यह तेरे पक्ष में है कि तू,
मेरी ही तरह नीकुलइयों* से करता है घृणा।

कह रहा है कलीसिया से आत्मा,
जो विजय पायेगा वह अधिकार पायेगा,
परमेश्वर के उपवन में लगे हुए,
जीवन के वृक्ष से वह फल खायेगा।

स्मुरना की कलीसिया को मसीह का सन्देश

स्मुरना की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिख,
जानता हूँ मैं तुम्हारी यातना और दीनता,
और जो स्वयं को कह रहे यहूदी,
की है उन्होंने जो तुम्हारी निन्दा।

वे तो उपासकों का ऐसा जमघट है,
जो शैतान से सम्बन्धित है,
इन यातनाओं से बिल्कुल भी मत डर,
जो यातनाएं तुझे अभी झेलनी हैं।

हममें से कुछ को बंदीगृह में डाल,
लेने जा रहा है तुम्हारी परीक्षा शैतान,
सच्चे बने रहना यातना के दस दिन,
अनन्त जीवन का मुकुट तुम्हें करूँगा प्रदान।

जो सुन सकता है, वह सुन ले,
कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा,
कोई हानि उसे उठानी न पड़ेगी,
दूसरी मृत्यु से, जो विजयी हो रहा।

पिरगमुन की कलीसिया को मसीह का सन्देश

पिरगमुन की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिख,
मैं जानता हूँ तू कहाँ रह रहा,
जहाँ शैतान का है सिंहासन,
मैं जानता हूँ तू वहाँ रह रहा।

और मैं यह भी जानता हूँ कि तू,
मेरे नाम को है थामे,
तथा मेरे प्रति अपने विश्वास को,
कभी नहीं नकारा है तूने।

तुम्हारे इस नगर में,
जहाँ निवास है शैतान का,
मेरा विश्वास पूर्ण साक्षी,
अन्तिपास मार दिया गया था।

कुछ भी हो मेरे पास,
तेरे विरोध में कुछ बातें हैं,
तेरे यहाँ कुछ ऐसे लोग भी हैं,
जो बिलाम की सीख पर चलते हैं।

उसने बालाक को सिखाया कि इस्राएलियों को,
मूर्तिपूजा और व्यभिचार हेतु प्रोत्साहित करे,
ऐसे ही तेरे यहाँ भी कुछ लोग हैं जो,
नीकुलइयों की सीख पर हैं चलते।

इसलिये मन फिरा नहीं तो मैं,
जल्दी ही तेरे पास आऊँगा,
अपने मुख से निकलती तलवार से,
उनके विरुद्ध मैं युद्ध करूँगा।

* नीकुलइयों– एशिया माइनर का एक धर्म समूह। यह झूठे विश्वासों और धारणाओं का अनुयायी था। इसका नामकरण किसी नीकुलइयों के नाम पर किया गया होगा।

जो सुन सकता है वह सुने कि,
क्या कह रहा आत्मा कलीसिया से,
स्वर्ग में छिपा मन्ना दूँगा,
जो विजयी होगा, मैं उसे।

मैं उसे एक श्वेत पत्थर भी दूँगा,
जिस पर एक नया नाम अंकित होगा,
जिसे जिसको वह पत्थर दिया गया,
उसके सिवा और कोई नहीं जानता होगा।

थूआतीरा की कलीसिया को मसीह का सन्देश

थूँआतीरा की कलीसिया के स्वर्गदूत को,
परमेश्वर का पुत्र इस प्रकार कहता है,
वह तेरे कर्म विश्वास और सेवा,
और तेरी धैर्यपूर्ण सहनशक्ति को जानता है।

मैं जानता हूँ कि अब तू,
पहले से ज्यादा है कर रहा,
पर तू स्वयं को नबी कहने वाली,
इजेबेल नामक स्त्री को सह रहा।

अपनी शिक्षा से वह मेरे सेवकों को,
व्यभिचार और चढ़ावा खाने को प्रेरित करती,
मैंने उसे मन फिराने का अवसर दिया,
पर वह अपना मन फिराना ही नहीं चाहती।

सो अब मैं उसे दण्डित करूँगा,
और उन्हें भी जो साथ हैं उसके,
ताकि उस समय तक करे पीड़ा अनुभव,
जब तक मन ना फिर जायें उनके।

मार डालूँगा महामारी से उसके बच्चे,
और पता चल जायेगा सभी कलीसियों को,
कि मैं जानता हूँ लोगों का मन, बुद्धि,
उनके कर्मों के अनुसार फल दूँगा उनको।

अब उन शेष लोगों से कहना है,
जो इस सीख पर नहीं चलते,
मुझे तुम पर नहीं डालना कुछ बोझ,
जो तुम्हारे पास है उस पर रहो चलते।

जो प्राप्त कर लेगा विजय,
और मेरे आदेशों को करेगा स्वीकार,
टिका रहेगा अंत तक उन पर,
मैं उन्हें जातियों पर दूँगा अधिकार।

और वह उन लोगों पर,
लोहे के डण्डे से शासन करेगा,
और माटी के भांडो की तरह,
वह उन्हें चूर चूर कर देगा।

यह वही अधिकार है जिसे मैंने,
पाया है अपने परम पिता से,
मैं भी उसको भोर का तारा दूँगा,
जिसके पास है कान, वह सुन ले इसे।

सरदीस की कलीसिया के नाम मसीह का सन्देश

सरदीस की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिख,
जानता हूँ मैं तुम्हारे कर्मों को,
लोगों का कहना है तुम जीवित हो,
किन्तु वास्तव में तुम मरे हुए हो।

सावधान रह, तथा जो कुछ बच रहा है,
इससे पहले कि वह पूर्णतया नष्ट हो,
उसे सुदृढ़ बना क्योंकि परमेश्वर की निगाह में,
उत्तम नहीं पाया है मैंने तेरे कर्मों को।

सो जो उपदेश तूने सुना और पाया,
उसे याद कर उसी पर चल,
यदि तू जागा नहीं तो मैं तुझे,
अचरज में डाल, कर दूँगा विकल।

कुछ भी हो तेरे पास सरदीस में,
कुछ लोगों ने स्वयं को अशुद्ध न किया,
सुयोग्य है वे कि श्वेत वस्त्र धारण कर,
मेरे साथ साथ में घूमा करेंगे सदा।

मैं जीवन की पुस्तक में से,
नहीं मिटाऊँगा उन लोगों का नाम,
बल्कि परमेश्वर और उसके दूतों के सामने,
उनके नामों को मान्यता करूँगा प्रदान।

फिलादेलफिया की कलीसिया को मसीह का सन्देश

फिलादेलफिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिख,
वह जो है सवर्था पवित्र और सत्य,
जिसके पास दाऊद की ऐसी कुंजी है जो,
खोल दे कोई भी द्वार या कर दे बंद।

कहता है वह इस प्रकार तुम्हें,
जानता हूँ मैं तुम्हारे कर्मों को,
खोल दिया एक द्वार तुम्हारे सामने मैंने,
बंद नहीं कर सकता कोई जिसको।

मैं जानता हूँ थोड़ी सी है तेरी शक्ति,
किन्तु तूँने मेरे उपदेशों का पालन किया,
कुछ झूठे अपने आप को कहते यहूदी,
उन्हें तेरे चरणों तले मैं दूँगा झुका।

कर दूँगा विवश उन्हें कि वे जाने,
कि तुम लोग हो प्रिय मुझको,
क्योंकि धैर्यपूर्ण सहनशीलता के साथ,
पाला है तुमने मेरे आदेशों को।

बदले में उस परीक्षा की घड़ी से,
रक्षा करूँगा मैं तुम लोगों की,
जो लोगों को परखने के लिये,
समूचे संसार पर है आने को ही।

आ रहा हूँ मैं बहुत जल्दी ही,
सो जो पास है उस पर डटे रहो,
कोई ले न ले तुमसे तुम्हारा विजय मुकुट,
मन्दिर का स्तम्भ बनाऊँगा मैं विजयी को।

अपने परमेश्वर और उसकी नगरी का,
नये यरूशलेम का नाम लिखूँगा उस पर,
उतरने वाली है वह नगरी स्वर्ग से,
अपना नया नाम भी मैं लिखूँगा उस पर।

लौदीकिया की कलीसिया को मसीह का सन्देश

लौदीकिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को लिख,
जो आमीन* है, विश्वासपूर्ण सच्चा साक्षी,
और परमेश्वर की सृष्टि का जो शासक है,
सुनो तुम सब लोग ये बातें उसकी।

जानता हूँ मैं तेरे कर्मों को,
और कि तू न गर्म होता न ठंडा,
तेरे इस गुणहीन होने के कारण,
तुझे मुख से उगलने मैं जा रहा।

तूँ कहता है मैं धनी हो गया हूँ,
किसी भी वस्तु की नहीं मुझे आवश्यकता,
किन्तु तुझे पता नहीं कि तू है,
अभागा, दयनीय, दीन, अंधा और नंगा।

सलाह देता हूँ कि तूँ मुझसे,
आग में तपाया सोना मोल ले ले,
ले ले वस्त्र और आंखों के लिये अंजन,
ताकि तेरा यह लज्जापूर्ण आचरण बदले।

उन सभी को जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ,
डाँटता हूँ उन्हें और अनुशासित करता हूँ,
तो फिर कठिन जतन कर मन फिराव कर,
मैं तेरे द्वार पर खड़ा खटखटा रहा हूँ।

* आमीन– आमीन शब्द का अर्थ है उस परम सत्य के अनुरूप हो जाना। किन्तु यहाँ इसे यीशू के एक नाम के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

मेरी आवाज सुन यदि कोई द्वार खोलता,
तो मैं उसके घर में प्रवेश करूँगा,
वह मेरे साथ बैठकर खाना खायेगा,
और मैं उसके संग में भोजन करूँगा।

जो विजयी होगा मैं उसे अपने साथ,
अपने सिंहासन पर बैठने का दूँगा गौरव,
ठीक वैसे ही जैसे मैं विजयी बनकर,
अपने पिता के साथ बैठा हूँ सिंहासन पर।

स्वर्ग के दर्शन

इसके बाद मैंने जो दृष्टि उठाई,
स्वर्ग का खुला द्वार मेरे सामने था,
और वही पहले सा तुरही का सा स्वर,
ऊपर यहीं आ जा, मुझसे कह रहा था।

हो उठा मैं आत्मा के वशीभूत,
स्वर्ग का सिंहासन मेरे सामने था,
यशब और गोमेद की सी आभा लिये,
उस सिंहासन पर कोई विराजमान था।

पहले जैसा दमकता सा एक इन्द्रधनुष,
उस सिंहासन के चहूँ ओर छाया था,
चौबीस सिंहासनों पर चौबीस प्राचीनों* को,
उस सिंहासन के चारो ओर बैठे देखा।

श्वेत वस्त्र पहने हुए थे उन्होंने,
उनके सिर पर सोने के मुकुट थे,
सिंहासन में से बिजली की चकाचौंध,
और गर्जन-तर्जन निकल रहे थे।

सिंहासन के सामने ही सात मशालें,
जल रही थीं लपलपाते हुए,
और ये जलती लपलपाती मशालें,
हैं परमेश्वर की सात आत्माएं।

सिंहासन के सामने पारदर्शी काँच का,
एक स्फटिक सागर सा फैला था,
सिंहासन के ठीक सामने दो प्राणी,
और दोनों ओर एक एक प्राणी खड़ा था।

पहला प्राणी था सिंह के समान,
दूसरा प्राणी बैल के जैसा था,
तीसरे का मुख था मनुष्य के समान,
चौथा उड़ते हुए गरुड़ जैसा था।

उनके आगे और पीछे आँखे थी,
और शरीर पर छह छह पंख थे,
भरी पड़ी थी सारे शरीर में आँखें,
और वे निरन्तर यह कहते रहते थे।

''सर्व शक्तिमान परमेश्वर प्रभु,
पवित्र है, पवित्र है, पवित्र है,
जो था, जो है और जो आने वाला है'',
परमेश्वर सदा सर्वदा और सवर्त्र है।

जब ये सजीव प्राणी कर रहे,
परमेश्वर का आदर, महिमा और धन्यवाद,
वे चौबीसों प्राचीन उसके चरणों में गिरे,
उपासना करते हुए कहते यह बात।

हे हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर,
तूँ ही मालिक है सभी गुणों का,
समस्त महिमा, आदर और शक्ति,
तू ही सुयोग्य है उन्हें पाने का।

क्योंकि तूने ही अपनी इच्छा से,
रचना करी है सभी वस्तुओं की,
तेरी ही इच्छा से उनका अस्तित्व है,
तेरी ही इच्छा से हुई सृष्टि उनकी।

* चौबीस प्राचीन– कदाचित उन चौबीस प्राचीन में बारह वे पुरुष थे जो परमेश्वर के संतजनों के महान नेता थे। हो सकता है ये यहूदियों के बारह परिवार समूहों के नेता हो, तथा शेष बारह यीशू के प्रेरित हो।

फिर जो सिंहासन पर विराजमान था,
एक चर्मपत्र उसके दाहिने हाथ में देखा,
जिस पर दोनों ओर लिखावट थी और,
सात मुहर लगा मुद्रित किया हुआ था।

फिर एक शक्तिशाली स्वर्गदूत को देखा,
जो दृढ़ स्वर में कर रहा था घोषणा,
इस लपेटे हुए चर्मपत्र की मुहरों को,
खोल सकने में है किसकी समर्थता।

किन्तु स्वर्ग में अथवा पृथ्वी पर,
या पाताल लोक में कोई ऐसा नहीं था,
जो उस लपेटे हुए चर्मपत्र को खोल,
उसके भीतर क्या है झाँक सकता था।

क्योंकि कोई उसे खोलने वाला नहीं था,
सुबक-सुबक कर मैं रो पड़ा,
उन प्राचीनों में से तब एक ने,
मुझे रोता देख, मुझसे यह कहा।

रोना बंद कर, सुन दाऊद का वंशज,
यहूदा के वंश का सिंह हुआ है विजयी,
सातों मुहरों को तोड़ उस लपेटे हुए,
चर्मपत्र को पढ़ने में है समर्थ वही।

फिर मैंने देखा कि उस सिंहासन के,
तथा उन चार प्राणियों के सामने,
बलि जिसकी चढ़ाई गयी हो ऐसा,
एक मेमना खड़ा था उनके सामने।

सात सींग थे उस मेमने के,
और उस मेमने की थी सात आँखें,
जिन्हें समूची धरती पर भेजा गया था,
जो हैं परमेश्वर की सात आत्माएं।

फिर उस मेमने ने आकर ले लिया,
चर्मपत्र उससे जो सिंहासन पर विराजमान था,
तब उन चारों प्राणियों और प्राचीनों ने,
उस मेमने को दण्डवत प्रणाम किया।

वीणा थी उनमें से हरेक के पास,
सोने के धूपदान वे थामे थे,
जो संतजनों की है प्रार्थनाएं,
एक नया गीत वे गा रहे थे।

तू समर्थ है यह चर्मपत्र लेने को,
और उस पर लगी मुहर खोलने को,
क्योंकि बलि रूप तेरा वध कर दिया,
अपने लहू से तूने मोल लिया लोगों को।

हर जाति, कुल, राष्ट्र और भाषा से,
मोल लिया तूने परमेश्वर के हेतु जनों को,
दे दिया उनको तूने रूप का राज्य,
वे राज्य करेंगे, याजक बनाया तूने उनको।

तभी मैंने देखे लाखों करोड़ों स्वर्गदूत,
सभी ऊँचे स्वर में कह रहे थे वो,
वह वधित मेमना प्राप्त करने को योग्य है,
बल, धन, विवेक, समादर, महिमा और स्तुति को।

फिर मैने सुना सारी सृष्टि,
स्वर्ग, धरा, पाताल और सागर को,
उस समूचे ब्रह्माण्ड का हर प्राणी,
कह रहा था इस प्रकार से वो।

जो सिंहासन पर बैठा है और मेमना,
वे सदा सदा स्तुति पावें,
आदर पावें और महिमा पावें,
और वे शक्ति सदा सर्वदा पावें।

फिर उन चारों प्राणियों ने,
झुक कर के ''आमीन'' कहा,
और उन चौबीस प्राचीनों ने,
नत मस्तक होकर की उपासना।

फिर मैंने देखा कि मेमने ने,
सात मुहरों में से एक को खोला,
तभी उन चार प्राणियों में से एक को,
मेघगजर्ना जैसे स्वर में कहते सुना ''आ''।

मैंने देखा एक सफेद घोड़ा था मेरे सामने,
घोड़े का सवार एक धनुष लिये हुए था,
पहनाया गया उसे विजय-मुकुट और वह,
विजय प्राप्त करता हुआ बाहर चला गया।

जब मेमने ने तोड़ी दूसरी मुहर,
तो दूसरे प्राणी को कहते सुना ''आ'',
इस पर अग्नि के समान लाल रंग का,
एक और घोड़ा बाहर आ खड़ा हुआ।

एक लम्बी तलवार दे दी गयी,
उस घोड़े पर बैठे सवार को,
धरती पर शांति भंग और उकसाने का,
अधिकार दिया गया उस सवार को।

तीसरी मुहर तोड़ी जब मेमने ने,
मैंने तीसरे प्राणी को कहते सुना ''आ'',
जब मैंने दृष्टि उठायी तो वहाँ,
मेरे सामने एक काला घोड़ा खड़ा था।

उस पर जो सवार बैठा था,
उसके हाथ में थी एक तराजू,
तभी उन चारों प्राणियों के बीच से,
मैंने एक शब्द सा आता सुना यूँ।

एक दिन की मजदूरी के बदले में,
खाने के लिये गेहूँ एक दिन का,
या तीन दिन खाने को जौ लेकिन,
जैतून तेल और मदिरा को क्षति मत पहुँचा।

फिर मेमने ने जब चौथी मुहर खोली,
तो चौथे प्राणी को मैंने कहते सुना ''आ'',
तभी मेरे सामने एक मरियल सा,
पीले हरे से रंग का घोड़ा खड़ा था।

उस पर बैठे सवार का नाम था मत्यु,
उसके पीछे प्रेत लोक सटा चल रहा था,
युद्ध अकाल इत्यादि से एक चौथाई लोगों को,
वे मार डालें, यह अधिकार दिया गया था।

फिर मेमने ने जब पाँचवी मुहर तोड़ी तो,
मैंने वेदी के नीचे उन आत्माओं को देखा,
जिन्हें परमेश्वर के सुसन्देश में आस्था और,
साक्षी देने के कारण मरवा दिया गया था।

कहा उन्होंने ऊँचे स्वर में पुकार कर,
हे प्रभू तूँ कब तक प्रतीक्षा करेगा,
हमारी हत्याएं करने के लिये लोगों को,
तू कब दण्ड देकर उनका न्याय करेगा।

उनमें से हरेक को एक सफेद चोगा दे,
कहा गया, कुछ समय तक प्रतीक्षा करें वो,
उन्हीं जैसे जिनकी हत्या की जाने वाली है,
जब तक उन की संख्या पूरी हो।

फिर जब मेमने ने छठी मुहर तोड़ी,
मैंने देखा आया हुआ है बड़ा भूचाल,
काला स्याह पड़ गया है सूरज,
चाँद लहू सा हो गया है लाल।

तारे धरती पर ऐसे गिर गये थे,
जैसे अंजीर बिखरे हों तेज आँधी से,
आकाश फट, सिकुड़ कर लिपट गया था,
पर्वत और द्वीप डिगे अपने स्थानों से।

सम्राटों, शासकों और अन्य सभी ने,
छिपा लिया स्वयं को चट्टानों के बीच,
कह रहे थे वे हम पर गिर पड़ो,
बचा लो हमें लेकर अपने बीच।

वह जो सिंहासन पर विराजमान है,
और मेमने के क्रोध से बचा लो हमें,
उनके क्रोध का भयंकर दिन आ पहुँचा है,
ऐसा कौन है जो झेल सकता हो इसे।

इस्राएल के 1,44,000 लोग

उसके बाद धरती के चारों कोनों पर,
मैंने चार स्वर्गदूतों को खड़े देखा,
धरती की चारो हवाओं को रोक,
उन स्वर्गदूतों ने पकड़ा हुआ था।

फिर मैंने देखा एक और स्वर्गदूत को,
जो पूर्व दिशा से चला आ रहा था,
उसके हाथ में परमेश्वर की मुहर थी,
और अन्य दूतों से वह कह रहा था।

अपने परमेश्वर के सेवकों के माथे पर,
जब तक हम मुहर लगा नहीं देते,
तब तक धरती, सागर और वृक्षों को,
कोई भी हानि ना पहुँचे तुमसे।

फिर जिन पर मुहर लगायी गयी थी,
वे लोग एक लाख चवालीस हजार थे,
इस्राएल के सभी बारह परिवार समूहो से,
ये लोग बारह-बारह हजार थे।

विशाल भीड़

इसके बाद एक विशाल भीड़ को देखा,
हर जाति, हर भाषा के लोग थे जिसमें,
सिंहासन और मेमने के सामने खड़े थे,
श्वेत वस्त्र, खजूर की टहनियां लिये हाथ में।

तभी उन चौबीस प्राचीनों में से,
किसी एक ने पूछा यह मुझसे,
कौन हैं ये श्वेत वस्त्रधारी लोग,
और आये हैं ये लोग कहाँ से।

मैंने कहा, ''तू तो जानता ही है मेरे प्रभु,''
तब उस प्राचीन ने मुझसे यह कहा,
ये आ रहे हैं कठोर यातनाएं झेल कर,
वस्त्रों को मेमने के लहू से धो कर स्वच्छ किया।

सो अब ये परमेश्वर के सिंहासन के सामने,
और उसके मन्दिर में दिन रात उपासना करते,
वह जो सिंहासन पर विराजमान है,
उनकी रक्षा करेगा, उनमें निवास करते।

अब न कभी सताएगी भूख उन्हें,
न ही वे फिर कभी प्यासे रहेंगे,
बिगाड़ेगा नहीं कुछ सूखा उनका,
ना ही कभी वे धूप में तपेंगे।

क्योंकि जो सिंहासन के बीच में है,
वह मेमना उनकी देखभाल करेगा,
ले जायेगा जीवनदाता जल स्रोतों के पास,
और उनके आँसू परमेश्वर पोंछ देगा।

सातवीं मुहर

फिर मेमने ने जब सातवीं मुहर तोड़ी,
कुछ देर सन्नाटा छाया रहा स्वर्ग में,
फिर मैंने सात स्वर्गदूतों को देखा,
सात तुरहियां प्रदान की गयी थीं उन्हें।

फिर एक और स्वर्गदूत आया धूपदान ले,
और वेदी पर वह खड़ा हो गया,
वेदी पर धूपदान में जलाने को उसे,
बहुत सारी धूप को दिया गया।

फिर उसके हाथ में धूपदान से,
संतजनों की प्रार्थनाओं के साथ,
उड़कर जा पहुँचा धूप का धुआं।
सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर के पास।

फिर धूपदान को वेदी की आग से भर,
स्वर्गदूत ने उछाल फेंक दिया धरती पर,
मेघों का गर्जन बिजली की चमकार,
और भूकम्प होने लगा इस पर।

सात स्वर्गदूतों का उनकी तुरहियां बजाना

फिर वे तुरहियां लिये सात स्वर्गदूत,
तुरहियां फूँकने को तैयार हो गये,
पहले ने जैसे ही अपनी तुरही फूँकी,
लहू, अग्नि और औले मिले जुले दिखे।

फेंक दिया उन्हें नीचे धरती पर उछाल,
एक तिहाई धरती जल भस्म हो गयी,
एक तिहाई पेड़ भी जल गये,
समूची हरी घास जल राख हो गयी।

दूसरे स्वर्गदूत के तुरही फूकने पर,
अग्नि का एक जलता पहाड़ सा निकला,
फेंक दिया गया समुद्र में उसे,
एक तिहाई समुद्र रक्त में जा बदला।

और उसके साथ साथ ही,
एक तिहाई जीव जन्तू मर गये,
जल में तैर रहे जलपोतों में से,
एक-तिहाई जलपोत नष्ट हो गये।

तीसरे स्वर्गदूत ने जब तुरही बजाई,
मशाल सा जलता एक तारा गिरा,
यह तारा एक तिहाई नदियों और,
झरनों के जल पर जा पड़ा।

इस तारे का नाम नागदौना* था,
सौ एक तिहाई जल कड़वा हो गया,
और उस जल को पीने से,
बहुत लोगों को मरना पड़ गया।

जब चौथे स्वर्गदूत ने तुरही बजाई,
एक तिहाई नक्षत्र काले पड़ गये,
और सूरज-चाँद के काले पड़ने से,
एक तिहाई दिन-रात अन्धेरे हो गये।

फिर ऊपर आकाश में उड़ते और,
कहते हुए सुना मैंने एक गरूड़ को,
बाकी तीनों स्वर्गदूतों के उदघोषों से,
पृथ्वीवासियों पर कष्ट हो, कष्ट हो।

पाँचवे स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी,
तो धरती पर गिरा एक तारा देखा,
इसे उस चिमनी की कुंजी दी गयी थी,
जिस चिमनी का मुँह पाताल लोक में था।

फिर चिमनी का ताला खोला तारे ने,
और फूट पड़ा उसमें से गहन धुंआ,
सूरज और आकाश काले पड़ गए,
सारे नभ पर छाया ऐसा धुआं।

तभी उस धुएं से धरती पर मैंने,
उतरते देखा एक टिड्डियों के दल को,
बिच्छुओं के काटने की सी शक्ति,
दी गयी थी उस टिड्डी दल को।

किन्तु उनसे कह दिया गया था कि वे,
घास और हरे पौधों को हानि ना पहुँचाये,
जिनके माथों पर लगी नहीं परमेश्वर की मुहर,
बस उन्हीं लोगों को वे कष्ट पहुँचाये।

पर प्राण न लें वे उनके भी,
बस पाँच महीनों तक पीड़ा दें उनको,
मौत को ढूँढते फिरेंगे लोग पर,
चकमा दे देगी मौत भी उनको।

और अब देखो कि वे टिड्डियां,
दिख रहीं थी युद्ध को तत्पर घोड़ों सी,
उनके सिर पर सुनहरी मुकुट बँधे थे,
मुख की छवि थी मानव मुख सी।

उनके दाँत थे सिंहों के दाँतों जैसे,
सीने जैसे लोहे के कवच हों,
और उनकी पूँछ के बाल ऐसे थे,
जैसे कि वे बिच्छु के डंक हों।

यह पहली महान विपत्ति टिड्डियों की,
यह विपत्ति तो बीत चुकी,
किन्तु उसके बाद दो बड़ी विपत्तियां,
अभी आने को हैं वे बाकी।

---

* नागदौना– मूल में अपसिन्तोस जो यूनानी भाषा का शब्द और जिसका अंग्रेजी पयार्य है वर्गवुड जिसका अर्थ है एक बहुत कड़वा पौधा। इसलिये इसे गहन दुःख का प्रतीक माना जाता है।

फिर छठें ने जैसे ही तुरही फूँकी,
मैंने परमेश्वर के सामने सुनहरी वेदी देखी,
और उस वेदी के चार सींगों से,
आती हुई मैंने एक ध्वनि सुनी।

उस स्वर्गदूत ने उस ध्वनि से कहा,
उन चार स्वर्गदूतों को मुक्त कर दो,
बँधे पड़े हैं जो फरात महानदी के पास,
इसी घड़ी के लिये तैयार हैं वो।

सो मुक्त कर दिये गये वे दूत,
जान लेने को एक तिहाई लोगों की,
उनकी संख्या कितनी थी यह सुना मैंने,
बीस करोड़ संख्या थी घुड़सवारों की।

उस पर भी बाकी के ऐसे लोगों ने,
जो इन महाविनाशों से न मारे जा सके,
भूत-प्रेतों और मूर्तियों की पूजा न छोड़ी,
और अपना मन न फिराया बुरे कामों से।

स्वर्गदूत और छोटी पोथी

फिर मैंने आकाश से नीचे उतरते,
एक और बलवान स्वर्गदूत को देखा,
ओढ़ा हुआ था उसने एक बादल,
सिर के आसपास एक मेघ धनुष था।

दमक रहा था सूर्य सा मुखमण्डल,
और उसकी टाँगे अग्नि स्तम्भों जैसी थी,
अपने हाथों में उस स्वर्गदूत ने,
एक छोटी सी खुली पोथी ली हुई थी।

उसने अपना दाहिना चरण सागर में,
और धरती पर रखा चरण बायां,
फिर एक सिंह के समान दहाड़ता,
वह ऊँचे स्वर में चिल्लाया।

सातों गर्जन-तर्जन के शब्द,
उसके चिल्लाने पर सुनाई देने लगे,

मैं लिखने लगा तो आकाशवाणी सुनाई दी,
जो कहा गया, लिख मत, छिपा ले उसे।

फिर उसने जो नित्य रूप से सजीव है,
आकाश और धरती का जो है रचियता,
ऊपर हाथ उठा, उसकी शपथ लेकर,
अब और अधिक देर नहीं होगी यह कहा।

जब आयेगा सातवें स्वर्गदूत को सुनने का समय,
अर्थात जब होगा वह अपनी तुरही बजाने को,
परमेश्वर की वह गुप्त योजना पूरी हो जायेगी,
बता दिया था जिसे उसने नबियों को।

फिर उस आकाशवाणी ने मुझसे कहा,
वह जो सागर और धरती पर खड़ा,
जा और जाकर उसके हाथ से,
उस खुली हुई पोथी को ले आ।

उसके पास जा पोथी माँगी मैंने तो,
उसने कहा, यह ले और इसे खा जा,
इससे तेरा पेट तो कड़वा हो जायेगा पर,
तेरे मुँह में उसका स्वाद होगा मीठा।

फिर उस स्वर्गदूत के हाथ से पोथी ले,
उस पोथी को खा लिया मैंने,
मुख में तो वह शहद सी मीठी लगी,
पर मेरा पेट कड़वा कर दिया उसने।

इस पर वह स्वर्गदूत मुझसे बोला,
तुझे फिर भविष्यवाणी करनी होगी,
बहुत से लोगों, राष्ट्रों, भाषाओं,
और राजाओं के विषय में जो होगी।

दो साक्षी

इसके बाद नापने के लिये मुझे,
दे दिया गया एक सरकंडा,
नापने की एक छड़ी के जैसा,
दिख रहा था वह सरकंडा।

कहा गया मुझसे ''उठ'' और नाप,
परमेश्वर के मन्दिर और वेदी को,
और जो कर रहे मन्दिर के भीतर उपासना,
कितनी संख्या है गिन तू उनको।

किन्तु रहने दे मन्दिर का बाहरी आँगन,
दे दिया गया है वह अधर्मियों को,
अपने पैरों तले रौंदेंगे वे,
बयालीस महीने तक पवित्र नगर को।

खुली छूट दे दूँगा मैं,
अपने दो गवाहों को,
एक हजार दो सौ साठ दिनों तक,
भविष्यवाणी करते रहेंगे वो।

ये दो साक्षीयां है वे दो,
दो जैतून के पेड़ व दो दीपदान,
जो धरती के प्रभु के सामने,
रहते हैं सदा ही विद्यमान।

यदि पहुँचाना चाहता है कोई उन्हें हानि,
तो फूट पड़ती है उनके मुख से ज्वाला,
निगल जाती है वह उनके शत्रुओं को,
बना देती है उन्हें मृत्यु का निवाला।

शक्ति रखते हैं आकाश बाँध देने की वे,
ताकि जब भविष्यवाणी कर रहे हों, वर्षा न हो,
झरनों का पानी बदल सकते थे लहू में,
और धरती पर विनाश ला सकते थे वो।

उनके साक्षी दे चुकने के बाद,
वह पशु उस महागर्त से बाहर निकलेगा,
आक्रमण करेगा वह उन पर,
और उन्हें हराकर वह मार डालेगा।

उनकी लाशें सड़ेंगी महानगर की गलियों में,
प्रतीक रूप से जो सदोम तथा मिस्र कहलाता,

यहीं पर उनके प्रभु को भी,
क्रूस पर चढ़ा कर मारा गया था।

साढ़े तीन दिन देखेंगे लोग उनकी लाशें,
और शवों को कब्र में दफनाने ना देंगे,
पहुँचाया था दोनों नबियों ने लोगों को क्लेश,
लोग आनन्द मना, परस्पर उपहार भेजेंगे।

किन्तु साढ़े तीन दिन के बाद,
परमेश्वर की ओर से उन दोनों में,
जीवन की श्वास ने प्रवेश किया,
और अपने पैरों पर खड़े हो गये वे।

फिर उन दोनों नबियों ने ऊँचे स्वर में,
आकाशवाणी को उनसे यह कहते सुना,
''यहा ऊपर आ जाओ'' और आकाश के भीतर,
उनके विरोधियों ने उन्हें बदलों में जाते देखा।

ठीक उसी क्षण एक भारी भूचाल ने,
ढहा दिया नगर का दसवाँ भाग,
सात हजार मर गये, और बाकी बचे,
भयभीत हो करने लगे परमेश्वर को याद।

इस प्रकार से बीत गयी,
यह दूसरी विपत्ति भी,
किन्तु सावधान, तीसरी विपत्ति,
आनेवाली है बहुत शीघ्र ही।

सातवीं तुरही

सातवें स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी,
तो आकाश में तेज आवाजों ने किया उद्घोषण,
अब प्रभु और मसीह का है जगत का राज्य,
अब करेगा वह युगो-युगों तक सुशासन।

और तभी परमेश्वर के सामने,
अपने-अपने सिंहासन पर विराजमान,
उन चौबीस प्राचीनों ने उपासना की,
परमेश्वर को कर दण्डवत प्रणाम।

वे बोलेः सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर,
जो है, जो था, धन्यवाद करते हम तेरा,
तूने ही अपनी महाशक्ति को लेकर,
सबके शासन का आरम्भ किया था।

अन्य जातियां क्रोध में भरी थी,
किन्तु अब तेरा क्रोध प्रकटते समय,
उन सब ही के जो प्राण थे बिसारे,
आ गया तेरे सेवकों को प्रतिफल का समय।

सभी नबी और तुझे आदर देने वाले,
अपना प्रतिफल पावें सब छोटे बड़े,
उन्हें मिटाने का समय आ गया,
जो धरती को हैं मिटा रहे।

फिर खोला गया स्वर्ग में परमेश्वर का मन्दिर,
वहाँ दिखाई दी वाचा की वह पेटी,
फिर बादल गरजे और बिजली चमकी,
धरती काँपी, होने लगी भयानक ओलावृष्टि।

स्त्री और विशालकाय अजगर

फिर आकाश में प्रकटा एक बड़ा संकेत,
एक महिला सूरज को धारण किये दी दिखायी,
चन्द्रमा था उस महिला के पैरो तले और,
माथे पर बारह तारों जड़ा मुकुट दिया दिखायी।

उसे प्रसव होने ही वाला था,
सो पीड़ा से वह कराह रही थी,
तभी सात सिरों पर मुकुट धारण किये,
एक लाल विशालकाय अजगर दिया दिखायी।

अजगर की पूँछ ने एक तिहाई तारों को,
सपाटा मार कर धरती पर फेंक दिया,
और प्रसव होते ही उस बच्चे को निगलने,
वह अजगर स्त्री के सामने खड़ा हो गया।

फिर उस स्त्री ने एक पुत्र को जन्मा,
लौह दण्ड के साथ शासन करना था जिसे,
किन्तु परमेश्वर और उसके सिंहासन के सामने,
उठाकर ले जाया गया तुरन्त उसे।

भाग गयी वह स्त्री एक निर्जन वन में,
जो तैयार किया गया था उसी के लिये,
ताकि एक हजार दो सो साठ दिन तक,
जीवित रखा जा सके वहाँ पर उसे।

फिर स्वर्ग में मीकाईल और उसके दूतों का,
हुआ उस विशालकाय अजगर से संग्राम,
अजगर ने भी उसके दूतो संग लड़ाई लड़ी,
पर अजगर की हार हुई उसका परिणाम।

धकेल दिया गया उस अजगर को नीचे,
धरती पर फेंक दिया गया उसको,
हाँ यह वही पुराना महानाग है,
दानव या शैतान कहते हैं जिसको।

फिर ऊँचे स्वर में मैंने आकाशवाणी को सुना,
यह है हमारे परमेश्वर के विजय की घड़ी,
करा दिया उसने अपनी शक्ति, संप्रभुता का बोध,
उसके मसीह ने प्रकट कर दी अपनी शक्ति।

लाँछन लगाता था जो हमारे बँधुओं पर,
नीचे धकेल दिया गया है उसको,
मेमने के बलिदान के लहू से और,
उनकी साक्षी से हरा दिया उसको।

अपने प्राणों का परित्याग करने तक,
उन्होंने अपने जीवन की परवाह नहीं की,
सो हे स्वर्गो और स्वर्गों के निवासियों,
तुम्हारे लिये है यह घड़ी खुशी की।

किन्तु हाय धरती और सागर,
तुम्हारे लिये यह कितना बुरा होगा,
क्योंकि तुम पर उतरा शैतान क्रोधित है,
जानता है उसका समय रह गया थोड़ा।

जब उस विशालकाय अजगर ने देखा,
कि उसे धरती पर नीचे धकेल दिया गया,
तो उस स्त्री ने जिसने पुत्र जना था,
उसने उसका पीछा करना शुरू कर दिया।

किन्तु उस स्त्री को एक बड़े उकाब के,
दो पँख प्रदान कर दिये गये,
ताकि वह उस वन प्रदेश को उड़ जाये,
जो तैयार किया गया था उसके लिये।

साढ़े तीन साल तक वहीं,
दूर उस विशालकाय अजगर से,
रहना था उस वन प्रदेश में,
जहाँ भरण-पोषण मिलना था उसे।

तब उस महानाग ने स्त्री के पीछे,
अपने मुख से नदी के समान,
एक जल धारा प्रवाहित की ताकि,
डुबा कर उसके ले ले प्राण।

किन्तु धरती ने अपना मुख खोल कर,
उस स्त्री की करी सहायता,
और उस अजगर ने जो नदी निकाली,
उस नदी को उसने निगल लिया।

उसके बाद तो वह विशालकाय अजगर,
उस स्त्री पर बहुत क्रोधित हो उठा,
और भक्तजनों और साक्षी धारकों के साथ,
युद्ध करने सागर किनारे जा खड़ा हुआ।

दो पशु

फिर मैंने सागर में से बाहर,
एक विचित्र पशु को आते देखा,
उस पशु के सात सिर थे,
उन पर उगे दस सीगों को देख।

उस पशु ने अपने सीगों पर,
दस राजसी मुकुट पहने हुए थे,
और उसके उन सीगों के सिरों पर,
दुष्ट नाम लिखे हुए थे।

चीते जैसा दिखता था वह पशु,
भालू से पैर, मुख सिंह जैसा था,
उसे अजगर ने अपनी शक्ति और सिंहासन,
और उसे अपना प्रचूर अधिकार दिया था।

उसका एक सिर ऐसा दिखता था,
जिस पर कोई घातक घाव लगा हो,
समूचा संसार आश्चर्य चकित होकर,
जैसे उसके पीछे लग गया हो।

पूजने लगे वे उस विशालकाय अजगर को,
क्योंकि उसने अपना अधिकार उसे दे दिया था,
और उस पशु की भी करने लगे उपासना,
यह कहते कि कौन उससे लड़ सकता था।

बयालीस महीने तक अपनी शक्ति के,
उपयोग का अधिकार दे दिया गया उसे,
अहंकार पूर्ण और निन्दा करने की भी,
प्रदान कर दी गयी थी अनुमति उसे।

सो मन्दिर और स्वर्ग में रहने वालों की,
और परमेश्वर की करने लगा वह निन्दा,
अनुमति दे दी गयी उसे कि वह लड़कर,
परमेश्वर के संतजनों को दे युद्ध में हरा।

धरती के वे सभी निवासी,
करेंगे उपासना उस पशु की,
जिनके नाम शुरू से ही नहीं लिखे,
जीवन-पुस्तक में उस मेमने की।

यदि किसी के कान हैं तो वह सुने,
जिसकी नियति बंदी होना है, बंदी होगा,
यदि कोई असि से मारे तो,
उसका वध भी असि से होगा।

उसके बाद धरती से निकलते,
मैंने एक दूसरे पशु को देखा,
मेमने जैसे दो सींग थे उसके,
पर महानाग के समान वह बोलता था।

उस विशालकाय अजगर के सामने वह,
पहले पशु के सब अधिकार प्रयोग करता था,
सभी धरती वासियों से करवाई पहले की उपासना,
जिसका वह घातक घाव भर चुका था।

बड़े-बड़े चमत्कार किये दूसरे पशु ने,
और छलता चला गया धरती वासियों को,
पहले पशु को देने के लिये आदर,
कहा उन्हें उसकी मूर्ति बनाने को।

दी गयी थी दूसरे पशु को यह शक्ति,
कि उस मूर्ति में वह प्राण प्रतिष्ठा करे,
ताकि वह मूर्ति आदेश दे सके मारने का,
जो उस मूर्ति की उपासना न करे।

विवश किया दूसरे पशु ने सभी को,
कि वे अपने हाथों या माथों पर,
उस पशु के नाम या सम्बन्धित संख्या की,
ले-बेच करने के लिये लगवायें मुहर।

मुक्त जनों का गीत

फिर मैंने देखा कि मेरे सामने,
सिय्योन पर्वत पर एक मेमना खड़ा है,
एक लाख चवालीस हजार लोग जिनके माथे पर,
उनका और उनके पिता का नाम खुदा है।

फिर एक आकाशवाणी सुनी जिसका महानाद,
विशाल जल प्रपात या मेघ गर्जन सा था,
अनेक वीणा वादकों द्वारा एक साथ बजायी,
वीणाओं से उत्पन्न संगीत के जैसा था।

सिंहासन चारों प्राणियों तथा प्राचीनों के सामने,
वे लोग एक नया गीत गा रहे थे,
फिरौती दे बन्धन से छुड़ाये लोगों के सिवाय,
और लोग वह गीत नहीं गा सकते थे।

वे सवर्था पवित्र मेमने का अनुसरण करने वाले,
छुड़ाये गये थे मानव जाति से फिरौती दे,
वे परमेश्वर और उस मेमने के लिये,
सवर्था निर्दोष फसल के पहले फल थे।

तीन स्वर्गदूत

फिर आकाश में ऊँची उड़ान भरते,
मैंने एक और स्वर्गदूत को देखा,
उसके पास प्रत्येक देश, जाति, भाषा के लिये,
सुसमाचार का एक अनन्त संदेश था।

ऊँचे स्वर में बोला वह दूत,
परमेश्वर से डरो और उसकी स्तुति करो,
उसके न्याय करने का समय आ गया है,
सृष्टि के रचियता की उपासना करो।

फिर उसके पीछे एक और स्वर्गदूत आया,
वह बोला बाबुल नगरी का पतन हो चुका,
सभी जातियों को अपने व्यभिचार से उत्पन्न,
पिलायी थी उसने क्रोध की वासनामयी मदिरा।

फिर एक तीसरा स्वर्गदूत आकर बोला,
उस पशु या उसकी मूर्ति के उपासक,
परमेश्वर के क्रोध की मदिरा पीयेंगे,
वे और उसकी छाप के धारक।

युग-युगान्तर तक ऐसे लोगों को,
दी जायेगी तरह तरह की यातनाएं,
पाएंगे ना वो चैन कभी भी,
अपने किये की वो पाएंगे सजाएं।

यहीं पर परमेश्वर के उन संतजनों की,
अपेक्षा है धैर्यपूर्ण सहनशीलता की,
जो परमेश्वर की आज्ञाओं और यीशू में,
अपने विश्वास का पालन करती।

फिर उसके पश्चात एक आकाशवाणी को,
मैंने मुझसे यह कहते सुना,
''इसे लिख अब से आगे वो ही धन्य होगा,
जो प्रभु में स्थित हो कर मरा।''

आत्मा कहता है हाँ यही ठीक है,
उन्हें अपने परिश्रम से अब विश्राम मिलेगा,
क्योंकि जो कर्म किये थे उन लोगों ने,
उन्हें अब उन कर्मों का साथ मिलेगा।

धरती की फसल की कटनी

फिर मैंने देखा कि मेरे सामने,
वहाँ पर एक सफेद बादल था,
एक व्यक्ति बैठा था बादल पर जो,
मनुष्य के पुत्र जैसा दिखता था।

एक स्वर्ण मुकुट अपने सिर पर,
उसने धारण किया हुआ था,
और अपने एक हाथ में उसने,
एक तेज हँसिया लिया हुआ था।

तभी एक स्वर्गदूत मंदिर से निकला,
बोला हँसिया चला और फसल इकट्ठी कर,
फसल काटने का समय आ पहुँचा है,
तैयार हो गयी है फसल पक कर।

सो वो जो बादल पर बैठा था,
किया स्वर्गदूत के कहे अनुसार उसने,
धरती पर उसने अपना हँसिया चलाया,
और फसल काट कर रख ली उसने।

फिर आकाश में स्थित मन्दिर में से,
एक हँसिया धारी स्वर्गदूत बाहर निकला,
तभी एक और स्वर्गदूत वेदी से आया,
अग्नि पर अधिकार था उसका।

उस स्वर्गदूत से ऊँचे स्वर में कहा,
अपने तेज हंसिये का प्रयोग कर,
और धरती की बेल से उतार ले अंगूर,
क्योंकि तैयार हो गये अंगूर पक कर।

सो उस स्वर्गदूत ने यह सुनकर,
धरती पर झुलाया अपना हंसिया,
अंगूर उतार कर परमेश्वर की भयंकर,
कोप की धानी में उनको डाल दिया।

नगर की बाहर की धानी में,
रौंद कर निचौड़ लिये गये अंगूर,
धानी से ढेर सा लहू बह निकला,
और फैल गया लहू दूर-दूर।

अंतिम विनाश के दूत

आकाश में फिर एक अदभुत चिह्न रूप,
मैंने सात स्वर्गदूतों को देखा,
लिये हुए है जो सात अंतिम महाविनाश,
इनके साथ परमेश्वर का क्रोध समाप्त हो जाता।

फिर दिखा काँच का एक सागर सा,
जिसमें मानो आग मिली हो,
पशु की मूर्ति और सम्बन्धित संख्या पर,
मैंने देखा विजयी हुए वो।

काँच के सागर पर खड़े हुए वो,
परमेश्वर प्रदत्त वीणा लिये हाथ में,
परमेश्वर के सेवक मूसा और मेमने का,
गा रहे थे यह गीत स्वर में।

महान हैं तेरे कर्म जिन्हें तूँ करता रहता,
सच्चा है तेरा मार्ग अनन्त है तेरी शक्ति,
हे प्रभु तुझसे सब लोग सदा भयभीत रहेंगे,
तुझ पवित्र का नाम ले करेंगे तेरी स्तुति।

तेरे सम्मुख उपस्थित हुई,
सभी जातियां तेरी उपासना करें,
क्योंकि यही है उजागर तथ्य हे प्रभु,
वही है न्याय जो तू करे।

फिर देखा मैंने कि स्वर्ग के मन्दिर,
यानि वाचा के तम्बू को खोला गया,
फिर उन अन्तिम विनाश लिये दूतों ने,
मन्दिर के बाहर अपना कदम रखा।

चमकीले स्वच्छ सन के उत्तम रेशों के,
बने हुए वस्त्र वे पहने हुए थे,
और उन सातों स्वर्गदूतों के सीनों पर,
सोने के पटके बँधे हुए थे।

फिर उन चार प्राणियों में से एक ने,
उन सातों दूतों को सोने के कटोरे दिये,
वे कटोरे जो सदा-सवर्दा के लिये,
परमेश्वर के कोप से थे भरे हुए।

भरा हुआ था वह मन्दिर,
परमेश्वर की महिमा और शक्ति के धुएं से,
ताकि जब तक सात विनाश पूरे न हों,
कोई घुस न सके उस मन्दिर में।

परमेश्वर के प्रकोप के कटोरे

फिर मैंने सुना कि मन्दिर में से,
कोई कह रहा है उन सातों दूतों को,
जाओ और जाकर धरती पर उडेंल दो,
परमेश्वर के प्रकोप से भरे इन कटोरों को।

सो पहले दूत ने जब उडेंला कटोरा,
वे जो थे उस पशु के पूजक,
और जिन पर उसका चिह्न अकित था,
भयानक पीड़ा पूर्ण छाले हो गये प्रकट।

समुद्र पर जब कटोरा उडेंला दूसरे ने,
सागर का जल बदल गया लहू में,
तुरन्त ही मर गये सब जीव जन्तु,
रहने वाले थे जो समुद्र में।

फिर तीसरे दूत ने अपना कटोरा उडेला,
नदियों और जल के झरनों पर,
बदल गया उनका पानी लहू में और,
सुना मैंने जल के स्वामी दूत का स्वर।

वह तूँ ही है जो न्यायी है,
जो है, जो था, सदा-सदा से,
तू ही है जो सदा पवित्र है,
वही न्याय है जो किया है तूने।

उन लोगों ने संत जनों का,
और नबियों का लहू बहाया,
तू न्यायी है, जिस योग्य रहे वे,
तूने उनको पीने को बस रक्त थमाया।

फिर उसके बाद मैंने वेदी से,
आते हुए ये शब्द सुनें,
हाँ, हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर,
सच्चा और नेक न्याय किया तूने।

फिर चौथे दूत ने लेकर अपना प्याला,
उडेंल दिया सूरज पर उसको,
सो लोगों को जला डालने की शक्ति,
प्रदान कर दी गयी उसको।

झुलसने लगे लोग भयानक गर्मी से,
कोसा उन्होंने परमेश्वर के नाम को,
किन्तु उन्होंने अपना मन न फिराया,
न ही महिमा प्रदान करी परमेश्वर को।

फिर पाँचवे दूत ने अपना प्याला,
उस पशु के सिंहासन पर उड़ेल दिया,
डूब गया अंधकार में उसका राज्य,
लोगों को हुई भयंकर पीड़ा।

अपनी-अपनी उस पीड़ा के कारण,
और जो छाले उभरे उनके तन,
करी भर्त्सना स्वर्ग के परमेश्वर की,
पर फिराये उन्होंने न अपने मन।

फिर छठे दूत ने अपना कटोरा,
फरात नामक महानदी पर उड़ेल दिया,
सूख गया इससे उस नदी का पानी,
पूरब के राजा को रास्ता मिल गया।

फिर मैंने देखा उस अजगर, उस पशु,
और कपटी नबियों के मुख से,
तीन चमत्कारी शैतानी दुष्ट आत्माएं निकली,
जो दिख रही थी मेढक के जैसे।

वे समूचे संसार के राजाओं को,
परम शक्तिमान परमेश्वर के विरुद्ध,
एकत्र करने को निकल पड़ी,
करें परमेश्वर के महान दिन उससे युद्ध।

सावधान! डाल दूँगा मैं तुम्हें अचरज में,
जागते रहो और अपने वस्त्र साथ रखो,
ताकि तुम्हें बिना वस्त्र रहना न पड़े,
और लोगों के सामने लज्जित ना हो।

इस प्रकार वे तीनों दुष्टात्माएं,
उन राजाओं को कर इकट्ठा,
उस स्थान पर ले आई जिसे,
इब्रानी में हरमगिदोन कहा जाता।

उसके बाद सातवें दूत ने,
उड़ेल दिया अपना प्याला हवा में,
और सिंहासन से उत्पन्न हुई,
एक घनघोर ध्वनि हुई मंदिर में।

कौंधने लगी बिजली बादल गरजने लगे,
साथ ही अति भयंकर भूचाल भी आया,
बिखरा दी वह महान नगरी तीन टुकड़ों में,
और अधर्मियों के नगर नष्ट कर गया।

परमेश्वर ने बाबुल की महानगरी को,
दण्ड देने के लिये याद किया था,
ताकि उसे वह उस प्याले को पिला दे,
जिसमें भरी थी उसके भडकते क्रोध की मदिरा।

सभी द्वीप और पहाड़ लुप्त हो गये,
चालीस चालीस किलो के ओले गिर रहे थे,
यह महाविनाश एक भयानक विपत्ति थी,
और लोग परमेश्वर को कोस रहे थे।

पशु पर बैठी स्त्री

उसके बाद उन सात दूतों में से,
एक मेरे पास आया और बोला आ,
नदी किनारे बैठी उस वेश्या का दण्ड देख,
जिसने अपना जीवन व्यभिचार में खोया।

फिर हो उठा मैं आत्मा से भावित,
और दूत मुझे बीहड़ वन में ले गया,
जहाँ मैंने अपशब्दों से भरे, लाल रंग के,
पशु पर एक स्त्री को बैठे देखा।

उस पशु के सात सिर, दस सींग थे,
स्त्री ने बैगनी और लाल वस्त्र पहने थे,
सजी हुई थी वह सोने और रत्नों से,
सोने का एक कटोरा था उसके हाथ में।

वह कटोरा अनेक बुरी बातों और,
व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा था,
"महान बाबुल, वेश्याओं और अश्लीलताओं की जननी",
उसके माथे पर यह प्रतीकात्मक शीषर्क था।

मैंने देखा कि वह स्त्री मतवाली हुई,
संत जनों और उनका लहू पीने से,
यीशू के प्रति अपने विश्वास की साक्षी लिये,
जिन लोगों ने अपने प्राण त्याग दिये।

मुझे अचरज में देख वह दूत बोला,
मैं तुम्हें मतलब समझाता हूँ इस सबका,
वह पशु पहले जीवित था अब नहीं,
फिर भी है पाताल से अभी निकलने वाला।

ये सात सिर वे सात पर्वत है,
जिन पर बैठी है वह स्त्री,
पहले पाँच का जिनमें पतन हो चुका,
प्रतीक हैं ये उन सात राजाओं के भी।

एक अभी कर रहा है राज्य,
और दूसरा अभी तक आया नहीं,
किन्तु दूसरे की यह नियति है कि,
टिक पायेगा वह बस कुछ देर ही।

वह पशु जो पहले कभी जीवित था,
किन्तु नहीं हैं वह अब जीवित,
वह स्वयं आठवां राजा है,
जिसका विनाश भी है निश्चित।

वे दस सींग वे दस राजा है जो,
उस पशु के साथ कुछ देर राज करेंगे,
इन राजाओं का एक ही प्रयोजन है कि,
अपनी शक्ति और अधिकार उसको सौंप देंगे।

वे मेमने के विरुद्ध युद्ध करेंगे,
जो प्रभुओं का प्रभु है राजाओं का राजा,
अपने बुलाए चुने और अनुयायियों के साथ,
वह मेमना उन्हें युद्ध में हरा देगा।

वे नदियां जहाँ वह वेश्या स्त्री बैठी थी,
प्रतीक हैं विभिन्न कुलों, जातियों और भाषाओं की,
वे दस सींग और पशु उससे घृणा करेंगे,
और सब कुछ छीन छोड़ जायेंगे उसे यूंही।

वे उसके शरीर को खा जायेंगे,
और उसे जला डालेंगे उस आग में,
अपना प्रयोजन पूरा कराने हेतु परमेश्वर ने,
यही बैठा दिया है उनके मन में।

कि जब तक परमेश्वर के वचन,
भलीभाँति पूरे नहीं हो जाते,
तब तक शासन करने का अपना अधिकार,
उस पशु को वे सौंप दें।

सो वह स्त्री जो तुमने देखी थी,
वह स्त्री वो ही नगरी थी,
करती जो धरती के राजाओं पर शासन,
वह स्त्री वह महानगरी थी।

बाबुल का विनाश

उसके बाद मैंने एक और स्वर्गदूत को,
बड़ी शक्ति से नीचे उतरते देखा,
उसकी महिमा से धरती प्रकाशित हो उठी,
शक्तिशाली स्वर से पुकारते हुए वह बोला।

वह मिट गयी बाबुल नगरी मिट गयी,
वह दानवों का आवास बन गयी थी,
बन गयी थी वह दुष्टों का बसेरा,
सबको व्यभिचार के क्रोध की मदिरा पिलायी थी।

फिर आकाश से एक और स्वर सुना मैंने,
हे, मेरे जनो, वहाँ से बाहर निकल आओ,
परमेश्वर उसके बुरे कर्म याद कर रहा है,
कहीं उसके पापों में साक्षी न बन जाओ।

जैसा किया तुम्हारे साथ उसने,
वैसा ही तुम उसके साथ करो,
जो महिमा और वैभव उसने स्वयं को दिया,
तुम वैसे ही उसे यातनाएं और पीड़ा दो।

महा मृत्यु, महारोदन और भीषण दुर्भिक्ष,
सब उसको एक ही दिन घेर लेंगे,
यही उसका न्याय किया है परमेश्वर ने,
वे उसको जला कर भस्म कर देंगे।

धरती के राजा रोयेंगे और विलाप करेंगे,
डर कर दूर से ही खड़े हो कहेंगे,
हे शक्तिशाली नगर बाबुल, तेरा भयानक दण्ड,
मिल गया तुझको बस घड़ी भर में।

रोयेंगे उस धरती पर के व्यापारी भी,
क्योंकि उनकी वस्तुएं अब कोई मोल न लेगा,
घड़ी भर में ही सिमट जाएगी सारी सम्पत्ति,
ऐसा भयावह उस नगरी को दण्ड मिलेगा।

फिर जहाज का हर कप्तान और नाविक,
और हर व्यक्ति उससे दूर ही खड़ा रहा,
कौन है उस विशाल नगरी के समान,
रोते-बिलखते उन सबने यह कहा।

कितनी वैभवशाली थी यह नगरी,
पर बस घड़ी भर में नष्ट हो गयी,
जैसा दण्ड उसने संतजनों को दिया था,
प्रभु ने दण्ड दिया उसको ठीक वैसा ही।

फिर एक शक्तिशाली स्वर्गदूत ने,
उठाई चक्की के पाट सी एक बड़ी चट्टान,
और उसे सागर में फेंकते हुए,
बाबुल नगरी को सम्बोधित किया गान।

ठीक ऐसे ही गिरा दी जायेगी तू,
और फिर तू कहीं लुप्त हो जायेगी,
तुझमें फिर कभी न बजेगी वीणा,
कोई वंशी फिर न बजायी जायेगी।

कोई कलाकार या कला बचेगी न तुझमें,
कोई मंगल ध्वनि फिर न कभी गुँजेगी,
बहाया था तूने नबियों, संतों का लहू,
अब तुझ पर भी वैसी ही गुजरेगी।

स्वर्ग में परमेश्वर की स्तुति

इसके पश्चात मैंने भीड़ का सा,
एक ऊँचा स्वर लोगों का सुना,
वे कह रहे थेः "हल्लिलूय्याह,
परमेश्वर की जय हो, जय हो सदा।

सच्चा और धर्मयुक्त है न्याय उसका,
उस महती वेश्या का उसने न्याय किया,
जिनको उसने मार दिया उन दस जनों की,
हत्या का समुचित प्रतिशोध हो चुका।"

फिर चौबीच प्राचीनों और चारों प्राणियों ने,
परमेश्वर को झुक कर प्रणाम किया,
और उसकी उपासना करते हुए गाने लगे,
"आमीन! हल्लिलूय्याह" जय हो उसकी सदा।

स्वर्ग से फिर एक आवाज आयी,
जो कह रही थी, हे उसके सेवको,
स्तुति गान करो तुम हमारे परमेश्वर का,
छोटे या बड़े जो उससे डरते रहते हो।

फिर सुना विशाल जन समूह का सा शब्द,
जो विशाल जल-प्रवाह, मेघ गर्जन सा था,
लोग गा रहे थे, "हल्लिलूय्याह उसकी जय हो,
क्योंकि सर्वशक्ति सम्पन्न परमेश्वर राज्य कर रहा।

सो आओ, खुश हो आनन्द मनाएं,
आ गया समय मेमने के ब्याह का अब,
उसकी सजी-धजी दुलहन तैयार खड़ी है,
स्वच्छ धवल पहन ले वह निर्मल मलमल* अब।

फिर वह मुझसे कहने लगा, लिखो,
धन्य है जिन्हें मिला उस विवाह में निमन्त्रण,
और फिर उसने मुझसे यह कहा,
ये हैं परमेश्वर के सत्य वचन।

और उसकी उपासना करने के लिये,
गिर पड़ा मैं चरणों में उसके,
किन्तु वह बोला, सावधान, ऐसा मत कर,
हम सब तो है सेवक परमेश्वर के।

हम पर दायित्व है हम प्रचार करे,
यीशू के द्वारा साक्षी दिये गये सन्देश का,
परमेश्वर की उपासना कर, क्योंकि वह सन्देश,
प्रमाणित करता उनमें एक नबी की आत्मा।

सफेद घोड़े का सवार

फिर मैंने स्वर्ग को खुलते देखा,
और मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था,
न्यायपूर्ण निर्णय और युद्ध करने वाला घुड़सवार।
विश्वसनीय और सत्य कहलाता था।

सफेद घोड़ों पर बैठी स्वर्ग की सेनाएं,
चल रही थी उसके पीछे-पीछे,
निकल रही थी एक तेज धार तलवार,
अधर्मियों पर प्रहार हेतु उसके मुख से।

* (यह मलमल संत जनों के धर्ममय कार्यों का प्रतीक है।)

परमेश्वर के प्रचण्ड क्रोध की धानी में,
निचोड़ेगा रस वह अंगूरों का,
राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु,
उसके वस्त्र और जाँघ पर लिखा था।

फिर सूर्य पर खड़ा एक स्वर्गदूत देखा,
कह रहा था सभी पक्षियों को आओ,
तैयार हो जाओ योद्धाओ का मांस खाने को,
परमेश्वर के महाभोज हेतु एकत्र हो जाओ।

फिर उस पशु और राजाओं को देखा,
उनकी सेना थी साथ में उनके,
उस घुड़सवार और उसकी सेना से युद्ध,
करने के लिये वे आ जुटे थे।

पशु के साथ वह झूठा नबी भी था,
जो झूठे चमत्कार दिखला छला करता था,
मार दिये गये ये दोनों पशु और नबी,
अग्नि में उन्हें जीवित ही डाला गया था।

घुड़सवार के मुख से निकलती तलवार से,
बाकी के सैनिकों को भी गया मारा,
फिर पक्षियों ने उनके शवों से मांस,
नोच-नोच कर भरपेट खाया।

हजार वर्ष

फिर एक स्वर्गदूत को मैंने,
आकाश से नीचे उतरते देखा,
उसके हाथ में पाताल की चाबी,
और एक बड़ी सांकल को देखा।

पकड़ लिया उसने उस पुराने महासर्प को,
जिसका दैत्य या शैतान भी कहते,
फिर एक हजार वर्ष के लिये,
सांकल से बाँध दिया दूत ने उसे।

फिर उसे महा गर्त में धकेल कर,
ताला लगा दिया उस दूत ने,
मुहर लगा दी कपाट पर ताकि,
हजार वर्ष तक वह बाहर न आ सके।

जब तक वहाँ पर बंद रहेगा,
धोखा न दे सकेगा लोगों को वो,
फिर वह समय पूरा हो जाने पर,
कुछ समय के लिये छोड़ा जायेगा वो।

फिर सिंहासन पर बैठे देखे कुछ लोग,
जिन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था,
और उन लोगों की आत्माओं को देखा,
जिन्होंने यीशू और परमेश्वर का वरण किया था।

वे फिर से जीवित हो उठे और,
मसीह के साथ एक हजार वर्ष राज्य किया,
वह धन्य है और पवित्र है जो,
उस पहले पुनरुत्थान में भाग ले रहा।

इन व्यक्तियों पर दूसरी मृत्यु को,
किसी प्रकार का अधिकार नहीं है प्राप्त,
वे तो होंगे परमेश्वर और यीशू के याजक,
हजार वर्ष तक करेंगे उसके साथ राज्य।

फिर एक हजार वर्ष पूरे हो चुकने पर,
छोड़ दिया जायेगा शैतान को बंदीगृह से,
और उस बंदीगृह से निकल कर शैतान,
निकल पड़ेगा धरती पर के लोगों को छलने।

छलेगा वह गोग और मगोग को,
और उन्हें युद्ध के लिये एकत्र करेगा,
धरती पर फैली अपनी असंख्य सेना के साथ,
संतजनों के डेरे और नगरी घेर लेगा।

किन्तु आग उतरकर उन्हें निगल जायेगी,
भभकती गंधक की झीलमें उसे फेंका जायेगा,
जहाँ वह पशु और झूठा नबी डाले गये हैं,
और सदा-सदा के लिये उन्हें तड़पाया जायेगा।

संसार के लोगों का न्याय

फिर मैंने एक विशाल श्वेत सिंहासन,
और जो उस पर विराजमान था उसे देखा,
धरती आकाश भाग गये उसके सामने से,
कहाँ गये उनका पता तक न चला।

फिर मृतक खड़े देखे सिंहासन के सामने,
पुस्तकों में लिखे कर्मानुसार न्याय हुआ उनका,
जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं थे,
उन्हें भी आग की झील में गया धकेला।

नया यरूशलेम

फिर मैंने एक नया स्वर्ग,
और एक नयी धरती देखी,
क्योंकि पहला स्वर्ग और पहली धरती,
हो चुके थे लुप्त दोनों ही।

मैंने यरूशलेम की वह पवित्र नगरी भी,
परमेश्वर की ओर से नीचे उतरती देखी,
मानो उसके पाने के लिये,
सजायी गयी हो वह नगरी दुल्हन सी।

फिर सुनी एक ऊँचे ध्वनि आकाश में,
परमेश्वर का मन्दिर अब मनुष्यों के बीच रहेगा,
वे उसकी प्रजा और वह उनका परमेश्वर,
और उनका हर आँसू वह पोंछ डालेगा।

इस पर सिंहासन पर जो बैठा था बोला,
देखो किसे दे रहा हूँ मैं सब कुछ नया,
ये वचन विश्वास करने योग्य और सत्य है,
इसे लिख ले उसने तब मुझसे कहा।

फिर बोला मैं ही अल्फा हूँ और ओमेगा,
मैं ही आदि हूँ और अन्त भी मैं ही,
जो प्यासा है उसे जीवन जल स्रोत से,
मुक्त भाव से जल पिलाऊँगा मैं ही।

जो विजयी होगा उस सब का मालिक बनेगा,
मैं उसका परमेश्वर और वह मेरा पुत्र होगा,
किन्तु अविश्वासियों हत्यारों, व्यभिचारियों आदि को,
भभकती गंधक की झील में जलना होगा।

फिर उन सात दूतों में से एक ने कहा,
आ दिखा दूँ उस मेमने की दुल्हन को तुझे,

फिर वह मुझे एक ऊँचे पर्वत पर ले गया,
और यरूशलेम नगरी का दर्शन कराया मुझे।

उस नगरी के परकोटे में बारह द्वार थे,
बारह कुलों के नाम उन पर अंकित थे,
बारह नीवों पर बनाया गया था परकोटा,
बारह प्रेरितों के नाम जिन पर अंकित थे।

स्वर्गदूत ने सोने की नापने की छड़ी से,
नगर, द्वार और परकोटे को नापा,
बसाया गया था वह नगर वर्गाकार में,
जितना लम्बा उतना ही चौड़ा और ऊँचा था।

रत्नों से बना था नगर का परकोटा,
और शुद्ध सोने से नगर बना था,
बारहो द्वार बारह मोती से बने थे,
हर द्वार एक एक मोती से बना था।

उस नगर में कोई मन्दिर न था,
क्योंकि परमेश्वर और मेमना ही उसके मन्दिर थे,
वह नगर परमेश्वर के प्रकाश से आलोकित था,
जरूरत नहीं थी सूरज और चाँद की उसे।

मेमना ही उस नगर का दीपक है,
सभी उसके प्रकाश के सहारे आगे बढ़ेंगे,
धरती के राजा अपनी भव्यता लायेंगे वहाँ,
झूठे और अपात्र भीतर न आ सकेंगे।

फिर उसने जीवनदाता जल की नदी दिखाई,
वह नदी स्फटिक की तरह उज्जवल थी,
परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकल वह,
नगर की गलियों के बीच बह रही थी।

जीवन वृक्ष उगा था दोनों तटों पर,
हर साल बारह फसल उगा करती थीं,
प्रत्येक वृक्ष पर एक फसल लगती थी प्रतिमास,
उनकी पत्तियां लोगों को निरोग करती थीं।

वहाँ किसी प्रकार का कोई अभिशाप न होगा,
बना रहेगा परमेश्वर और मेमने का सिंहासन,
उसके सेवक उसकी उपासना करेंगे वहाँ,
सदा-सदा रहेगा वहाँ पर उनका शासन।

फिर उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा,
ये वचन विश्वसनीय और हैं सच,
प्रभु ने सेवकों के लिये दूत भेजा है,
जो घटने वाला है उसे करने को प्रकट।

सुनो, मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ,
धन्य हैं जो उन वचनों का पालन करते,
जो इस पुस्तक में दिये गये हैं,
ये भविष्यवाणी है ऐसा जानते।

जो दूत मुझे ये बातें दिखाया करता था,
जो बातें मुझ यूहन्ना ने देखी और सुनी,
तो उसके चरणों में गिर कर,
मैंने उस स्वर्गदूत की उपासना करी।

तब उस दूत ने कहा ऐसा मत कर,
मैं तेरा और बँधु नबियों का हूँ सह-सेवक,
बस परमेश्वर की ही कर उपासना और,
इस पुस्तक की भविष्यवाणिया छिपा मत रख।

इन बातों के घटने का समय निकट है,
जो बुरा कर रहे, वे बुरा करते रहें,
जो धर्मी हैं वे करते रहें धर्म,
और जो पवित्र हैं वे पवित्र बने रहें।

धन्य हैं वे जो अपने वस्त्र धो लेते,
वे जीवन-वृक्ष के फल खा सकेंगे,
किन्तु व्यभिचारी, मूर्तिपूजक और झूठे,
ये तो नगर के बाहर ही पड़े रहेंगे।

मुझ यीशू ने तुम सबके लिये,
इन बातों की साक्षी हेतु स्वर्गदूत भेजा,
मैं दाऊद के परिवार का वंशज हूँ,
और भोर का दमकता हुआ तारा।

आत्मा और दुल्हन कहती है आ,
जो इसे सुनता वह भी कहे आ,
यह जीवनदायी जल ग्रहण करे,
हर कोई जो प्यासा हो उसका।

इस पुस्तक में उद्घाटित वचनों में,
जो कोई कुछ जोड़ेगा या घटायेगा,
तो परमेश्वर द्वारा जीवन वृक्ष और पवित्र नगरी से,
उसका भाग उससे छीन लिया जायेगा।

यीशू जो इन बातों का साक्षी है,
कहता है, हाँ मैं शीघ्र आ रहा,
आमीन! हे प्रभु यीशू आ,
रहे उसका अनुग्रह सबके साथ सदा।

आप के लिए!

संपूर्ण बाइबिल

पुराना विधान और नया विधान

पवित्र बाइबिल

अनुवादकें : एस.एन. वाल्द, एस.वी.डी.
और कामिल बुल्के, एस.जे.

हिन्दी साहित्य समिति, इलाहाबाद से प्रकाशित

प्लास्टिक सुनम्य आवरण

आकार : 20×14 सेन्टीमीटर, पृष्ठ 1872, रु. 150.00

नया विधान

अनुवादक : फा. कामिल बुल्के, एस.जे.

प्लास्टिक आवरण

काथलिक हिन्दी साहित्य समिति से प्रकाशित

आकार : 14×10 सेन्टीमीटर, पृष्ठ 535, रु. 35.00

आत्मोन्नति प्रकाशन
28–बी, चैथम लाइन्स, रानीपुर, इलाहाबाद- 211 002
Mob. : 0-9935286187